माध्यमिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश

(बोर्ड आफ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजूकेशन)

2016–17

की

हाई स्कूल

की

विवरण–पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के
प्राधिकार के अधीन प्रकाशित

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ-संख्या
1-अध्याय बारह-परीक्षा संबंधी सामान्य विनियम	. .	1-17
2-अध्याय तेरह-हाई स्कूल परीक्षा	. .	17-20
3-अनिवार्य हिन्दी से छूट संबंधी नियम	. .	20-22
4-पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकें	. .	22-268
(कक्षा IX के लिए)		
1-हिन्दी	. .	22-24
2-प्रारम्भिक हिन्दी	. .	24-25
3-गुजराती	. .	25-27
4-उर्दू	. .	27-28
5-पंजाबी	. .	28-29
6-बंगला	. .	29-30
7-मराठी	. .	30-32
8-असामी	. .	32-33
9-नैपाली		33-34
10-उड़िया	. .	34-35
11-कन्नड	. .	35-36
12-कश्मीरी	. .	37-38
13-सिन्धी	. .	38-39
14-तमिल	. .	39-40
15-तेलुगु	. .	40-41
16-मलयालम	. .	41-42
17-अंग्रेजी	. .	42-43
18-संस्कृत	. .	44-47
19-पालि	. .	47-48
20-अरबी	. .	48-49
21-फारसी	. .	50
22-गृहविज्ञान	. .	51-52
23-विज्ञान	. .	52-57
24-भाषायें	. .	57
25-गृह विज्ञान	. .	57
26-संगीत (गायन)	. .	57-58

विवरण		पृष्ठ-संख्या
27-संगीत (वादन)	. .	58-59
28-कृषि	. .	59-60
29-सिलाई	. .	61
30-कम्प्यूटर	. .	62-64
31-गणित		64-67
32-प्रा0 गणित		67-69
33-सामाजिक विज्ञान	. .	69-74
34-वाणिज्य	. .	74-75
35-चित्रकला	. .	75-76
36-रंजन कला	. .	77
37-मानव विज्ञान	. .	78
38-नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा	. .	79-82
39-समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य	. .	82-94
40-पूर्व व्यावसायिक शिक्षा	. .	94-144
(कक्षा X के लिए)		
1-हिन्दी	. .	145-148
2-प्रारम्भिक हिन्दी	. .	148-150
3-गुजराती	. .	150-151
4-उर्दू	. .	151-152
5-पंजाबी	. .	153
6-बंगला	. .	153-154
7-मराठी	. .	155-156
8-असामी	. .	156-157
9- उड़िया	. .	157-158
10- कन्नड	. .	158-160
11- कश्मीरी	. .	160-161
12- सिन्धी	. .	161-162
13- तमिल	. .	162-164
14- तेलुगु	. .	164-165
15- मलयालम	. .	165-166
16-नैपाली	. .	166-168
17-अंग्रेजी	. .	168-169

विवरण		पृष्ठ-संख्या
18-संस्कृत	. .	169-173
19-पालि	. .	173-174
20-अरबी	. .	174-175
21-फारसी	. .	175-176
22-गृह विज्ञान	. .	177-179
23-विज्ञान	. .	179-183
24-भाषायें	. .	183
25-गृह विज्ञान	. .	184
26-संगीत (गायन)	. .	184-185
27- संगीत (वादन)	. .	185-186
28-कृषि	. .	186-187
29-सिलाई	. .	188-189
30-कम्प्यूटर	. .	189-190
31-गणित	. .	191-193
32-प्रारम्भिक गणित	. .	193-195
33-सामाजिक विज्ञान	. .	195-200
34-वाणिज्य	. .	200-201
35-चित्रकला	. .	201-202
36-रंजनकला	. .	202-203
37-मानव विज्ञान	. .	203-204
38-नैतिक तथा खेल एवं शारीरिक शिक्षा	. .	204-209
39-समाजोपयोगी उत्पादक, कार्य एवं समाज सेवा कार्य	. .	209-220
40-पूर्व व्यावसायिक शिक्षा	. .	220-268

अध्याय बारह

[परीक्षाओं सम्बन्धी सामान्य विनियम]

1-परिषद् निम्नलिखित परीक्षायें संचालित करेगी-

(क) हाईस्कूल परीक्षा,

(ख) इण्टरमीडिएट परीक्षा,

*(ग) विखण्डित

(घ) इण्टरमीडिएट व्यावसायिक शिक्षा परीक्षा।

2-परिषद् की परीक्षा ऐसे केन्द्रों पर तथा उन तिथियों पर तथा ऐसे समय पर होगी जो परिषद् समय-समय पर निश्चित करेगी।

**(2-क) निरस्त।

3-परिषद् की परीक्षाओं के परीक्षण अंशतः मौखिक एवं क्रियात्मक तथा अंशतः लिखित होंगे। मौखिक तथा क्रियात्मक परीक्षण परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित ढंग से परिषद् द्वारा नियुक्त परीक्षकों द्वारा संचालित किये जायेंगे। लिखित परीक्षा प्रश्न-पत्रों द्वारा होंगे तथा प्रश्न-पत्र पर जहां परीक्षा हो रही है, एक साथ दिये जायेंगे।

3-(क) परिषद् द्वारा संचालित किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र अथवा डिप्लोमा परीक्षार्थी को उस समय तक नहीं दिया जायेगा जब तक वह उक्त परीक्षा के लिए उनसे सम्बन्धित विनियमों के अनुसार प्रत्येक विषय में योग्यता न प्राप्त कर लें :

प्रतिबन्ध यह है कि यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में प्रवेश पाने के पश्चात् अपात्र समझा जायेगा/जायेगी उसकी अभ्यर्थिता/परीक्षा रद्द कर दी जायेगी और उसका परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण-पत्र भी वापस ले लिया जायेगा/रद्द कर दिया जायेगा।

†3-(ख) परिषद् की हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में संस्थागत अभ्यर्थी के रूप में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों को मान्यता प्राप्त संस्थाओं में कक्षा-9 तथा 11 में प्रवेश लेते समय विहित प्रपत्र पर अपना पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। ऐसे अभ्यर्थी अपनी पात्रता तथा जन्मतिथि से सम्बन्धित वैध एवं प्रमाणित साक्ष्य संस्था के प्रधान को तत्समय उपलब्ध करायेंगे। संस्था के प्रधान संतुष्ट होने पर ही अभ्यर्थी का पंजीकरण अपने विद्यालय पर करेंगे। प्रत्येक अभ्यर्थी को पंजीकरण शुल्क के रूप में रु0 20.00 (बीस रुपये) संस्था के प्रधान को देना होगा।

टिप्पणी-पंजीकरण फार्म के साथ ही पंजीकरण शुल्क लिया जायेगा एवं राजकीय कोष में जमा किया जायेगा।

†3-(ग) संस्थाओं के प्रधान विद्यालय की निर्धारित क्षमता (मान्य कक्षाओं) के अनुरूप दिनांक 01 अक्टूबर तक पंजीकृत अभ्यर्थियों से भरवाये गये अग्रिम पंजीकरण आवेदन-पत्र एवं नामावली की एक प्रति जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से विलम्बतम् 10 अक्टूबर तक परषिद् के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यालय को प्रेषित करेंगे।

†3-(घ) परिषद् कक्षा-9 तथा 11 में पंजीकृत समस्त अभ्यर्थियों के विवरणों को सम्यक् जांच करेगी तथा वांछित संशोधन, यदि कोई हो, करेगी तथा इन विवरणों के आधार पर अभ्यर्थियों को पंजीकरण संख्या अनुदानित कर सम्बन्धित संस्था को जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से प्रत्येक दशा में आगामी 28 फरवरी तक उपलब्ध करायेगी, तद्नुसार संस्था के प्रधान अपने विद्यालय के प्रत्येक अभ्यर्थी को उसकी पंजीकरण संख्या से अवगत करायेंगे। पंजीकरण संख्या अभ्यर्थी का स्थायी अभिलेख होगा तथा आवश्यकतानुसार पंजीकरण संख्या से ही पत्र-व्यवहार किया जायेगा।

†3-(ङ) कक्षा-10 तथा 12 की संस्थागत परीक्षा में वही अभ्यर्थी बैठने के पात्र होंगे जिन्होंने सम्बन्धित संस्था में यथास्थिति कक्षा-9 तथा 11 में अपना पंजीकरण कराया हो। संस्था के प्रधान अपंजीकृत अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र किसी भी दशा में अग्रसारित नहीं करेंगे।

प्रतिबन्ध यह है कि अन्य परिषदों से कक्षा-10 या 12 में स्थानान्तरित अभ्यर्थी का कक्षा-10 तथा 12 में ही पंजीकरण होगा।

''अग्रेतर प्रतिबन्ध यह भी है कि विनियमों में किसी प्रावधान के होते हुए भी किसी आपतिक स्थिति में राज्य सरकार को परीक्षाओं के आयोजन से सम्बन्धित विनियम में दी गयी किसी भी व्यवस्था को शिथिल करने का अधिकार होगा''।

---

*राजाज्ञा संख्या 2063/15-7-1-243/91 टी0सी0, दिनांक 27-8-2002 द्वारा संशोधित।

**राजाज्ञा संख्या 4131/15-7-2002/1(4)/99, दिनांक 6 मार्च, 2003 विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/705, दिनांक 25 मार्च, 2003 द्वारा निरस्त।

†राजाज्ञा संख्या 3514/15-7-06-1(131)-2006, दिनांक 17 अगस्त, 2006 द्वारा संशोधित (विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/444, दिनांक 19 अगस्त, 2006) तथा तत्काल से प्रभावी।

संस्थागत परीक्षार्थियों के प्रवेश के लिए नियम

**4-(एक) परिषद् द्वारा संचालित किसी भी परीक्षा में प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रधान को परीक्षा हेतु निर्धारित शुल्क अधिक से अधिक प्रत्येक वर्ष की 20 अगस्त तक जमा करेंगे। प्रत्येक अभ्यर्थी संस्था में मान्य विषय अथवा विषयों को, जो वे परीक्षा के लिए ले रहे हैं, व्यक्त करते हुए सचिव द्वारा विहित प्रपत्र पर तथा विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार परीक्षा का आवेदन-पत्र भरेंगे। निर्धारित अवधि में शुल्क जमा न करने पर संस्था के प्रधान को सम्बन्धित छात्र का नाम संस्था से काटने का अधिकार होगा। किसी संस्था से अपना आवेदन-पत्र भरने के पश्चात् किसी संस्थागत छात्र को केवल उस दशा में छोड़कर जबकि जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा उसे उसके अभिभावक के उस स्थान से जहां वह शिक्षा ग्रहण कर रहा था, किसी दूसरे स्थान को किये गये स्थानान्तरण के सम्बन्ध में प्रस्तुत किये गये तथ्यों/प्रमाण-पत्र पर अपनी संतुष्टि के उपरान्त ऐसा करने की अनुमति दी गयी हो, विद्यालय परिवर्तन का अधिकार न होगा।

**(दो) संस्था का प्रधान परीक्षार्थियों का आवेदन-पत्र शुल्क ट्रेजरी चालान सहित अधिक से अधिक 14 अगस्त तक सचिव को भेजेगा। 14 अगस्त के बाद आवेदन-पत्र भेजने पर संस्था 20.00 रु0 प्रति आवेदन-पत्र की दर से विलम्ब शुल्क देगा।

**(दो)(क) संस्था के प्रधान परीक्षा में सम्मिलित होने वाले अभ्यर्थियों द्वारा पूरति आवेदन-पत्रों में अंकित प्रविष्टियों की भली-भांति जांच करेंगे तथा अर्ह अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र अग्रसारित करेंगे। संस्था का प्रधान, संस्था से सम्मिलित होने वाले सभी अभ्यर्थियों की सूची दो प्रतियों में जिसमें अभ्यर्थी का नाम, पिता का नाम, माता का नाम तथा उपहृत किये गये मान्य विषयों का उल्लेख हो, तैयार करेगा। सूची की एक प्रति सम्बन्धित जिला विद्यालय निरीक्षक को उपलब्ध करायी जायेगी। संस्था का प्रधान, सूची के अनुसार सभी अर्ह अभ्यर्थियों के परीक्षा शुल्क का कोष-पत्र 5 प्रतियों में तैयार कर जिला विद्यालय निरीक्षक से अग्रसारित कराने के पश्चात् अपने ही जनपद के कोषागार में जमा करेगा। कोष-पत्र की दो प्रति कोषागार, एक प्रति परीक्षा आवेदन-पत्रों, नामावली एवं स्मारिका आदि के साथ जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से परिषद् के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यालय तथा एक प्रति अभ्यर्थियों की सूची सहित जिला विद्यालय निरीक्षक को प्रेषित करेगा। कोष-पत्र की एक प्रति संस्था के प्रधान द्वारा सुरक्षित रखी जायेगी। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा समस्त संस्था के संकलित कोष-पत्रों का अधिकतम एक माह के अन्दर कोषागार से सत्यापन कराया जायेगा तथा वस्तुस्थिति/संस्तुति से परिषद् के सचिव को अवगत कराया जायेगा।

**(ख) संस्था का प्रधान परीक्षार्थियों के आवदेन-पत्र, शुल्क के ट्रेजरी चालान एवं सत्यापित सूची सहित अधिक से अधिक 31 अगस्त तक जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से सचिव को भेजेगा। 31 अगस्त के पश्चात् आवेदन-पत्र भेजने पर संस्था के प्रधान को 50.00 रु0 प्रति आवेदन-पत्र की दर से विलम्ब शुल्क देना होगा। विलम्ब शुल्क के साथ आवेदन-पत्र अधिक से अधिक 20 सितम्बर तक स्वीकार किये जायेंगे। इस तिथि के पश्चात् कोई आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

**(ग) संस्था के प्रधान का यह दायित्व होगा कि उसके द्वारा अग्रसारित सभी आवेदन-पत्र केवल मान्य विषय/विषयों से विनियमानुसार ही अग्रसारित किये गये हैं। अनर्ह अथवा विनियमों के प्रावधानों के प्रतिकूल अग्रसारित किये गये आवेदन-पत्रों के लिए संस्था के प्रधान सीधे उत्तरदायी माने जायेंगे तथा उनके विरुद्ध परिषद् द्वारा अनुशासनात्मक कार्यवाही के साथ-साथ संस्था को परीक्षा केन्द्र से वंचित करने तथा प्रदत्त मान्यता के प्रत्याहरण की कार्यवाही भी की जायेगी।

**(तीन) उत्तर प्रदेश के बाहर के राज्यों से अपने अभिभावकों के स्थानान्तरण के कारण वर्ष के 15 अगस्त के पश्चात् आने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में परिषद् की परीक्षाओं में संस्थागत परीक्षार्थी के रूप में प्रवेश पाने की अंतिम तिथि परीक्षाओं की तिथि से पूर्व 31 दिसम्बर होगी।

उत्तर प्रदेश के बाहर के राज्यों से अपने अभिभावकों के स्थानान्तरण के कारण वर्ष के 20 अगस्त के पश्चात् आने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में परिषद् की परीक्षाओं में संस्थागत परीक्षार्थियों के रूप में प्रवेश पाने की अंतिम तिथि परीक्षाओं की तिथि से पूर्व 30 सितम्बर होगी। संस्था का प्रधान ऐसे अभ्यर्थियों के परीक्षा आवेदन-पत्र/नामावली स्मारिका एवं जमा किये गये परीक्षा शुल्क के कोष-पत्र सहित अधिकतम 15 दिन के अन्दर जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से परिषद् के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यालय को उपलब्ध करायेगा।

---

†दिनांक 9-12-2000 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/554, दिनांक 22-9-2000 द्वारा संशोधित एवं वर्ष 2002 की परीक्षा से प्रभावी।

*राजाज्ञा संख्या 4551/15-7-06-1(29)/2004 टी0सी0, दिनांक 18 अक्टूबर, 2006 द्वारा संशोधित। तत्काल से प्रभावी।

****नोट-**राजाज्ञा संख्या 3514/15-7-06-1(131)-2006, दिनांक 17 अगस्त, 2006 द्वारा पुनः निम्नवत् संशोधित (विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/444, दिनांक 19 अगस्त, 2006) तथा तत्काल से प्रभावी।

(चार) सचिव संस्थागत परीक्षार्थियों के उपयोग हेतु आवेदन-पत्र उपलब्ध कराने की व्यवस्था करेगा तथा सामान्य प्रक्रिया से विलम्ब होने की स्थिति में वह ऐसी कार्यवाही करेगा, जो तात्कालिक आवश्यकता को देखते हुए उचित समझे।

(पांच) संस्था के प्रधान आवदेन-पत्र एवं सचिव द्वारा विनिर्दिष्ट प्रपत्रों के साथ सचिव को यह दिखाते हुए निम्नलिखित प्रमाण-पत्र भेजेगा-

(क) कि संस्था में बालक/बालिका का प्रवेश शिक्षा संहिता के नियमों तथा परिषद् के विनियमों के अनुसार है,

(ख) कि उसने एक मान्यता प्राप्त संस्था में अध्ययन का एक नियमित पाठ्यक्रम पूर्ण किया है,

(ग) कि उसने पाठ्य विवरण में निर्धारित प्रयोग वास्तविक रूप से किये हैं।

(छः) ऐसे छात्रों को, जो किसी मान्यता प्राप्त संस्था में संस्थागत परीक्षार्थी के रूप में दो बार अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, पुनः किसी संस्था में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जायेगी।

उपस्थिति

5-(1) मान्यता प्राप्त संस्था, प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में कम से कम 220 कार्य दिवसों में खुली रहेगी, जिनमें परीक्षाओं तथा पाठ्यानुवर्ती कार्य-कलाप के दिवस भी सम्मिलित है, प्रतिबन्ध यह है कि ''पत्राचार शिक्षा सतत् अध्ययन सम्पर्क योजना'' के अन्तर्गत पंजीकृत छात्र के सम्बन्ध में कार्य दिवसों को उपर्युक्त संख्या 75 कार्य दिवस होगी तथा इसके साथ सम्बन्धित छात्र को पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा प्रेषित पाठ्य सामग्री की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अध्ययन करना होगा।

(2) किसी भी मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा कोई छात्र हाईस्कूल के लिए प्रस्तुत नहीं किया जायेगा जब तक वह दो शैक्षिक वर्षों के दरम्यान प्रत्येक विषय में, जिसमें उसे परीक्षा में सम्मिलित होना है, वादनों की निर्धारित/आवंटित कुल संख्या के, जिसमें क्रियात्मक कार्य के वादन भी सम्मिलित होंगे, कम से कम 75 प्रतिशत वादनों में उपस्थित न रहा हो।

पुनश्च-आंग्ल भारतीय विद्यालयों से आने वाले छात्रों के सम्बन्ध में 75 प्रतिशत उपस्थिति परीक्षा से पूर्व के वर्ष को प्रथम जनवरी से परिगणित की जायेगी।

(3) मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा कोई भी छात्र इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए प्रस्तुत नहीं किया जायेगा। जब तक कि वह दो शैक्षिक वर्षों में जिसमें उसकी परीक्षा होनी है, दिये जाने वाले व्याख्यानों में से (जिसमें क्रियात्मक कार्य, यदि कोई हो, के घण्टे भी सम्मिलित है) कम से कम 75 प्रतिशत में सम्मिलित न हुआ हो।

कृषि वर्ग के साथ इण्टरमीडिएट परीक्षा के परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में उपस्थिति का प्रतिशत भाग एक तथा दो के लिए अलग-अलग परिगणित किया जायेगा।

(**टिप्पणी**-काउन्सिल फार दि इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट इक्जामिनेशन, नई दिल्ली द्वारा संचालित सर्टीफिकेट आफ सेकेण्डरी एजूकेशन परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों की उपस्थिति की गणना परीक्षा के पूर्व के वर्ष की पहली जनवरी से परिगणित की जायेगी।)

(4) परिगणन के लिए एक घण्टे के व्याख्यान की एक व्याख्यान, दो घण्टे व्याख्यान को दो व्याख्यान और इसी प्रकार परिगणित किया जायेगा। क्रियात्मक कार्य में लगा एक घण्टा एक व्याख्यान के रूप में परिगणित होगा। घण्टे का तात्पर्य स्कूल अथवा कालेज के समय चक्र में शिक्षण के घण्टे से है।

(5) ऊपर के खण्ड (2) और (3) में संदर्भित दो शैक्षिक वर्षों का क्रमिक होना आवश्यक नहीं है। यह संस्थाओं के प्रधानों के विवेकाधिकार पर छोड़ा जाता है कि वे उन छात्रों की उपस्थिति, जिन्होंने कक्षा 9 अथवा 11 में एक से अधिक वर्ष पढ़ा है, कक्षा 10 अथवा 12 की उपस्थिति के साथ किसी एक वर्ष की उपस्थिति को परिगणित कर लें। उन छात्रों को जिन्हें एन0सी0सी0, पी0एस0डी0 अथवा प्रादेशिक सेना के शिक्षा अथवा क्रीड़ा दल, बालचर रैलियां अथवा सेन्ट जान एम्बुलेन्स शिविर और प्रतियोगितायें अथवा ग्रामों में कृषि विस्तार सेवा अथवा शैक्षिक परिभ्रमण में जाने की अनुमति दी जाती है, कक्षा में उपस्थिति के लिए वांछित लाभ दिया जायेगा।

पुनश्च-[1] इस विनियम के अन्तर्गत कक्षा में उपस्थिति का समस्त लाभ उपस्थिति अथवा व्याख्यान पंजिका में इस सम्बन्ध में टिप्पणी सहित दिखाना चाहिए। इस प्रकार के लाभ से समस्त लेख भली-भांति रखे जाने चाहिए।

[2] चुने हुए छात्रों के वर्ग के लिए तथा पूरी कक्षा के लिए सही लगायी गई विशेष कक्षा की उपस्थिति के लाभ की अनुमति न होगी।

(6) परिषद् की हाईस्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में अनुत्तीर्ण अथवा निरुद्ध छात्रों के सम्बन्ध में केवल एक शैक्षिक वर्ष का प्रतिशत परिगणित किया जायेगा। उस शैक्षिक वर्ष की उपस्थिति जिसके अन्त में छात्र परीक्षा में बैठना चाहता है, परिगणित की जायेगी।

परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि उन छात्रों की दशा में जिन्होंने परिषद् की हाईस्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति के लिए आवेदन न किया हो, परन्तु उनके नाम संस्था की उपस्थिति पंजी में हो अथवा आवेदन-पत्रों के प्रस्तुत कर दिये जाने के पश्चात् भी परिषद् की परीक्षा मे सम्मिलित न हुए हों, दो शैक्षिक वर्षों का प्रतिशत परिगणित किया जायेगा।

''निरुद्ध'' का तात्पर्य किसी भी कारण से हाईस्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में रोके जाने से है।

(7) छात्र द्वारा इस परिषद् के अधिक्षेत्र से बाहर किसी संस्था में परिषद् की हाईस्कूल परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्राप्त परीक्षा की तैयारी में अर्जित उपस्थिति हाईस्कूल परीक्षा के लिए उपस्थिति के प्रतिशत की गणना परिगणित कर ली जायेगी।

(8) हाईस्कूल परीक्षा में अंकों की सन्निरीक्षा के फलस्वरूप सफल घोषित छात्र के सम्बन्ध में प्रथम शैक्षिक वर्ष सन्निरीक्षा का परिणाम सूचित किये जाने के दस दिन पश्चात् प्रारम्भ हुआ समझा जायेगा।

*(9) इस परिषद् अथवा अन्य किसी समकक्ष परीक्षा निकाय के रुके हुए परीक्षाफल घोषित होने के बाद किसी मान्यता प्राप्त संस्था के कक्षा-11 में प्रवेश पाने वाले छात्र की उपस्थिति की गणना परीक्षाफल घोषित होने के दसवें दिन से होगी।

(10) कोई छात्र, जो विनियम 4, अध्याय चौदह में उल्लिखित किसी संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त अथवा सम्बद्ध कालेज में सत्र के किसी भाग में रहा है, परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त कालेज में प्रविष्ट हो सकता है और उस कालेज में उनकी उपस्थिति के व्याख्यान इण्टरमीडिएट परीक्षा में वांछित उपस्थिति के प्रतिशत के लिए परिगणित कर लिए जायेंगे।

(11) मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधानों का नितान्त असंतोषजनक कार्य करने वालों को छोड़कर परीक्षार्थियों को रोकने की अनुमति नहीं है, जिन्होंने परिषद् की किसी परीक्षा में प्रवेश की शर्तों को पूरा कर लिया है।

प्रतिबन्ध यह है कि इस विनियम के अन्तर्गत कक्षा को पूरी संख्या के 10 प्रतिशत से अधिक छात्र नहीं रोके जायेंगे। मान्यता संस्थाओं के प्रधान छात्रों को रोकने के अधिकार का प्रयोग लिखित परीक्षा प्रारम्भ होने के तीन सप्ताह पूर्व तक कर सकते हैं और उनके इस निर्णय के विरुद्ध कोई अपील नहीं हो सकेगी। मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान, सचिव को एक बार स्थिति की सूचना देने के पश्चात् अपने निर्णय को संशोधित नहीं करेंगे।

(12) ऊपर के खण्ड (1) में सम्मिलित शर्तों के होते हुए भी मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान ऐसे छात्रों को परिषद् की होने वाली परीक्षा में बैठने से रोक सकते हैं, जो शरीर शिक्षा, एन0सी0सी0 अथवा पी0एस0डी0 के लिए दिये हुए समस्त सामान तथा वर्दियां नहीं लौटाते हैं अथवा उनके खो जाने पर परिषद् की परीक्षा से पूर्व 15 फरवरी तक उनका मूल्य नहीं दे देते हैं।

(13) न्यूनतम उपस्थिति के नियम का कड़ाई से पालन किया जायेगा, किसी मान्यता प्राप्त संस्था का प्रधान उपस्थिति की कमी का मर्षण अधिकतम-

[क] हाईस्कूल परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए 10 दिन का और [ख] इण्टरमीडिएट परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए प्रत्येक विषय में दिये गये 10 व्याख्यान (क्रियात्मक कार्य के घण्टों सहित यदि हो) कर सकता है, ऐसे समस्त मामलों की सूचना जिसमें इस विशेषाधिकार का प्रयोग किया जाता है, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) को परिषद् के सभापति के रूप में दी जायेगी।

तथापि उन परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में जिनकी केवल एक वर्ष की उपस्थिति ही परिगणित होनी है, मर्षण की यह सीमा केवल आधी अर्थात् पांच दिन अथवा पांच व्याख्यान जैसी स्थिति हो, रह जायेगी।

पुनश्च-(क) 75 प्रतिशत दिन अथवा व्याख्यान जिनमें एक परीक्षार्थी को उपस्थिति रहना है अथवा (ख) उनकी उपस्थिति में कमी परिगणित करने में एक दिन अथवा व्याख्यान को भिन्न पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

विषय परिवर्तन

6-मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान कक्षा 9 में विषय/विषयों में परिवर्तन की तथा कक्षा 11 में एक ही वर्ग में अथवा एक वर्ग से दूसरे वर्ग में विषय परिवर्तन की अनुमति दे सकते हैं। कक्षा 10 में एक ही विषय/विषयों तथा कक्षा 12 में एक ही वर्ग में विषय अथवा विषयों के अथवा एक वर्ग से दूसरे वर्ग में परिवर्तन की साधारणतः अनुमति नहीं दी जाती है, परन्तु विशेष परिस्थितियों में मुख्य रूप से अनुत्तीर्ण अथवा रोके गये परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में परिवर्तन की आज्ञा दी जा सकती है और इस प्रकार ऐसे मामलों की सूचना परिषद् को कारणों सहित दी जानी चाहिए। एक से अधिक विषय परिवर्तित करने की आज्ञा बहुत ही कम दी जानी चाहिए। परीक्षार्थी के एक विषय की उपस्थिति, जिसे वह बाद में संस्था के प्रधान की अनुमति से परिवर्तित करता है। नये विषयों की उपस्थिति के साथ नये विषय में इसकी उपस्थिति का प्रतिशत परिगणित करने के लिए परिगणित की जायेगी। परीक्षा में बैठने का आवेदन-पत्र सचिव के पास अग्रसारित कर देने के पश्चात् विषय में परिवर्तन की अनुमति कदापि नहीं जायेगी।

---

*राजाज्ञा संख्या 1657/15-7-06-1(210)/2003 टी0सी0, दिनांक 9-5-2006 द्वारा संशोधित (विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/120, दिनांक 11 मई, 2006) 2006 की परीक्षा से प्रभावी।

छात्रों का प्रवेश एवं प्रोन्नति

7-कोई छात्र जिसने कभी किसी मान्यता प्राप्त संस्था में शिक्षा नहीं पायी है अथवा जिसने कक्षा-10 में प्रोन्नति होने से पूर्व मान्यता प्राप्त संस्था को छोड़ दिया परन्तु जिसे व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में हाईस्कूल परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त हो गयी है और उसमें बैठ नहीं सका, कक्षा-10 में प्रवेश का पात्र नहीं होगा। इसी प्रकार कोई छात्र जिसने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मान्यता प्राप्त संस्था में अध्ययन नहीं किया अथवा कक्षा-12 में प्रोन्नति होने से पूर्व जिसने मान्यता प्राप्त संस्था को छोड़ दिया परन्तु जिसे व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रवेश का पात्र नहीं होगा।

7-(क) मान्यता प्राप्त संस्था के प्रधान का, छात्रों का कक्षा-9 से 10 अथवा 11 से 12 में प्रोन्नति करने का निर्णय प्रत्येक वर्ष के मार्च के अन्त तक अन्तिम रूप से हो जायेगा।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी
प्रवेश के नियम

*8-व्यक्तिगत परीक्षार्थी अथवा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था में निर्धारित और अपेक्षित उपस्थिति के बिना परीक्षा में प्रवेश चाहने वाले व्यक्ति निम्नलिखित शर्तों पर परिषद् की परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे-

(1) कोई व्यक्ति, जो व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा में बैठना चाहता है, आगामी परीक्षा के लिए निर्धारित तिथि से पूर्व 20 अगस्त तक एक आवेदन-पत्र परीक्षा के लिए निर्धारित शुल्क सहित उस संस्था के प्रधान द्वारा जो परीक्षा का पंजीकरण केन्द्र है, सचिव के पास प्रेषित करेगा। आवेदन-पत्र निर्धारित प्रपत्र पर परीक्षार्थी द्वारा विधिवत् भरा जाना चाहिए, जिसमें उनके द्वारा लिए जाने वाले विषयों का स्पष्ट उल्लेख हो। आवेदन-पत्र निम्नलिखित के साथ सचिव को उनके द्वारा विनिर्दिष्ट रीति से प्रेषित किया जायेगा-

(क) इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए विनियम-2, अध्याय चौदह में वर्णित अथवा हाईस्कूल परीक्षा के लिए विनियम 10(1), अध्याय बारह में वर्णित परीक्षा में उत्तीर्ण होने के प्रमाण-पत्र की यथार्थ प्रतिलिपि।

(ख) परीक्षार्थी को अंतिम संस्था, यदि कोई हो, द्वारा दी गयी छात्र पंजी की मूल प्रति।

(ग) जिस श्रेणी के परीक्षार्थियों के लिए शिक्षा विभागीय पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित हो उनकी पत्राचार पाठ्यक्रम के अनुकरण के सम्बन्ध में संस्थान द्वारा दिये गये प्रमाण-पत्र की यथार्थ प्रतिलिपि जो परीक्षा की तिथि पर वैध और मान्य हो।

उन संस्थाओं के प्रधान जो परिषद् के परीक्षाओं के पंजीकरण केन्द्र है, ऐसे व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र जो पात्र है, जांच करके तथा सचिव द्वारा विहित प्रपत्रों की पूर्ति करके उनके द्वारा विनिर्दिष्ट रीति से अग्रसारित करेंगे। अपूर्ण अथवा अनर्ह अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र को अग्रसारण अधिकारी द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा तथा इसकी सूचना परिषद् को दी जायेगी। अग्रसारण अधिकारी परीक्षा में बैठने वाले पात्र अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र इस प्रकार अग्रसारित करेंगे कि परीक्षाओं की तिथि से पूर्व प्रत्येक दशा में अधिक से अधिक 20 सितम्बर तक पहुंच जायें। इसके पश्चात् प्राप्त आवेदन-पत्रों पर किसी दशा में विचार नहीं किया जायेगा। अपूर्ण एवं अशुद्ध तथा विलम्ब से आवेदन-पत्र तथा अन्य निर्दिष्ट पत्रजात प्रेषित करने वाले अग्रसारण अधिकारियों के विरुद्ध परिषद् को जैसा कि वह निर्णय करे कार्यवाही (जिसमें अग्रसारण पारिश्रमिक में कटौती भी सम्मिलित है) करने का अधिकार होगा, अभिप्रेति पूर्व परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु अपने से सेवायोजक से अनापत्ति प्रमाण-पत्र प्राप्त कर प्रस्तुत करेगा। तथ्यों को छिपाना संज्ञेय अपराध होगा और इससे परीक्षाफल निरस्त किया जा सकता है।

(व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए निर्धारित आवेदन-पत्र प्राप्त करने की विधि)

(1) व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए परिषद् की किसी परीक्षा में बैठने की अनुमति हेतु निर्धारित आवेदन-पत्र का प्रारूप सचिव द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा।

(2) विशेष दशाओं में अग्रसारण अधिकारी 100 रु0 विलम्ब शुल्क के रूप में लेकर 06 सितम्बर तक आवेदन-पत्र ले सकते हैं, परन्तु उनके द्वारा यथाविधि परीक्षित तथा हस्ताक्षरित होकर आवेदन-पत्र सचिव के पास अधिक से अधिक 20 सितम्बर तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए। इस तिथि के पश्चात् कोई आवेदन स्वीकार नहीं किया जायेगा।

(3) व्यक्तिगत परीक्षार्थी किसी भी दशा में आवेदन-पत्र सचिव को सीधे नहीं भेजेंगे। सचिव को सीधे प्रेषित समस्त आवेदन-पत्र रद्द समझे जायेंगे।

---

*राजाज्ञा संख्या 3514/15-7-06-1(131)-2006, दिनांक 17 अगस्त, 2006 द्वारा (विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/444, दिनांक 19 अगस्त, 2006) संशोधित/तत्काल से प्रभावी।

अग्रसारण अधिकारियों का पारिश्रमिक

9-ऐसी संस्था के प्रधान, जो परिषद् की परीक्षा का पंजीकरण केन्द्र है अथवा ऐसे अन्य व्यक्ति को इस प्रयोजन हेत सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियुक्त किये जाये इस अध्याय के विनियम 8 में विहित विधि से आवेदन-पत्र की समय से प्राप्ति, विहित अर्हताओं तथा विनिर्दिष्ट प्रपत्र आदि की जांच तथा समय से प्रेषण के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे। इस हेतु उन्हें पांच रुपये प्रति परीक्षार्थी की दर से पारिश्रमिक देय होगा जिसमें से वे दो रुपये प्रति परीक्षार्थी की दर से उपर्युक्त कार्य में अपनी सहायता करने वाले व्यक्ति को देंगे। अग्रसारण अधिकारी आवेदन-पत्र सचिव को भेजने के पश्चात् पारिश्रमिक पावना-पत्र सचिव को भेजेंगे। ऊपर निर्दिष्ट कार्य में अशुद्धता अथवा विलम्ब आदि के लिए अग्रसारण अधिकारी के पारिश्रमिक में कटौती अथवा उनके विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही परिषद् द्वारा की जा सकेगी। अग्रसारण अधिकारी परीक्षार्थी से किसी प्रकार का अग्रसारण शुल्क नकद नहीं लेंगे। परीक्षार्थी से परिषद् द्वारा निर्धारित शुल्क के अतिरिक्त कोई अन्य शुल्क, चन्दा अथवा दान नहीं लिया जायेगा।

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों की पात्रता

*10-(1) परिषद् अथवा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की कक्षा-9 की परीक्षा अथवा अन्य राज्यों के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित या मान्यता प्राप्त कोई समकक्ष परीक्षार्थी उत्तीर्ण परीक्षार्थी ही हाईस्कूल में व्यक्तिगत परीक्षा के रूप में बैठने के लिए पात्र होंगे किन्तु शिक्षा विभाग, उ0 प्र0 द्वारा संचालित जू0हा0 स्कूल (कक्षा 8) अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण ऐसे अभ्यर्थी, जो किन्हीं कारणों से कारागार में निरुद्ध होने के कारण कक्षा-9 की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सके, को हाईस्कूल में व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में बैठने हेतु कक्षा 9 उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता से मुक्ति रहेगी।

*(2) कोई परीक्षार्थी जिस वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित होना चाहता है यदि उसके पूर्व के वर्ष की 31 जुलाई के पश्चात् उसने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में (आंग्ल भारतीय विद्यालय को छोड़कर) अध्ययन किया है तो वह व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने का पात्र नहीं होगा।

*(3) आगामी होने वाली हाईस्कूल परीक्षा में व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति उन परीक्षार्थियों को नहीं दी जायेगी, जिन्हें कक्षा-10 के लिए प्रोन्नत प्राप्त होने में सफलता नहीं मिला है।

आंग्ल भारतीय विद्यालय

11-किसी आंग्ल भारतीय विद्यालय को छोड़ने वाला परीक्षार्थी हाईस्कूल परीक्षा में उस शैक्षिक वर्ष के पूर्व तक प्रविष्टि न हो सकेगा, जिसमें कि वह कैम्ब्रिज स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा में प्रवेश का पात्र होता, यदि वह आंग्ल भारतीय विद्यालय में अध्ययन करता रहता। आंग्ल भारतीय विद्यालय में छात्र के रूप में अध्ययन करने वाले किसी ऐसे छात्र का आवेदन-पत्र, जिसका अंतिम विद्यालय आंग्ल भारतीय विद्यालय था, आंग्ल भारतीय विद्यालयों के निरीक्षक द्वारा उस संस्था के आचार्य के लिए अग्रसारित होना चाहिए, जिसे परीक्षार्थी अपने केन्द्र के रूप में चुनता है।

राज्य से बाहर के परीक्षार्थी

12-ऊपर के विनियम 10 अध्याय बारह के अधीन परिषद् के प्रादेशिक अधिक्षेत्रों के बाहर रहने वाले परीक्षार्थियों को परिषद् की परीक्षाओं में व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है, प्रतिबन्ध यह है कि वे अब भी उत्तर प्रदेश के स्थायी निवासी हों तथा कुछ पर्याप्त कारणों से अन्य राज्यों में अस्थायी रूप से प्रब्रजित हो गये हों। ऐसे परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र उन सम्बन्धित राज्यों के मण्डलीय विद्यालय निरीक्षकों द्वारा अग्रसारित होने चाहिए, जिन्हें परीक्षार्थियों के उत्तर प्रदेश में वास्तविक निवास को प्रमाणित करना चाहिए। पचास पैसे के निबन्धन शुल्क के साथ आवेदन-पत्र तथा परीक्षा का निर्धारित शुल्क 1 सितम्बर तक सीधे सचिव के पास न भेजकर उस संस्था के प्रधान को अग्रसारित होना चाहिए, जिसे परीक्षार्थी अपने केन्द्र के रूप में चुनता है।

केन्द्र परिवर्तन और विषय परिवर्तन

13-साधारणतः व्यक्तिगत परीक्षार्थी को आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने के पश्चात् विषय अथवा केन्द्र परिवर्तित करने की आज्ञा न दी जायेगी।

किसी समकक्ष परीक्षा में एक साथ बैठना

14-किसी परीक्षार्थी को जो व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में परिषद् की किसी परीक्षा तथा अन्य निकाय द्वारा संचालित समकक्ष परीक्षा में बैठना चाहता है, परिषद् की परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

---

*राजाज्ञा संख्या 2423/15-7-09-1(140)-2009, दिनांक 22 सितम्बर, 2009 विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/654, दिनांक 07 अक्टूबर, 2009 द्वारा संशोधित।

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों द्वारा क्रियात्मक कार्य पूरा करने का प्रमाण-पत्र

15-इन विनियमों के शर्तों के होते हुए भी कोई व्यक्तिगत परीक्षार्थी परिषद् की किसी परीक्षा के लिए क्रियात्मक कार्य अथवा क्रियात्मक परीक्षा वाले विषयक को ले सकता है, प्रतिबन्ध यह है कि यदि चुना हुआ विषय भौतिक विज्ञान अथवा रसायन विज्ञान अथवा जीव विज्ञान अथवा कृषि विज्ञान अथवा चित्रकला और सैन्य विज्ञान अथवा भू-गर्भ विज्ञान है तो उसे परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त एक संस्था में परीक्षा के लिए उस विषय में निर्धारित समस्त क्रियात्मक एवं लिखित कार्य उसी सत्र में जिसमें वह परीक्षा में बैठना चाहता है, पूरा करना चाहिए और इस सम्बन्ध में संस्था के प्रधान का एक प्रमाण-पत्र परीक्षा की तिथि से पूर्व की जनवरी के अन्त तक प्रस्तुत करना चाहिए। किसी परीक्षार्थी को जो एक बार परीक्षा में बैठ चुका है तथा अनुत्तीर्ण हो चुका है, उस विषय के क्रियात्मक कार्य अथवा क्रियात्मक परीक्षा के सम्बन्ध में जिसमें वह पहले ही परीक्षा दे चुका है, प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नहीं करना पड़ेगा।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी समिति

16-अभिप्रेत व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र जो अग्रसारण अधिकारियों से यथाविधि परीक्षित तथा हस्ताक्षरित होकर प्राप्त हो, विनियम 3 अध्याय छः के अधीन नियुक्त उप समिति के पास संनिरीक्षा के लिए भेजे जायेंगे। संनिरीक्षा के पश्चात् उप समिति द्वारा ये आवेदन-पत्र स्वीकृत या अस्वीकृत किये जायेंगे।

अतिरिक्त विषयों में प्रवेश की पात्रता

17-इन विनियमों की शर्तों के होते हुए भी निम्नलिखित श्रेणी के परीक्षार्थी भी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट हो सकते हैं-

(1) कोई परीक्षार्थी जिसने हाईस्कूल अथवा उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की है, बाद की हाईस्कूल परीक्षा में एक अथवा अधिकतम पांच विषयों में (कम्प्यूटर विषय छोड़कर) प्रविष्ट हो सकता है और ऐसा परीक्षार्थी यदि सफल हो जावे तो वह अतिरिक्त लिए उत्तीर्ण विषय अथवा विषयों में परीक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र पाने का अधिकारी होगा और उसे कोई श्रेणी नहीं दी जायेगी।

(2) कोई परीक्षार्थी जिसने इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष कोई परीक्षा उत्तीर्ण की है बाद की इण्टरमीडिएट परीक्षा में एक अथवा अधिकतम चार विषयों (कम्प्यूटर वर्ग तथा व्यवसायिक वर्ग के विषयों को छोड़कर) बैठ सकता है और वह परीक्षार्थी यदि सफल हो जाये तो उसके द्वारा उपहृत किये गये विषय अथवा विषयों में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र पाने का अधिकारी होगा और उसे कोई श्रेणी नहीं दी जायेगी। प्रतिबन्ध यह है कि विषय अथवा विषयों का चुनाव केवल एक वर्ग तक ही सीमित हो।

(3) इस विनियम के अन्तर्गत सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थी उन विषय अथवा विषयों का चयन नहीं कर सकेंगे, जो उनके द्वारा पूर्व की हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में जिसमें वह उत्तीर्ण हुए थे, लिये गये थे। साथ ही परीक्षार्थी आधुनिक भारतीय, विदेशी तथा शास्त्री भाषा समूहो के प्रत्येक समूह में से केवल एक ही भाषा का चयन कर सकेंगे।

(4) परीक्षार्थी, इस विनियम के अन्तर्गत एक बार में केवल एक ही परीक्षा (हाईस्कूल अथवा इण्टरमीडिएट) में प्रविष्ट हो सकेंगे।

(5) हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट की सम्पूर्ण परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थी इस विनियम के अन्तर्गत परीक्षा में बैठने के पात्र नहीं होंगे।

(6) इस विनियम के अन्तर्गत परीक्षार्थी के किसी विषय अथवा विषयों में अनुत्तीर्ण होने पर कोई अनुग्रहांक (ग्रेस) देय नहीं होगा।

**(7) निम्नलिखित परीक्षाओं को परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्राप्त है :-

1-बोर्ड आफ इण्टरमीडिएट एजूकेशन (आन्ध्र प्रदेश)।

2-असम हायर सेकेण्डरी एजूकेशन काउन्सिल, गुवाहाटी।

3-गर्वमेन्ट ऑफ कर्नाटका डिपार्टमेन्ट ऑफ प्री-यूनीवर्सिटी एजूकेशन, बंगलोर।

4-काउन्सिल ऑफ हायर सेकेण्डरी एजूकेशन, उड़ीसा।

5-बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन उत्तराखण्ड, रामनगर, नैनीताल।

**राजाज्ञा संख्या 384/15-7-2014-1(92)-2012, दिनांक 05 मार्च, 2014 विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/836, दिनांक 05 मार्च, 2014।

6-गुजरात सेकेण्डरी एण्ड हायर सेकेण्डरी एजूकेशन बोर्ड, गांधीनगर।

7-केरला बोर्ड ऑफ पब्लिक एक्जीामिनेशन, तिरूवनन्तपुरम्।

8-महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड आफ सेकेण्डरी एण्ड हायर सेकेण्डरी एजूकेशन, पुणे।

9-काउन्सिल आफ हायर सेकेण्डरी एजूकेशन, मणीपुर, इम्फाल।

10-वेस्ट बंगाल काउन्सिल आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, कोलकता।

11-माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0 द्वारा संचालित उत्तर, मध्यमा परीक्षा।

12-उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद्, लखनऊ द्वारा संचालित आलिम परीक्षा।

13-बिहार स्कूल एग्जामिनेशन बोर्ड, पटना।

14-सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, नई दिल्ली।

15-छत्तीसगढ़ बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजूकेशन, रायपुर।

16-काउन्सिल फार दि इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट एग्जामिनेशन, नई दिल्ली।

17-दयालबाग एजूकेशन इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा।

18-गोवा बोर्ड आफ सेकेण्डरी एण्ड हायर सेकेण्डरी एजूकेशन, गोवा।

19-बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन हरियाणा, भिवानी।

20-हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, कांगड़ा।

21-जे0 एण्ड के0 स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, जम्मू।

22-झारखण्ड एकेडमी काउन्सिल, रांची।

23-माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश, भोपाल।

24-मेघालय बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, मेघालय।

25-मिजोरम बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, ऐजाल।

26-नागालैण्ड बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन कोहिमा।

27-पंजाब स्कूल एजूकेशन बोर्ड, मोहाली।

28-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर।

29-स्टेट बोर्ड आफ स्कूल एक्जामिनेशन (सेकेण्डरी) एवं बोर्ड आफ हायर सेकेण्डरी एक्जामिनेशन, तमिलनाडू।

30-त्रिपुरा बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, अगरतला।

31-राष्ट्रीय ओपेन स्कूल नई दिल्ली द्वारा संचालित सीनियर सेकेण्डरी (उच्च माध्यमिक) परीक्षा इस प्रतिबन्ध के साथ कि यह परीक्षा कम से कम पांच विषयों में उत्तीर्ण की गई हो।

32-भारत में विधि द्वारा स्थापित ऐसे परीक्षा संस्था/विश्वविद्यालय द्वारा संचालित इण्टरमीडिएट अथवा इसके समकक्ष संचालित परीक्षायें जिनके सम्बन्ध में सचिव, माध्यमिक शिक्षा, उ0 प्र0 शासन का समाधान हो गया है, परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा के समकक्ष मान्य होगी।

श्रेणियां

***18-इन विनियमों में, जहां इससे प्रतिकूल प्रावधान हो, उसे छोड़कर परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों के नाम तीन श्रेणियों में रखे जायेंगे। कोई परीक्षार्थी जो सम्पूर्ण योगांक के 75 प्रतिशत अथवा अधिक अंकों से उत्तीर्ण होता है, सम्मान सहित उत्तीर्ण हुआ भी दिखाया जायेगा।

***राजाज्ञा संख्या 1718/15-7-09-1(252)-2008, दिनांक 29 जून, 2009 विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/250, दिनांक 04 जुलाई, 2009 द्वारा संशोधित।

19-जो परीक्षार्थी एक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है, बाद की एक अथवा अधिक परीक्षाओं में संस्थागत अथवा व्यक्तिगत परीक्षाओं के रूप में प्रविष्ट हो सकता है, इस प्रतिबन्ध के साथ कि उसे ऐसे प्रत्येक अवसर पर सचिव को आश्वस्त करना होगा कि उसने परिषद् की परीक्षाओं में परीक्षार्थियों के प्रवेश के लिए निर्धारित शर्तों की पूर्ति कर दी है।

*19-(क) हाईस्कूल (कक्षा 9 एवं 10) तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में अभ्यर्थी केवल एक ही माध्यम (संस्थागत अथवा व्यक्तिगत) से आवेदन-पत्र भर कर परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है। किसी भी दशा में अभ्यर्थी को एक परीक्षा वर्ष में एक से अधिक संस्था/संस्थओं से संस्थागत अथवा व्यक्तिगत अथवा दोनों प्रकार से आवेदन-पत्र भरने अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं होगी। तथ्यों को छिपाना अपराध होगा। इस विनियम के उल्लंघन का दोषी पाये जाने वाले अभ्यर्थियों की अभ्यर्थिता निरस्त कर दी जायेगी तथा उनके विवरण यदि परिषदीय अभिलेखों में अंकित हो गये हैं, तो उन्हें विलुप्त करा दिया जायेगा अथवा अभ्यर्थी के परीक्षा में अनियमित रूप से सम्मिलित होने की दशा में परीक्षाफल निरस्त कर दिया जायेगा, जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व अभ्यर्थी का होगा।

†20-परिषदीय परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को निम्न व्यवस्थाओं के अनुसार अनुग्रहांक देय होगा-

(क) हाईस्कूल परीक्षा के संदर्भ में-

(1) हाईस्कूल स्तर पर छः लिखित विषयों में से किन्हीं पांच विषयों में उत्तीर्ण होने पर परीक्षार्थी को उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा। जिस विषय में परीक्षार्थी अनुत्तीर्ण हो उसे उसी वर्ष की जुलाई माह में पुनः परीक्षा में बैठने की अनुमति प्रदान की जायेगी। उत्तीर्ण होने की दशा में परीक्षार्थी को अनुत्तीर्ण हुए विषय में आगे अध्ययन करने की सुविधा रहेगी।

(2) हाईस्कूल स्तर पर दो विषयों में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी को उनकी इच्छानुसार किसी एक विषय में इम्प्रूवमेन्ट या कम्पार्टमेन्ट परीक्षा देने की अनुमति जुलाई माह में प्रदान की जायेगी। यह सुविधा केवल एक विषय तक ही सीमित रहेगी। अंक-पत्र में इस आशय का अंकन नहीं किया जायेगा कि परीक्षार्थी ने इम्प्रूवमेन्ट या पूरक परीक्षा दी है। ऐसे परीक्षार्थियों को हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण होने की दशा में उसी वर्ष कक्षा 11 में प्रवेश दिया जायेगा।

(ख) इण्टर परीक्षा (सामान्य तथा व्यावसायिक) के संदर्भ में-

(1) परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रविष्ट परीक्षार्थी यदि किन्हीं दो विषयों जिसमें प्रयोगात्मक परीक्षा नहीं होती है में अनुत्तीर्ण रहे और दोनों विषय में उसे पृथक्-पृथक् 25 प्रतिशत या अधिक अंक मिले हो तो उसे उन अनुत्तीर्ण हुए विषयें में पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित उत्तीर्णांक तक अंक पाने के लिए उसके सम्पूर्ण योग के आधार पर परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों के अनुसार आवश्यक अंक अनुग्रहांक के रूप में देकर उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा और श्रेणी दी जायेगी।

(2) परिषद् की परीक्षा में प्रविष्ट किसी परीक्षार्थी को जो ऐसे विषयों का चयन करता है जिसमें लिखित के साथ-साथ प्रयोगात्मक परीक्षा भी होती है को अनुग्रहांक हेतु प्रयोगात्मक वाले दो विषयों जिसमें वह अनुत्तीर्ण रहता है, में लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में अलग-अलग 25 प्रतिशत या अधिक अंक पाना अनिवार्य होगा। इस प्रकार प्रयोगात्मक वाले विषयों में परीक्षार्थी द्वारा लिखित तथा प्रयोगात्मक दोनों खण्डों में अलग-अलग 25 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर ही वह अनुग्रहांक पाने के लिए हकदार होगा। प्रतिबन्ध यह है कि परीक्षार्थी को एक खण्ड लिखित अथवा प्रयोगात्मक खण्ड में से किसी एक ही खण्ड में अनुग्रहांक देय होगा। किसी भी दशा में परीक्षार्थी को दोनों खण्डों (लिखित तथा प्रयोगात्मक) में अनुत्तीर्ण होने पर अनुग्रहांक देय नहीं होगा। ऐसे परीक्षार्थी को अनुत्तीर्ण हुए विषय में पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित उत्तीर्णांक तक अंक पाने के लिए उसके सम्पूर्ण योग के आधार पर परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों के अनुसार आवश्यक अंक अनुग्रहांक के रूप में देकर उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा और श्रेणी दी जायेगी। प्रयोगात्मक विषयों में लिखित तथा प्रयोगात्मक खण्डों हेतु पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित पृथक्-पृथक् पूर्णांक के आधार पर 25 प्रतिशत अंकों का निर्धारण किया जायेगा।

**(3) अभ्यर्थी को दो विषयों में आठ अंक की सीमा तक ही अनुग्रहांक उनकी अर्हतानुसार देय होगा।

(ग) हाईस्कूल परीक्षा में परीक्षार्थियों के अंक-पत्र तथा प्रमाण-पत्र में प्रथम, द्वितीय अथवा तृतीय श्रेणी का उल्लेख नहीं किया जायेगा। अंक-पत्र में केवल विषयवार अंकों का उल्लेख करते हुए पास अथवा फेल के कुल प्राप्तांक का उल्लेख भी नहीं रहेगा।

---

*दिनांक 04-08-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/250, दिनांक 28-07-2001 द्वारा सम्मिलित।

**राजाज्ञा संख्या 1657/15-7-06-1(210)-2003 टी0सी0, दिनांक 9-5-2006, विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/120, दिनांक 11 मई, 2006 द्वारा संशोधित 1 वर्ष 2006 की परीक्षा से प्रभावी।

†राजाज्ञा संख्या : 1718/15-7-09-1(252)/2008, दिनांक 29 जून, 2009 विज्ञप्ति संख्या : परिषद् 9/250, दिनांक 04 जुलाई, 2009 द्वारा प्रभावित एवं तत्काल प्रभाव से प्रभावी।

परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा में श्रेणी प्रदान की योजना निम्नवत् होगी :-

सम्मान सहित उत्तीर्ण होने के लिए वांछित न्यूनतम अंक	सम्पूर्ण योग का 75 प्रतिशत
प्रथम श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	योगांक का 60 प्रतिशत
द्वितीय श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	योगांक का 45 प्रतिशत
तृतीय श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	योगांक का 33 प्रतिशत
	जहां इसके प्रतिकूल उल्लेख न हो।

नोटः-1-एक विषय में योगांक का 75 प्रतिशत होने पर विषय में विशेष योग्यता प्रदान की जायेगी।

2-कृषि तथा व्यावसायिक वर्ग की परीक्षा के लिए विस्तृत योजना पूर्णांक तथा न्यूनतम उत्तीर्णांक विवरण पत्रिका में पृथक् से दिये गये हैं।

सन्निरीक्षा उसकी कार्य-विधि

*21-हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट के परीक्षार्थी जो अपनी उत्तर-पुस्तिकें सन्निरीक्षित कराना चाहते हैं, निम्नलिखित नियमों के अनुसार करा सकते हैं :-

(क) कोई परीक्षार्थी जो परिषद् द्वारा संचालित परीक्षा में प्रविष्ट हुआ है, विषयों के अपने अंकों की संनिरीक्षा के लिए आवेदन-पत्र दे सकता है।

(ख) सन्निरीक्षा हेतु आवेदन-पत्र के साथ रु0 100.00 विषय के प्रति प्रश्न-पत्र की दर से निर्धारित शुल्क का कोष-पत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। प्रयोगात्मक की सन्निरीक्षा हेतु रु0 100.00 का शुल्क प्रति प्रयोगात्मक विषय पृथक् से देय होगा। उत्तर प्रदेश के बाहर के स्थान से आवेदन-पत्र भेजने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में यह शुल्क सचिव के कार्यालय में रेखित पोस्टल आर्डर अथवा स्टेट बैंक आफ इण्डिया की इलाहाबाद शाखा पर रेखित बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजा जाना चाहिए।

(ग) समस्त आवेदन-पत्र परीक्षाफल घोषणा की तिथि से 30 दिन की अवधि के अन्दर परिषद् कार्यालय को अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए। निर्धारित अवधि के पश्चात् प्राप्त आवेदन-पत्रों पर कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी। आवेदन-पत्र के साथ एक सादा लिफाफा पते सहित (जिस पते पर परीक्षार्थी सन्निरीक्षा परिणाम की सूचना चाहता है) संलग्न करना अनिवार्य होगा, जिस पर रजिस्ट्री हेतु निर्धारित शुल्क का डाक टिकट लगा हो।

(घ) इण्टरमीडिएट परीक्षा की उत्तर-पुस्तकों की सन्निरीक्षा हेतु आवेदित समस्त मामलों का निस्तारण परीक्षा वर्ष की 31 जुलाई तक तथा हाईस्कूल की उत्तर-पुस्तकों की सन्निरीक्षा हेतु आवेदित समस्त मामलों का निस्तारण परीक्षा वर्ष की 15 अगस्त तक कर दिया जायेगा। सन्निरीक्षा की समाप्ति पर परीक्षार्थियों को उनके द्वारा उल्लिखित पते पर सन्निरीक्षा परिणाम की सूचना दी जायेगी।

(ङ) सन्निरीक्षा का तात्पर्य उत्तर-पुस्तकों का पुनर्मूल्यांकन नहीं है। सन्निरीक्षा कार्य में परीक्षार्थियों की उत्तर-पुस्तकों में यह देखा जायेगा कि परीक्षार्थी की उत्तर-पुस्तक में क्या अलग-अलग प्रश्नों में दिये गये अंकों का योग करने, उन्हें अग्रेनीत करने अथवा किसी प्रश्न अथवा उसके भाग पर अंक देना छूटने की कोई त्रुटि नहीं हुई है। सन्निरीक्षा कार्य में परीक्षार्थियों को उत्तर-पुस्तकों में परीक्षक द्वारा मूल्यांकित प्रश्नों के उत्तरों का पुर्नमूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

शुल्क

● 22-परिषद् द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित शुल्क लिये जायेंगे-

1-हाईस्कूल परीक्षा	(क) किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 80 रुपये। (ख) प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 100 रुपये।
2-विखण्डित	
3-इण्टरमीडिएट परीक्षा	(क) किसी मान्यता प्राप्त संस्था के परीक्षार्थी से 90 रुपये। (ख) प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 150 रुपये।
*4-(क) विखण्डित	
*(ख) विखण्डित	
●(ग) इण्टरमीडिएट कृषि (भाग-1) परीक्षा	किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 80 रुपये।

*दिनांक 13-01-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/579, दिनांक 7-12-2000 द्वारा सम्मिलित तथा वर्ष 2001 की परीक्षा से प्रभावी।

**राजाज्ञा संख्या 1657/15-7-06-1(210)-2003 टी0सी0, दिनांक 9-5-2006, विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/120, दिनांक 11 मई, 2006 द्वारा संशोधित 1 वर्ष 2006 की परीक्षा से प्रभावी।

● राजाज्ञा संख्या 4887/15-7-2003/1(239)/1991, दिनांक 14 अक्तूबर, 2003 द्वारा संशोधित तथा दिनांक 25-10-2003 के राजकीय गजट में विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/459, दिनांक 25-10-2003 द्वारा प्रकाशित।

•(घ) इण्टरमीडिएट कृषि (भाग-1) परीक्षा	प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से रु0 150।
•(ङ) इण्टरमीडिएट कृषि (भाग-2) परीक्षा	किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 80 रुपये।
•(च) इण्टरमीडिएट कृषि (भाग-2) परीक्षा	प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 150 रुपये।
•(छ) विनियम 9 (क) अध्याय चौदह के अन्तर्गत	केवल अंग्रेजी में इण्टरमीडिएट परीक्षा 25 रुपये।
•(ज) विनियम 9 (क) अध्याय चौदह के अन्तर्गत	शेष विषयों में इण्टरमीडिएट परीक्षा 100 रुपये।
**5-हाईस्कूल की पूरक परीक्षा अथवा एक विषय में प्रविष्ट होने वाले परीक्षार्थियों से शुल्क, उपर्युक्त विनियमों के प्रावधान हाईस्कूल परीक्षा (कक्षा-10) में वर्ष 2010 की परीक्षा से प्रभावी होंगे	250 रुपये।
6-विखण्डित	
†7-मार्च/अप्रैल की मुख्य परीक्षा में एक अथवा अधिक विषयों की परीक्षा	200 रुपये प्रति विषय।
8-परीक्षार्थियों के परीक्षाफल की सन्निरीक्षा का शुल्क	100 रुपये विषय के प्रति प्रश्न-पत्र।
9-(क) किसी संस्थागत परिक्षार्थी द्वारा किसी परीक्षा में प्राप्त अंकों के प्रेषण का अनिवार्य शुल्क	1 रुपये इस शुल्क का आधा सम्बन्धित संस्था के प्रधान द्वारा रख लिया ब्योरेवार जायेगा, जो परिषद् से सुसंगत सूचना प्राप्त होने के पश्चात् प्रत्येक परीक्षार्थी को उसके ब्योरेवार अंक ठीक ढंग से मुद्रित प्रपत्र में प्रेषित करेंगे। संस्था के प्रधान द्वारा रखे गये शुल्क का विवरण निम्नवत् होगा- (क) नामावली बनाने हेतु 12.5 प्रतिशत। (ख) संख्या सूचक चक्र निर्माण हेतु 12.5 प्रतिशत। (ग) प्राप्तांक पत्रों को तैयार करने तथा उसकी जांच हेतु 50 प्रतिशत। (घ) प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक टिकट तथा लेखन-सामग्री इत्यादि के मदों में व्यय हेतु 25 प्रतिशत।
	यंत्रीकरण वाले संस्थाओं को स्थिति में शुल्क को केवल 25 प्रतिशत धनराशि संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र के अधीक्षक द्वारा जैसी स्थिति हो, रोक ली जायेगी, जिसका प्रयोग प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक व्यय तथा लेखन-सामग्री आदि के मदों में व्यय हेतु किया जायेगा।
(ख) किसी संस्थागत परीक्षा के अंक-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क	20 रुपये।
10-(क) किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी द्वारा प्राप्त ब्योरेवार अंकों के प्रेषण का शुल्क	02 रुपये इस शुल्क का आधा सम्बन्धित केन्द्र के अधीक्षक द्वारा रख लिया जायेगा जो परिषद के सचिव से सुसंगत सूचना प्राप्त होने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी को उसके ब्योरेवार अंक ठीक ढंग से मुद्रित पत्र में प्रेषित करेंगे। केन्द्र अधीक्षक द्वारा रखे गये शुल्क की धनराशि का विवरण निम्नवत् होगा– (क) नामावली बनाने हेतु 12½ प्रतिशत। (ख) संख्या सूचक चक्र के निर्माण हेतु 12½ प्रतिशत। (ग) प्राप्तांक पत्रों को तैयार करने तथा उसकी जांच हेतु 50 प्रतिशत। (घ) प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक टिकट तथा लेखन-सामग्री आदि की मदों में व्यय हेतु 25 प्रतिशत। यंत्रीकरण वाले संस्थाओं को स्थिति में शुल्क को केवल 25 प्रतिशत धनराशि संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र के अधीक्षक द्वारा, जैसी स्थिति हो, रोक ली जायेगी जिसका प्रयोग प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक व्यय तथा लेखन-सामग्री आदि की मदों में व्यय हेतु किया जायेगा।

†दिनांक 30-11-2002 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/494, दिनांक 12-11-2002 द्वारा संशोधित वर्ष 2004 की परीक्षा से प्रभावी।

****विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/250, दिनांक 04 जुलाई, 2009 (वर्ष 2010 की परीक्षा से लागू)।**

**दिनांक 12 जुलाई, 2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/165, दिनांक 11 जुलाई, 2003 द्वारा सम्मिलित। वर्ष 2003 की परीक्षा से प्रभावी।

*दिनांक 21-09-2002 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/335, दिनांक 12-09-2002 द्वारा विखण्डित।

(ख) किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के अंक-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क — 20 रुपये

(अंक-पत्रों की द्वितीय प्रतिलिपि सचिव के कार्यालय से प्रेषित की जायेगी जिसके लिये आवेदन-पत्र दिया जाना चाहिये।)

(ग) विखंडित

**11-विलम्ब शुल्क	100 रुपये (किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी द्वारा देय जो परिषद् की किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति का अपना आवेदन-पत्र विनियमों में निर्धारित तिथि के पश्चात् परन्तु अधिकतम 06 सितम्बर तक देता है।)
12-प्रवेश-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क	2 रुपये।
*13-परिषद द्वारा एक परीक्षा के लिये परीक्षार्थी को निर्गत प्रमाण-पत्र में नाम परिवर्तन कराने का शुल्क	20 रुपये।
14-इस अध्याय के विनियम 28 के अन्तर्गत निर्गत प्रमाण-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क	50 रुपये प्रत्येक परीक्षा के लिये।
15-जिस वर्ष में परीक्षा हुई थी उसकी 31 मार्च से 5 वर्ष के अन्दर न लिये गये प्रमाण-पत्र का शुल्क	20 रुपये।
16-किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के लिये प्रवजन प्रमाण-पत्र निर्गत होने का शुल्क	20 रुपये।
17-संस्था के प्रधानों को परीक्षाफल पत्रों की द्वितीय प्रतिलिपियां प्रेषित करने का शुल्क	10 रुपये प्रथम 100 परीक्षार्थियों अथवा उसके अंश के लिये बाद के 100 परीक्षार्थियों अथवा उसके अंश के लिये 5 रुपये।
18-व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र अग्रसारण हेतु शुल्क	5 रुपये।

शुल्क की वापसी

23-किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति के लिए एक बार दिया हुआ शुल्क निम्नलिखित को छोड़कर वापस न होगा :

(क) दशायें, जिसमें पूरे शुल्क की वापसी हो जायेगी-

[एक] परीक्षा से पूर्व परीक्षार्थी की मृत्यु।

[दो] कोई परीक्षार्थी, जो आगे होने वाली परीक्षा के लिये निर्धारित शुल्क देने के पश्चात् सन्निपरीक्षा के फलस्वरूप अथवा अपने रोके हुये परीक्षाफल के मुक्त होने पर सफल घोषित कर दिया जाता है।

[तीन] कोई परीक्षार्थी, जो पूर्व परीक्षा के लिये दिये गये शुल्क, जिसमें वह अस्वस्थता के कारण प्रविष्ट न हो सका, के रोके जाने की समय से सूचना प्राप्त न होने के कारण नया शुल्क जमा कर देता है।

(ख) दशायें, जिसमें एक रुपया कम करके वापसी होगी :

[एक] जब कोई परीक्षार्थी भूल से शुल्क को ''0202-शिक्षा खेल-कला और संस्कृति, 01-सामान्य शिक्षा, 202-माध्यमिक शिक्षा, 02-बोर्ड की परीक्षाओं का शुल्क'' शीर्षक में जमा कर दें यद्यपि वह किसी अन्य निकाय द्वारा संचालित परीक्षा में प्रविष्ट होना चाहता/चाहती है।

[दो] ऐसे परीक्षार्थी के सम्बन्ध में, जिनका आवेदन-पत्र परिषद् अथवा अग्रसारण प्राधिकारी द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो।

[तीन] जब कोई परीक्षार्थी परिषद की किसी परीक्षा के लिये विहित शुल्क से अधिक जमा कर दे।

[चार] जब परिषद की किसी परीक्षा के लिये परीक्षार्थी की ओर से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा गलती से शुल्क जमा कर दिया जाये।

---

*दिनांक 27-1-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/635, दिनांक 27 दिसम्बर, 2000 द्वारा टिप्पणी निरस्त तथा नाम परिवर्तन का शुल्क 20 रुपये निर्धारित किया गया।

**विज्ञप्ति संख्या-परिषद्-9/444, दिनांक 19 अगस्त, 2006 द्वारा संशोधित।

पुनश्च-(क) ''शुल्क'' का तात्पर्य केवल परीक्षा शुल्क से है और उसमें अंक शुल्क अथवा विलम्ब शुल्क सम्मिलित नहीं है।

(ख) शुल्क की वापसी का आवेदन-पत्र शुल्क को कोषागार में जमा करने के दो वर्ष के भीतर ही प्रस्तुत हो सकेगा।

(ग) शुल्क की वापसी के लिये उस अभ्यर्थी के सम्बन्ध में किसी आवेदन-पत्र की आवश्यकता नहीं है जिसका आवेदन-पत्र परिषद् द्वारा रद्द कर दिया गया है।

शुल्क-स्थगन

24-आवेदन-पत्र देने पर परिषद् किसी परीक्षार्थी को, जो किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने से असमर्थ रहा, आगामी होने वाली परीक्षा में प्रवेश की अनुमति उसके शुल्क की स्थगित रखकर निम्नलिखित दशाओं में दे सकता है :

(एक) विखण्डित।

(दो) विखण्डित।

(तीन) परीक्षार्थी परीक्षा के समय भयंकर रूप से रुग्ण था और उसको समर्थ चिकित्सा प्राधिकारी ने यथाविधि प्रमाणित किया है। परीक्षार्थियों के परीक्षा शुल्क स्थगित रखने के आवेदन-पत्र संस्था के प्रधान अथवा सम्बन्धित केन्द्र अधीक्षक द्वारा परिषद् के सचिव कार्यालाय में परीक्षा वर्ष की 1 मई तक पहुँच जाने चाहिये।

पुनश्च-(क) एक बार स्थगित किया गया शुल्क पुनः स्थगित नहीं हो सकेगा।

(ख) मुख्य परीक्षा के तुरन्त बाद में होने वाली पूरक परीक्षा का शुल्क स्थगित करने का आवेदन-पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 15 सितम्बर होगी। अधिक जमा किये शुल्क की वापसी न होगी।

प्रवेश-पत्र तथा उन्हें प्राप्त करने की विधि

25-सचिव अपने को आश्वस्त करने के उपरान्त कि परीक्षार्थी ने परिषद की परीक्षा में प्रवेश हेतु समस्त अपेक्षाओं को पूर्ति कर दी है, उसे प्रवेश-पत्र देगा जिसे परीक्षा केन्द्र के अधीक्षक को प्रस्तुत करके परीक्षार्थी को परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायेगी।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी अपने प्रवेश-पत्र परीक्षा केन्द्रों के अधीक्षकों से लिखित परीक्षा प्रारम्भ होने के प्रथम दिवस से 48 घन्टे पूर्व प्राप्त कर लेंगे, ऐसा न करने पर उन्हें प्रतिदिन अथवा उसके अंश पर 1 रुपये अर्थदण्ड देना होगा।

यदि सचिव आश्वस्त हों कि किसी परीक्षार्थी का प्रवेश-पत्र खो गया अथवा नष्ट हो गया है तो निर्धारित शुल्क दिये जाने पर उसकी द्वितीय प्रतिलिपि दे सकते हैं।

वहिष्करण एवं निष्कासन

26-इन विनियमों की शर्तों के होते हुये भी-

(एक) कोई परीक्षार्थी जो एक शैक्षिक वर्ष के भीतर किसी समय वहिष्कृत कर दिया गया है, उस शैक्षिक वर्ष में होने वाली परीक्षा में प्रवेश नहीं पा सकेगा।

(दो) किसी ऐसे परीक्षार्थी की, जिसकी परिषद् की किसी परीक्षा में प्रवेश के लिये उसका प्रार्थना-पत्र भेज दिये जाने के पश्चात् संस्था से निष्कासित कर दिया गया है और जिसका किसी मान्यता प्राप्त संस्था में प्रवेश नहीं हुआ है, परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं दी जावेगी।

ज्ञातव्य-(क) यदि उपर्युक्त दण्ड उसे परीक्षाकाल में अथवा उसके पश्चात् परन्तु उस शैक्षिक वर्ष की समाप्ति से पूर्व दिया जाता है जिसमें परीक्षा होती है, तो उसकी परीक्षा निरस्त कर दी जायेगी।

(ख) किसी परीक्षार्थी को जो परिषद् द्वारा मान्य किसी परीक्षा निकाय से पारित है, किसी परीक्षा में उस अवधि को समाप्ति से पूर्व, जिसके लिये वह दण्डित है, प्रवेश नहीं मिल सकेगा।

27-(विखण्डित)

प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रति

*28-परिषद्, आवेदन-पत्र देने पर तथा इस अध्याय के विनियम 22(14) के अनुसार निर्धारित शुल्क देने पर किसी परीक्षार्थी का प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रति निम्नलिखित दशाओं में दे सकता है-

(एक) प्रमाण-पत्र खो जाने अथवा नष्ट हो जाने की दशा में।

(दो) प्रमाण-पत्र के खराब हो जाने, विरूपित होने अथवा कट-फट जाने की दशा में परिषद् की अवरुद्ध किये जाने हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है।

(तीन) प्रमाण-पत्र की प्रविष्टियां धूमिल हो जाने की दशा में जो अन्य प्रकार से मजबूत हैं और परिषद् को निरस्त किये जाने के लिये प्रस्तुत किया जाता है।

(चार) आगामी विनियम 32 के प्राविधान के अनुसार अस्वामिक प्रमाण-पत्र नष्ट कर दिये जाने की दशा में।

प्रतिबन्ध यह है कि वर्ग (एक) एवं (दो) और (चार) में परीक्षार्थी अपने आवेदन-पत्रों के साथ शपथ-पत्र भी प्रस्तुत करेंगे। यदि परीक्षार्थी की आयु 20 वर्ष या इससे कम है तो शपथ-पत्र उसके पिता (यदि वह जीवित है) के द्वारा अथवा उसके अभिभावक द्वारा (यदि पिता जीवित नहीं है) निष्पादित किया जायेगा। दोनों ही दशाओं में परीक्षार्थी को शपथ-पत्र की यथा विधि अभिपुष्टि करनी होगी।

यह भी प्रतिबन्ध है कि वर्ग (एक) के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों के द्वारा इस सत्य को इस राज्य के एक दैनिक समाचार-पत्र के एक संस्करण में विज्ञप्ति कराना होगा और इस समाचार-पत्र के संस्करण की प्रति जिसमें विज्ञप्ति निकली है परिषद् के कार्यालय को पूर्व प्रतिबन्ध में अपेक्षित शपथ-पत्र के साथ प्रेषित करनी होगी।

प्रव्रजन प्रमाण-पत्र

29-व्यक्तिगत परीक्षार्थियों को निर्धारित शुल्क देने पर निम्नलिखित प्रपत्र में सचिव द्वारा प्रव्रजन प्रमाण-पत्र निर्गत किये जायेंगे।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश

प्रव्रजन प्रमाण-पत्र

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में परिषद् की परीक्षायें उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों के लिये :

यह प्रमाणित किया जाता है कि ..... पुत्र/पुत्री ..... अनुक्रमांक ..... ने 20..... में हुई हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट परीक्षा ..... केन्द्र से व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में उत्तीर्ण की।

परिषद् को उसके उत्तर प्रदेश से बाहर किसी विश्वविद्यालय अथवा संस्था में प्रविष्ट होने में कोई आपत्ति नहीं है।

इलाहाबाद : सचिव।

ज्ञातव्य-संस्थागत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्टि होने वाले परीक्षार्थियों के लिये प्रव्रजन प्रमाण-पत्र नहीं दिया जाता हैं जिस संस्था में परीक्षार्थी ने अध्ययन किया उसका जिला विद्यालय निरीक्षक से प्रतिहस्ताक्षरित स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रव्रजन प्रमाण-पत्र का कार्य करता है।

30-इस अध्याय के विनियम 28 के होते हुये भी परीक्षार्थी द्वारा प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिये जमा किया हुआ शुल्क वापस नहीं किया जायेगा।

प्रमाण-पत्रों का वितरण

31-प्रमाण-पत्रों का वितरण परिषद् की परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी का प्रमाण-पत्र आचार्य अथवा केन्द्र जैसी स्थिति हो, को भेजा जायेगा, जो परीक्षार्थी को देंगे। जो परीक्षार्थी डाक से अपना प्रमाण-पत्र चाहते हैं वे आचार्य/केन्द्र अधीक्षक को रजिस्टर्ड डाक टिकट तथा लिफाफा भेजकर अथवा निर्धारित प्रावधानानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

अस्वामिक प्रमाण-पत्र

*32-आवेदन-पत्र तथा इस अध्याय के विनियम 22(15) के अन्तर्गत निर्धारित शुल्क देने पर परिषद् किसी परीक्षार्थी को जिसमें उस वर्ष की 31 मार्च से जिसमें की परीक्षा हुई थी पॉच वर्ष के भीतर न लिये गये मूल प्रमाण-पत्र को निर्गत कर सकती है। इसके लिये आवेदन सचिव के यहां से प्राप्त निर्धारित प्रपत्र पर संस्थागत परीक्षार्थी के संबंध में संस्था के प्रधान द्वारा तथा व्यक्तिगत परीक्षार्थी के संबंध में केन्द्र के अधीक्षक द्वारा एक शपथ-पत्र सहित जिसमें यह उल्लेख हो कि उसके प्रमाण-पत्र की मूल प्रति अथवा दूसरी प्रतिलिपि नहीं प्राप्त की है, दिया जाना चाहिये।

यदि परीक्षार्थी 20 वर्ष या उससे कम आयु का है तो शपथ-पत्र उसके पिता (यदि जीवित हों) के द्वारा अथवा उसके अभिभावक द्वारा (यदि पिता जीवित न हों) निष्पादित किया जायेगा। दोनों दशाओं में परीक्षार्थी को शपथ-पत्र को यथाविधि अभिपुष्टि करनी होगी।

प्रतिबन्ध यह है कि यदि किसी परीक्षार्थी ने निर्धारित अवधि के भीतर अथवा प्रमाण-पत्र संबंधित संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र अधीक्षक से प्राप्त नहीं किया है वह उसे 05 वर्ष की अवधि के बीतने के पश्चात् तुरन्त परिषद् कार्यालय में वापस भेज दें। छात्र के परिषद् द्वारा निर्धारित प्रक्रिया पूर्ण करने के पश्चात् उसे प्रमाण-पत्र दिया जायेगा। परिषद् द्वारा समस्त अस्वामिक प्रमाण-पत्रों को परिषद् कार्यालय से उनके निर्गत होने की तिथि से 20 वर्ष बीतने के पश्चात् नष्ट कर दिया जायेगा। तत्पश्चात् यदि कोई परीक्षार्थी अपना प्रमाण-पत्र चाहता है तो उसे उक्त प्रमाण-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि हेतु नियमानुसार प्रार्थना-पत्र देना होगा।

---

*दिनांक 31-1-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/599, दिनांक 7-12-2001 द्वारा संशोधित।

न्यूनतम आयु

*33-यदि किसी परीक्षार्थी की आयु उस वर्ष की प्रथम जुलाई को जिसमें यह परीक्षा में सम्मिलित होना चाहे 14 वर्ष अथवा उससे अधिक नहीं हो तो यह 1971 तथा उसके आगे की हाईस्कूल परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र नहीं होगा।

34-(निरस्त)

पत्राचार शिक्षा

35-विभाग द्वारा स्थापित पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा माध्यमिक शिक्षा के स्तर के उन्नयन और परिषद् की परीक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से प्रवेश चाहने वाले व्यक्तियों को अध्ययन में सुविधा देने के लिये पत्राचार के माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था की जायेगी।

पत्राचार शिक्षा संस्थान का प्रमुख दायित्व

पत्राचार शिक्षण हेतु अभ्यर्थियों के पंजीकरण की व्यवस्था करना, पाठ लेखन, परिमार्जन, मुद्रण एवं आवश्यकतानुसार आवृत्तियों में मुद्रित पाठों के प्रेषण की व्यवस्था करना, अभ्यर्थियों को निर्देशन प्रदान करने की व्यवस्था करना, पत्राचार पाठ्यक्रम का अनुसरण करने वाले अभ्यर्थियों की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये आवश्यक उपयुक्त प्रमाण-पत्र देना तथा समय-समय पर निदेशक/शासन द्वारा अधिसूचित अन्य कार्यों का सम्पादन करना होगा।

36-(1) परिषद् परीक्षाओं की, जिस परीक्षा की, जिस वर्ग के, जिस श्रेणी के, व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिये जिन विषयों में पत्राचार शिक्षा व्यवस्था किये जाने की अधिसूचना शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश द्वारा की जाय, उस परीक्षा के, उस वर्ग के, उस श्रेणी के ऐसे व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिये जो विनियम 37 के अन्तर्गत नहीं आते हैं, पत्राचार शिक्षा हेतु अपना पंजीकरण कराकर पत्राचार शिक्षण अन्तर्गत दिये गये पाठों का अनुसारण करना अनिवार्य होगा।

(2) उपर्युक्त श्रेणी के व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिये संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करने हेतु पंजीकरण की व्यवस्था की जायेगी। पत्राचार पाठ्यक्रम अनुसरण की अवधि सामान्यतः दो शैक्षिक सत्र होगी। अपर शिक्षा निदेशक (पत्राचार शिक्षा) आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन कर सकते हैं।

37-(1) पत्राचार शिक्षण की अनिवार्यता से निम्नांकित श्रेणी के व्यक्तिगत परीक्षार्थी मुक्त रहेंगे-

क-हाईस्कूल परीक्षा के सम्बन्ध में-

(1) विगत वर्षों की हाईस्कूल परीक्षा में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(2) विनियम 17 तथा विनियम 20, अध्याय 12 के अन्तर्गत अतिरिक्त विषय/विषयों के परीक्षार्थी अथवा आंशिक परीक्षार्थी।

(3) अध्याय 12 के विनियम 10(1) (अ) (चार) के अन्तर्गत आने वाले परीक्षार्थी।

(4) ऐसे परीक्षार्थी जिन्होंने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में कक्षा 9 तथा 10 में नियमित छात्र के रूप में अध्ययन का नियमित पाठ्यक्रम पूर्ण कर लिया हो किन्तु परिषद् की हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये आवेदन न किये हों (किन्तु संस्था की उपस्थिति पंजी में नाम हो) अथवा आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर दिये जाने के पश्चात् भी परीक्षा में सम्मिलित न हुये हों।

(5) किसी मान्यता प्राप्त संस्था से कक्षा 9 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(6) हिन्दी से भिन्न किसी अन्य माध्यम से परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी।

(7) नेत्रहीन (अन्धे) तथा चलने-फिरने में शारीरिक रूप से अक्षम परीक्षार्थी।

(8) भारतीय सेना में नियमित रूप से कार्यरत परीक्षार्थी।

ख-इण्टरमीडिएट परीक्षा के सम्बन्ध में-

(1) विगत वर्षों की इण्टरमीडिएट परीक्षा में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(2) विनियम 17 तथा विनियम 20, अध्याय 12 के अन्तर्गत अतिरिक्त विषय/विषयों के परीक्षार्थी अथवा आंशिक परीक्षार्थी।

(*राजाज्ञा संख्या मा0-630/15-7-1608-56-72, दिनांक 29 दिसम्बर, 1972 द्वारा अन्य आदेश जारी होने तक निलम्बित है।)

(3) अध्याय 14 के विनियम 3 के प्रतिबन्धात्मक खण्ड तथा विनियम 3(ख) के अन्तर्गत आने वाले परीक्षार्थी।

(4) विखण्डित

*(5) हाईस्कूल अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण ऐसे कारागार बन्दी जो किन्हीं कारणों से कारागार में न्यूनतम एक अथवा अधिक वर्षों से निरुद्ध हों।

(6) हिन्दी से भिन्न किसी अन्य माध्यम से परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी।

(7) नेत्रहीन (अन्धे) तथा चलने-फिरने में शारीरिक रूप से अक्षम परीक्षार्थी।

(8) भारतीय सेना में नियमित रूप से कार्यरत परीक्षार्थी।

प्रतिबन्ध यह है कि पत्राचार शिक्षण व्यवस्था की अनिवार्यता से मुक्ति प्राप्त उपयुक्त (क) और (ख) के अभ्यर्थी चाहें तो निर्दिष्ट विधि से निर्धारित शुल्क जमा करके पत्राचार के अन्तर्गत लिये गये विषयों में पाठ प्राप्त कर सकते हैं।

(2) इण्टरमीडिएट परीक्षा में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित होने इच्छुक ऐसे परीक्षार्थियों के लिये जिन्होंने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में कक्षा 11 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की है, पत्राचार शिक्षा हेतु अपना पंजीकरण कराके पत्राचार शिक्षा के पाठ्यक्रम का अनुसरण करना तथा तत्सम्बन्धी अनुसरण प्रमाण-पत्र परीक्षा आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा। प्रतिबन्ध यह है कि ऐसे परीक्षार्थियों के लिये पत्राचार शिक्षण की अवधि एक शैक्षिक सत्र से अधिक न होगी।

38-(1) पत्राचार शिक्षण हेतु शासन द्वारा स्वीकृत दरों पर पंजीकरण पत्राचार शिक्षण तथा अन्य शुल्क वसूल किया जायेगा।

(2) पत्राचार शिक्षा संस्थान के विभिन्न पारिश्रमिक कार्यों के लिये मानदेय तथा पारिश्रमिक का भुगतान शासन द्वारा स्वीकृत दरों पर किया जायेगा।

39-पत्राचार शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित पत्राचार शिक्षा सतत अध्ययन सम्पर्क योजना के अन्तर्गत राज्य के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पंजीकृत छात्रों को नियमित संस्थागत छात्र के रूप में माना जायेगा।

प्रमाण-पत्र में नाम परिवर्तन

**40-परिषद् सफल उम्मीदवारों द्वारा विहित प्रक्रियानुसार आवेदन-पत्र देने तथा इस अध्याय के विनियम 22(13) में निर्धारित शुल्क देने पर प्रमाण-पत्र में निम्नांकित प्रतिबन्धों के अधीन नाम परिवर्तन कर सकता है-

(क) आवेदन-पत्र उचित सरणी द्वारा दिया जायेगा तथा जिस वर्ष में परीक्षा हुई थी उसकी 31 मार्च से तीन वर्ष के भीतर परिषद् के सचिव के कार्यालय में पहुँच जाना चाहिये। आवेदक को एक टिकट लगे हुये कागज पर शपथ-पत्र देना होगा, जो प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट अथवा नोटरी द्वारा यथाविधि प्रमाणित होना चाहिये, जिसमें नाम में परिवर्तन के वैध कारण दिये होंगे तथा जो एक राजपत्रित अधिकारी द्वारा यथा विधि प्रमाणित होगा और परीक्षार्थी जहां वह निवास करता है, वहाँ के स्थानीय दैनिक-पत्र की तीन विभिन्न तिथियों के संस्करणों में अपने नाम के परिवर्तन को विज्ञापित करेगा, इससे पूर्व कि उसे परिवर्तित नाम का नया प्रमाण-पत्र प्राप्त हो। सम्बन्धित तिथियों के समाचार-पत्रों की प्रतियां आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य है।

(ख) परिषद् द्वारा नाम परिवर्तन के आवेदन-पत्र निम्नलिखित को छोड़कर अन्य किन्हीं कारणों के स्वीकार नहीं किये जायेंगे-

नाम में भद्दापन हो अथवा नाम से अपशब्द की ध्वनि निकलती हो अथवा नाम असम्मानजनक प्रतीत होता हो अथवा अन्य ऐसी स्थिति होने पर।

(ग) परीक्षार्थियों द्वारा नाम के पहले या बाद में उपनाम जोड़ने, धर्म अथवा जाति सूचक शब्दों को जोड़ने अथवा सम्मानजनक शब्द या उपाधि जोड़ने जैसे किसी भी प्रकार के आवेदन-पत्रों को स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसी प्रकार धर्म अथवा जाति परिवर्तन के आधार पर अथवा विवाहित छात्र/छात्राओं के विवाह के फलस्वरूप नाम परिवर्तन हो जाने पर परिषद् द्वारा नाम में परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

(घ) उत्तर प्रदेश शासन से कर्मचारियों को नाम परिवर्तन के आवेदन-पत्र सम्बन्धित विभाग के अध्यक्ष द्वारा सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के पास भेजा जाना चाहिये।

(ङ) भारतीय संध के राज्य (उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त) सरकारी कर्मचारियों के नाम में परिवर्तन आवेदन-पत्र पर किया जायेगा, यदि सम्बन्धित राज्य सरकार द्वारा इसी प्रकार का परिवर्तन कर दिया गया है और उसकी सूचना परिषद् को सम्बन्धित विभाग के राज्य सचिव अथवा विभाग के अध्यक्ष द्वारा दे दी जाती है।

---

*विज्ञप्ति संख्या-परिषद्-9/654, दिनांक 7-10-2009 द्वारा संशोधित।

**दिनांक 27-01-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या : परिषद्-9/635, दिनांक 27-12-2000 द्वारा सम्मिलित।

(च) केन्द्रीय शासन के कर्मचारी के आवेदन-पत्र देने पर नाम में परिवर्तन कर दिया जायेगा यदि इसी प्रकार का परिवर्तन केन्द्रीय शासन द्वारा कर दिया गया है और उसकी सूचना परिषद् को सम्बन्धित मंत्रालय के राज्य सचिव अथवा गृह विभाग के मंत्रालय द्वारा दे दी जाती है।

(छ) यदि किसी परीक्षा के लिये नाम में परिवर्तन कर दिया जाता है तो अन्य परीक्षाओं के प्रमाण-पत्र में जो परीक्षार्थी को पहले अथवा बाद में निर्गत हुये हों, बिना नये शपथ-पत्र के परन्तु प्रति प्रमाण-पत्र के लिये 20 रुपये शुल्क देने पर नाम परिवर्तन कर दिया जायेगा।

(ज) शपथ-पत्र तथा नाम में परिवर्तन का प्रार्थना-पत्र परीक्षार्थी के पिता अथवा यदि उनकी मृत्यु हो गयी हो, अभिभावक द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिये।

अध्याय तेरह

हाईस्कूल परीक्षा

(प्रथम दो वर्षीय पाठ्यक्रम कक्षा 9 तथा 10)

[1] हाईस्कूल परीक्षा के लिये प्रत्येक परीक्षार्थी को नीचे दिये हुये अनुसार सात विषयों में परीक्षा ली जायेगी-

(एक) हिन्दी अथवा प्रारम्भिक हिन्दी (हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिये)।

(दो) एक आधुनिक भारतीय भाषा (गुजराती, उर्दू, पंजाबी, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तमिल, तेलगू, मलयालम, नैपाली)।

अथवा

एक आधुनिक विदेशी भाषा (अंग्रेजी)

अथवा

एक शास्त्रीय भाषा (संस्कृत, पाली, अरबी, फारसी)।

(तीन) गणित अथवा प्रारम्भिक गणित अथवा गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये)।

टिप्पणी-

(क) वे छात्र/छात्रायें जो किसी विकलांगता, पूर्ण नेत्रहीनता अथवा विकलांग हाथ से पीड़ित हों, जिससे वे अनिवार्य विषयों गणित में ज्यामितीय आकृतियां न खींच पाते हों अथवा विज्ञान/गृह विज्ञान में क्रियात्मक कार्य नहीं कर पाते हैं, इन विषयों के स्थान पर छठे विषय के रूप में निर्धारित अतिरिक्त विषयों की सूची में से अन्य अतिरिक्त विषय चयन करने की सुविधा इस प्रतिबन्ध के साथ प्रदान की है कि ऐसे छात्र/छात्रा अपनी विकलांगता के समर्थन में मुख्य चिकित्साधिकारी का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करते हैं तथा साथ ही यदि अग्रसारण अधिकारी स्वयं व्यक्तिगत रूप से ऐसी विकलांगता से पूर्णतया सन्तुष्ट हों।

*(ख) विकलांग तथा दृष्टि बाधित परीक्षार्थियों को परीक्षा हेतु निर्धारित अवधि के अतिरिक्त 20 मिनट प्रति घण्टे के हिसाब से अतिरिक्त समय देय होगा।

(ग) निकाला गया (परीक्षा समिति की बैठक दिनांक 7 सितम्बर, 2002 में लिये गये निर्णय अनुसार निकाला गया)।

**(घ) मूक बधिर छात्र दूसरी अनिवार्य भाषा के स्थान पर एक अन्य विषय वैकल्पिक विषयों की सूची में से उपहृत कर सकते हैं।

[चार] विज्ञान

[पॉच] सामाजिक विज्ञान

[छः] निम्नलिखित विषयों में से कोई एक अतिरिक्त विषय-

(क) एक शास्त्रीय भाषा-(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप में क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(संस्कृत, पालि, अरबी, फारसी)

---

*विज्ञप्ति संख्या-परिषद्-9/686, दिनांक 11-1-2012 द्वारा संशोधित वर्ष 2012 की परीक्षा से प्रभावी।

**दिनांक 28-4-2001 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद-9/881, दिनांक 28-3-2001 द्वारा सम्मिलित।

अथवा

एक आधुनिक भाषा-(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप में क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगला, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तमिल, तेलगू, मलयालय, नेपाली।)

अथवा

एक आधुनिक विदेशी भाषा--(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप में क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(अंग्रेजी)

(ख) संगीत गायन

(ग) संगीत वादन

(घ) वाणिज्य

(ङ) चित्रकला

(च) कृषि

(छ) गृह विज्ञान (बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है।)

(ज) सिलाई

(झ) रंजन कला

*(ञ) कम्प्यूटर

**(ट) मानव विज्ञान

[सात] नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी, उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य तथा पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित निम्नलिखित ट्रेड्स में कोई एक-

1-टेक्सटाइल डिजाइन

2-पुस्तकालय विज्ञान

3-पाक शास्त्र

4-फोटोग्राफी

5-बेकिंग एवं कन्फेक्शनरी

6-मधुमक्खी पालन

7-पौधशाला

8-ऑटोमोबाइल

9-धुलाई-रंगाई

10-परिधान रचना

11-खाद्य संरक्षण

12-एकाउन्टेन्सी एवं अंकेक्षण

13-आशुलिपि एवं टंकण

14-बैंकिंग

15-टंकण

---

*दिनांक 9-12-2000 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद-9/526, दिनांक 13-11-2000 द्वारा कम्प्यूटर विषय जोड़ा गया (कक्षा-9, वर्ष 2002 से प्रभावी)।

**विज्ञप्ति संख्या-परिष्याद-9/91, दिनांक 01 मई, 2006 द्वारा कक्षा-9 में जुलाई, 2006 से प्रभावी।

16-फल संरक्षण

17-फसल सुरक्षा

18-रेडियो एवं टेलीविजन

19-मुद्रण

20-बुनाई तकनीक

21-रिटेल ट्रेडिंग

22-सुरक्षा

23-मोबाइल रिपेयरिंग

24-टूरिज्म एवं हॉस्पिटलिटी

टीप-पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित ट्रेड विषयों का विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा तथा मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को ए0 बी0 तथा सी0 ग्रेड प्रदान किये जायेंगे जिसका उल्लेख उनके अंक-पत्र तथा प्रमाण-पत्र में किया जायेगा तथा विद्यालय द्वारा चयनित ट्रेड स्वतः माने जायेंगे। शासन की संकल्पना के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा हेतु निर्धारित विभिन्न ट्रेड विषयों का अध्ययन प्रत्येक छात्र

**[2] उपर्युक्त पाठ्यक्रमों के अनुसार कक्षा 9 तथा कक्षा 10 का पाठ्यक्रम पृथक-पृथक निर्धारित है। कक्षा 9 के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यालय स्तर पर आंतरिक परीक्षा ली जायेगी। कक्षा 10 के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर हाईस्कूल परीक्षा की सार्वजनिक परीक्षा परिषद् द्वारा आयोजित होगी।

[3] कक्षा 9 तथा कक्षा 10 स्तर पर विज्ञान एवं गृह विज्ञान विषयों की प्रयोगात्मक विषयक कार्य केवल विद्यालय स्तर पर होगा तथा इसका आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा जिसका विधिवत् उल्लेख अंक-पत्र में होगा। परिषद् द्वारा इन विषयों की प्रयोगात्मक परीक्षायें सम्पादित नहीं होंगी।

[4] नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य तथा पूर्व व्यावसायिक शिक्षा में विद्यालय स्तर पर ग्रेड प्रदान किया जायेगा जिसका उल्लेख अंक-पत्र/प्रमाण-पत्र में होगा।

[5] समस्त अध्यापकों के द्वारा जो हाईस्कूल परीक्षा के लिये तैयार कराने वाली कक्षाओं के शिक्षण में नियुक्त है, डायरियां रखी जायेंगी, जिनमें उनके द्वारा पढ़ाये गये प्रत्येक विषय में हुआ कार्य दिखाया जायेगा और इन डायरियों का मौखिक अथवा क्रियात्मक परीक्षकों अथवा ऐसे अन्य प्राधिकारियों द्वारा, जो परिषद् द्वारा प्रतिनियुक्त किये जायें, निरीक्षण किया जायेगा।

सामाजिक विज्ञान में दो प्रश्नपत्र वर्ष 2001 की परीक्षा से, विज्ञान में तीन प्रश्नपत्र वर्ष 2001 की परीक्षा से तथा अंग्रेजी में दो प्रश्नपत्र वर्ष 2002 की परीक्षा से प्रभावी।

[6] उप सात्रिक परीक्षाओं के लिये बनाये गये प्रश्नपत्रों तथा समस्त परीक्षार्थियों को लिखित उत्तर पुस्तकों का भी परीक्षण इस ढंग से तथा ऐसे प्राधिकारियों द्वारा जा सकता है, जैसा कि परिषद् निर्देश दे।

***[7] समस्त मान्यता प्राप्त संस्थाओं में भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों के शिक्षण का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी होगा। प्रतिबन्ध यह है कि जिन विद्यालयों को हिन्दी माध्यम से शिक्षण दिये जाने हेतु पूर्व में मान्यता/अनुमति मिली है, उन्हें अंग्रेजी माध्यम से भी शिक्षण दिये जाने की अनुमति दी जा सकती है। हाईस्कूल परीक्षा के समस्त परीक्षार्थी भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों में प्रश्नों के उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी माध्यम से देंगे। परिषद् के सभापति तथा विभाग के ऐसे अन्य अधिकारी जिन्हें वह इस समबन्ध में अधिकार दे दें, स्वमति से उन परीक्षार्थियों की, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है अथवा उर्दू में प्रश्नों के उत्तर देने की अनुमति दे सकते हैं। भाषाओं को छोड़कर समस्त विषयों के प्रश्नपत्र हिन्दी तथा अंग्रेजी में बनायेंगे।

प्रतिबन्ध यह भी है कि परिषद् द्वारा दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों को ब्रेल लिपि में प्रश्नों के उत्तर देने की अनुमति दी जा सकती है।

---

*सामाजिक विज्ञान में दो प्रश्नपत्र तथा विज्ञान में तीन प्रश्नपत्र वर्ष 2001 की परीक्षा से तथा अंग्रेजी में दो प्रश्नपत्र वर्ष 2002 की परीक्षा से प्रभावी।

**दिनांक 29 मार्च, 2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद-9/795, दिनांक 25 मार्च, 2003 द्वारा संशोधित।

***विज्ञप्ति संख्या परिषद-9/181, दिनांक 01 जुलाई, 2010 द्वारा संशोधित।

टिप्पणी–भाषाओं में परीक्षार्थियों प्रश्नों का उत्तर भाषाओं तथा तत्सम्बन्धी लिपि में देंगे, जिससे प्रश्नपत्र का सम्बन्ध है, जब तक कि प्रश्न पत्र में ही उसके प्रतिकूल उल्लेख न हो।

(2) परिषद के सभापति ने विनियम 7, अध्याय तेरह के अनुसरण में संस्थाओं के प्रधानों तथा केन्द्र अधीक्षकों को निम्नलिखित वर्गों के परीक्षार्थियों की परीक्षाओं में भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों में अंग्रेजी में प्रश्न पत्रों का उत्तर देने की अनुमति देने का अधिकार दे दिया है :

[एक] परीक्षार्थी जिनकी मातृभाषा हिन्दी न होकर एक अन्य भाषा है।

[दो] परीक्षार्थी, जिन्होंने वैज्ञानिक तथा प्राविधिक विषय (गणित सहित) लिये हैं।

[तीन] आंग्ल भारतीय संस्थाओं से आने वाले परीक्षार्थी।

[चार] परीक्षार्थी जिन्हें परिषद के विनियमों के विनियम 8, अध्याय तेरह के अन्तर्गत परिषद की परीक्षाओं में अनिवार्य हिन्दी लेने से छूट मिल गई है।

(3) परिषद् के सभापति ने ऊपर के नियम के अधीन जिला विद्यालय निरीक्षक, उत्तर प्रदेश की ऐसे परीक्षार्थियों को जिनकी मातृभाषा उर्दू है, परिषद् की परीक्षाओं में उर्दू माध्यम का प्रयोग करने की अनुमति देने का अधिकार प्रतिनिहित कर दिया है।

(4) परिषद् के सभापति ने ऊपर के विनियमों के अधीन जिला विद्यालय निरीक्षक, उत्तर प्रदेश को दृष्टि बाधित परीक्षार्थियों को ब्रेल लिपि में प्रश्नों का उत्तर देने की अनुमति प्रदान करने का अधिकार प्रतिनिहित कर दिया है।

(5) ऐसे समस्त मामले जिनमें संस्थाओं के प्रधानों अथवा केन्द्र अधीक्षकों अथवा जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा अनुमति दी जाती है, परिषद् को सूचित किया जाना अनिवार्य होगा।

[8] इन विनियमों की शर्तों के होते हुये भी हाईस्कूल परीक्षा में निम्नलिखित वर्गों के परीक्षार्थियों को परिषद् द्वारा निर्धारित नियमानुसार अनिवार्य हिन्दी से छूट दी जा सकती है :

(1) विदेशी राष्ट्रिक को तथा

(2) भारतीय राष्ट्रिक को जो पूर्व शिक्षण तथा/अथवा निवास के कारण हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ नहीं थे, जिससे कि वे हाईस्कूल परीक्षा में अनिवार्य हिन्दी को ले सकें।

प्रतिबन्ध यह है कि ऐसे परीक्षार्थियों को हिन्दी का निम्न स्तरीय पाठ्यक्रम प्रारम्भिक हिन्दी अथव अन्य वैकल्पिक विषय जो नियमानुकूल हो, अनिवार्य हिन्दी के स्थान पर लेना चाहिये।

ज्ञातव्य–

(1) इस विनियम में उल्लिखित छूट परिषद् के सभापति द्वारा अथवा विभाग के ऐसे अन्य अधिकारियों द्वारा दी जा सकती है जिसे वह इस सम्बन्ध में अधिकार दे।

अनिवार्य हिन्दी से छूट सम्बन्धी नियम

परिषद् की परीक्षाओं में अनिवार्य हिन्दी से छूट के नियम अध्याय तेरह, विनियम 8 में दिये हुये हैं। उपर्युक्त विनियमों के अन्तर्गत परिषद ने अनिवार्य हिन्दी से छूट सम्बन्धी निम्नांकित नियम बनाये हैं–

1–परीक्षार्थी जिन्होंने एक आंग्ल भारतीय अथवा पब्लिक स्कूल में कम से कम 3 वर्ष अध्ययन किया हो तथा स्तर आठ अर्थात् कैम्ब्रिज सर्टीफिकेट परीक्षा अथवा इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा परिषद, नई दिल्ली द्वारा संचालित इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा जिस वर्ष में होता है, उससे चार वर्ष पूर्व का स्तर उत्तीर्ण कर लिया है।

2–परीक्षार्थी जो एक ऐसे राज्य के स्थायी निवासी हैं, जहाँ हिन्दी प्रादेशिक भाषा नहीं है तथा जिनके अभिभावक हाईस्कूल परीक्षा के सम्बन्ध में परीक्षा वर्ष से पहले की वर्ष के 1 सितम्बर को कम से कम 5 वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश को प्रव्रजन कर चुके हैं।

3–परीक्षार्थी जो उत्तर प्रदेश के स्थायी निवासी हैं, परन्तु जिन्होंने अस्थायी रूप से अन्य राज्य को प्रव्रजन किया है और वहाँ निवास किया है, यदि वे किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय में कम से कम 3 वर्ष तक अध्ययन करने तथा उस विद्यालय में उच्च हिन्दी न लेने का प्रमाण–पत्र प्रस्तुत करते हैं :

अनिवार्य हिन्दी से छूट प्रदान करने के लिये अधिकृत अधिकारी

1-सन्दर्भित विनियमों के पुनश्च : (1) के अनुसारण में परिषद के सभापति ने निम्नलिखित अधिकारियों को प्रत्येक के नाम के सामने लिखित राष्ट्रिकों को अनिवार्य हिन्दी से छूट देने का अधिकार दे दिया है :

(क) जिला विद्यालय निरीक्षक, उत्तर प्रदेश-भारतीय राष्ट्रिक जो (व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनों प्रकार के परीक्षार्थी)।

(ख) मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान-विदेशी राष्ट्रिक, जो उनकी संस्थाओं में अध्ययन कर रहे हैं।

(ग) उन संस्थाओं के प्रधान, जो परीक्षा केन्द्र हैं-विदेशी राष्ट्रिक, जो उस केन्द्र से व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट हो रहे हैं।

2-संस्थागत परीक्षार्थियों को, जो अनिवार्य हिन्दी से छूट पाने के अधिकारी हों, यथोचित प्राधिकारी से कक्षा में प्रवेश के समय आवेदन करना चाहिये।

3-व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में छूट के लिये प्रार्थना तथा आदेशों की प्राप्ति परीक्षा में प्रविष्टि होने के आवेदन-पत्र भरने से पूर्व ही प्राप्त करनी चाहिये।

विभिन्न प्रकार की हिन्दी लेने के सम्बन्ध में निर्देश

1-प्रारम्भिक हिन्दी (कक्षा 8 के स्तर की) लेकर हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट परीक्षा में निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी लेनी होगी।

2-उत्तर प्रदेश से हिन्दी के साथ कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश के बाहर के किसी प्रदेश से बिना हिन्दी के अथवा कम अंकों वाली निम्न स्तर की हिन्दी के साथ हाईस्कूल या हायर सेकेण्डरी या मैट्रीकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट परीक्षा में निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी लेनी होगी। इसका अर्थ हुआ कि पंजाब की मैट्रीकुलेशन परीक्षा की 150 अंकों की हिन्दी, सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, नई दिल्ली की आल इण्डिया हायर सेकेण्डरी परीक्षा को 150 अंकों की हिन्दी (एम0एल0) अथवा उस बोर्ड की हायर सेकेण्डरी परीक्षा की अधिक अंकों वाली हिन्दी आदि लेकर उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट के लिये निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी का पाठ्यक्रम लेना होगा।

3-इण्टरमीडिएट परीक्षा में अनिवार्य हिन्दी से छूट नही दी जायेगी।

हाईस्कूल परीक्षा

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश ने सत्र 2011-12 से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को हाईस्कूल स्तर पर लागू करने का निर्णय लिया है, जिसके तहत 70 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 30 अंकों का प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन होगा जो वर्तमान सत्र से लागू है। आन्तरिक मूल्यांकन हेतु विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में (प्रथम मासिक परीक्षा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में, द्वितीय मासिक परीक्षा अक्टूबर माह के अन्तिम सप्ताह में एवं तृतीय दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह तक में) तीन मासिक परीक्षण किये जायेंगे।

सभी भाषाओं 70 अंक की लिखित परीक्षा एक प्रश्नपत्र के आधार पर होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन तीन मासिक परीक्षाओं के आधार पर विद्यालय स्तर पर किया जायेगा। भाषा सम्बन्धी विषय निम्नवत् हैं। हिन्दी, प्रारम्भिक हिन्दी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगला, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, नेपाली, अंग्रेजी, संस्कृत, पालि, अरबी तथा फारसी। प्रथम मासिक परीक्षा में वाचन शैली, वाद-विवाद प्रतियोगिता, विचारों की अभिव्यक्ति, भाषण, शब्द ज्ञान एवं उसका प्रयोग, द्वितीय मासिक परीक्षा में व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान तथा तृतीय मासिक परीक्षा में छात्रों से उनके सृजनात्मक लेखन शैली, निबन्ध/कहानी/जीवन परिचय/नाटक, पत्र लेखन एवं अपठित पर आधारित ज्ञान का परीक्षण किया जायेगा। प्रत्येक मासिक परीक्षण 10 अंका का होगा।

प्रयोगात्मक विषयों-गृह विज्ञान, विज्ञान, संगीत गायन, संगीत वादन, कृषि, सिलाई, कम्प्यूटर में आन्तरिक मूल्यांकन निम्नत् होगा-

प्रयोगात्मक परीक्षा-15 अंक (3 प्रयोग प्रत्येक 05 अंक)

प्रोजेक्ट कार्य-15 अंक (3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 05 अंक)

प्रत्येक मासिक परीक्षा में एक प्रयोग तथा एक प्रोजेक्ट का मूल्यांकन किया जायेगा।

शेष अन्य विषयों-गणित, सामाजिक विज्ञान, प्रारम्भिक गणित, वाणिज्य, चित्रकला, रंजनकला तथा मानव विज्ञान में आन्तरिक मूल्यांकन की व्यवस्था निम्नवत् है-

प्रोजेक्ट कार्य-15 अंक (तीन प्रोजेक्ट, प्रत्येक 05 अंक)

मासिक परीक्षा-15 अंक (तीन मासिक परीक्षा, प्रत्येक 05 अंक)

गृह विज्ञान (बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है) का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण पत्रिका में गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये) अनिवार्य विषय के लिये निर्धारित है। नैतिक, खेल एवं शारीरिक शिक्षा के लिये पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन की व्यवस्था पूर्ववत् रहेगी।

कक्षा 9 में सभी मासिक परीक्षाओं, प्रोजेक्ट एवं प्रयोगात्मक के प्राप्तांक वार्षिक परीक्षा के योग में सम्मिलित किये जायेंगे तथा कक्षा 10 के लिये मासिक परीक्षाओं, प्रोजेक्ट एवं प्रयोगात्मक के कुल प्राप्तांक जनवरी माह में परिषद के क्षेत्रीय कार्यालय को उपलब्ध करा दिये जायें। प्रत्येक मासिक परीक्षण में परीक्षार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर पढ़ाये गये पाठों में से उनके द्वारा किये जाने वाले क्रिया-कलापों एवं कौशल तथा बुद्धि का परीक्षण किया जाय। परीक्षार्थियों द्वारा समयान्तर्गत किये जाने वाले सृजनात्क कार्य भी इसमें सम्मिलित किये जायें।

कक्षा-9

विषय-हिन्दी

70 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा-समय तीन घण्टे निर्धारित

1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग) 5

(ख) हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय-आदिकाल, मध्यकाल (केवल भक्तिकाल) 5

2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+4+2=8

सन्दर्भ-

रेखांकित अंश की व्याख्या-

तथ्यपरक प्रश्न का उत्तर-

(पाठ-बात, मंत्र, गुरूनानक, देव, गिल्लू, स्मृति, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा, ठेले पर हिमालय)

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+4+2=8

सन्दर्भ-

व्याख्या-

काव्य सौन्दर्य-

(कबीर, मीरा, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'', सोहन लाल द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन, नागार्जुन, केदार नाथ अग्रवाल)

4-संस्कृत के निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 1+4=5

(गद्यांश अथवा श्लोक का सन्दर्भ सहित अनुवाद)

सन्दर्भ-

अनुवाद-

(पाठ-वन्दना, सदाचार, पुरूषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस रामकृष्णः, कृष्णः गोपालनन्दनः)

5-निर्धारित एकांकी से-(कथानक, चरित्र-चित्रण एवं तथ्याधारित प्रश्न) 3

(एकांकी-दीपदान, नये मेहमान, व्यवहार, लक्ष्मी का स्वागत, सीमा रेखा)

6-निर्धारित पाठकों के लेखकों तथा कवियों का जीवन परिचय एवं रचनाएं- 3+3=6

7-(1) पाठ्य पुस्तक से एक श्लोक- 2

(जो प्रश्नपत्र में न आया हो)

(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों से पाठों पर आधारित 2

दो प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में (अति लघु उत्तरीय)

8-काव्य सौन्दर्य के तत्व- 2+2+2=6

1-रस-श्रृंगार एवं वीर (स्थायीभाव, परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

2-छन्द-चौपाई एवं दोहा-लक्षण, उदाहरण।

3-अलंकार-शब्दालंकार, अनुप्रास, यमक, श्लेष-परिभाषा, उदाहरण, पहचान।

9-हिन्दी व्याकरण तथा शब्द रचना- 2+2+2+2=8

क-वर्तनी तथा विराम चिन्ह

ख-शब्द रचना-तद्भव, तत्सम्, विलोम, पर्यायवाची

ग-समास-अव्ययीभाव, तत्पुरुष (परिभाषा, उदाहरण)

घ-मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ-अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

10-संस्कृत व्याकरण- 2+2+2=6

क-सन्धि-दीर्घ, गुण (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख-शब्द रूप-राम, हरि, भानु, अस्मद्

ग-धातुरूप-गम्, भू, कृ, (लट्, लोट्, विधिलिंग, लङ, तथा लृट् लकार)

11-क-हिन्दी के दो सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद 2

ख-पत्र लेखन (प्रार्थना-पत्र) 4

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(गद्य)

पाठ	लेखक
बात	प्रताप नारायण मिश्र
मंत्र	प्रेमचन्द्र
गुरूनानक देव	हजारी प्रसाद द्विवेदी
गिल्लू	महादेवी वर्मा
स्मृति	श्रीराम शर्मा
निष्ठामूर्ति कस्तूरबा	काका कालेलकर
ठेले पर हिमालय	धर्मवीर भारती

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(काव्य)

कबीर	साखी
मीराबाई	पदावली
रहीम	दोहा
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम माधुरी

मैथिलीशरण गुप्त	पंचवटी
जयशंकर प्रसाद	पुनर्मिलन
सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला''	दान
सोहन लाल द्विवेदी	उन्हें प्रणाम
हरिवंश राय बच्चन	पथ की पहचान
नागार्जुन	बादल को घिरते देखा
केदार नाथ अग्रवाल	अच्छा होता, सितार-संगीत की रात

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(संस्कृत)

वन्दना, सदाचारः, पुरुषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस-रामकृष्ण, कृष्णः गोपाल नन्दनः

निर्धारित एकांकी-

दीपदान	राम कुमार वर्मा
नये मेहमान	उदय शंकर भट्ट
व्यवहार	सेठ गोविन्द दास
लक्ष्मी का स्वागत	उपेन्द्र नाथ ''अश्क''
सीमा रेखा	विष्णु प्रभाकर

कक्षा 9

विषय-प्रारम्भिक हिन्दी

(हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिये)

प्रारम्भिक हिन्दी में 70 अंकों का केवल एक प्रश्नपत्र होगा-समय तीन घंटे निर्धारित :-

1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय- 5

(भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग)

(ख) हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय- 5

(आदिकाल, मध्यकाल (भक्तिकाल))

2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+6+2=10

सन्दर्भ-

रेखांकित अंश का अर्थ-

तथ्यात्मक प्रश्न-

(पाठ-बात, मंत्र, गुरूनानक देव, गिल्लू, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा)

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+8=10

सन्दर्भ-

अर्थ-

(पाठ-कबीरदास-साखी, मीराबाई-पदावली, रहीम-दोहा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-प्रेम माधुरी, मैथिलीशरण गुप्त-पंचवटी)

4-संस्कृत के गद्यांश अथवा पद्यांश का सन्दर्भ सहित अर्थ- 1+4=5

पाठ 1-सदाचारः, 2-पुरुषोत्तमः रामः, 3-सिद्धिमन्त्रः, 4-सुभाषितानि, 5-परमहंस रामकृष्णः

5-निर्धारित लेखकों एवं कवियों के जीवन परिचय और रचनाओं सम्बन्धी लघु उत्तरीय प्रश्न	3+3=6
6-पाठ्य पुस्तक से कण्ठस्थ एक श्लोक (जो प्रश्नपत्र में न आया हो)	3
7-काव्य सौन्दर्य के तत्व-रस एवं अलंकार	2+2=4
क-रस-श्रृंगार एवं वीर रस (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
ख-अलंकार-यमक, अनुप्रास, श्लेष (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
8-हिन्दी व्याकरण-	2+2+1+1+2+2=10
क-समास-द्वन्द्व, द्विगु (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
ख-मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अर्थ एवं वाक्य प्रयोग	
ग-पर्यायवाची शब्द	
घ-विलोम शब्द	
ङ-श्रुतिभिन्नार्थक शब्द	
च-वाक्यों के लिये एक शब्द का निर्माण	
9-संस्कृत व्याकरण-	2+1+1+2=6
क-स्वर सन्धि (दीर्घ, गुण सन्धि परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
ख-शब्द रूप-बालक, नदी, वधु	
ग-धातुरूप-गम्, पठ्, भू, पा (लट, लोट, विधिलिंग, लंग, लृट लकार)	
घ-हिन्दी के दो सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद	
10-पत्र लेखन (प्रार्थना-पत्र)	6
आन्तरिक मूल्यांकन -	**30 अंक**

शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में–

प्रथम-अगस्त माह में - 10 अंक - वाचन (वाद-विवाद, भाषण, विचाराभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय-अक्टूबर माह में - 10 अंक - (व्याकरण सम्बन्धी)

तृतीय-दिसम्बर माह में - 10 अंक - सृजनात्मक (नाटक, कहानी, कविता, पत्र लेखन आदि) अंक योग-30

गुजराती

(कक्षा-9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्नपत्र तीन घंटे का होगा।

भाग (अ) 35 अंक

1-व्याकरण	15
(क) शब्द भेद की पहचान	05
(ख) शब्द का पर्याय एवं विपरीत अर्थ	05
(ग) सन्धि	05
2-रचना-	15
(अ) दिये हुये विषय पर एक वाक्य खण्ड का लेखन	10
या	
दिये हुये बिन्दुओं से एक कहानी निरूपित करना	
(ब) पत्र लेखन (व्यक्तिगत)	05
3-अपठित गद्य खंड का ज्ञान	05
(विवरणात्मक और वर्णनात्मक)	

भाग (ब) 35 अंक

1-गद्य (पाठ्य पुस्तक पर आधारित लघु प्रश्न)	15
2-पद्य सन्दर्भ सहित (व्याख्या तथा कविता का भाव)	10
3-सहायक पुस्तक (स्वाध्ययन)	10

(सामान्य प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे)

निर्धारित पुस्तक

1-गुजराती वाचन माला स्टैन्डर्ड 9, 1992 संस्करण, प्रकाशक-गुजराती राज्यशाला पाठ्य-पुस्तक मण्डल, पुराना विधान सभा गृह, सेक्टर 17, गांधीनगर, गुजरात।

गद्य-निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे-

पाठ संख्या-

2-कुण्डी-जी0 ब्रेकर

4-सुवर्मापूनों अतिथि-जी0 त्रिपाठी

6-आवा रे आमे आवा-बकुले त्रिवेदी

10-प्रिटोरिया जतन-गांधी जी

14-वचन-मणी लाल द्विवेदी

16-स्वर्ग अने पृथ्वी-स्नेही रश्मी

18-नाना भाई-दर्शक

22-अखा न उन्डन-आर0 बी0 देसाई

23-खातू दोषी-दिलीप रनपुरा

25-अविराम में युद्ध-धूमकेतु

पद्य-निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे-

1-प्रथम परनाम मोरा-आर0 बी0 पाठक

5-नानुन सरमुख गोकालियम-नारिन्हा मेहता

7-अटारिया-बाल मुकुन्द देव

9-बंशीवाला/आणों मारा देश-मीराबाई

15-बनो फोटोग्राफ-सुन्दरम्

19-यारी बाला-हरिन्द दूबे

31-दुही मुकतक हैकू-दलपत राम इत्यादि

सहायक पुस्तक (स्वाध्ययन)

4-आबू चाचा (गद्य)-माधव रामानुज

11-धुवांधार (गद्य)-काका कालेलकर

12-स्वतंत्रता (पद्य)-हशित बच

आन्तरिक मूल्यांकन- **अंक 30**

शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में- (अन्तिम सप्ताह में)

प्रथम-अगस्त माह में - अंक 10- वाचन (वाद-विवाद, भाषण, विचाराभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय-अक्टूबर माह में -अंक 10 - (व्याकरण सम्बन्धी)

तृतीय-दिसम्बर माह में-अंक 10-सृजनात्मक (नाटक, कहानी, व्यक्ति पत्र लेखन, अपठित आदि)

कक्षा-9

विषय-उर्दू

उर्दू विषय में 70 अंक का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

उर्दू विषय में 70 अंक का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड (अ) पूर्णांक-35

1-व्याकरण और प्रयोग **9 अंक**

व्याकरण के केवल उसी तत्व पर बल दिया जायेगा जो भाषा के प्रयोगात्मक ज्ञान और उसके सम्भाषण एवं लेखन में प्रयोग हो। व्याकरण का अध्ययन एक विषय के रूप में अनिवार्य नहीं है परन्तु छात्रों को कक्षा में पाठों को पढ़ाते समय भाषा में व्याकरण के महत्व तथा उसके सही प्रयोग का ज्ञान साथ ही छात्रों को इसके अनुवाद तथा उसके संगठन का सही अध्ययन कराना चाहिए।

2- **पद्य** **9 अंक**

(गजल, मसनवी, रूबाई)

3- **रचना**

(अ) निबन्ध लेखन (सामान्य रुचि के विषयों पर) **5 अंक**

(ब) पत्र लेखन (व्यक्तिगत और आवेदन-पत्र 150 शब्दों तक।) **5 अंक**

4- अपठित ज्ञान (150 शब्द) **7 अंक**

खण्ड (ब) पूर्णांक-35

1- **गद्य**

(अ) उर्दू की नई किताब (नवीं जमाअत के लिए) प्रकाशक एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली निर्धारित पुस्तक से निम्नांकित लेखकों तथा उनकी कृतियों का अध्ययन किया जाना है:- **14 अंक**

(1) मीर अम्मन-सैर चौथे दरवेश की

(2) गालिब (खुतूत)-(1) मिर्जा अलाउद्दीन अहमद खान अलाई के नाम

(2) मीर महदी मजरूह के नाम

(3) मुंशी हरगोपाल तफता के नाम

(3) सर सैयद अहमद खान-बहस-ओ तकरार

(4) मुहम्मद हुसैन आजाद (1) मिर्जा मजहर जाने जानाँ

(2) सैयद मुहम्मद मीर सोज

(5) डिप्टी नजीर अहमद- फहमीदा और बड़ी बेटी नईमा की लड़ाई

(6) अलताफ हुसैन हाली- मिर्जा गालिब के हालात

(7) रतन नाथ सरशार- (1) मेहरी का सरापा

(2) रेल का सफर

(ब) निर्धारित गद्य पुस्तक के लेखकों की जीवनी तथा साहित्य में उनके योगदान के बारे में ज्ञान। **4 अंक**

2- **पद्य**

(अ) उर्दू की नई किताब (नवीं जमाअत के लिए) प्रकाशक एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली निर्धारित पुस्तक से निम्नांकित कवियों एवं उनकी कृतियों का अध्ययन किया जाना है :- **12 अंक**

गजलः-

1-वली दकिनी- आज दिस्ता है हाल कुछ का कुछ

2-सौदा-जो गुजरी मुझ पे मत उस से कहो, हुआ सो हुआ

3-मीर तकी मीर-(1) उल्टी हो गई सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया

(2) हस्ती अपनी हबाब की सी है

4-दर्द (1) जी में है सैरे अदम कीजिएगा

(2) तू अपने दिल से गैर की उलफत न खो सका

5-आतिश- बदन सा शहर नहीं दिल सा बादशाह नहीं

6-ज़ौक़- उसे हमने बहुत ढूँढा न पाया

7-गालिब-(1) यह न थी हमारी किस्मत कि विसाले यार होता

(2) हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले

8-मोमिन-वोह जो हममे तुममे करार था तुम्हें याद हो कि न याद हो

9-दाग- खातिर से या लिहाज से मै मान तो गया

मसनवी-मीर हसन

रूबाई-मीर अनीस व हाली

(ब) निर्धारित पद्य पुस्तक के कवियों की जीवनी तथा साहित्य में उनके योगदान के बारे में ज्ञान। **5 अंक**

निर्धारित पुस्तक

उर्दू की नई किताब (नवीं जमाअत के लिए)

प्रकाशक एन0सी0आर0टी0 नई दिल्ली

सहायक पुस्तक-उर्दू अदब की तारीख-लेखक अजीमुल हक जुनैदी प्रकाशक-एजुकेशन बुक हाउस, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी मार्केट अलीगढ़ 202002

पंजाबी

कक्षा-9

इसमें 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (एक) **पूर्णांक 35 अंक**

पद्य पाठ- **20 अंक**

1-प्रसंग-अर्थ एवं भाव अर्थ

2-कविता का सारांश

3-किसी कवि से सम्बन्धित प्रश्न

गद्य पाठ- **15 अंक**

1-कहानी, एकांकी, जीवनी, सफरनामा, निबन्ध

2-विषय वस्तु प्रश्न

भाग (दो)

व्याकरण- **35 अंक**

1-मुहावरे और लोकोक्तियां 03

2-शुद्ध-अशुद्ध 02

3-वाक दण्ड 03

4-समानार्थक शब्द 03

5-विलोम शब्द 02

6-विराम चिन्ह 02

7-अनुवाद-(क) हिन्दी से पंजाबी 04

(ख) पंजाबी से हिन्दी 04

8-निबन्ध प्रचलित विषयों पर 08

9-पत्र लेखन (व्यक्तिगत-पत्र, आवेदन-पत्र एवं प्रार्थना-पत्र) 04

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें-

1-गद्य-पद्य (भाग-एक) गुरूवचन सिंह

2-कहानी (एकांकी) हरिसरण कौर

3-पंजाबी व्याकरण लेख रचना ज्ञानी लाल सिंह

बंगला

(कक्षा 9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग "अ" 35 अंक

व्याकरण-

(1) बंगला भाषा का स्पष्ट उच्चारण-स्वर एवं उसके प्रकार- 4 अंक

मुख्य शब्दों के भेद- 4 अंक

स्वर सन्धि- 4 अंक

समास (तत्पुरुष, द्वन्द्व और द्विगु)- 6 अंक

प्रत्यय, मुहावरे तथा लोकोक्ति- 5 अंक

सरल वाक्य परिवर्तन (स्वीकारात्मक, नकारात्मक, प्रश्नवाचक, विधिसूचकवाक्य)- 5 अंक

(2) रचना

(1) विभिन्न प्रकार के पत्र लेखन (औपचारिक तथा अनौपचारिक)- 4 अंक

(2) विचारों का संक्षिप्तीकरण अथवा विस्तार- 3 अंक

भाग "ब" **35 अंक**

1-गद्य (विस्तृत अध्ययन)

(क) पठित खण्ड पर सामान्य प्रश्न- 5 अंक

(ख) दिये गये खण्ड की व्याख्या- 5 अंक

(ग) संक्षिप्त विवरण (उद्देश्य एवं लाक्षणिक और भाव के संदर्भ में)- 3 अंक

निर्धारित पुस्तकें-पाठ संकलन (गद्य भाग केवल) संस्करण सन् 1987 प्रकाशक बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन वेस्ट बंगाल कलकत्ता

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होगें

(i) भरत और दुष्यन्त मिलन

(ii) पालमोर पथे

(iii) राज सिंह और मानिक लाल

(iv) विद्या सागर

(v) पल्ली समाज

(vi) अपुर कल्पना

(vii) यात्रा पथे

(viii) भारत वर्तमान और भविष्य

2-उपन्यास

अम अन्तीर भेपू-विभूतिभूषण बनर्जी, बनर्जी प्रकाशन सिंगनेटा प्रेस पाप एक बालपुर कलकत्ता-23

(क) सामान्य प्रश्न- 5 अंक

व्याख्या- 5 अंक

संक्षिप्त विवरण- 2 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्रैफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध रूप में पूछे जायेंगे।

3- पद्य

(1) रामेर विलाप

(2) दिनादिन

(3) छात्र दलेर गान

(4) भोरई

(5) छात्र धारा

(6) नकसी कोथार माठ

(7) लोहार व्यथा

सार संक्षेप और प्रश्न-

व्याख्या- 5 अंक

तथा संक्षिप्त विवरण 3+2=5 अंक

निर्धारित पुस्तकें-पाठ संकलन (पद्य भाग केवल)- 1987 संस्करण बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन पश्चिम बंगाल कलकत्ता द्वारा प्रकाशित

कक्षा-09

विषय-मराठी

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण-

(क) शब्द भेद का ज्ञान। 15 अंक

(ख) पर्यायवाची तथा विपरीतार्थक

2-रचना- 15 अंक

(क) सामान्य विषयों पर पैराग्राफ लेखन

(ख) सामान्य विषयों पर पत्र-लेखन

3-अपठित गद्य खण्ड का ज्ञान- 05 अंक

भाग-(ब) **35 अंक**

1-गद्य-

(क) पाठ्य-पुस्तक पर आधारित संक्षिप्त प्रश्न 15 अंक

(ख) व्याख्या

निर्धारित पुस्तकें

कुमार भारती-1994

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन करना होगा-

पाठ	**लेखक का नाम**
(2) सेती साथी पानी	महात्मा फूले
(4) कालेकेश	एन0एस0 फड़के
(5) एक अपूर्ण संध्या	एन0बी0 गाडगिल
(6) एक एकचावेद	पी0के0 अत्रे
(9) निरवार	कुसुमावती देष पाण्डेय
(11) कर्मवीररांच्या अठवानी	पी0जी0 पाटिल
(13) मषी वेडमेनटेन्ची साधना	नन्दू नाटेकर
(14) बंगाला	प्रकाश मोरे
(17) सौर ऊर्जा	निरन्जन घाटे

2-पद्य- **10 अंक**

(क) सन्दर्भ व्याख्या

(ख) पद्य का भाव

पाठ्य पुस्तक

भारतीय (1994) में से निम्नलिखित कविताओं का अध्ययन करना है-

पाठ	**कवि का नाम**
1-नमंदेवानची अभंगवानी	नामदेव
4-तुकारामची अभंग	तुकाराम
5-षक्ति गौरव	रामदास
8-वात चक्र	केशव सूत
9-निजाल्या तीन हावरी	बी0 आर0 ताम्बे दत्ता
10-प्रतिभाविहंग	

3-लघु कहानियां- **10 अंक**

(निर्धारित कहानी में से पांच लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर)

निम्नलिखित कहानी का अध्ययन करना है-

कहानी	**कवि का नाम**
7-जिस्यातिल जुन्जा	दामू धोत्रे
15-धूने	आर0 आर0 बोराउ
16-संतराची प्रति सरकार	कुमार केतकर

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक गद्य, पद्य और कहानियां

कुमार भारती (कक्षा 9 के लिए) 1994 संस्करण

प्रकाशक-महाराष्ट्र स्टेट सेकेन्डरी एजूकेशन बोर्ड, पुणे।

असामी

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घण्टे होगी।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- **15 अंक**

(क) मुख्य शब्द भेद

(ख) वाक्य संरचना में प्रयुक्त अशुद्धियों को चिन्हित करना

(ग) लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग

(घ) विराम चिन्हों का प्रयोग

2-रचना- **20 अंक**

(क) सामान्य विषयों पर निबन्ध लेखन 12 अंक

(ख) सामान्य विषयों पर पत्र लेखन 8 अंक

संदर्भ पुस्तक-

1-वहल व्याकरण-ले0 सत्यनाथ वोरा, बरूआ एजेंसी गुवाहाटी 78100

2-असमियां भाषा बीदिका-ले0 प्रियदास तालुकदार, प्रकाशक-एल0बी0एस0 प्रकाशन, अम्बारी गुवाहाटी-78100

3-असमियां रचना विधि-ले0 प्रधानाचार्य गिरधर शर्मा, प्राप्ति स्थान, आसाम बुक डिपो गुवाहाटी

भाग (ब) **35 अंक**

1-पद्य- **15 अंक**

(क) निर्धारित खण्ड की व्याख्या 6 अंक

(ख) निर्धारित पुस्तक से सामान्य प्रश्न 9 अंक

गद्य एवं पद्य के लिए निर्धारित पुस्तक

माध्यमिक साहित्य चयन प्रकाशक आसाम स्टेट टेक्स्ट बुक, प्रोडक्शन एण्ड पब्लिकेशन लिमिटेड गुवाहाटी 78002।

निम्नलिखित पद्य का अध्ययन करना होगा-

1-ककुती 2-बाबाजुग 3-मंगलारगीत 4-जिकिट अख्जारी

2-गद्य- **15 अंक**

1-पठित खण्ड की व्याख्या 6 अंक

2-संक्षिप्त विवरण (निर्धारित पुस्तक से पौराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक तकनीकी या भावात्मक संदर्भ में)। 3 अंक

3-पठित खण्ड से सामान्य प्रश्न 6 अंक

निम्नलिखित गद्य पाठों का अध्ययन करना होगा-

1-भोकेन्द्र बरूआ

2-वैज्ञानिक दृष्टिभगी और जन संयोग

3-आसामारा जानाखातिर गढ़ानी और संस्कृति

4-गौरव

3-अविस्तृत अध्ययन- **5 अंक**

निर्धारित पुस्तकें

पारिजात हरन खौर चीरधरा, पिम्पारा गोछवां नट द्वारा संकलित श्री जोगेश दास (लायर्स बुक स्टोर, गुवाहाटी)। केवल पारिजान हरन द्वारा श्री शंकर देव का अध्ययन किया जाना है।

नैपाली

(कक्षा-9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 14 अंक

(क) शब्द उच्चारण और ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन (स्वर, लय आदि)

(ख) शब्द भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय)

(ग) सरल वाक्यों की रचना

2-सन्दर्भ पुस्तक-

सरल नैपाली व्याकरण-ले0 राजनारायण प्रधान और जगत, क्षेत्रीय प्रकाशक श्याम ब्रदर्स चौक बाजार, दार्जिलिंग

(2) अपठित गद्यांश का ज्ञान जो खेल कूद, सामाजिक घटनाओं और पारिवारिक वातावरण पर आधारित होंगे। 7 अंक

3- रचना-

(क) पत्र लेखन- 7 अंक

(1) मित्र/सम्बन्धी को पारिवारिक विषय पर।

(2) अवकाश प्रार्थना-पत्र शुल्क मुक्ति प्रार्थना-पत्र तथा निर्धन छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में

(ख) निबन्ध लेखन- 7 अंक

सामाजिक समस्यायें, खेल-कूद, पारिवारिक वातावरण, राष्ट्रीय एकता, नैतिकता और पारिस्थितिक आदि के संदर्भ में।

भाग (ब)

1-गद्य- 14 अंक

नैपाली साहित्य, सौरभ-प्रकाशक शिक्षा निदेशालय, पाठ्य पुस्तक अनुभाग, सिक्किम, गंगटोक अध्ययन के लिए पाठ-

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना है-

(1) अभागी- गुरूप्रसाद मैनाली

(2) दीबी चश्मा- बी0पी0 कोइराला

(3) फान्टियर- शिव कुमार राय

(4) चिट्ठी- बद्रीनाथ भट्ट राई

(5) म्यांगा कोचिहान-लेनसिंग बंगडेल

(6) चामू थापा- भीम निधि तिवारी

2-पद्य- 12 अंक

नैपाली साहित्य, सौरभ-प्रकाशक शिक्षा निदेशालय, पाठ्य पुस्तक अनुभाग, सिक्किम, गंगटोक

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना है-

(1) बसन्त कोकिल लेंखनाथ पौडियाल

(2) सदीक्षा- धरनीधर शर्मा

(3) कर्मा- बालकृष्ण साय

(4) औहेवर्षा- माधव प्रसाद घिमसी

(5) योजिन्दगी खोके जिन्दगी-कौतुवाल

(6) कटाई योसिर झुकच्छा भाने-सोहन ठाकुरी

3-रैपिड रीडिंग- 9 अंक

कथा बिम्ब-प्रकाशन शिक्षा निदेशालय गंगटोक (सिक्किम)

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना है-

(1) निर्णय- पूर्णाराय

(2) जादूगर- एनटोली फान्स

(3) जीवन यात्राया- एम0एन0 गुरूग

(4) नूरआलम- शिवकुमार राय

नोट- निर्धारित पाठ्य पुस्तक के लघुस्तरीय एवं निबन्धात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।

उड़िया

(कक्षा-9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- **20 अंक**

(क) उड़िया भाषा का स्पष्ट उच्चारण-स्वर और उसके वर्गीकरण।

(ख) मुख्य शब्द भेद, स्वर, सन्धि, समास (तत्पुरूष, द्वन्द्व, और द्विगु) कृदन्त

(ग) वाक्य परिवर्तन (स्वीकारात्मक, प्रश्नवाचक, नकारात्मक)।

2-रचना- **15 अंक**

(क) पत्र लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक) 8 अंक

(ख) अपठित गद्य खण्ड का संक्षिप्त लेखन 7 अंक

भाग (ब) **35 अंक**

1-गद्य (विस्तृत अध्ययन हेतु) 18 अंक

(क) पाठ्य पुस्तक पर सामान्य प्रश्न 10 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य से चुने हुए खण्डों की सहायता 4 अंक

(ग) संक्षिप्त विवरण (उद्देश्य लाक्षणिक, तकनीकी एवं भाव सन्दर्भ में) 4 अंक

निर्धारित पुस्तक-

साहित्य (1992 संस्करण) प्रकाशक-उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, उड़ीसा।

नोट-सभी पाठों का अध्ययन करना है।

2-संक्षिप्त कहानी और एकांकी (अविस्तृत अध्ययन हेतु) 6 अंक

त्रिधारा-1992 संस्करण, प्रकाशक-उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, उड़ीसा।

नोट-कक्षा-9 के लिए निर्धारित पुस्तक में विभाजित पाठों को पढ़ना होगा।

3-पद्य- 11 अंक

(क) निर्धारित पद्य पर सामान्य प्रश्न 6 अंक

(ख) व्याख्या 5 अंक

निर्धारित पुस्तक-

साहित्य (1992 संस्करण) प्रकाशक-उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, उड़ीसा।

नोट-सभी पद्य का अध्ययन करना है।

कन्नड़

(कक्षा-9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 17 अंक

(क) निर्धारित पुस्तक के आधार पर वाक्य परिवर्तन

(ख) विराम चिन्हों का संशोधन

(ग) पर्यायवाची तथा विपरीतार्थक

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषीय चातुर्य को बढ़ावा मिल सके।

2-रचना-

(क) व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन एवं व्यावहारिक अनुभवों से सम्बन्धित टॉपिक पर पैराग्राफ लेखन 4 अंक

(ख) पत्र लेखन (व्यक्तिगत, व्यापारिक तथा कार्यालयीय सम्बन्ध में दैनिक जीवन के सन्दर्भ में) 5 अंक

(15 पंक्ति से अधिक न हो)।

3-संक्षिप्त लेखन- 5 अंक

4-लोकोक्तियां एवं मुहावरे- 4 अंक

भाग (ब) **35 अंक**

निर्धारित पुस्तक-

कन्नड भारतीय-9, प्रकाशक-राव कर्नाटक पब्लिकेशन, पो0ओ0 बाक्स 5159 बंगलोर-1

(अ) गद्य (विस्तृत अध्ययन) 14 अंक

निम्नलिखित पाठ पढ़ना होगा-

(1) पाण्डुमलमाली

(2) श्री कृष्ण साधना

(3) आईस्टीन चित्र गलु

(4) मागू कालीसिदा पाठा

(5) कोडइया विचार

(6) बूट पालिश

(7) बन्दुरीना हवलादा डन्डेगलू

(8) बेली युवा श्री मोलाकेयाली

(9) माया

(10) मरियाला गादा साम्राज्य

(11) वन्या जीबोगालू भट्टू परिसारा

(12) महारात्रि

(13) पंजारा पारोक्शी

(14) गम्भीरे

(ब) पद्य-

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना होगा- 14 अंक

(1) हचेबू कन्नडद दीपा

(2) चुटुकामल

(3) नन्नाहाडू

(4) बोडो बह्मे

(5) काला

(6) नन्ना हा अगेय

(7) बचन गालू

(8) डेन्कू बलाडा नायकारे

(9) बीसतु सुखस्यू सत्वम्

(10) नूनाखरावलेख

(स) अविस्तृत अध्ययन- 7 अंक

श्री शंकराचायारू-प्रकाशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

निम्न अध्याय का अध्ययन किया जाना है-

(1) जनाना माटूटू बलया

(2) कलातियन्डा काशीगे

(3) विजयायात्रे

(कक्षा-9)

विषय-कश्मीरी

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण-

निम्नलिखित का अध्ययन किया जाना है- 5+5+5+3+2=20 अंक

(1) वचन

(2) लिंग

(3) समानार्थक एवं विपरीतार्थक

(4) पाठ्य पुस्तक में वर्णित शब्दों का प्रयोग

(5) काल

2-पैराग्राफ लेखन- 10 अंक

दिये हुए तीन विषयों पर 50 शब्दों का पैराग्राफ लेखन

3-लिपि एवं वर्तनी- 05 अंक

दिये हुए लगभग 30 शब्दों के पाठ्यांश में उल्लिखित विशिष्ट चिन्हों वाले शब्दों तथा वर्तनी को शुद्ध करना-

भाग (ब) **35 अंक**

1-गद्य-

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे- 20 अंक

(1) काशीर

(2) काशीर-जुबान व अदब

(3) बादशाह

(4) काशीर तालमी

निम्न प्रकार से प्रश्न पूँछे जाये-

(क) पाठ्य पुस्तक से दिये गये पाठ्यांश का अंग्रेजी/उर्दू/हिन्दी में अनुवाद 5 अंक

(ख) गद्य पाठ का संक्षिप्तीकरण 5 अंक

(ग) पाठ्य पुस्तक से प्रश्न 10 अंक

2-पद्य- 15 अंक

निम्नलिखित पद्यों का अध्ययन किया जाय-

(1) बख-त-सुरकी

(2) पम्पेरीनामा

(3) बाहर आओ

(4) काशीर जुबान

(5) इसान कम

(6) रूबाई (जी0आर0 नजस्की)

निम्न प्रकार से प्रश्न पूँछे जायेगे-

(अ) दिये गये पद्यांश को गद्यांश में बदलना। 10 अंक

(ब) पद्य का संक्षिप्तीकरण 5 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तक-

(1) कशूर निषाद (कक्षा-09 तथा 10 के लिए)

प्रकाशक-जे ऐण्ड के स्टेट बोर्ड आफ हाईस्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट बोर्ड

सिन्धी

(कक्षा-9)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 12 अंक

(क) काल और उसके प्रकार 4 अंक

(ख) वचन 4 अंक

(ग) लिंग 4 अंक

2- कहावतें एवं मुहावरे- 3+3=6 अंक

3-निबन्ध-निम्नलिखित विषयों में से 200 शब्दों तक एक निबन्ध 10 अंक

(1) राष्ट्रीय पर्व

(2) सिन्धी त्योहार

(3) सिन्धी महापुरूष

(4) सिन्धी साहित्यकार

4-पत्र लेखन- 7 अंक

दैनिक जीवन पर आधारित 10 से 15 पंक्तियों का एक पत्र

भाग (ब) **35 अंक**

1-गद्य- 13 अंक

(क) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक प्रश्न 5 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक गद्यांश का प्रसंग संदर्भ,

साहित्यिक सौन्दर्य सहित व्याख्या। 1+1+2+4=8 अंक

2-पद्य- 13 अंक

(क) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित दो या तीन प्रश्न 6 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक पद्यांश का संदर्भ काव्यगत सौन्दर्य सहित व्याख्या। 1+2+4=7 अंक

(1) कहानी अडिब्रंगु, सोखिती, फुन्दणुयलु कहानी विसारियां न विषिरनि लेखक-लोकनाथु। 4+5=9 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें-

(1) व्याकरण, कहावतें, पदबन्ध, मुहावरे, निबन्ध तथा पत्र लेखन के लिए

मथ्यो सिन्धी व्याकरण (देवनागरी) ले0 दयाराम बंसणमल मीरचन्दानी, प्रकाशक सिन्धू ब्रह्मू शिक्षा सम्मेलन एवं देवनागरी सिन्धी सभा, मुम्बई।

प्राप्ति स्थान-(1) कमला हाईस्कूल-खार-मुम्बई-400052

(2) हिन्दुस्तान किताबघर-19-21 हमाम स्ट्रीट, मुम्बई

मथ्यो सिन्धी व्याकरण पुस्तक से फहाका 1 से 20 तक इस्तलाह एक से 20 तक तथा अदबीगुलदस्तों के पाठों के अन्त में अभ्यास के लिए दिए अंशों का अध्ययन भी किया जाना होगा।

(2) सहायक पुस्तक- सन्दर्भ के लिए-

सिन्धी भाषा (व्याकरण एवं प्रयोग) लेखन, प्रकाशक, विक्रेता-डा0 मुरलीधर जैतली, डी0 127 विवेक विहार, नई दिल्ली-95

(3) गद्य एवं पद्य के लिए-

अदवी गुलदस्तों-लेखक डा0 कन्हैया लाल लेखवाणी।

प्रकाशक एवं विक्रेता-निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान मानस गंगोत्री, विनोवा रोड, मैसूर।

''अदवी गुलदस्तों'' के गद्य भाग में 1 से 10 तक के पाठ एवं पद्य भाग 1 से 5 तक के पाठों का अध्ययन किया जाना होगा।

तमिल

कक्षा-9 के लिए

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 15 अंक

निम्नलिखित क्षेत्रों के पहचान हेतु प्रारम्भिक ज्ञान-

(i) EZHUTHU, Mathal and saarbu, Chattu and Vinnaamaatirai, Ezhuthu poli

(ii) PADAM, pabupadam, Pahaappadam and pabupede Urruppuhal Iyarsol, Tririsol and Tisaichol.

(iii) PUNARCHI, Vetrumai and Alvazhi punsrehi, Chattu and vina punarchi, Achsara, Punarchi and Kutriyaluhare, Pumarchi.

2-मुहावरें तथा लोकोक्तियां- 5 अंक

परिभाषा एवं प्रयोग-

(निम्नलिखित पुस्तक के पृष्ठ 135 और 154 तक में उल्लिखित मुहावरों का अध्ययन किया जाना है)

उपर्युक्त क्रम 1 और 2 हेतु सन्दर्भ पुस्तक-

तमिल इलाक्कानाम TAMIL (Ilakkanam) कक्षा-9 के लिए (संशोधित संस्करण 1992) प्रकाशक, तमिलनाडु Text Book सोसाइटी, मद्रास-6

3-रचना- 10 अंक

निबन्ध लेखन-दिए हुए बिन्दुओं पर (लगभग 100 शब्दों में)

या

दिए हुए विषय पर स्वतन्त्र रचना

4-अपठित गद्य खण्ड का ज्ञान 05 अंक

खण्ड (ब) **35 अंक**

5-पद्य- 15 अंक

तमिल टेक्स्ट बुक-कक्षा-9 के लिए (1994 संस्करण) प्रकाशक-तमिलनाडू टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6

निम्नलिखित पद्य पढ़ना है-

Sec I-- Irai Vaszhthu

Sec II--1. Thirnkkural

2. Pazhamozhi

Sec III--1. Silppathika aram

Sec VI-- Marumalarchi Paadalgal

6-गद्य- 10 अंक

तमिल Text Book- कक्षा-9 के लिए (गद्य भाग) (1994 संस्करण) प्रकाशक-तमिलनाडू टेक्स्ट बुक सोसाइटी मद्रास-6

(पाठ 1 से 7 तक केवल पढ़ना है)

7-अविस्तृत अध्ययन- 10 अंक

Thiru VI-KA, Yuzhuum Theudum (1994 संस्करण) ले0 शक्ति वासन सुब्रमणियम प्रकाशक मेसर्स पारोनिलयस, 184 ब्राडवे, मद्रास-60000

(पाठ 1 से 10 कक्षा-9 में अध्ययन करना है)

पुस्तक की विषय वस्तु से प्रश्न पूछे जायेंगे-

(1) निबन्धात्मक 06 अंक

(2) दो लघुस्तरीय 2+2=04 अंक

तेलुगू

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घण्टे होगी।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 18 अंक

निम्नलिखित का विस्तृत अध्ययन-

(क) समसकृता सनघुलू स्वर्ण, दीर्घ, सन्धि, गुंण-सन्धि, वृद्धि सन्धि, यनादेशा सन्धि 6 अंक

(ख) तेलुगू संघुलू अकारा उकारा संघुलू 4 अंक

(ग) Nannar Dhaiu : Pakritivikriti, Vyutpatyardhaltu, Earyayapagalu. 8 अंक

2-लोकोक्ति और मुहावरे और उनका प्रयोग (अत्यधिक प्रचलित) 6 अंक

3-अपठित गद्य खण्ड (लगभग 100 शब्द) का ज्ञान 6 अंक

4-निबन्ध पैराग्राफ लेखन- 100 शब्द 5 अंक

भाग (ब)

1-गद्य 15 अंक

तेलुगू वाचाकामू (Telugu Vachakammu) (कक्षा-9) प्रकाशक आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1987) निम्नलिखित का अध्ययन करना होगा।

1-स्वभाषा	2-सोभानाद्री	3-शकुना पारीपानानाम
4-समसकृति	5-गुरूदेयडडू रवीन्द्रूडू	6-जनपद गयाकुलू
7-देवालपालू	8-इवारू गोप्पा	

2-पद्य- 10 अंक

द तेलुगू वाचाकामू (The Telugu Vachakammu) (कक्षा-9) प्रकाशक आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1987) निम्नलिखित पाठों का अध्ययन करना होगा।

1-राजाधर्माम 2-पार्वतीतपासू 3-भाष्करा

4-इन्दी व्यारक्षसूती वृतान्तम् 5-शिवाजी सौसाल्यामू 6-वृद्ध देवूनी पुनराहवानामू

7-समुद्र मन्थानाम्र।

3-अविस्तृत अध्ययन हेतु- 10 अंक

तेलुगू उपवाचकामू (Telugu Upvachakammu) (कक्षा-9) आन्ध्र केशरी आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1987) दो निबन्धात्मक प्रश्न पाठ्य पुस्तक से पूंछे जायेंगे।

(कक्षा-9)

विषय-मलयालम

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- 15 अंक

(1) कतृवाच्य और कर्मवाच्य परिवर्तन

(2) वाक्य संशोधन

(3) शब्द अध्ययन

(4) विपरीतार्थक एवं पर्यायवाची शब्द

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषा चातुर्य को बढ़ावा मिल सके।

2-रचना- 20 अंक

(क) मुहावरे तथा लोकोक्तियां 4 अंक

(ख) पत्र लेखन (दैनिक जीवन से सम्बन्धित व्यक्तिगत तथा कार्यालयी प्रकरणों पर) 5 अंक

(ग) पैराग्राफ राइटिंग (दैनिक जीवन से सम्बन्धित) 7 अंक

(घ) सार लेखन 4 अंक

भाग (ब) **35 अंक**

1-गद्य 13 अंक

केरला पाठावली- वाल्यूम संख्या (09) 1992 संस्करण (केवल गद्य भाग)

प्रकाशक- शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम।

निम्नांकित पांच पाठों का अध्ययन करना-

(1) मथरू देवो भव

(2) पाटाचोनची चोरू

(3) इका लोकम

(4) यशुदेवन

(5) स्वातिपुत सम्निधीइल

2-पद्य- 13 अंक

केरला पाठावली- वाल्यूम संख्या (09) 1992 संस्करण (केवल पद्य भाग)

प्रकाशक- शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम।

निम्नांकित पांच पद्यों का अध्ययन किया जाना है--

(1) काव्यनार्णाकी

(2) शिष्यानम मकनम

(3) अवानीपघम

(4) अपहस्थान्या सुयोधनम्

(5) वालूथवानम

3-अविस्तृत अध्ययन हेतु (संक्षिप्त कहानियों का संकलन)- 09 अंक

निर्धारित पुस्तक

उर्मिला (1987 संस्करण)

प्रकाशक-शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम।

CLASS--IX

ENGLISH

इसमें एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 03 घण्टे का होगा। प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन हेतु 30 अंक निर्धारित हैं जिसका आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

अंग्रेजी विषय की पाठ्य वस्तु निम्नवत निर्धारित है-

1. <u>Prose--</u> **16 marks**

1. Tom Sawyer	by-Mark Twain (Adapted)
2. Marco Polo	by-Mir Najabat Ali (Adapted)
3. Playing The Game	by-Arthur Mee (Adapted)
4. Golden Bowl	from-Jataktales
5. Plants also Breathe and Feel	by-Sir J.C. Bose (Adapted)
6. The Rules of The Road	

2. <u>Poetry--</u> **07 marks**

1. The Mountain and The Squirrel	by-R.W. Emerson
2. Sympathy	by-Charles Mackay
3. Faithful Friends	by-William Shakespeare
4. Indian Weavers	by-Sarojini Naidu
5. I vow to thee, My country	by-Sir Cecil Spring Rice

3. Supplementary Reader-- **12 marks**

1. Gandhi ji And a Coffee Drinker. by-G. Ramchandran
2. The Swan and the Princes. (A Play)
3. Letter to the Children of India. by-Chacha Nehru
4. On a Winter' s Night by-Based on Munshi Prem Chand' s Story (Poos Ki Raat)

Grammar, Translation and Composition

Introduction

I English Grammar-- **15 marks**

1. Parts of Sentence.
2. The Sentence Type.
3. The verb.
4. Primary auxiliaries. (Be, Have, Do).
5. Modal auxiliaries.
6. Negative Sentence.
7. Interrogative Sentence.
8. Tense : Form and Use.
9. The Passive Voice.
10. The Parts of Speech.
11. Indirect or Reported Speech.
12. Word Formation.
13. Punctuation and Spellling.

II Translation : (From Hindi to English) 04 marks

III (A) **Composition :** 06 marks

(a) Long Composition.

(b) Controlled Composition.

(B) Letter Writing/Application Writing. 04 marks

(C) Comprehension (Unseen). 06 marks

Appendices

1. Words often Confused.
2. Synonyms and Antonyms.
3. Cries of Birds and Animals.
4. Glossary.

विषय-संस्कृत

कक्षा-IX

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 03 घण्टे होगा।

इस विषय में 70 अंकों की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी उल्लेख होगा तथा उसके उत्तर के रूप में तीन या चार उत्तर प्रश्न-पत्र में अंकित होंगे। उनमें से एक शुद्ध उत्तर होगा। उसका उल्लेख पुस्तिका में छात्र को अंकित करना होगा तथा उनका अंक विभाजन निम्नवत् होगा-

1-आशुपाठ	1 अंक
2-सन्धि	1 अंक
3-शब्दरूप	1 अंक
4-धातुरूप	1 अंक
5-समास	1 अंक
6-कारक	1 अंक
7-उपसर्ग का सामान्य परिचय	1 अंक
	योग-7 अंक

खण्ड 'क' (गद्य, पद्य तथा आशुपाठ) 35 अंक

गद्य

1-गद्य का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद	2+5=7 अंक
2-पाठ सारांश	4 अंक

पद्य

1-पद्यांश की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या	2+5=7 अंक
2-सूक्तियों की व्याख्या	1+2=3 अंक
3-श्लोक का संस्कृत में अर्थ	5 अंक

आशुपाठ-

1-पात्रों का चरित्र-चित्रण (हिन्दी में)	4 अंक
2-लघु उत्तरीय प्रश्न (संस्कृत में)	5 अंक

खण्ड 'ख' (व्याकरण, अनुवाद, रचना) 35 अंक

व्याकरण-

1-माहेश्वर सूत्रों के आधार पर स्वर एवं व्यंजन का सामान्य ज्ञान तथा स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधियों का सामान्य परिचय। 4 अंक

2-शब्द रूप 3 अंक

पुल्लिङ्ग-राम्, हरि, गुरू।

स्त्रीलिङ्ग-रमा, मति, वाच्।

नपुंसकलिङ्ग-सर्व, तद् युष्मद् अस्मद्।

1 से 10 तक के संख्या शब्दों का ज्ञान।

3-धातुरूप- (लट्, लृट, लोट्, लङ्, तथा विधिलिङ् लकारो में)- 3 अंक

1-परस्मैपद-पठ्, गम्, अस्, शक्, प्रच्छ्।

2-आत्मनेपद-लभ्

3-उभयपद-याच्, ग्रह्, कथ्।

4-समास-समास की सामान्य परिभाषा एवं विग्रह सहित उदाहरण- 03 अंक

तत्पुरूष, द्वन्द्व, कर्मधारय।

5-कारक-समस्त कारकों एवं विभक्तियों का सामान्य परिचय। 03 अंक

6-उपसर्ग का सामान्य परिचय। 02 अंक

अनुवाद–

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। 08 अंक

रचना–

1-पत्र लेखन। 05 अंक

2-संस्कृत शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग। 04 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें–

निम्नलिखित पाठ्य-पुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्यवस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश का अध्ययन करना होगा)–

संस्कृत गद्य भारती–

संस्कृत गद्य साहित्य का विकास–

1-राष्ट्रपिता महात्मा गांधी।

2-गुणाढ्यवृत्तांतः।

3-श्रम एवं विजयते।

4-गणतन्त्रदिवसः।

5-प्राचीन भारतीय शिक्षाव्यवस्था।

6-महात्मा बुद्धः।

संस्कृत पद्य पीयूषम्–

1-दीनबन्धुगान्धी।

2-कपिलोपारव्यानम्।

3-पण्डितमूढयोर्लक्षणम्।

परिशिष्ट (टिप्पणी एवं पाठ सारांश)

कथा नाटक कौमुदी–

1-क्षीयते खलसंर्गात्।

2-श्रम एव विजयते।

3-जडभारतः।

4-भीमसेन प्रतिज्ञा।

5-प्राचीनाः पञ्चवैज्ञानिकाः।

6-त्याग एव परोधर्मः।

7-बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।

8-यज्ञरक्षा।

9-विद्यादानम्।

10-षड्रिपुविजयः।

संस्कृत व्याकरण–

1-क-माहेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण स्थान।

ख-सन्धि-स्वर, व्यंजन, विसर्ग सन्धियों का परिचय।

2-समास–

तत्पुरूष कर्मधारय, द्वन्द्व।

3-कारक एवं विभक्ति–

4–अनुवाद–

1–सामान्य नियमों सहित अभ्यास।

2–कारक एवं विभक्ति ज्ञान।

3–अनुवाद अभ्यास।

5–अव्यय।

6–उपसर्ग।

7–शब्दरूप–

संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के तीनों लिंगों में रूप।

8–धातु रूप–

परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद में धातुओं के रूप।

9–संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग।

10–संस्कृत वाक्य शुद्धि।

11–संस्कृत में आवेदन-पत्र तथा निमंत्रण-पत्र।

पालि

कक्षा–9

इस विषय में प्रश्न-पत्र 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

1–गद्य–पालि–जातकावलि पाठ 1 से 7 तक 15

(क) दो अवतरणों में से किसी एक अवतरण का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। 2+8=10

(ख) किन्हीं दो जातकों में से किसी एक जातक की कथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी में। 05

2–पद्य–धम्मपद–यमक बग्गों से बाल बग्गों से बल बग्गों तक (पाठ 1 से 5 तक)– 15

(क) दो गाथाओं में से किसी एक गाथा का हिन्दी अनुवाद। 05

(ख) दो बग्गों में से किसी एक बग्गों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में सारांश। 05

(ग) धम्मपद के पाठ 1 से 5 के अन्तवर्ती गाथा का उल्लेख। 05

3–अपठित–गद्य–निर्धारित पाठ (सोलामिसस जातक, जम्मसारक जातक, उच्छङ जातक)। 05

4–सहायक पुस्तक वोधिचर्या विधि– 10

परित्राण परिच्छेद से आवाहन, महामंगल सुख, महामंगल गाथा–

(किसी एक गाथा की हिन्दी व्याख्या अथवा पूजा विधि का वर्णन)।

5–व्याकरण 3+2+5+5=15

(क) शब्द रूप–पुलिंग=बुद्ध पिक।

स्त्री लिंग–लता, रति।

नपुंसक लिंग–फल अट्ठि।

(ख) धातु रूप–वर्तमान काल–

पठ, गम, चुर, रूध सक, हिंस के रूप।

(ग) संधि–स्वर संधि–

सरोलोपी सरे, परोक्वचि, जव्देव, यव सरे, ए ओ न।

(घ) समास–

तत्पुरूष एवं बहुब्रीहि का सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण।

6–अनुवाद– 05

हिन्दी के पाँच वाक्यों का वर्तमान कालिक क्रिया में अनुवाद अथवा

निबन्ध–

पालि भाषा में पाँच वाक्य लिखना।

चगवा, बुद्धों, धम्मपद, मभविज्जालयों, जम्बू दीपों, सारनाथ चत्तारि अरिब–सच्चानि।

7–पालि साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय– 05

प्रथम संगीत, सुतपिटक-दीघ निकाय, मन्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय।

निर्धारित पुस्तकें–

(1) पालिजातका बलि– पं0 बटुक नाथ शर्मा
प्रकाशक-मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी।

(2) पद्य-धम्मपद– सम्पादित-भिक्षु धर्म रक्षित,
प्रकाशक-महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।

(3) बोधचर्या विधि– सम्पादित-भिक्षु धर्म रक्षित,
महाबोधि सभा, वाराणसी।

(4) व्याकरण–

(i) पालि प्रबोधि– अद्यादत्त ठाकुर एम0ए0–प्रकाशक–पुस्तक माला, लखनऊ।

(ii) मैनुअल ऑफ पालि– सी0सी0 जोशी, एम0ए0
ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।

(iii) पालि महा व्याकरण– भिक्षु जगदीश कश्यप, एम0ए0
प्रकाशक–महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।

(iv) पालि व्याकरण एवं पालि–
साहित्य का इतिहास– ले0 राज किशोर सिंह,
प्रकाशक–विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

अरबी

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंक का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

इस विषय में 70 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा

खण्ड (अ) 35 अंक

व्याकरण– 10

(क) 1–आसान जुमलों की बनावट (मुब्तेदा और खबर)।

2–इस्म की बनावट और उसके अकसाम।

3–फेल माजी की तारीफ और उसके अकसाम।

4–मोरक्कब जारी (जार और मजरूर)।

5–मोरक्कब इशारी (इस्मे इसारा और मशारून अलैह)।

6–इस्मे फाइल और इस्मेमफउल की बनावट।

7–मुरक्कब तौसीफी (सिफत और मौसूफ)।

8–मुरक्कबइज़ाफी (मुज़ाफ़ और मुज़ाफ अ़लैह)।

(ख) अल्फाज के मानी और उनका इस्तेमाल। 05

2– क–अरबी के साधारण वाक्यों का अंग्रेजी अथवा उर्दू अथवा हिन्दी में अनुवाद। 05

ख–अंग्रेजी अथवा उर्दू अथवा हिन्दी के साधारण वाक्यों का अरबी में अनुवाद। 05

3– आसान अरबी जुमलों का इस्तेमाल–

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा तथा ट्रैफिक रूल्स की जानकारी हेतु सवालात मजमून की शक्ल में पूँछे जायेंगे। 10

खण्ड (ब) 35 अंक

1–गद्य 25

अलकिरात-उर-रशीदह, भाग–1, लेखक–अब्दुलफत्ताह और अलीउमर (मतबूआ मिश्र) पब्लिकेशन–एम0 रशीद एण्ड सन्स, उर्दू बाजार, जामा मस्जिद, दिल्ली–1100461

असबाक़ जो निसाब में शामिल है–

शीर्षक	पाठ संख्या
1–कलबी	3
2–अस्सौर	4
3–अलज़मन	8
4–अलमतर	9
5–अस्सबीय व अलफील	13
6–अलअसद व अलफार	18
7–अर्राईवज्जेब	24
8–अतलाकुत्तयूर	28
9–अलहद्वाद	36
10–वल्दुननज़ीबुन	44
11–अश्शर्रो बिश्शर्रे	49
12–फस्तुर्रबीअ	50
13–हलवातुलकस्ब	53
14–महत्तता सिक्कतुलहदीद	58
15–तारीफ-उल-कुर्सी	59

2–पद्य 10

16–अत्ताइरो	10
17–तरनीमतुलवलदे फिस्सबाहे	27

18–तरनीमतुलउसमें लिस्साबीये फिलमसाये 33

19–अलफारो 42

फारसी

कक्षा–9

इस विषय में 70 अंकों का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा

भाग (अ) 35 अंक

(1) व्याकरण– **10**

(क) संज्ञा।

(ख) सर्वनाम।

(ग) अव्यय।

(घ) क्रिया।

(ङ) व्युत्पत्ति।

नोट–निर्धारित पाठों पर आधारित।

(2) अनुवाद– **8+8=16**

(क) फारसी के सरल वाक्यों का अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा उर्दू में अनुवाद।

(ख) अंग्रेजी, हिन्दी अथवा उर्दू के सरल वाक्यों का फारसी अनुवाद।

(3) फारसी के सरल शब्दों का वाक्यों में प्रयोग। 05

(4) रिक्तियों की पूर्ति– 04

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं ट्रॉफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे।

भाग (ब) 35 अंक

पाठ्य पुस्तक (गद्य तथा पद्य) 20+15=35

निर्धारित पुस्तक–Following Lesson Poems from the book I entitled

FARSI-DASTOOR (KITABI-I-AW WALA Part-1 for Class IX (1977) by Dr. S.Z. Khanlari by M/S.I. Jarah-a-Adablyyat-a-Delhi, Jayyad Press, Ballimaram, Delhi–110006

Lesson to be studied :

1–Be-name-e-Ezad Bakshainda

2–Dastane-e-Khar-O-Shar (Part-1).

3–Dastoor-e-Zaban-e-Farsi.

4–Pisarak-fida-kar.

5–Mehman-nawazi.

6–Umar-khayyam.

7–Manazora-e-nakashse-soozan poem.

8–Arish kamanzir.

9–Isfahan-e-Nisf-Jahan-1.

10–Dastoor-e-Zaban-e-Farsi. S fool zaman.

11–Isfahan-e-Daorfar.

12–Karana-e-Daprfar.

13–Dastoor-e-Zaban-e-Farsi. (Farsi shukas).

14–Suzman-e-Mutahid.

15–Dastoor-e-Zaban-e-Farsi.

16–Chasma-e-Sang (Poem).

गृह विज्ञान

कक्षा–9

(केवल बालिकाओं के लिये)

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय घण्टे का होगा।

क्रम संख्या	इकाई	अंक
1	गृह प्रबन्ध	15
2	स्वास्थ्य रक्षा	15
3	वस्त्र और सूत विज्ञान	10
4	भोजन तथा पोषण विज्ञान	15
5	प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या	15

कुल योग–70 अंक

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन–30 अंक

योग–100 अंक

1–गृह प्रबन्ध 15

(1) गृह विज्ञान के तत्व और क्षेत्र।

(2) व्यवस्था की परिभाषा गृह और परिवार के सम्बन्ध में।

(3) कार्य व्यवस्था, प्रभाव डालने वाले कारक, साधन, पारिवारिक आय, परिवार–कल्याण, परिवार के सदस्यों की संख्या और उनका व्यवहार एवं अभिरुचि।

(4) अर्थ व्यवस्था–परिवार की मूलभूत आवश्यकतायें।

2–स्वास्थ्य रक्षा 15

(1) स्वास्थ्य की परिभाषा, व्यक्तिगत स्वास्थ्य की देखरेख और रक्षा।

(2) स्थानीय स्वास्थ्य संस्थाओं का प्रशासन और सेवायें, उनसे सहायता प्राप्त करना।

(3) वायु–शुद्ध वायु का महत्व तथा संचालन, पर्यावरण एवं प्रदूषण का जन-जीवन पर प्रभाव।

(4) अशुद्ध वायु से होने वाले रोग।

3–वस्त्र और सूत विज्ञान 10

(1) कपड़ों के तन्तु, कपड़ों के प्रकार, जीवन में उनका प्रयोग।

(2) व्यक्तिगत सज्जा–उचित वेष-भूषा (मौसम और अवसर के अनुकूल), व्यक्तिगत वेश-भूषा।

4–भोजन तथा पोषण विज्ञान 15

(1) भोजन का पाचन और सम्बन्धित शरीर क्रिया विज्ञान।

(2) निम्नलिखित खाद्य पदार्थों का संगठन, वर्गीकरण, उनके कार्य, अनाज, दालों और मेवे, सब्जी और फल, दूध और दूध से बने पदार्थ, वसा और तेल, मॉस, मछली अंडे।

(3) संतुलित आहार।

5–प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या 15

(1) प्राथमिक चिकित्सा के मुख्य सिद्धान्त।

(2) सामान्य घरेलू दुर्घटनायें और उनसे बचाव।

(3) सामान्य घरेलू देशज औषधियाँ।

(4) तिकोनी एवं लम्बी पट्टियाँ और उनका प्रयोग।

(5) गृह परिचर्या की परिभाषा–परिचारिका के गुण।

(6) रोगी का कमरा–चुनाव तैयारी, सफाई और प्रकाश का प्रबन्ध।

(7) बिस्तर, बिस्तर लगाना, चादर बदलना।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक होगा। 15

खण्ड (क) वस्त्र और सूत विज्ञान

1–कपड़ों के पाँच विभिन्न प्रकार के नमूनों की पहचान एवं संग्रह।

2–किन्हीं छः विभिन्न फैन्सी टांकों से किसी एक वस्तु की कढ़ाई करना।

3–बची खुची एवं निष्प्रयोज्य सामग्री द्वारा सजावट की कोई एक वस्तु तैयार करना।

खण्ड (ख) भोजन तथा पोषण विज्ञान

1–पाचन अंगों का चित्रांकन।

2–प्रत्येक खाद्य तत्वों का संकलन चार्ट द्वारा।

3–छात्रा (किशोरी) के एक दिन के संतुलित आहार की तालिका बनाना चार्ट द्वारा।

खण्ड (ग) (प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचार्या)

1–तिकोनी पट्टी का प्रयोग (सिर, हथेली, कोहनी, एड़ी एवं घुटने की पट्टी) खपच्चियों का प्रयोग।

2–बिस्तर लगाना और चादर बदलना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें–

काई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यार्थियों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्यों की सूची **पूर्णांक**–15

नोट :–दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से करायें। प्रोजेक्ट कार्यों की फाइल तैयार कराना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रोजेक्ट पाँच अंक का है।

शिक्षक पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। प्रोजेक्ट कार्य का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

1–गृह विज्ञान में समावेश होने वाले विषयों की सूची बनाइये।

2–स्वास्थ्य कार्यों में विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं की भूमिका।

3–वायु प्रदूषण–प्रदूषण के कारण, प्रभाव तथा रोकथाम के उपाय में आपकी भूमिका।

4–दर्जी से कपड़े एकत्र करना एवं वानस्पतिक तन्तु, जान्तव तन्तु एवं कृत्रिम तन्तु को तालिकाबद्ध करना।

5–किशोरावस्था (13 से 18 वर्ष) के लिये एक दिन का संतुलित आहार का चार्ट तैयार करना।

6–एक चार्ट पेपर पर पाचन तंत्र का नामांकित चित्र बनाइये।

7–वाटर फिल्टर एवं एक्वागार्ड का उपयोग।

8–प्राथमिक उपचार बॉक्स तैयार करना।

9–एक चार्ट पेपर पर तन्तुओं के वर्गीकरण को दर्शाइये एवं पाठ्यक्रमानुसार तन्तुओं को चिपकाइये।

10–बच्चों से उनके एक दिन के आहार की सूची तैयार करना एवं उसमें विद्यमान पोषक तत्वों को सूचीबद्ध करना।

11–दूध एक पूर्ण आहार है, चार्ट द्वारा प्रस्तुत करना।

12–गृह परिचारिका के गुणों की सूची बनाना।

विज्ञान

कक्षा–IX

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 3 घण्टे का होगा।

		अंक	कालांश
इकाई–1	मापन, यांत्रिकी तथा ध्वनि	15	55
इकाई–2	ऊष्मा	10	20
इकाई–3	द्रव्य का संगठन एवं परमाणु संरचना	10	45
इकाई–4	रसायन की भाषा एवं रासायनिक बन्ध	10	20
इकाई–5	सजीव जगत में संगठन	15	45
इकाई–6	हमारा पर्यावरण	10	35
	योग . .	**70 अंक**	**220**
	प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन-	**30 अंक**	
	कुल योग . .	**100 अंक**	

इकाई-1 मापन यांत्रिकी तथा ध्वनि 15

- **मापन–**मूल मात्रक, मूल राशियां, मूल मात्रकों की S.I. प्रणाली, व्युत्पन्न मात्रक,माइक्रॉन, एग्स्ट्रॉम, प्रकाश वर्ष, सार्थक अंक, कोटिमान, अल्पतमांक, शून्यांक त्रुटि एवं अनुप्रयोग।
- **गति–**गति की सापेक्षता, विस्थापन, समान तथा असमान गति, चाल, वेग, त्वरण, दूरी समय व वेग समय ग्राफ (समान व असमान गति के लिये) गति के समीकरण (गणितीय विधि)।
- **बल–**गति एवं बल, न्यूटन के गति के नियम, पिण्ड का जड़त्व व द्रव्यमान, संवेग व बल में सम्बन्ध, संवेग संरक्षण का सिद्धान्त, क्रिया और प्रतिक्रिया बल।
- **गुरूत्वाकर्षण–**न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के नियम, पृथ्वी का गुरूत्व बल, गुरूत्वाजनित त्वरण, द्रव्यमान और भार।
- **कार्य, ऊर्जा एवं सामर्थ्य–**बल द्वारा किया गया कार्य, ऊर्जा, सामर्थ्य, कार्य एवं सामर्थ्य में सम्बन्ध, गतिज एवं स्थितिज ऊर्जा, ऊर्जा रूपान्तरण के व्यावहारिक उपयोग, ऊर्जा संरक्षण।
- **ध्वनि–**ध्वनि की प्रकृति, विभिन्न माध्यम में ध्वनि का संचरण, ध्वनि तरंग, अनुदैर्ध्यतरंग, आवृत्ति, आयाम, तरंगदैर्ध्य, आवर्तकाल, तरंग वेग, पिच (Pitch), ध्वनि का वेग, श्रवण–परास, ध्वनि का परावर्तन, प्रतिध्वनि।

इकाई-2 ऊष्मा 10

- ताप की अभिधारणा, तापमान, पारे का तापमापी, ताप के पैमाने।
- ठोस पदार्थों में ऊष्मीय प्रसार रेखीय, क्षेत्रीय व आयतन प्रसार गुणाँक में सम्बन्ध, ऊष्मीय प्रसार का दैनिक जीवन में महत्व, द्रवों का ऊष्मीय प्रसार, जल का असामान्य प्रसार।
- ऊष्मीय विकिरण, प्रकाश, ऊष्मीय विकिरण के गुण, उत्सर्जन, अवशोषण, श्याम पिण्ड, विकिरण ऊर्जा का दैनिक जीवन में महत्व।

- ऊष्मीय ऊर्जा, मात्रक कैलोरी, किलोकैलोरी, जूल, विशिष्ट ऊष्मा, ऊष्मा धारिता, कैलोरीमिति का सिद्धान्त अवस्था परिवर्तन (गुप्त ऊष्मा) आपेक्षिक आर्द्रता एवं उससे सम्बन्धित घटनायें, ऊष्मा को कार्य एवं कार्य को ऊष्मा में बदलना एवं जूल नियतांक।

इकाई-3 द्रव्य का संगठन एवं परमाणु संरचना 10

- **द्रव्य–**

(ए) द्रव्य कणों से मिलकर बना है–

–अणु परमाणु की संकल्पना।

–अन्तराण्विक आकाश एवं अन्तराण्विक बल।

–द्रव्य की ठोस, द्रव व गैसीय अवस्था की व्याख्या।

–द्रव्य की अवस्था परिवर्तन–गलनांक, क्वथनांक, हिमांक, ऊर्ध्वपातन, वाष्पन, वाष्पीकरण तथा संघनन।

(बी) **तत्व, यौगिक एवं मिश्रण–**

विलयन–समांगी, विषमांगी, निलम्बन, कोलॉयड की प्रारम्भिक अवधारणा।

- **परमाणु एवं परमाणु संरचना–**

–डाल्टन का परमाणु सिद्धान्त तथा आधुनिक परमाणु सिद्धान्त।

–परमाणु के अवयव–इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन व न्यूट्रान की विशेषतायें–

(आविष्कारक, आवेश व द्रव्यमान)।

–थामसन का परमाणु मॉडल, रदरफोर्ड का एल्फा प्रकीर्णन प्रयोग तथा परमाणु–

मॉडल, बोहर का परमाणु मॉडल (प्रारम्भिक अवधारणा)।

–परमाणु में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन का वितरण तथा बोर बरी का नियम।

–इलेक्ट्रॉनिक विन्यास (1-20 परमाणु क्रमांक वाले तत्व)।

–परमाणु क्रमांक, द्रव्यमान संख्या, समस्थानिक, समभारिक।

–रेडियो धर्मिता (परिचय केवल परिभाषा) तथा एल्फा, बीटा व गामा किरणों के गुण, रेडियोधर्मी आइसोटोप्स व उनकी उपयोगिता।

ईकाई-4 रसायन की भाषा व रासायनिक बन्ध 10

- **रसायन की भाषा–**

–तत्वों के संकेत, तत्वों तथा यौगिकों के अणुसूत्र (आयन तथा मूलकों के आधार पर)।

–परमाणु भार, अणुभार, तुल्यांकी भार (केवल अम्ल, क्षार, लवण तथा आयन का तु0भार ज्ञात करना)।

–मोल अवधारणा–ग्राम परमाणु व ग्राम अणुभार, एवोगाद्रों संख्या, आंकिक प्रश्न।

- **रासायनिक बन्ध–**

–संयोजकता का इलेक्ट्रॉनिक सिद्धान्त।

–आयनिक बन्ध (आयनिक यौगिकों के उदाहरण तथा सामान्य गुण)।

–सह संयोजक बन्ध (यौगिकों के उदाहरण व सामान्य गुण)।

- **रासायनिक अभिक्रियायें–**

–रासायनिक अभिक्रियायें क्यों होती हैं ?

–रासायनिक संयोग के नियम।

–अभिकारक व उत्पाद।

–रासायनिक अभिक्रियायें लिखना तथा रासायनिक समीकरणों को सन्तुलित करना (जाँच व त्रुटि)।

–रासायनिक अभिक्रिया के प्रकार–योगात्मक, प्रतिस्थापन, वियोजन, अपघटन, उभय अपघटन, ऊष्माक्षेपी, ऊष्माशोषी अभिक्रियायें।

–आक्सीकरण व अपचयन अभिक्रिया (इलेक्ट्रॉनिक अवधारणा)।

इकाई-5 सजीव जगत में संगठन 15

- जीवों में विविधता–वर्गीकरण की आवश्यकता, जीवों का नामकरण, द्विनाम पद्धति, वनस्पति जगत का वर्गीकरण (संघ तक) जन्तु जगत का वर्गीकरण–अकशेरूकी (संघ तक) एवं कशेरूकी (वर्ग तक) मुख्य लक्षण उदाहरण सहित।
- कोशिका जीवन की इकाई–कोशिका जीवन की आधारभूत इकाई, कोशिका के प्रकार, प्रोकैरियोटिक एवं यूकैरियोटिक कोशिका, कोशिका संरचना–कोशिका भित्ति एवं कोशिका कला, कोशिकांग लवक, माइटोकान्ड्रिया, रिक्तिका, एण्डोप्लाज्मिक रैटीक्युलम, राइबोसोम, गॉल्जीकाय, केन्द्रक–गुणसूत्र, आर0एन0ए0 एवं डी0एन0ए0।
- जन्तु एवं वनस्पति ऊतक–संरचना एवं कार्य, वनस्पति ऊतक–विभज्योतकी एवं स्थायी ऊतक, जन्तु ऊतक, एपीथीलियम, संयोजी, पेशी एवं तन्त्रिका ऊतक।
- स्वास्थ्य एवं रोग–सूक्ष्मजीव (विषाणु, जीवाणु, कवक), सूक्ष्मजीव एवं रोग–कारण रोकथाम एवं उपचार (टायफाइड, हिपेटाइटिस, रेबीज, ट्यूबरकुलोसिस, पोलियो, दाद)।

इकाई-6 हमारा पर्यावरण 10

- मानव का समन्वयन एवं पारितन्त्र–
- पर्यावरण के साथ मानव का समन्वयन, पारितन्त्र (खाद्य श्रृंखला एवं खाद्य जाल) एवं जीवमण्डल पारिस्थितिक संकट, प्राकृतिक सम्पदाओं का संरक्षण प्रकृति संरक्षण के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास।
- **प्रदूषण–**वायु, जल, मृदा एवं ध्वनि प्रदूषण, ओजोन पर्त एवं क्षय, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तपन)।
- **जैव रासायनिक चक्र–**वातावरणीय गैसें, जल चक्र, नाइट्रोजन कार्बन डाईऑक्साइड एवं ऑक्सीजन चक्र।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा। प्रयोगात्मक कार्य का अंक विभाजन निम्नवत् है :–

1–तीन प्रयोग (प्रत्येक खण्ड से एक)–	3 × 3 = 09	अंक
2–मौखिक कार्य–	. . 03	अंक
3-सत्रीय कार्य–	. . 03	अंक
कुल अंक . .	**15**	**अंक**

1–दिये हुये आँकड़ों से दूरी–समय ग्राफ खींचना तथा इससे चाल की गणना करना।

2–वर्नियर की सहायता से दिये गये बेलन की लम्बाई ज्ञात करना।

3–स्क्रूगेज की सहायता से दिये गये तार की त्रिज्या ज्ञात करना।

4-ध्वनि के परावर्तन के नियम का सत्यापन करना।

5–ऊष्मा के सुचालक एवं कुचालक का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6–निम्नलिखित के आधार पर यौगिक की पहचान करना–

(i) घुलनशीलता।

(ii) विद्युत् चालकता।

(iii) द्रवणांक।

(iv) क्वथनांक।

7–नमक, चीनी तथा फिटकरी का वास्तविक विलयन बनाना।

8-मिट्टी, खड़िया और महीन बालू का पानी में निलम्बन तैयार करना।

9–पानी में मण्ड और पानी में अण्डे की सफेदी की कोलाइड का निम्न के आधार पर अन्तर स्पष्ट करना–

(i) पारदर्शिता।

(ii) छानना।

(iii) स्थायित्व।

10–प्रयोगात्मक कार्य के उपयोग में आने वाले सामान्य उपकरणों का ज्ञान।

11–तालाब के जल का सूक्ष्मदर्शीय अध्ययन, वर्गीकरण के सम्बन्ध में।

12–निम्नांकित जन्तुओं का टिप्पणी सहित संग्रहालय अध्ययन, वर्गीकरण–

पैरामीशियम, हाइड्रा, एस्केरिस, केचुँआ, तिलचट्टा, बिच्छू, तारामीन, मछली, मेढक, छिपकली, सर्प, कबूतर, चूहा, चमगादड़ और गिलहरी।

13–निम्नांकित वनस्पतियों का टिप्पणी सहित संग्रहालय अध्ययन, वर्गीकरण–

यूलोथ्रिक्स, स्पाइरोगाइरा, म्यूकर, (शैवाल, कवक) मॉस, फर्न, अनावृतबीजी एवं आवृतबीजी।

14–पारिस्थितिक पारितंत्र के प्रारम्भिक ज्ञान के लिये विद्यालय के आस-पास के वातावरण में पौधों और जन्तुओं की पारस्परिक निर्भरता का बोध करना।

15–पादप संरक्षण से होने वाले लाभ का ज्ञान कराना।

टिप्पणी :–प्रत्येक विद्यार्थी के पास विज्ञान की एक प्रयोगात्मक नोट बुक होगी जिसमें प्रयोगात्मक कार्य का दैनिक रिकॉर्ड दर्ज किया जायेगा जिसकी सही ढंग से जाँच होनी चाहिये और इसे प्रयोगात्मक परीक्षा के समय प्रस्तुत किया जाय।

प्रोजेक्ट कार्य की सूची **पूर्णांक**–15

नोट :–दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। प्रत्येक खण्डों (भौतिक, रसायन व जीव विज्ञान) में से एक-एक प्रोजेक्ट कार्य व प्रोजेक्ट फाइल तैयार कराना अनिवार्य होगा। शिक्षक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। तीनों प्रोजेक्ट का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

1–विभिन्न खेतों की मिट्टियों के नमूने लेकर उसकी अम्लीयता की जाँच करना–

(परखनली, सार्वत्रिक सूचक, pH पेपर, कैल्शियम सल्फेट, मिट्टी के नमूने)।

2–दैनिक जीवन में रसायनों का महत्व–

(रसोई, भोजन, दवा वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधनों आदि में रसायन की भूमिका)।

3–विभिन्न स्रोतों (कुआँ, नल, तालाब, नदी) से जल के नमूने लेकर उनकी शुद्धता की जाँच करना तथा अशुद्ध पानी को पीने योग्य बनाने का एक प्रोजेक्ट तैयार करना।

4–दूध तथा घी के विभिन्न नमूने लेकर उसमें वनस्पति की मिलावट का पता लगाना–

(हाइड्रोक्लोरिक अम्ल तथा चीनी द्वारा)।

5–विभिन्न पदार्थों (यूरिया, ग्लूकोस, सुक्रोस व नमक आदि) को घोलने पर पानी के क्वथनाँक पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

6–विभिन्न प्रकार के ऊर्जा रूपान्तरणों को तालिकाबद्ध करके पवन ऊर्जा को विद्युत् ऊर्जा में बदलने का सचित्र मॉडल तैयार करना।

7–वायु तापमापी का मॉडल तैयार करके इसमें निहित वैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन करना।

8–अपने आस-पास प्रयोग होने वाले आदर्श श्याम पिण्डों को सूचीबद्ध कीजिये तथा दैनिक जीवन में विकिरण ऊर्जा के प्रभाव का सचित्र अध्ययन करना।

9–विभिन्न वाद्ययंत्रों की सूची बनाकर दर्शाइये कि उन वाद्ययंत्रों के कौन से भाग में कम्पन उत्पन्न होता है।

10–तरंग मशीन का मॉडल तैयार करके जल की सतह पर उत्पन्न होने वाली तरंग का सचित्र अध्ययन करना।

11–अपने क्षेत्र में पाये जाने वाले पक्षियों की चित्रात्मक सूची तैयार करके इनके आवास एवं वास–स्थान की जानकारी प्राप्त करना।

12–संकटग्रस्त जन्तुओं की सूची तैयार कर भारत के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्यों पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करना।

13–(D.N.A.) (डी ऑक्सी राइबोन्यूक्लिक अम्ल) का मॉडल तैयार करना।

14-स्थानीय जल प्रदूषण के कारणों की जानकारी प्राप्त करना एवं प्रोटोजोएन्स, मछली, एल्गी पर जल प्रदूषण के प्रभाव का अध्ययन।

15–अपने आस-पास स्थित तालाब के पारिस्थितिक तंत्र में जैवीय एवं अजैवीय घटक एवं खाद्य श्रृंखला का अध्ययन करना।

16–प्याज की झिल्ली की अभिरंजित स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शीय प्रेक्षण द्वारा कोशिका की संरचना का अध्ययन।

17-एक चार्ट पेपर पर विभिन्न प्रकार की गति का सचित्र व सोदाहरण अध्ययन करना।

18–वैश्विक–तपन का मानव जीवन पर प्रभाव का सचित्र अध्ययन करना।

19–पर्यावरण प्रदूषण व ओजोन परत अपक्षय में रसायनों की भूमिका।

20–आस-पास के खेतों का भ्रमण करें तथा किसानों से पता लगायें कि वह किस फसल के लिये कौन-कौन से उर्वरक का प्रयोग करते हैं। इन उर्वरकों की पोषक तत्वों की सूची बनाइये।

अतिरिक्त विषयों के अन्तर्गत

भाषायें

कक्षा-9

शास्त्रीय भाषा, आधुनिक भारतीय भाषा तथा आधुनिक विदेश भाषा का पाठ्यक्रम व पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण-पत्रिका में अनिवार्य भाषाओं के लिये निर्धारित है।

गृह विज्ञान

कक्षा-9

(बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण-पत्रिका में गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये) अनिवार्य विषय के लिये निर्धारित है।

संगीत (गायन)

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा एवं व्याख्या, संगीत स्वर, सप्तक, शुद्ध और विकृत स्वर, अलंकार, आलाप, विवादी, पकड़, राग, जाति, औड़व, षाडव, सम्पूर्ण, ताल, मात्रा, लय, पाठ्यक्रम के रागों का परिचय।

1–संगीत का इतिहास एवं रागों का अध्ययन।

2–पाठ्यक्रम के रागों की विशेषता, स्वर, विस्तार एवं अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त।

3–रागों के आलाप तान लिखने की योग्यता।

4–तालों का ताल परिचय लिखने की तथा इगुन, दुगुन, लय में लिखने की योग्यता होनी चाहिये।

5–गीतों का सरल आलाप, तान सहित लिपिबद्ध करने की योग्यता।

6–स्वर समूहों के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर राग पहचानने की योग्यता।

7–अमीर खुसरो एवं भातखण्डे की जीवनी।

8–राग यमन तथा खमाज रागों का विस्तृत अध्ययन, प्रत्येक में एक-एक गीत के साथ तीन-तीन आलाप एवं चार-चार तान तालबद्ध करके गाने की योग्यता।

9–बिलावल, भूपाली, आसावरी, रागों का परिचय एवं प्रत्येक का गीत स्वर लिपि सहित लिखने एवं गाने की योग्यता।

10–प्रत्येक राग का सरगम गीत तथा लक्षण गीत सिखाया जाना चाहिये।

11–प्रत्येक रागों का आरोह-अवरोह पकड़ गाना आना चाहिये।

नोट :–उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों पर आधारित प्रयोगात्मक परीक्षा ली जायेगी जो 15 अंकों की होगी तथा 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिये निर्धारित है जिसका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

प्रोजेक्ट कार्य

नोट :–निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं।

1–सप्तक के तीन प्रकार, प्रत्येक सप्तक के स्वर चिन्ह तथा एक सप्तक की दूसरे सप्तक से ऊँचाई अथवा निचाई को स्वरों की आन्दोलन संख्याओं के माध्यम से प्रदर्शित कीजिये।

2–हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटों के नाम तथा प्रत्येक थाट के स्वरों को तालिकाबद्ध कीजिये।

3–चार प्राचीन संगीत वाद्यों के चित्र एकत्र कीजिये तथा उनके नामों का उल्लेख करते हुये उन्हें अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाइये।

4–चार आधुनिक वाद्य यन्त्रों के विषय में लिखिये तथा उनके चित्र भी चिपकाइये।

5–एक चार्ट पेपर पर तानपुरे का चित्रण कीजिये तथा उनके अंगों के नाम लिखिये।

6–श्री विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा रचित संगीत पुस्तकों की एक सूची तैयार कीजिये।

7–स्वरों के शुद्ध एवं विकृत प्रकारों को चार्ट पेपर पर अंकित कीजिये।

8–चार प्रमुख भारतीय नृत्य शैलियों के नाम, चित्र एवं उनसे सम्बन्धित शीर्ष कलाकारों के नाम स्क्रैप बुक में अंकित कीजिये।

9–एक चार्ट पेपर पर तबले का चित्र बनाइये तथा अंगों के नाम दर्शाइये।

10–गायन से सम्बन्धित कुछ नवीन कलाकारों के नाम एकत्र कीजिये।

संगीत (वादन)

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

शास्त्रीय शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या–संगीत स्वर (शुद्ध एवं विकृत), आलाप, थाट, राग, आरोह, अवरोह, वादी संवादी, पकड़, गत, तोड़ा, जमजमा, मात्रा, लय, खाली, भारीटेक, सम, ताल, तिहाई, टुकड़ा, परन।

संगीत का इतिहास एवं रागों का अध्ययन–

1–वादन पाठ्यक्रम के रागों की विशेषतायें–स्वर विस्तार एवं अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त।

2–तालों के टुकड़े, परन आदि लिखने तथा बजाने की योग्यता अथवा सरल स्वर विस्तार एवं तोड़ो के साथ गाने लिपिबद्ध करके लिखने तथा बजाने की योग्यता।

3–स्वर समूह के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर रागों को पहचानने की योग्यता अथवा ठेके के कुछ बोलों के आधार पर तालों को पहचानने की योग्यता।

4–अमीर खुशरू एवं भातखण्डे की जीवनी, तबला पखावज या मृदंग, वीणा, सीतार, सरोद, सारंगी, इसराज या दिलरूबा गिटार, वायलिन और बांसुरी में से कोई एक वाद्य ले सकता है।

5–तबला और पखावज–(अपने वाद्यों के अंगों का सचित्र वर्णन तथा मिलाने की विधि का ज्ञान)–

(1) तीनताल, एकताल, झपताल में से प्रत्येक में दो कायदा, दो टुकड़े और दो तिहाइयाँ लिखने तथा बजाने की योग्यता।

(2) दादरा, रूपक एवं सूलफाक तालों के साधारण ठेके तथा उनकी दुगुन में ताली देकर बोलने का अभ्यास।

अन्य वाद्य लेने वाले :

1–राग यमन एवं खमाज रागों में से प्रत्येक में एक-एक राग जिसकी विस्तृत जानकारी आवश्यक है।

2–राग बिलावल, आसावरी एवं भूपाली रागों में आरोह-अवरोह एवं पकड़ लिखने की योग्यता/क्षमता।

3–तीनताल, झपताल, दादरा, एकताल से परिचित होना चाहिये।

4–भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।

नोट :–उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों की आन्तरिक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी जिसके लिये 15 अंक निर्धारित किये गये हैं तथा 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिये है। इनका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

प्रोजेक्ट कार्य

नोट :–किन्हीं तीन का चयन कर प्रोजेक्ट तैयार कीजिये।

1–अपने वाद्य को सचित्र चार्ट द्वारा प्रदर्शित कीजिये।

2–हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के किसी प्रसिद्ध संगीतज्ञ के सगीत में दिये योगदान को वर्णित कीजिये।

3–खुले बोल व बन्द बोलों की तालों को उदाहरण सहित अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिये।

4–वाद्यों के वर्गीकरण को समझाते हुये प्रत्येक प्रकारों के कुछ चित्र एकत्रित कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में चिपकाइये।

5–अपने वाद्य की परम्परा को बताते हुये किसी प्रसिद्ध घराने की चर्चा कीजिये।

6–उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कुछ प्रसिद्ध कलाकारों की सूची बनाकर उनको दिये जाने वाले पुरस्कार व क्षेत्र को बताइये।

7–किसी महान संगीतज्ञ का चित्र बनाकर संक्षिप्त जीवन परिचय चार्ट के माध्यम से दीजिये।

8–किसी संगीत समारोह का आँखों देखा हाल अपने शब्दों में वर्णित कीजिये।

9–संगीत के किसी एक वाद्य का मॉडल बनाइये।

10–शास्त्रीय संगीत के कुछ प्रसिद्ध वाद्यों के चित्र एकत्रित कर उन्हें बजाने वाले कलाकारों के नाम चित्र सहित सम्मुख लगाइये।

11–चल ठाठ व अचल ठाठ के सितार को समझाइये।

विषय-कृषि

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

1. जलवायु विज्ञान–उत्तर प्रदेश तथा भारत में मौसम और ऋतुएँ। फसलों पर अनुकूल तथ प्रतिकूल मौसम का प्रभाव। वर्षा, उसमें वार्षिक तथा ऋतुगत परिवर्तन, उसके वितरण का फसलों तथा कृषि क्रियाओं पर प्रभाव। 2

2. **मृदायें**–मृदा निर्माण, मृदा संगठन, मिट्टी के भौतिक गुण–मृदा गठन, मृदा विन्यास, रंध्रावकाश, सुघट्यता, घनत्व, संसजन और असंजन, भूमि ताप, मृदा जल उ0प्र0 के मृदाओं का संक्षिप्त विवरण। 10

3. सिंचाई और जल निकास–(क) पौधों को जल की आवश्यकता, नमी संरक्षण, अत्यधिक जल से हानियाँ, जल-निकास की सामान्य विधियाँ।

(ख) उत्थापक के प्रकार, उनके नाम, वाशर रहट तथा शक्ति चलित पम्प का विशेष ज्ञान। 10

4. खाद तथा उर्वरक–पौधों के आवश्यक पोषक तत्व और उनके स्रोत, जैविक खाद, गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, हरी खाद, खलियाँ आदि। 10

5. कर्षण–जुताई के उद्देश्य और जुताई की विधियाँ। 03

6. कृषि यन्त्र–(क) विभिन्न प्रकार के हल जैसे-देशी, मेस्टन, शाबाश केयर, यू0पी0 नं0–2 । 10

(ख) कल्टीवेटर।

(ग) हैरो–खूँटीदार, कमानीदार, तिकोनिया।

(घ) अन्य यन्त्र–पटेला, रोलर, करहा।

(ङ) हाथ के औजार–खुरपी, हो, रैक तथा फावड़ा।

7. फसलों का वर्गीकरण–फसल चक्र, शुष्क खेती, दियारा खेती, मिश्रित खेती, मिलवाँ फसल तथा बहु फसलों की खेती। 03

8. निम्न फसलों की खेती–मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास, सोयाबीन, उर्द, मूँग, जौ, चना, मटर, सरसों तथा बरसीम। 10

9. पशुपालन–गाय, भैंस, भेड़ तथा बकरी की उन्नत नस्लें। 10

10. लेखपाल के कागजात–गाँव का नक्शा तथा खतौनी, जोत-बही तथा उसकी उपयोगिता। 02

प्रयोगात्मक 15

1–बीज शैय्या तैयार करना। 05

2–कृषि यन्त्र, बीज, खरपतवार की पहचान। 05

3–मौखिक। 03

4–वार्षिक अभिलेख। 02

प्रोजेक्ट कार्य 15

नोट :–निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी बनवा सकते हैं।

1–ऋतुओं का वर्णन एवं उसमें उगाई जाने वाली फसलों का अध्ययन करना।

2–मृदा के भौतिक गुणों का अध्ययन करना।

3–विभिन्न प्रकार की जैविक खाद व रासायनिक खाद का अध्ययन करना।

4–विभिन्न ऋतुओं में उगने वाले खरपतवारों का अध्ययन करना।

5–फसलों में उपयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के कृषि यन्त्रों का अध्ययन करना।

6–जैविक व रासायनिक खाद में पाये जाने वाले प्रतिशत तत्वों का अध्ययन करना।

7–सिंचाई की विधियों एवं उससे होने वाले लाभ व हानियों का अध्ययन करना।

8–विभिन्न फसलों में दिये जाने वाले उर्वरकों का अध्ययन करना।

9–बलुई मिट्टी में उगाई जाने वाली फसलों तथा उसके सुधारने के उपाय का अध्ययन करना।

10–फसलों की पंक्तियों में बुआई से उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

नोट :–प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रयोगात्मक परीक्षा का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

विषय-सिलाई

कक्षा 9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

1–विभिन्न प्रकार के कपड़े (सूती, ऊनी, रेशमी, सिन्थेटिक) का ज्ञान तथा उनके सिकुड़ने की प्रवृत्ति का ज्ञान।

2–सूती, ऊनी, रेशमी, सिन्थेटिक कपड़ों पर लोहा (प्रेस) करने की विधि।

3–सिलाई में प्रयोग होने वाली सामग्री का ज्ञान।

4–तागे का ज्ञान।

5–पर्यावरण सुरक्षा–अर्थ, स्वरूप तथा पर्यावरण और सिलाई का सम्बन्ध।

6–प्रदूषण क्या है ? उनके विभिन्न प्रकार का प्रभाव।

7–सिलाई क्रिया के समय प्रदूषण के अवसर।

8–मनुष्य और शरीर का गठन।

9–नाप लेने की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रणाली।

10–सादा पायजामा, पेटीकोट, बंगला कुर्ता, फ्रॉक परिधानों की नाप लिखना, रेखाचित्र बनाना तथा पेपर कटिंग करना।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम 15

(प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा)

1–पेपर कटिंग–सादा पायजामा, पेटीकोट, बंगला कुर्ता, फ्रॉक सम्बन्धित यंत्रों के नापों की जानकारी एवं ड्राफ्ट बनाने का अभ्यास।

2–पेटीकोट, फ्रॉक, पायजामा, प्रेसिंग उपकरणों की जानकारी एवं उपयोगिता। वस्त्रों की सिलाई सम्बन्धी परिधानों को हाथ सिलाई, काज, बटन एवं पूर्णरूपेण फिनिशिंग का ज्ञान एवं अभ्यास करना।

प्रोजेक्ट कार्यों की सूची

नोट :–दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से करायें। प्रोजेक्ट कार्यों की फाइल तैयार करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रोजेक्ट पाँच अंकों का होगा।

1–विभिन्न प्रकार के वस्त्र (ऊनी, सूती, रेशमी, नायलॉन) पर जल, साबुन एवं धोने की विधि का प्रभाव।

2–सिलाई एक कला।

3–सिलाई किट।

4–धागों का वर्गीकरण।

5–पर्यावरण और सिलाई।

6–सिलाई एवं सजावटी टाँके।

7–सिलाई एवं सजावटी सामान।

8–वस्त्रों का नवीनीकरण।

9–एक फाइल तैयार करें जिसमें पाठ्यक्रमानुसार सभी वस्त्रों की नाप एवं पेपर कटिंग लगायें।

10–एक फाइल तैयार करें (जिसमें) पाठ्यक्रमानुसार सभी वस्त्रों की नाप लिखें एवं छोटे-छोटे वस्त्र सिल कर लगायें।

कम्प्यूटर

कक्षा-9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

1–कम्प्यूटर फन्डामेन्टल्स– 15

कम्प्यूटर परिचय।

कम्प्यूटर के विकास का इतिहास।

कम्प्यूटर के प्रकार।

कम्प्यूटर का रेखा-चित्र।

कम्प्यूटर के भाग।

हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर एवं उनके प्रकार।

कम्प्यूटर नेटवर्क।

इन्टरनेट।

2–कम्प्यूटर प्रणाली– 05

डिजिटल (डिस्क्रीट) और एनालॉग (कॉन्टीन्यूअस) ऑपरेशन्स।

बाइनरी डाटा।

बाइनरी नम्बर सिस्टम–

दशमलव (डेसिमल)।

ओक्टल।

हेक्साडेसिमल प्रणाली।

बाइनरी एवं डेसिमल में परस्पर सामान्य रूपान्तरण (फ्रैक्शनल कन्वर्जन सहित)।

3-A–ऑपरेटिंग सिस्टम– 05

ऑपरेटिंग सिस्टम का परिचय।

ऑपरेटिंग सिस्टम के कार्य एवं उनके प्रकार तथा अवयव।

लाइनेक्स एवं डॉस में अन्तर।

लाइनेक्स एवं विन्डोज में अन्तर।

3–ऑपरेटिंग सिस्टम (लाइनेक्स)– 10

लाइनेक्स का इतिहास।

लाइनेक्स के मौलिक गुण एवं विशेषतायें।

लाइनेक्स का जी0यू0आई0 स्वरूप।

लाइनेक्स का प्रारम्भ एवं उससे बाहर निकलने की विधि (शटडाउन)।

लाइनेक्स में माउस का प्रयोग करने की विधि।

किसी भी एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को प्रारम्भ एवं बन्द करने की विधि तथा दो सॉफ्टवेयर्स के मध्य आवागमन।

कम्प्यूटर फाइल्स और उनके प्रकार।

डायरेक्टरी।

सब-डायरेक्टरी।

वाइल्ड कॉर्ड अक्षर एवं उनका उपयोग।

त्रुटियों की सूचना (एरर मैसेज)।

बेसिक कमॉण्ड्स (फाइल बनाना, देखना, कॉपी करना, सेव करना आदि तथा डाइरेक्टरी बनाना, देखना, कॉपी करना, सेव करना आदि)

एडवान्स कमॉण्ड्स (फॉरमेट करना, बैकअप लेना, प्रिन्ट करना आदि)।

4–ऑफिस (लाइनेक्स के परिप्रेक्ष्य में) से परिचय– 10

ऑफिस के मूल तत्व एवं उनके द्वारा सम्पन्न होने वाले कार्यों का परिचय।

वर्ड प्रोसेसिंग के तत्व।

वर्ड प्रोसेसिंग की विधि।

कम्प्यूटराइज वर्ड प्रोसेसिंग के लाभ।

महत्वपूर्ण प्राथमिक कमाण्ड्स उदाहरण स्वरूप–किसी दस्तावेज की एन्टरिंग, फॉर्मेटिंग, एडिटिंग, सजावट, प्रिंटिंग आदि।

प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर के तत्व।

प्रेजेन्टेशन एवं स्लाइडों का निर्माण।

स्लाइड शो का निर्माण एवं उसे क्रियाशील करना।

प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर की मल्टीमीडिया क्षमतायें।

स्प्रेडशीट के तत्व।

वर्कशीट में डाटा एन्टर करना एवं संशोधन।

स्प्रेडशीट में चार्ट बनाना।

5–प्रोग्रामिंग तकनीक– 05

प्रोग्रामिंग क्या है ?

एल्गोरिथम।

फ्लो चार्ट।

ब्राचिंग।

लूपिंग।

मॉड्यूलर डिज़ाइन।

6–सी लैंग्वेज में मौलिक प्रोग्रामिंग (बेसिक प्रोग्रामिंग इन सी)– 15

सी लैंग्वेज से परिचय।

सी लैंग्वेज का महत्व।

कम्प्यूटर पर सी लैंग्वेज में कार्य करना।

करेक्टर सैट।

कॉन्सन्टैंस एवं वेरिएबिल्स।

सी में एक्सप्रेशन्स लिखना।

सी में कन्सोल इनपुट/आउटपुट।

फॉरमेटेड इनपुट/आउटपुट।

जम्पिंग एवं ब्रान्चिंग स्टेटमेन्ट्स।

स्टेटमेन्ट्स से परिचय।

If Then एवं If-Then-Else स्टेटमेन्ट्स।

For & Whil loop and Case.

7–कम्प्यूटर एप्लीकेशन एवं उनके लाभ– 05

स्कूल, वाचनालय, छपाई बैंकिंग, परिवहन, जनसंख्या, पर्यावरण आदि।

प्रयोगात्मक कार्य

उक्त प्रस्तर–3, 4, 5 तथा 6 पर आधारित माड्यूल्स के प्रयोगात्मक कार्य कराये जायेंगे। प्रयोगात्मक परीक्षा हेतु 15 अंक निर्धारित किये गये हैं इसका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

पाठ्य पुस्तकें–

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य

प्रोजेक्ट कार्य 15 अंक का होगा। दिये गये प्रोजेक्ट की सूची में से तीन प्रोजेक्ट अवश्य तैयार कराये जाये। शिक्षक इसके अतिरिक्त विषय से सम्बन्धित प्रोजेक्ट तैयार करा सकते हैं। प्रोजेक्ट का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

1–Hardware & Software (हार्डवेयर तथा साफ्टवेयर)।

2–लाइनेक्स कमाण्ड (cat, more, Is, mkdir, etc.)।

3–ऑपरेटिंग सिस्टम (प्रकार, अवयव, आइकन)।

4–लाइनेक्स ऑफिस (stra, calc, Impress, writer)।

5–प्रोग्रामिंग अवधारणा/तकनीक–

(फ्लोचार्ट, स्यूडोकोड, एलगोरिथम)।

6–सी प्रोग्रामिंग (साधारण प्रोग्राम)।

7–ब्रांचिंग।

8–लूपिंग/जम्पिंग।

9–फंक्शन (कन्सोल इनपुट/आउटपुट)।

10–फाइल ऑपरेशन।

विषय-गणित

कक्षा-9

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय तीन घंटे का होगा।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र	. .	70 अंक
प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन	. .	30 अंक
	योग . .	**100 अंक**

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु तथा 15 अंक मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र हेतु इकाईवार अंक विभाजन–

इकाई–1	बीजगणित तथा लघुगणक	. .	20 अंक
इकाई–2	त्रिकोणमिति	. .	18 अंक
इकाई–3	ज्यामिति	. .	20 अंक
इकाई–4	निर्देशांक ज्यामिति	. .	12 अंक
		कुल . .	**70 अंक**

इकाई–1. बीजगणित तथा लघुगणक– 20

(क) बहुपद तथा इनके गुणनखण्ड :

(1) बीजगणितीय व्यंजकों के गुणनखण्ड।

(2) द्विघात बहुपद के गुणनखण्ड करना।

(3) द्विघात त्रिपद व्यंजक/$(ax^2 + bx + c, a \neq 0)$ गुणनखण्ड (मध्यपद को दो भागों में बाँटकर तथा पूर्ण वर्ग बनाकर)।

(4) गुणनखण्ड प्रमेय शेषफल प्रमेय (उपपत्ति नहीं) तथा बहुपदों (चारघात से अधिक के नहीं) के गुणनखण्ड में इनका उपयोग।

(5) एक चरराशि में रैखिक समीकरण का वाणिज्यिक (कॉमर्शियल) गणित, मेंसुरेशन आदि में अनुप्रयोग।

(ख) लघुगणक :

(1) लघुगणक का अर्थ।

(2) घात के लघुगणक को घात में व्यक्त करना।

(3) आधार 10 पर सामान्य लघुगणक।

(4) पूर्णांश एवं अपूर्णांश।

(5) प्रतिलघुगणक का अर्थ।

(6) लघुगणकों के नियम।

(7) लघुगणकीय सारणियों का प्रयोग कर अभिकलन-चक्रवृद्धि ब्याज, जनसंख्या वृद्धि, वस्तुओं का मूल्य ह्रास।

(8) आयत वर्ग, त्रिभुज, समचतुर्भुज, समलम्ब चतुर्भुज एवं समान्तर चतुर्भुज आदि का क्षेत्रफल ज्ञात करने में लघुगणक का प्रयोग

इकाई–2. त्रिकोणमिति– 18

(1) किसी समकोण त्रिभुज में न्यून कोण A (या दूसरे कोण) का त्रिकोणमितीय अनुपात–

Sin A = सम्मुख भुजा/कर्ण	Cos A = संलग्न भुजा/कर्ण
Tan A = Sin A/Cos A	Cosec A = 1/Sin A
Sec A = 1/Cos A	Cot A = 1/Tan A

(2) $0^0, 30^0, 45^0, 60^0, 90^0 \pm \theta, \ 180^0 \pm \theta$ के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात।

(3) $30^0, 45^0, 60^0$ के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात के परिणाम ज्यामितीय उपपत्ति विधि द्वारा निकालना।

(4) त्रिकोणमितीय अनुपातों की ऊँचाई एवं दूरी के प्रश्नों के हल में सरल अनुप्रयोग।

इकाई–3. ज्यामिति– 20

(क) त्रिभुज में असमिका सम्बन्ध :

(1) यदि किसी त्रिभुज की दो भुजायें बराबर न हों, तो बड़ी भुजा के सामने का कोण बड़ा होता है।

(2) यदि किसी त्रिभुज के दो कोण असमान हों तो, बड़े कोण के सामने की भुजा बड़ी होती है।

(3) किसी त्रिभुज की दो भुजाओं का योगफल तीसरी भुजा से बड़ा होता है।

(4) एक दी हुई रेखा पर एक बिन्दु से जो इस रेखा पर स्थित नहीं है, डाले गये सभी रेखा खण्डों में लाम्बिक रेखा खण्ड सबसे छोटी होती है।

(5) त्रिभुज के कोण समद्विभाजक एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं।

(6) उस बिन्दु का बिन्दु पथ जो दिये हुये दो बिन्दुओं से समदूरस्थ हो, इन दो बिन्दुओं को मिलाने वाले रेखा खण्ड का लम्ब समद्विभाजक होता है।

(7) उस बिन्दु का बिन्दु पथ जो दी हुयी दो प्रतिच्छेदी रेखाओं से समदूरस्थ हो, इन रेखाओं से बने कोणों को समद्विभाजित करने वाला रेखायुग्म होता है।

(8) त्रिभुज के तीनों शीर्ष लम्ब एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं।

(9) त्रिभुज की मध्यिकायें एक ही बिन्दु से होकर जाती हैं और यह बिन्दु प्रत्येक माध्यिका को 2 : 1 के अनुपात में विभाजित करता है।

(10) त्रिभुज की भुजाओं के लम्ब समद्विभाजक एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं।

(ख) समान्तर चतुर्भुज :

(1) समान्तर चतुर्भुज के सम्मुख भुजाएं बराबर होती हैं।

(2) समान्तर चतुर्भुज के सम्मुख कोण बराबर होते हैं।

(3) समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर समद्विभाजित करते हैं।

(4) एक चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है, यदि उसके सम्मुख कोण परस्पर बराबर हों।

(5) एक चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है, यदि इसकी सम्मुख भुजायें परस्पर बराबर हों।

(6) यदि किसी चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर समद्विभाजित करते हों तो वह समान्तर चतुर्भुज होता है।

(7) चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है, यदि इसकी सम्मुख भुजाओं का एक युग्म परस्पर बराबर एवं समान्तर हो।

(8) आयत के विकर्ण समान लम्बाई के होते हैं।

(9) यदि समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण बराबर हों, तो वह एक आयत होता है।

(10) समचतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्ब होते हैं।

(11) यदि समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्ब हो तो वह एक समचतुर्भुज होता है।

(12) वर्ग के विकर्ण समान लम्बाई के और परस्पर लम्ब होते हैं।

(13) यदि एक समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण समान लम्बाई के और परस्पर लम्ब हों, तो वह वर्ग होगा।

(14) त्रिभुज की दो भुजाओं के मध्य बिन्दुओं को मिलाने वाला रेखाखण्ड तीसरी भुजा के समान्तर और लम्बाई में उसका आधा होता है।

(15) त्रिभुज की एक भुजा के मध्य बिन्दु से एक अन्य भुजा के समान्तर खींची गयी रेखा तीसरी भुजा को उसके मध्य बिन्दु पर प्रतिच्छेदित करती है।

(16) यदि तीन या तीन से अधिक समान्तर रेखायें हों और उनके द्वारा एक तिर्यक रेखा पर बनाये गये अन्तः खण्ड बराबर हों, तो किसी अन्य तिर्यक रेखा पर उनके द्वारा बनाये गये अन्तः खण्ड भी बराबर होंगे।

(ग) क्षेत्रफल :

(1) समान्तर चतुर्भुज का प्रत्येक विकर्ण उसे दो बराबर क्षेत्रफल वाले त्रिभुजों में बाँटता है।

(2) एक ही आधार पर और समान समान्तर रेखाओं के बीच समान्तर चतुर्भुजों के क्षेत्रफल बराबर होते हैं।

(3) एक ही आधार और समान समान्तर रेखाओं के बीच के त्रिभुजों के क्षेत्रफल बराबर होते हैं।

(4) यदि दो त्रिभुजों के क्षेत्रफल बराबर हों और एक त्रिभुज की एक भुजा, दूसरे त्रिभुज की एक भुजा के बराबर हो तो उनके संगत शीर्ष लम्ब बराबर होते हैं।

इकाई–4. निर्देशांक ज्यामिति– 12

(1) दो बिन्दुओं के बीच की दूरी।

(2) रेखा खण्डों को दिये हुये अनुपात में विभाजन करने वाले बिन्दुओं के निर्देशांक।

(3) त्रिभुज का क्षेत्रफल।

प्रोजेक्ट कार्य

नोट–निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक छात्र से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट अपने स्तर से भी दे सकते हैं।

- अपनी कक्षा के छात्रों की ऊँचाई और भार का सर्वे कीजिये तथा ऊँचाई और भार का सम्बन्ध बताइये।
- विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की वास्तुकला एवं निर्माण में भूमिका का अध्ययन करना।
- मध्यकाल के किसी एक भारती गणितज्ञ (आर्यभट्ट, श्रीधराचार्य, महावीराचार्य आदि) के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालना।
- अपने घर के आय-व्यय का बजट बनाना।
- π (पाई) की खोज।
- बीजगणितीय सर्वसमिकाओं जैसे $(a + b)^2 = a^2 + 2\ ab + b^2$, $(a - b)^2 = a^2 - 2\ ab + b^2$ का क्रियात्मक निरूपण करना।
- बैंक में खोले जाने वाले विभिन्न प्रकार के खातों एवं उनकी ब्याज दरों का अध्ययन करना।
- समाचार-पत्र के माध्यम से किन्हीं तीन गल्ला मण्डियों के अनाजभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- गणित का अर्थशास्त्र से सम्बन्ध।
- समतल या गत्ता काटकर विभिन्न चतुर्भुजीय आकृतियाँ बनाना एवं उनकी विशेषतायें लिखना।

प्रारम्भिक गणित

कक्षा–9

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय तीन घंटे का होगा।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र	. .	70 अंक
प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन	. .	30 अंक
योग	**. .**	**100 अंक**

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु तथा 15 अंक मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र हेतु इकाईवार अंक विभाजन–

इकाई–1	बट्टा	. .	08 अंक

इकाई–2	सांख्यिकी	. .	12 अंक
इकाई–3	बीजगणित	. .	20 अंक
इकाई–4	ज्यामिति	. .	14 अंक
इकाई–5	मेन्सुरेशन	. .	16 अंक
		कुल . .	**70 अंक**

इकाई–1. बट्टा– 08

इकाई–2. सांख्यिकी– 12

(1) आँकड़ों का सारणीयन, बारम्बारता, संचयी बारम्बारता बंटन।

(2) सांख्यिकी आँकड़ों का लेखाचित्रीय निरूपण–दण्ड चार्ट, पाई चार्ट, आयत चित्र, बारम्बारता बहुभुज, संचयी बारम्बारता आरेख।

इकाई–3. बीजगणित– 20

(1) सूत्रों की पुनरावृत्ति– $(a \pm b)^2$, $a^2 - b^2$, $(a \pm b)^3$.

(2) गुणनखण्ड सर्वनिष्ठ तथा समूह विधि द्वारा दो वर्गों के अन्तर का व्यंजक, द्विघात त्रिपद व्यंजक (मध्यपद को दो-दो भागों में बाँटकर, दो घनों का योग तथा अन्तर के व्यंजक)

इकाई–4. ज्यामिति– 14

(क) त्रिभुजों में असमिका सम्बन्ध–

(1) यदि किसी त्रिभुज की दो भुजायें बराबर न हों तो बड़ी भुजा के सामने का कोण बड़ा होता है। (उपपत्ति सहित)।

(2) किसी त्रिभुज में दो भुजाओं का योगफल तीसरी भुजा से बड़ा होता है।

(3) समकोण त्रिभुज की भुजाओं बौधायन–पाइथागोरस सम्बन्ध समकोण बनाने वाली भुजाओं के वर्गों का योगफल कर्ण के वर्ग के बराबर होता है। पाइथागोरस संख्या (3, 4, 5) (5, 12, 13) (7, 24, 25) (8, 15, 17) इत्यादि।

(ख) रचनायें–

(1) त्रिभुज की रचना–

(क) भु0को0भु0, को0को0भु0, भु0भु0भु0 समकोण कर्ण एक भुजा पर आधारित रचनायें।

(ख) निम्नलिखित त्रिभुज की रचना–

1–आधार, आधार कोण तथा शेष दो भुजाओं का योग।

2–आधार, आधार कोण तथा शेष दो भुजाओं का अन्तर।

3–त्रिभुज का परिमाप तथा आधार कोण।

(2) चतुर्भुज की रचना–

(क) चार भुजायें और एक विकर्ण।

(ख) तीन भुजायें तथा दोनों विकर्ण।

(ग) दो संलग्न भुजायें और उनके बीच का कोण तथा अन्य दो कोण।

(घ) तीन भुजायें और दो मध्यस्थ कोण।

(ङ) आयत तथा वर्ग की रचना।

इकाई–5. मेन्सुरेशन– 16

(1) त्रिभुज, आयत, वर्ग और समलम्ब के परिमाप तथा क्षेत्रफल।

(2) घन, घनाभ का विकर्ण, सम्पूर्ण पृष्ठ तथा आयतन।

प्रोजेक्ट कार्य

नोट–निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक छात्र से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट अपने स्तर से भी दे सकते हैं।

- अपने घर के आय-व्यय का बजट बनाना।
- कम से कम दो स्टोर का भ्रमण कीजिये तथा वस्तुओं के क्रय मूल्य, अंकित मूल्य, विक्रय मूल्य, छूट, लाभ तथा हानि की जाँच पड़ताल कीजिये।
- विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की वास्तुकला एवं निर्माण में भूमिका का अध्ययन करना।
- मध्यकाल के किसी एक भारतीय गणितज्ञ (आर्यभट्ट, श्रीधराचार्य, महावीराचार्य आदि) के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिये।
- समाचार-पत्र का अध्ययन करके शेयर और बट्टे पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- π (पाई) की खोज।
- बीजगणित सर्वसमिकाओं जैसे $(a + b)^2 = a^2 + 2ab + b^2$, $(a - b)^2 = a^2 - 2ab + b^2$ का क्रियात्मक निरूपण करना।
- पाइथागोरस प्रमेय की दैनिक जीवन में उपयोगिता।
- गणित के अध्ययन में कम्प्यूटर का महत्व।
- समतल या गत्ता काटकर विभिन्न चतुर्भुजीय आकृतियाँ बनाना एवं उनकी विशेषतायें लिखना।

सामाजिक विज्ञान

कक्षा 9

पाठ्यक्रम–एक प्रश्न-पत्र

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय तीन घंटे का होगा।

अनुभाग–1 (ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत) 20

इकाई–1 08

(क) भारत में प्रारम्भिक सभ्यता का विकास।

(ख) जनपदों से साम्राज्य तक।

(ग) छोटे राज्यों का उदय।

इकाई–2 07

(क) सुल्तनत कालीन भारत।

(ख) मुगलकालीन भारत।

इकाई–3 मानचित्र कार्य– 05

अनुभाग–2 (नागरिक जीवन) 15

इकाई–1 08

(क) भारतीय संविधान।

(ख) भारत में लोकतंत्र।

इकाई–2 07

(क) स्थानीय स्तर पर शासन।

(ख) राष्ट्रीय चुनौतियां एवं अपेक्षायें। (ग) सडक सुरक्षा एवं यातायात ।

अनुभाग–3 (पर्यावरणीय अध्ययन) 20

इकाई–1 08

(क) पर्यावरणीय संरचना।

(ख) पर्यावरण का भौतिक स्वरूप।

इकाई–2 07

(क) प्राकृतिक संसाधन।

(ख) मानवीय संसाधन।

इकाई–3 मानचित्र कार्य– 05

अनुभाग–4 (आर्थिक विकास) 15

इकाई–1 10

(क) अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन।

(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप।

इकाई–2 05

(क) भारतीय अर्थव्यवस्था के संकेतक।

प्रोजेक्ट कार्य 15

आन्तरिक मासिक परीक्षण। 15

नोट–प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

अनुभाग–एक (ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत) 20

इकाई–1 08

(क) भारत में प्रारम्भिक सभ्यता का विकास–

(i) खाद्य संग्रहण एवं पशुचारण से कृषि तक।

(ii) विश्व की नदी घाटी की सभ्यताओं का सामान्य परिचय।

(iii) हड़प्पा सभ्यता।

(iv) वैदिक समाज एवं संस्कृति।

(v) जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का प्रभाव।

(ख) जनपदों एवं साम्राज्य का विकास–

(i) जनपदों की राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता तथा महाजनपद।

(ii) साम्राज्य का विकास–मौर्य साम्राज्य (चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक)।
गुप्त साम्राज्य (आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास)।

(iii) हर्ष कालीन उपलब्धियाँ।

(ग) छोटे राज्यों का उदय–

(i) सामन्तवाद–तत्कालीन राजपूतों का उत्कर्ष।

(ii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।

(iii) दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश–सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।

इकाई–2 07

(क) सुल्तनत कालीन भारत–

(i) दिल्ली सुल्तनत–स्थापना एवं सुदृढ़ीकरण।

(ii) सुल्तनत कालीन प्रशासनिक उपलब्धियाँ।

(iii) तत्कालीन समाज एवं संस्कृति (धार्मिक सहिष्णुता सूफी तथा भक्ति आन्दोलन)।

(ख) मुगलकाल में भारत–

(i) शेरशाह की उपलब्धियाँ।

(ii) मुगलों का योगदान (सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्र)।

(iii) मराठा शक्ति का अभ्युदय।

इकाई–3 मानचित्र कार्य– 05

अनुभाग–दो (नागरिक जीवन) 15

इकाई–1 08

(क) भारतीय संविधान–

(i) संविधान का निर्माण (प्रस्तावना)।

(ii) संविधान की मुख्य विशेषतायें।

(iii) मूल अधिकार नीति निदेशक तत्व एवं मौलिक कर्त्तव्य।

(ख) भारत में लोकतंत्र–

(i) लोकतंत्र–एक परिचय।

(ii) सार्वभौम वयस्क मताधिकार एवं निर्वाचन–प्रक्रिया।

(iii) भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों की भूमिका।

(iv) जनमत निर्माण, मानवाधिकार एवं सूचना का अधिकार।

इकाई–2 07

(क) स्थानीय स्तर पर शासन–

(i) स्थानीय स्तर के शासन का महत्व (पंचायती राज व्यवस्था)।

(ii) ग्राम पंचायत/क्षेत्र पंचायत/जिला पंचायत।

(iii) नगर प्रशासन–नगर पंचायत, नगर पालिका, परिषद्, नगर निगम।

(ख) राष्ट्रीय चुनौतियाँ एवं अपेक्षायें–

(i) चुनौतियाँ बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, निरक्षरता, पर्यावरण असंतुलन, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, निर्बल वर्ग एवं महिला का विकास।

(ii) अपेक्षायें–अनेकता में एकता, सर्वधर्म सम्भाव, लैंगिक समानता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

(iii) महिलाओं के लिये बने कानून।

अनुभाग–तीन (पर्यावरणीय अध्ययन) 20

इकाई–1 08

(क) पर्यावरणीय संरचना–

(i) पर्यावरण का तात्पर्य, महत्व तत्व–स्थल, वायु, जल एवं जैविक स्वरूप।

(ii) पारिस्थितिकीय तंत्र–संरचना महत्ता एवं संतुलन।

(iii) पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण।

(ख) पर्यावरण का भौतिक स्वरूप–

(i) स्थल मण्डल–रचना, परिवर्तनकारी शक्तियाँ –

(1) आन्तरिक, वलन, भ्रंशन, भूकम्प एवं ज्वालामुखी।

(2) वाह्य–ऋतु अपक्षय, पवन, बहता जल हिमानी, लहरें।

(ii) वायु मण्डल–

(1) संरचना, सूर्यातप, तापकटिबन्ध, वाष्पीकरण–संघनन–वर्षा एवं वितरण।

(2) मौसम एवं जलवायु।

(3) जलवायु का मानव जीवन पर प्रभाव।

(iii) जल मण्डल–रचना, जल के स्रोत–

(1) महासागर, मग्नतट, ढाल, गर्त, मैदान।

(2) स्थलीय जल स्रोत एवं अधौभौमिक जल एवं वर्तमान स्थिति।

(iv) जैव मण्डल–तात्पर्य, घटक, घटकों में बढ़ता असंतुलन एवं प्रभाव–

(v) पर्यावरण का प्रदूषण–

(1) वायु, जल, मृदा, ध्वनि, भूमि एवं जैव प्रदूषण–कारण तथा प्रभाव
(अपशिष्ट पदार्थों द्वारा प्रदूषण के विशेष सन्दर्भ में)।

इकाई–2 07

(क) प्राकृतिक संसाधन–

संसाधन का तात्पर्य मुख्य संसाधन–भूमि, मृदा, वन, पशु, मत्स्य, खनिज, ऊर्जा संसाधन, जल, खनिज तेल, आणविक खनिज, कोयला, लकड़ी एवं ऊर्जा के वैकल्पिक साधन, सामान्य परिचय।

(ख) मानवीय संसाधन–

(i) जनसंख्या–घनत्व, वितरण।

(ii) बढ़ती जनसंख्या की समस्यायें–निरक्षरता, गरीबी, बेरोजगारी, अपराध, खाद्यान्न–आपूर्ति में कमी, कुपोषण, सामान्य परिचय।

(iii) जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता एवं अपनाये गये उपाय।

इकाई–3 मानचित्र कार्य– 05

अनुभाग–चार (आर्थिक विकास) 15

इकाई–1 10

(क) अर्थव्यवस्था एक अध्ययन–

(i) अर्थव्यवस्था का तात्पर्य एवं प्रकार–पूँजीवादी, समाजवादी मिश्रित।

(ii) अर्थव्यवस्था के मूल आधार–उत्पादन, उत्पादन के साधनों में समन्वय, उपभोक्ता की अपेक्षायें।

(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप–

(i) भारतीय अर्थव्यवस्था की मूल प्रवृत्तियाँ –आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास।

(ii) भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र–

(1) स्वामित्व के अनुसार–निजी, सार्वजनिक, मिश्रित।

(2) व्यवसाय के अनुसार–प्राथमिक कृषि, खनन, मत्स्य, पशुपालन।

द्वितीयक–निर्माण, विद्युत्, गैस और जल।

तृतीयक–बैंक, बीमा सेवायें अन्य सेवायें, बौद्धिक–सभ्यता सहित।

इकाई–2 05

भारतीय अर्थव्यवस्था के संकेतक–

(i) सुविकसित सामाजिक एवं आर्थिक विकास।

(ii) सामाजिक विकास के संकेतक–शिक्षा (प्रशिक्षण-अनुसंधान), स्वास्थ्य, आवास, जीवन प्रत्याशा, नागरिक सुविधायें, सुरक्षा, संरक्षा, शान्ति एवं जीवनयापन की सुविधायें उपभोक्ता जागरूकता, परिवहन।

(iii) आर्थिक विकास के संकेतक–परिवहन एवं संचार तंत्र, विद्युत् और सिंचाई, मौद्रिक एवं वित्तीय संस्थायें–देशी बैंकर या साहूकार, रिजर्व बैंक, वाणिज्यिक बैंक, विशिष्ट वित्तीय संस्थायें, गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थायें।

(iv) विकास की दृष्टि से विश्व में भारत की स्थिति।

प्रोजेक्ट–सूची

आवश्यक निर्देश :– **पूर्णांक–15**

1. प्रोजेक्ट बनाने में चित्रों, मानचित्रों, रेखाचित्रों, तालिकाओं, आंकड़ों का प्रयोग अवश्य करें।
2. कुल तीन प्रोजेक्ट बनाने हैं। प्रोजेक्ट अलग-अलग विषय से सम्बन्धित होना चाहिये। प्रत्येक प्रोजेक्ट के 05 अंक निर्धारित हैं।
3. दिये गये प्रोजेक्ट के अतिरिक्त शिक्षक/शिक्षिका स्वयं अपने स्तर से अन्य प्रोजेक्ट भी बनवा सकते हैं।

1–हड़प्पा सभ्यता की सामाजिक (खान-पान, वस्त्र विन्यास, नगर-योजना) धार्मिक जीवन का वर्तमान सामाजिक धार्मिक से सह सम्बन्ध।

2–पुरा पाषाण, काल, मध्यकाल और नवयुग के औज़ारों की तालिका एवं उनका उपयोग।

3–मिश्र की स्थापत्य कला के अन्तर्गत पिरामिड।

4–सुल्तनत एवं मुगल स्थापत्य कला की तुलनात्मक सारिणी।

5–पाषाण युगीन संस्कृति का क्षेत्र, काल एवं प्रमुख स्थलों का अंकन (चित्र, मानचित्र की सहायता से)।

6–अपने स्कूल-पुस्तकालय से भारतीय संविधान की प्रति प्राप्त कर भारतीय संविधान के मुख्य भागों की सूची बनाइये।

7–क्या आपके पास-पड़ोस के सभी बच्चे विद्यालय जाते हैं जो बच्चे विद्यालय नहीं जाते हैं, कारण ज्ञात कीजिये।

8–भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका (पक्ष-विपक्ष)।

9–आपके राज्य में मानवाधिकार आयोग की भूमिका–मानवाधिकार उल्लंघन से सम्बन्धित मामलों की सूची।

10–भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता का महत्व एवं आवश्यकता तथा सर्व धर्म सम्भाव।

11–स्थानीय स्तर के शासन (पंचायती राज व्यवस्था) का महत्व एवं कार्य।

12–विश्व में स्थल मण्डल तथा जल मण्डल का विस्तार, महाद्वीपों, महासागरों के नाम की सूची, मानचित्र पर प्रदर्शन।

13–पारिस्थितिकीय तंत्र में ऊर्जा प्रवाह, अपने आस-पास स्थित जैविक अजैविक घटकों की सूची।

14–भारत के प्रमुख संसाधन–प्रकार, उपयोगिता, स्थानीय रूप से प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों की सूची।

15–अपने क्षेत्र की स्त्री/पुरूषों, बालक/बालिकाओं की जनगणना, स्त्री पुरूष साक्षरता प्रतिशत ज्ञात करना तथा निरक्षरता दूर करने हेतु अपने स्तर पर किये गये प्रयासों की सूची।

16–वैश्विक तपन–कारण तथा परिणाम, नियंत्रण के उपाय (विशेषकर वनों के ह्रास के सन्दर्भ में)।

17–जल प्रदूषण–प्रदूषण के कारण, प्रभाव तथा रोकथाम के उपाय में आपकी भूमिका।

18–जीवन यापन के लिये अर्थ का महत्व, इसके अभाव में उठने वाली कठिनाईयां, दूर करने के उपाय।

19–निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुये उपभोक्ता जागरूकता पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखिये–

(i) वस्तुओं के बाजार।

(ii) वस्तुओं के मूल्य।

(iii) वस्तुओं में मिलावट।

(iv) वस्तुओं में मुनाफाखोरी।

(v) कालाबाजारी।

(vi) वस्तुओं की कम नापतौल।

(vii) झूठे व भ्रामक विज्ञापन से उपभोक्ता का शोषण।

(viii) उपभोक्ता फोरम।

(ix) उपभोक्ता के अधिकार और कर्त्तव्य।

20–भारत में ग्रामीण व शहरी अर्थव्यवस्था में आय व सम्पत्ति के वितरण में व्याप्त तीव्र आर्थिक असमानता, इसके कारण तथा प्रभावों का विश्लेषण तथा समाधान।

21–यातायात तथा संचार के साधनों की आवश्यकता पर एक प्रोजेक्ट लिखिये।

22–अपने विद्यालय की सुरक्षा व्यवस्था पर एक प्रोजेक्ट लिखिये।

23–यदि विद्युत् या बिजली की खोज न होती तो क्या-क्या चीजें न होती। इसकी सूची तैयार कीजिये।

वाणिज्य

कक्षा–9 के लिये

पाठ्यक्रम

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय तीन घंटे का होगा।

इस विषय में 70 अंक की लिखित परीक्षा तथा 30 अंक का प्रायोगिक व आन्तरिक मूल्यांकन होगा। प्रायोगिक आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक का प्रोजेक्ट कार्य तथा 15 अंक को मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है। प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा। लिखित परीक्षा हेतु अंक विभाजन निम्नवत् है :–

1–दोहरा लेखा प्रणाली का तात्विक सिद्धान्त व व्यवहार, आधुनिक पाश्चात्य बही खाता प्रणाली के अनुसार प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें केवल रोजनामचा व रोकड़ बही, खतौनी व तलपट भारतीय बही खाता प्रणाली, रोकड़ बही व जमा तथा नाम नकल बही। 20

2–व्यापारिक कार्यालय का संगठन व कार्य प्रणाली आने-जाने वाले पत्रों का लेखा, प्रतिलिपिकरण, पूछताछ व आदेश सम्बन्धी पत्र-व्यवहार। 20

3–मुद्रा इतिहास, परिभाषा कार्य, भारत में मुद्रा प्रणाली का सामान्य परिचय। 15

4–अर्थशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र, अर्थशास्त्र से सम्बन्धित शब्दावली जैसे उपयोगिता, धन कीमत मूल्य आदि। आवश्यकताओं का वर्गीकरण एवं लक्षण। 15

निर्धारित पुस्तक–

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य एवं आंतरिक मूल्यांकन 15+15=30

नोट :–दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। प्रत्येक खण्ड में से एक प्रोजेक्ट कराना अनिवार्य है। शिक्षक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। प्रत्येक प्रोजेक्ट 05 अंक का होगा। 15 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर मासिक परीक्षण द्वारा होगा :

1–पुस्तकालय व लेखाकर्म।

2–दोहरा लेखा प्रणाली-परिचय/सिद्धान्त।

3–रोजनामचा आशय व लेखाकर्मों के नियम।

4–तलपट बनाने की विधियाँ।

5–भारतीय बही खाता प्रणाली–कच्ची रोकड़ बही।

6–भारतीय बही खाता प्रणाली–पक्की रोकड़ बही।

7–जमा व नाम नकल बही।

8–व्यापारिक कार्यालय के कार्य।

9–प्रतिलिपिकरण की प्रणालियाँ।

10–व्यापारिक-पत्र के मुख्य अंग।

11–मुद्रा का जन्म व विकास।

12–मुद्रा के कार्य।

13–भारतीय मुद्रा प्रणाली का सामान्य परिचय।

14–अर्थशास्त्र के विभाग।

15–अर्थशास्त्र के अध्ययन से विभिन्न वर्गों के लाभ।

चित्रकला

कक्षा–9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा, जिसमें से किन्ही दो खण्डों के प्रश्न करने होंगे।

खण्ड–क (प्राविधिक) 35

इस खण्ड में कुल पाँच प्रश्न होंगे, जिसमें से कुल तीन प्रश्न करने होंगे। 15 अंकों का अक्षर लेखन अनिवार्य होगा। शेष प्रश्न 10-10 अंकों के होंगे :–

1–रेखाओं तथा कोणों पर आधारित ज्यामितीय निर्देश।

2–अनुपात तथा समानुपात (रेखा तथा कोण)।

3–त्रिभुज (समद्विबाहु, समबाहु आदि)।

4–चतुर्भुज (वर्ग, आयत, पतंगाकार आदि)।

5–बहुभुज (पंचभुज आदि)।

6–अक्षर लेखन (बड़े अक्षर एवं तिरछे)।

खण्ड–ख (आलेखन) 35

दिये गये वर्ग अथवा आयत में एक या दो आवृत्ति के किसी भारतीय पुष्प (कमल, सूरजमुखी, गुलाब, कनेर, जीनिया, डहेलिया आदि) पर आधारित मौलिक आलेखन वस्त्र पर छपाई (टेक्सटाइल डिजाइन) अथवा अल्पना के दृष्टिकोण से तैयार करना।

चित्र दो सपाट रंगों में पूर्ण किया जाये।

खण्ड–ग (मानव आकृति) 35

साधारण पृष्ठ भूमि में सम्पूर्ण आकृति के एक वर्गीय (मोनोक्रोम) चित्रांकन, बालक, किशोर, युवा अथवा वृद्ध (स्त्री, पुरुष) का स्मृति से दिये गये विषय के अनुसार चित्र बनाया जाये। चित्र पेंसिल, क्रेयान अथवा काली स्याही (ब्लैक स्केच पेन) से लगभग पूरे पृष्ठ पर बनाया जाये। मानव शरीर एवं उसके विविध अंगों के अनुपात पर ध्यान दिया जाये।

प्रोजेक्ट कार्य

नोट :–परियोजना कार्य तीन खण्डों में विभक्त होगा, जिसमें से किन्हीं दो खण्डों से तीन परियोजना कार्य पूर्ण करना अनिवार्य है। प्रत्येक परियोजना कार्य पाँच अंक का है। इसके अतिरिक्त 15 अंक मासिक परीक्षा के लिये निर्धारित है।

परियोजना कार्य सैद्धान्तिक, तकनीकी कौशल तथा माध्यम (जलरंग, पोस्टर रंग, पेंसल, चारकोल, क्रेयान, इंक आदि) के उपयुक्त प्रयोग पर आधारित होगा।

परियोजना कार्य में संयोजन, सौन्दर्य (आकर्षण) अनुपात, लय के सिद्धान्तों का ध्यान रखते हुये पूर्ण किया जाये।

खण्ड–क (प्राविधिक)

1–रेखाओं एवं कोणों पर आधारित किसी वास्तु (आर्कीटेक्चर) की परिकल्पना करें और उसके पार्श्व को ज्यामितीय आधार पर पूर्ण करें जिससे यह ज्ञात हो कि ज्यामितीय ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग विद्यार्थी कर सकेगा।

2–त्रिभुज एवं उसके वैविध्य का ज्ञान पर बने हेतु सिटी स्केप, लैण्ड स्केप के ज्यामितीय आरेख बनाये जो पूर्णतः त्रिभुजाकार में हो।

3–वर्ग/आयत (चतुर्भुज) के क्षेत्रफल ज्ञात करने की विधि को उदाहरण सहित व्यक्त करें जिससे यह ज्ञात हो कि विद्यार्थी इसका व्यावहारिक उपयोग कर सकेगा।

4–बहुभुज की उपयोगिता को सिद्ध करने वाले कोई 10 उदाहरण दें और उसे सचित्र वर्णन करें।

5–विद्यार्थी के अक्षर लेखन (Calligraphy) के परख करने के लिये कम से कम बीस वाक्य लिखें जो कलात्मक, कोंणात्मक, तिरछा, अलंकारिक आदि प्रकार के हों।

खण्ड–ख (आलेखन)

6–आलेखन की उपयोगिता को रेखांकित करते हुये किसी वर्ग अथवा आयत में भारतीय पुष्पों के साथ एक मौलिक वस्त्र छपाई (टेक्सटाइल डिजाइन) की रचना करें।

7–कोई अल्पना या रंगोली की रचना करें जो चूर्णित, शुष्क एवं आर्द्र माध्यम के साथ पूर्ण किया जाय।

8–अलंकारिक एवं ज्यामितीय आलेखन की रचना करें, उसे जलरंग द्वारा पूर्ण करें।

9–पेंसिल एवं चारकोल द्वारा आलेखन तैयार करें जिसमें रंग का उपयोग न हो किन्तु आकर्षण एवं लय की स्थिति कायम रहे।

10–पोस्टर कलर अथवा वैक्स कलर के साथ अल्पना की रचना करें (वैक्स का टेक्चर यथावत् रखें उसे मिलाइये नहीं)।

खण्ड–ग (मानव आकृति)

11–एक वर्णीय (मोनोक्रोम) चित्रण पद्धति द्वारा बालक, किशोर, वृद्ध, पुरुष की मानव आकृति सृजित करें।

12–पेंसिल, चारकोल, वैक्स द्वारा बालिका, किशोरी एवं वृद्धा की आकृति सृजित करें।

13–पेंसिल अथवा पेन द्वारा कार्यरत मानव आकृति का शीघ्रता में रेखांकन किया जाय जिसमें गति का बोध हो।

14–स्त्री, पुरूष, बालक-बालिका के शरीरानुपात को ध्यान में रखते हुये जलरंगी चित्रण करें।

15–किसी स्त्री-पुरूष, बच्चा-बच्ची का वास्तविक चित्र अंकित करें तथा पुनः उसी को कार्टून में परिवर्तित करें।

रंजन कला

कक्षा–9

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा। प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा जिसमें से किन्हीं दो खण्डों के प्रश्न हल करने होंगे।

खण्ड–क (चित्र संशोधन) 35

भारतीय चित्रण शैली अथवा स्वतन्त्र शैली में काल्पनिक चित्र जिसमें कम से कम एक मानव आकृति एवं पृष्ठ भूमि में साधारण दृश्य अंकित किये जायें। दिये जल रंग अथवा पोस्टर रंग में तैयार किया जाये। चित्र लगभग पूरे पृष्ठ पर बनाया जाय।

खण्ड–ख (वस्तु चित्रण) 35

साधारण जीवन में दैनिक उपभोग की घरेलू वस्तुयें, पालतू जानवर, शाक-सब्जी और फल-फूल आदि किन्हीं दो वस्तुओं का स्मृति से चित्र, छाया प्रकाश दर्शाते हुये अंकित करना। चित्र एक वर्ण (मोनोक्रोम) पेंसिल, क्रेयान, काली स्याही में चित्रित किया जाये।

खण्ड–ग (चित्रकला के मूलतत्व) 35

इस खण्ड में पाँच प्रश्न होंगे, जिसमें से कुल तीन प्रश्न करने होंगे।

(1) रेखा (Line)।

(2) रंग या वर्ण (Colour)।

(3) तान (Tone)।

(4) पोत (Texture)।

(5) आकृति (Form)।

(6) अन्तराल (Space)।

(7) षडाँग (चित्रकला के 6 अंग)।

पुस्तकें :–कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन 30

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिये तथा 15 अंक मासिक परीक्षा के लिये निर्धारित है जिसका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

प्रोजेक्ट कार्य की सूची

नोट :–निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं। प्रत्येक प्रोजेक्ट 5 अंक का है।

निम्नलिखित कथनों के रंगीन पोस्टर बनाकर घर में एवं विद्यालय में लगायें :–

(1) जल ही जीवन है।

(2) अधिक अन्न उपजाओ।

(3) सच बोलो।

(4) प्रातः उठो।

(5) बड़ों का आदर करो।

एवं

(6) किसी भारतीय चित्रकार का चित्रकला में योगदान।

कक्षा–9

मानव विज्ञान

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

(पुरातात्विक मानव विज्ञान)

पूर्णांक : 70 अंक

कालांश : 220 अंक

इकाई–1

(क) पृथ्वी पर मानव जीवन का आरम्भ एवं भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन की कालावधि। 5

(ख) आरम्भिक प्रति नूतन काल में मानव जीवन की विद्यमानता के प्रमाण– 10

(1) मानव जीवाष्म अवशेष।

(2) मानव निर्मित उपकरण।

इकाई–2

पृथ्वी पर हिमयुग

(क) काल, अवधि, क्षेत्र, जलवायु परिवर्तन क्रम एवं संख्या, प्राणी जीवन एवं वनस्पतियाँ। 10

(ख) हिमयुग के घटित होने के प्रमाण– 10

(1) हिमनद।

(2) मोरेन।

(3) नदी सोपान।

(ग) पर्यावरणीय विषमता और मानव अस्तित्व, आवास, भोजन संग्रहण, घुमन्तु जीवन, वृन्द समूह, आत्मभिव्यक्ति हेतु कला का आरम्भ। 10

इकाई–3

(क) होमोसील (अतिनूतन काल) की पर्यावरणीय विशेषतायें। 10

(ख) उपकरण तथा अन्य प्रमुख सांस्कृतिक उपलब्धियाँ। 5

(ग) ऐतिहासिक कालावधि के अन्तर्गत मध्यपाषाण, नवपाषाण। 10

पाठ्य पुस्तकें–

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालय के प्रधान/विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य

इस विषय में 30 अंक का प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन होगा जिसमें 15 अंक मासिक परीक्षा एवं 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु निर्धारित है। विषय अध्यापक दिये गये प्रोजेक्ट में से तीन प्रोजेक्ट अवश्य तैयार करायें। विषय अध्यापक छात्र हित में अपने स्तर पर कोई अन्य प्रोजेक्ट भी करा सकते हैं–

(1) पर्यावरणीय विषमता और मानव अस्तित्व।

(2) प्राणी जीवन एवं वनस्पतियाँ।

(3) मानव जीवाश्म अवशेष।

(4) होमोसील की पर्यावरणीय विशेषतायें।

(5) हिमनद एवं हिमयुग।

(6) मानव निर्मित उपकरण का वर्गीकरण।

(7) घुमन्तु जीवन।

(क) नैतिक तथा खेल एवं शारीरिक शिक्षा

कक्षा-9

उद्देश्य--

(1) बालकों का सर्वांगीण विकास एवं नैतिक गुणों का उन्नयन करना।

(2) बालकों के वैयक्तिक, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में नैतिक भावना का विकास करना।

(3) बालकों में स्वस्थ्य नेतृत्व, उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, समय पालन, सदाचार, शिष्टाचार, विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्म सम्मान, आत्म संयम, समाज सेवा, सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।

(4) सुदृढ़ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि।

(5) बालकों के श्रम के प्रति आदर एवं आत्म निर्भर बनने हेतु उत्पादक कार्यों के प्रति अभिरुचि का सम्बर्द्धन करना।

(6) समाज सेवा की भावना का सृजन करना।

(7) स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूकता तथा क्रीड़ा शालीनता की भावना का विकास करना।

(8) बालकों का मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक एवं संवेदात्मक विकास करना।

इस विषय में 50 अंकों की लिखित परीक्षा का एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा। इसके साथ ही 50 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। प्रयोगात्मक तथा लिखित परीक्षा विद्यालय स्तर पर आयोजित की जायेगी। लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में विद्यालय स्तर पर किऐ गये मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को ए0बी0सी0 श्रेणी प्रदान की जायेगी जिसका अंकन छात्र के अंकपत्र तथा प्रमाण-पत्र में किया जायेगा।

नैतिक शिक्षा 2 अंक

(1) नैतिकता का स्वरूप तथा महत्व।

(2) स्वयं, परिवार, समाज, देश ताथा मानवता के प्रति कर्तव्य।

(3) भारत में प्रचलित प्रमुख धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई) के मूल तत्वों में समान बातें।

(4) मानव अधिकार - मानव अधिकार की अवधारणा का विकास, मानव अधिकार की सार्वभौम घोशणा। सिविल और राजनीतिक अधिकार। आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार। भरत और सार्वभौमिक घोषणा मानव अधिकार के प्रति हमारे कर्तव्य, मानव मूल्यों की रक्षा।

(5) शिकायत प्रणाली - अधिकार संरक्षण आयोग, चाइल्ड लाइन, वीमेन पावर लाइन

पुस्तक मानव अधिकार अध्ययन, प्रकाशक माइंडशेयर

खेल एवं शारीरिक शिक्षा

		अंक
इकाई--1	**शारीरिक शिक्षा--**	
	अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य एवं क्षेत्र	04
इकाई--2	**शारीरिक शिक्षा का विकास व वृद्धि--**	10
	अर्थ, सिद्धान्त, वृद्धि एवं विकास में अन्तर, वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक, कालानुक्रम, आयु, शारीरिक संरचनात्मक आयु एवं शारीरिक तथा मानसिक आयु, बैटरी परीक्षण (शारीरिक क्षमता का मापदण्ड)	
इकाई--3	**स्वास्थ्य--**	10
	अर्थ, परिभाषा, स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी, स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले कारक, प्रमुख बीमारियां, स्वास्थ्य के नियमों के पालन की आदत डालना, व्यायाम द्वारा बीमारियों को दूर करना, संतुलित आहार।	
इकाई--4	**कंकाल तंत्र**	10
	परिचय, शारीरिक ढाँचे की क्रिया-कलाप, हड्डियों के प्रकार, शारीरिक अस्थियाँ, जोड़ों के प्रकार, जोड़ों की गति।	

इकाई--5 **खेल एवं प्रतियोगिता--** 10

खेल का अर्थ, सिद्धान्त, प्रतियोगिता का अर्थ, आन्तरिक व वाह्य प्रतियोगिता का अर्थ व महत्व, विभिन्न स्तरों पर वाह्य प्रतियोगिता, जनपदीय, मण्डलीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय। भारत के महत्वपूर्ण टूर्नामेन्ट, राष्ट्र मण्डलीय खेल, एशिया खेल, ओलम्पिक खेल, ट्रैक टूर्नामेन्ट के बारे में जानकारी देना।

इकाई--6 **प्रारम्भिक व्यायाम एवं अन्तिम अवस्था--** 04

परिचय, प्रकार, प्रभावी कारक, प्रारम्भिक व्यायाम का महत्व, प्रारम्भिक व्यायाम की विधि एवं अवधि, अन्तिम अवस्था (Cooling Down) का अर्थ, महत्व।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम पूर्णांक-50

कक्षा-9

क्र0 सं0	मद	(क्रीड़ा) कार्य कलाप	वैकल्पिक
1	अभ्यास सारिणीयाँ	अभ्यास सारिणी	सामूहिक पी0टी0 योगाभ्यास, 3 अंक, सारंग आसन मत्स्य आसन, उद्दीपन, अग्निसार, सुप्त बज्र आसन।
2	कवायद मार्च	अधिकारी को पत्रिका देना व इनाम लेना, धीमी चाल से तेजचाल में आना, तेजचाल से धीमी चाल में आना, दायें तथा बायें दिशा बदलना	3 अंक
3	लेजियम	मोर चाल, मोर चाल आगे की, मोर चाल दायें और बायें	4 अंक
4	जिम्नास्टिक/लोकनृत्य		5 अंक
	(क) जिम्नास्टिक	**लड़कों के लिए** 1--नकीकस सादा 2--तबक फाड़ 3--मयूर पंखी 4--बगली फरार 5--दस रंग 6--पिरामिड (मयूरासन)	वाल्टिंग बाक्स, लॉग बाक्स, ब्रांड शहतीर (1) हाथ की पहुँच के ऊपर शहतीर पकड़ना--दायें--बायें चलना (2) हाथ के पहुँच के ऊपर राहतीर लटककर झूले के साथ पकड़ना (3) हाथ पहुँच के ऊपर राहतीर हाथ बदलते हुये पकड़ना
	(ख) लोकनृत्य	**लड़कियों के लिए** 2 लोकनृत्य एक उसी क्षेत्र का दूसरा उसी क्षेत्र के बाहर का **लड़कों के लिए** दो लोकनृत्य एक उसी क्षेत्र का दूसरा उसी क्षेत्र के बाहर का	लोकनृत्य नृत्य अधिक शारीरिक श्रम वाले होना चाहिए
5	बड़े खेल	निम्नलिखित खेलों के आधारभूत कुशलतायें फुटबाल, हाकी, बैडमिंटन (जो सुविधायें विद्यालय में उपलब्ध)	कक्षा के लिए 6 अंक निर्धारित खेलों में भाग लेना।
6	छोटे खेल	1--लाइन फुटबाल 2--पिन बाल 3--दायरे का फुटबाल 4--हैण्ड बाल 5--कीप द बाल अप 6--उछलकर चलते हुए छूना/पकड़ना 7--कप्तान बाल 8--छूना व बैठकर बचना 9--चलती हुयी प्रतिभायें 10--दायरे की हाकी	5 अंक

7	रिले	1--लीपफ्राग रिले 2--ग्रेस्प एण्ड पुल रिले 3--बैक वर्ड रिले 4--तिलंगा रिले 5--चेन रिले 6--बाल पासिंग रिले 7--पिक अ बैक रिले 8--व्हील बैटरी रिले	6 अंक
8	(क) धावन तथा मैदानी प्रतियोगितायें	1--100 मी0 दौड़ 2--400 मी0 दौड़ 3--लम्बी छलांक 4--ऊँची छलांक 5--उछल कदम और कूद 6--4×100 मी0 रिले 7--शाट पुट	6 अंक
	(ख) परीक्षण पदयात्रा	राष्ट्रीय शारीरिक दक्षता परीक्षण 3.22 से 6.44 किलोमीटर	
9	**मुकाबले का खेल**		6 अंक
	(क) साधारण मुकाबले	1--टेक आफ दि टेल 2--पुरा आफ दि बेंच 3--पुरा आफ दि स्ट्रल 4--पुरा इन्टू पिट 5--मेक पुल	
	(ख) सामूहिक मुकाबले	1--फोर्सिंग दि गेट 2--ब्रेक दि वाल 3--स्मगलिंग 4--प्रिसन ब्रेक	
	(ग) कुश्ती	पैंतरे (1) (क) यू का पैंतरा (ख) सामने का पैंतरा (ग) नजदीक (2) पीछे का पैंतरा (3) नीचे का पैंतरा (4) प्रिन्स (1) कटार चलाना, आक्रमण व बचाव (2) बायें तथा दाहिने ओर प्रहार करके बचाव (3) पेट का निचला भाग (खोज प्रहार)	
10	राष्ट्रीय आदर्श तथा अच्छी नागरिकता व्यावहारिक परियोजनायें तथा सामूहिक गान		6 अंक
	(क) राष्ट्रीय आदर्श व अच्छी नागरिकता	1--अच्छी आदतें 2--हमारे संविधान के मूल आधार	
	(ख) व्यावहारिक परियोजनायें	1--प्राथमिक उपचार 2--समाज सेवा 3--खेल-कूद का आयोजन 4--कैंप लगाना	
	(ग) सामूहिक गीत	राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय भाषा में, एक किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा में तथा एक राष्ट्र भाषा में।	
11	"हम और हमारा स्वास्थ्य" प्रकाशक "होप इनीशियेटिव"		

(ख) समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

स्थानीय सुविधानुसार निम्नलिखित में से कोई एक कार्य कराया जाय--

1--विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना।

2--विद्यालय में घास का लान तैयार करना।

3--गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाना।

4--विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना।

5--वृक्षारोपण।

6--कताई-बुनाई।

7--काष्ठ-शिल्प।

8--ग्रन्थ-शिल्प।

9--चर्म-शिल्प।

10--धातु-शिल्प।

11--धुलाई, रफू, बखिया।

12--रंगाई और छपाई।

13--सिलाई।

14--मूर्ति कला।

15--मत्स्य पालन।

16--मुधमक्खी पालन।

17--मुर्गी पालन।

18--साग-सब्जी का उत्पादन।

19--फल संरक्षण।

20--रेशम तथा टसर काम।

21--सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण।

22--हाथ से कागज बनाना।

23--फोटो ग्राफी।

24--रेडियो मरम्मत।

25--घड़ी मरम्मत।

26--चाक तथा मोमबत्ती बनाना।

27--कालीन व दरी का निर्माण।

28--फूलों, फलों तथा सब्जियों के पौधे तैयार करना।

29--लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौने का निर्माण।

30--बेकरी और कन्फेक्शनरी का काम।

31--उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य।

उपर्युक्त कार्यों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम--

(एक) विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जिया बोना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि ऋतु फूल-पत्तियों के लगाने तथा सब्जियों को बोने से जहाँ एक और आस-पास की वायु शुद्ध होती है, प्रदूषण दूर होता है, वहीं दूसरी ओर ताजी सब्जियां खाने को मिलती हैं, जिससे शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक विटामिन तथा खनिज लवणों की आपूर्ति होती है।

(2) छात्रों में ऋतु के अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उन्हें लगाने तथा उनकी खेती करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) स्थानीय परिवेश एवं जलवायु को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय की भूमि पर ऋतु के अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उनकी पौध तैयार करना।

(2) पौध लगाने के लिए उचित भूमि (क्यारियों) को तैयार करना, उसमें अपेक्षित कम्पोस्ट खाद तथा रसायनिक उर्वरक उचित मात्रा में डालना।

(3) बीजों को बोने के पूर्व उनका आवश्यकतानुसर शोधन करना।

(4) वर्षाकाल में लौकी, तरोई, गोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्चा, गुलमेंहदी, जीनिया, गेंदा आदि के पौध लगाना।

(दो) विद्यालय में घास की लान तैयार करना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मैदान में घास लगाने से विद्यालय के सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ भूमि का कटाव नहीं होता, भूमि में फिसलन नहीं होती, लान की हरी-हरी घास नेत्रों को रोशनी के लिए लाभदायक होती है तथा घास के बढ़ने पर उसे पशुओं के लिये चारा भी उपलब्ध हो सकता है।

(2) छात्रों में विद्यालय तथा घर के आस-पास की रिक्त भूमि पर घासों के लान तैयार करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) भूमि तैयार करने तथा घास लगाने के लिए आवश्यक औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, प्रयोग विधि, सावधानियां तथा सुरक्षा के उद्देश्यों की जानकारी।

(2) लान (मैदान) से कंकड़, पत्थर साफ कर भूमि को खोदकर भुरभुरी बनाना।

(3) मिट्टी में कम्पोस्ट खाद तथा अपेक्षित उर्वरक डालना। घास लगाने के लिए तैयार करना।

(4) भूमि में आवश्यक सिंचाई कर मिट्टी में नमी पैदा करना तथा पुनः भूमि की गुड़ाई कर पटेला लगाना तथा भूमि को समतल बनाना।

(तीन) गमलों में दीर्घ जीवी, शोभायुक्त पौधे लगाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि घर के आस-पास भूमि की कमी या अभाव होने पर भी गमलों में दीर्घ-जीवी शोभायुक्त पौधे लगाये जा सकते हैं जिनसे पर्यावरणीय प्रदूषण कम किया जा सकता है।

(2) छात्रों में सुरुचि एवं सौन्दर्य भावना जागृत करने के लिए गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाने के लिए आवश्यक उपकरणों, सामग्रियों, मिट्टी तथा उर्वरकों की जानकारी।

(2) गमलों मे कम्पोस्ट खाद (गोबर की सड़ी खाद) युक्त मिट्टी भरने का अभ्यास।

(3) जुलाई से सितम्बर के मध्य गमलों में फर्न (विभिन्न प्रकार के घास, क्रोटन, विभिन्न प्रकार के कैक्टस, युफार्विया) आदि लगाना।

(4) नियमित रूप से गमलों में सिंचाई करना।

(चार) विद्यालय की बाउण्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना

उद्देश्य--

(1) विद्यालय को बोध कराना कि विद्यालय की शोभा इसकी बाउण्ड्री पर हेज तथा लतायें लगाने से बढ़ती हैं साथ ही इससे पर्यावरणीय प्रदूषण कम होता है तथा मिट्टी का क्षरण रुकता है।

(2) छात्रों में विद्यालय (साथ ही घर) की बाउण्ड्री पर हेज अथवा लतायें लगाने का शौक तथा कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) हेज तथा लतायें लगाने के लिए आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी, उपविधियां तथा सुरक्षा के उपाय।

(2) हेज लगाने हेतु मेंहदी, नीलकांटा (डयूरेटा) सुदर्शन, जस्तीशिया, बस्तशिया छोटी, हेज, चांदनी आदि में से किसी उपयुक्त तथा मन पसन्द हेज का चुनाव करना, वर्षा ऋतु में उसे लगाना।

(पाँच) वृक्षारोपण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना है कि वृक्ष मानव जाति के अस्तित्व के लिये आवश्यक है, इससे पर्यावरण प्रदूषित होने बचता है, भूमि का कटाव रुकता है, समय पर उपयुक्त वर्षा होती है, भोज्य पदार्थ, औषधियां, इमारती तथा ईंधन की लकड़ियां प्राप्त होती हैं। वृक्ष वास्तविक अर्थ में मानव के सच्चे मित्र एवं रक्षक हैं।

(2) छात्रों में वृक्षारोपण का शौक तथा कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) वृक्षारोपण हेतु आवश्यक औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, उनकी प्रयोग विधि, सावधानियां तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी प्राप्त करना।

(2) वृक्षारोपण हेतु उपयोगी वृक्षों की पौध तथा कलम तैयार करना।

(3) वृक्षारोपण के लिए गड्ढ़े खोदकर उसमें कम्पोस्ट तथा आवश्यक उर्वरक डालना।

(4) तैयार गड्ढ़ों में वर्षा ऋतु में वृक्षों के पौध लगाना।

(छः) कताई-बुनाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को सूत, खजूर की पत्ती, नाइलोन का धागा तथा सुतली से बुनाई करने का बोध कराना।

(2) आसनी बनाना, चटाई बुनना तथा टाट-पट्टी बुनने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) विभिन्न प्रकार की तकली व रूई के प्रकार की जानकारी प्राप्त करना।

(2) कताई में काम आने वाले विभिन्न उपकरणों एवं औजारों की जानकारी।

(3) कताई-बुनाई में आवश्यक सावधानियों एवं सुरक्षा नियमों का ज्ञान प्राप्त करना।

(4) रूई बुनाई तथा पूनी बनाने का अभ्यास।

(5) तकली तथा चरखे पर सूत कातने तथा अटेरन पर सूत लपेटने और गुण्डियां तैयार करने का अभ्यास।

(सात) काष्ठ-शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि भव्य इमारतों तथा फर्नीचरों के निर्माण तथा सजावट की वस्तुयें तैयार करने में काष्ट शिल्प का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

(2) इस कला द्वारा छात्रों के हाथ, नेत्र और मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित होता है।

पाठ्यक्रम--

(1) काष्ठ शिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं औजारों की जानकारी, उनके प्रयोग की सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय।

(2) यंत्र प्रयोग एवं कार्य करने का विधिवत् अभ्यास।

(आठ) ग्रन्थ शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को पुस्तकों एवं अभ्यास पुस्तिकाओं को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने का बोध कराना।

(2) छात्रों में पुस्तकों को सिलने तथा उनकी जिल्दसाजी का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) ग्रन्थशिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों तथा औजारों की जानकारी, उसके विधिवत् प्रयोग करने का अभ्यास, सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय, यंत्रों के रख-रखाव की जानकारी।

(2) साधारण पुस्तकों और नोट-बुकों के पन्ने मोडऩा, उनकी सिलाई करना (जुजबन्दी तथा सादी दोनों प्रकार की) किनारे काटना, पीठ गोल करना, रक्षक कागज लगाना, आवरण चढ़ाना तथा उनकी सुसज्जा करना।

(3) पुस्तक आवरण का लेखन तैयार कर उनकी सुरक्षा करना।

(नौ) चर्म शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि दैनिक जीवन में चर्म से बनी वस्तुयें कितनी उपयोगी हैं।

(2) छात्रों में चर्म से विभिन्न प्रकार की दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) चर्म शिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, औजारों तथा सामग्री की जानकारी, उनके विधिवत् प्रयोग करने का अभ्यास सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय।

(2) चर्म से तैयार की गयी वस्तुओं में बटन लगाने का अभ्यास।

(3) कागज से विभिन्न प्रकार के माडल बनाना, औजारों से सही ढंग से काटना, चिपकाना, चमड़े की पट्टी लगाने का अभ्यास।

(दस) धातु-शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को धातु-अधातु में अन्तर तथा धातु के महत्व का बोध कराना।

(2) छात्रों में धातुओं से बनी दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं के मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) धातु-शिल्प में प्रयोग होने वाले उपकरणों एवं औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, उनके प्रयोग विधि का अभ्यास, सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय।

(2) यंत्रों के उचित ढंग से रख-रखाव की जानकारी।

(3) लोहा, टीन, तांबा, एल्युमीनियम, शीशा, जस्ता आदि धातुओं की जानकारी तथा उनसे बनने वाली वस्तुओं की जानकारी तथा उनके मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का अभ्यास।

(ग्यारह) धुलाई, रफू तथा बखिया

उद्देश्य--

छात्रों को बोध कराना है कि धुलाई-रफू तथा बखिया द्वारा प्रत्येक परिवार में प्रयोग होने वाले वस्त्रों को अधिक समय तक पूर्ण चमक-दमक के साथ चलाया जा सकता है तथा इस प्रकार आर्थिक बचत की जा सकती है।

पाठ्यक्रम--

(1) धुलाई, रफू तथा बखिया के उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी, सही प्रयोग सावधानियां रख-रखाव सुरक्षा के उपाय।

(2) विभिन्न देशों के बने वस्त्रों की जानकारी।

(3) प्रक्षालन के विभिन्न प्रकारों की जानकारी तथा अभ्यास।

(4) विभिन्न प्रकार के धब्बे हटाने की जानकारी तथा अभ्यास।

(बारह) रंगाई तथा छपाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि हर प्रकार के वस्त्रों की किस प्रकार रंगाई तथा छपाई कर उन्हें नयनाभिराम तथा आकर्षक बनाया जा सकता है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की रंगाई के कौशल का विकास कराना।

पाठ्यक्रम--

(1) रंगाई तथा छपाई हेतु प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी, सही प्रयोग विधि का अभ्यास, सावधानियां तथा उनका रख-रखाव।

(2) विभिन्न प्रकार के टेक्सटाइल रेशों की पहचान का अभ्यास।

(3) कोरी वस्तुओं की अशुद्धियों को निकाल कर उन्हें रंगाने योग्य बनाने का अभ्यास।

(4) सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों पर नमक के रंगों की विधि का अभ्यास।

(तेरह) सिलाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सिलाई कला के अभ्यास से पर्याप्त धन की बचत की जा सकती है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की सिलाई के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम--

(1) सिलाई के उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी उनके सही प्रयोग विधि का अभ्यास सावधानियां तथा रख-रखाव की जानकारी।

(2) विभिन्न प्रकार के कपड़ों के सिकुड़ने आदि की प्रवृत्ति की जानकारी।

(3) सूती, ऊनी तथा रेशमी कपड़ों पर लोहा करने की विधि का अभ्यास।

(4) सूती, ऊनी तथा रेशमी की सिलाई हेतु सही धागों के चुनाव का अभ्यास।

(चौदह) मूर्ति कला

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मूर्ति-कला का जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है। यह विगत स्मृतियों को जीवित रखने का एक मुखर साधन है।

(2) छात्रों में मूर्ति-कला के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम--

(1) मूर्ति-कला में प्रयोग होने वाले औजारों तथा अन्य सामग्रियों की जानकारी, उनकी प्रयोग विधि का ज्ञान, सावधानियां, रख-रखाव तथा सुरक्षा के उपाय।

(2) मिट्टी व अन्य रद्दी वस्तुओं, प्लास्टर आफ पेरिस, कागज की लुग्दी को कार्योपयोगी बनाने की विधि का अभ्यास।

(3) अच्छी मिट्टी व कागज की लुगदी की पहचान का अभ्यास।

(4) भट्ठियां बनाने की कला की जानकारी।

(5) टूटे बर्तनों व मूर्तियों को जोड़ने की कला की जानकारी।

(पन्द्रह) मत्स्य पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मत्स्य पालन से पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, मत्स्योत्पादन एक लाभकारी उद्योग है।

(2) छात्रों को मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करना तथा सही विधि से मत्स्य पालन करना सिखाना।

पाठ्यक्रम--

(1) मत्स्य पालन के काम आने वाली सामग्रियों की जानकारी।

(2) मत्स्य पकड़ने के उपकरणों जैसे बंसी, जाल, नाव तथा जहाज की जानकारी तथा छात्र द्वारा मत्स्य पकड़ने का अभ्यास।

(3) मत्स्य पालन के सामान्य सिद्धान्त, प्रजनन एवं पोषण की जानकारी।

(4) मत्स्य की सुरक्षा, जीवाणु सम्बन्धी खराबी, इसके कारण तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी।

(सोलह) मधुमक्खी पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मधु एकत्र करने के लिए मधु मक्खियों को पाला जा सकता है।

(2) छात्रों को बोध कराना कि मधु अनेक दशाओं में प्रयुक्त होती है तथा अत्यन्त स्वास्थबर्द्धक भोज्य पदार्थ है।

(3) छात्रों में मधुमक्खियों को मौन गृह में रखना तथा उनके रख-रखाव और शहद निकालने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) मधुमक्खी पालन तथा शहद निकालने के लिये आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी।

(2) मौन गृह की व्यवस्था करना।

(3) मधुमक्खियों को बक्से में रखने के दोनों प्रकारों की जानकारी (1) मौनवंश में धनछट होने पर इन्हें ड्रम या कनस्टर छोड़कर, धूल उड़ाकर या पानी की बौछार कर रोक लेने की जानकारी तथा अभ्यास, स्वामीबैग से पकड़कर इन्हें बक्से में डालकर क्वानगट लाने की जानकारी, (2) मौनवंश को जाले से अथवा पेड़ की खोखल से स्थानान्तरित कर मौन गृह में लाना।

(4) मधुमक्खियों द्वारा छत्ता बनाने के लिये रात के समय चीनी का घोल प्याले में रख कर उसमें दूध या सूखी घास डालकर ऊपरी व भीतरी ढक्कन के बीच में रखने की जानकारी।

(5) धुआँ देकर मधुमक्खियों को भगाकर छत्तें को काटकर मौन गृह में फ्रेमों में फिट करना तथा रानी मक्खी को पकड़कर बक्से में डालना जिससे सभी मधुमक्खियां उस बक्से में आने लगें।

(6) बक्सों को ऐसे स्थान पर रखना जहाँ सभी मधुमक्खियों के आवागमन में किसी प्रकार का रुकावट न हो।

(सत्रह) मुर्गी पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि प्रोटीन भोजन का एक मुख्य अवयव है। प्रोटीन का सरलता से उपलब्ध होने वाला प्रमुख साधन अण्डा है, जिसे मुर्गी पालन से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में मुर्गी के आवास-व्यवस्था, रख-रखाव व रोग तथा उसके उपचार, मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) मुर्गी के आवास-व्यवस्था का प्रबन्ध करना।

(2) मुर्गियों के साधारण रख-रखाव की जानकारी प्राप्त करना।

(3) मुर्गी से विभिन्न रोगों की जानकारी, उसके उपचार एवं रोकथाम के उपायों की जानकारी।

(4) मुर्गी पालन प्रारम्भ करने के लिये उचित नस्ल की जानकारी तथा चुनाव।

(5) स्थानीय मांग के अनुसार यदि अंडों की खपत अधिक है तो अण्डे देने वली नस्ल की मुर्गियों का पालन करना तथा यदि बाजार में मांस की अधिक खपत है तो मांस के लिये पाली जाने वाली नस्लों का चयन कर मुर्गियों को पालना।

(अट्ठारह) शाक-सब्जी का उत्पादन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि हमारे संतुलित आहार में शाक-सब्जी का कितना महत्वपूर्ण स्थान है तथा ये सब प्रकार के विटामिन्स, खनिजों एवं लवणों की आपूर्ति कर हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं तथा रोगों से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते हैं।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार शाक-सब्जी को पैदा करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) शाक-सब्जी उत्पन्न कराने के लिये अच्छी मिट्टी की जानकारी, भूमि तैयार करना, सही मात्रा में आवश्यक खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करना।

(2) शाक-सब्जी की खेती में प्रयोग आने वाली कृषि उपकरणों तथा औजारों की जानकारी, उनके प्रयोग की विधि, सावधानियां एवं उनका रख-रखाव।

(3) अधिक उपज देने वाले बीजों की जानकारी एवं उनका चुनाव।

(4) बीज-शोधन प्रक्रिया की जानकारी तथा अभ्यास।

(5) शाक-सब्जी बोने के पूर्व भूमि में उचित मात्रा में नमी बनाये रखने की जानकारी, सिंचाई के समय तथा सही मात्रा की जानकारी तथा अभ्यास।

(6) मौसम के अनुसार शाक-सब्जी की खेती करने का अभ्यास, जिसमें कम लागत में अच्छी उपज प्राप्त हो सके।

(उन्नीस) फल संरक्षण

उद्देश्य--

(1) फलों के नष्ट होने की प्रक्रिया का छात्रों को बोध कराना।

(2) विभिन्न प्रकार के फलों के संरक्षण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) फल संरक्षण हेतु आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी।

(2) जेली, जैम, आचार, मुरब्बा, सास, कैचप तथा स्क्वैश की सामान्य जानकारी, उनमें परस्पर अन्तर की जानकारी तथा यह जानना कि कौन सा फल किस वस्तु के लिये तैयार करने में प्रयोग में लाया जाता है।

(3) प्रत्येक प्रकार की वस्तु (जैसे जेली, जैम, अचार आदि) तैयार करने के लिये उनमें प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल (जैसे फल, चीनी, नमक, तेल, घी, मसाले आदि) की सही मात्रा (अनुपात) की जानकारी।

(4) अमरूद की जेली बनाने का अभ्यास।

(5) पपीते का जैम बनाने का अभ्यास।

(6) आम, मिर्चा, कटहल का अचार बनाने का अभ्यास।

(7) गाजर, मूली, शलजम, गोभी, सिंघाड़ा आदि का मिश्रित अचार बनाने का अभ्यास।

(8) आवंले का मुरब्बा बनाने का अभ्यास।

(बीस) रेशम तथा टसर का काम

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि रेशम के कीटों का पालन कर रेशम का धागा प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में शहतूत के पौधों का उत्पादन करना, शहतूत के पौधों पर रेशम के कीटों का पालन करना, प्यूपा (कोया) एकत्र कर उनसे रेशम का धागा प्राप्त करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) रेशम कीट पालन हेतु आवश्यक उपकरण एवं सामग्रियों की जानकारी सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय।

(2) शहतूत की पत्ती का उत्पादन।

(3) रेशम कीट पालन एवं कोया उत्पादन।

(4) कोये सुखाना एवं कोये की रोलिंग पर धागों (रेशम सूत) का उत्पादन करना।

(5) पत्तियों को ट्रे में धीरे-धीरे डालने का अभ्यास करना जिसमें कोयो को चोट न पहुंचे।

(6) पुरानी पत्तियों को समय से तत्परतापूर्वक ट्रे से हटाते रहना।

(इक्कीस) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सुतली तथा टाट-पट्टी कुटीर उद्योग है जिसमें ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था सुधारने में सहायता मिल सकती है तथा कम पूंजी में इसे प्रारम्भ किया जा सकता है एवं इसके लिए कच्चा माल सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में सुतली तथा टाट-पट्टी के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) सुतली एवं टाट-पट्टी के निर्माण के लिये आवश्यक उपकरणों, औजारों एवं सामग्रियों की जानकारी सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय।

(2) अच्छे रेशमों की जांच पड़ताल करना तथा रेशों के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना एवं पहचानने का अभ्यास करना।

(3) सुतली कातने तथा उसके 2 प्लाई, 3 प्लाई तथा 4 प्लाई धागों का निर्माण करना।

(4) कच्चे माल को एकत्र करने में बरतने योग्य सावधानियों की जानकारी प्राप्त करना तथा उनका अभ्यास करना।

(बाइस) हाथ से कागज बनाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि आधुनिक युग में ज्ञान के विकास तथा उसे सुरक्षित रखने में कागज का महान योगदान है।

(2) छात्रों में हाथ से कागज बनाने के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम--

(1) हाथ से कागज बनाने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों तथा कच्चे माल की जानकारी, (क) प्रकृति के पदार्थों से मिलने वाला कच्चा माल, (ख) रद्दी कागज का उपयोग।

(2) कच्चे माल को गलाने तथा साफ करने की विधियों की जानकारी तथा अभ्यास (प्रकृति से प्राप्त होने वाले वस्तुओं को छोटे टुकड़ों में काटना, रासायनिक पदार्थों द्वारा गलाना, उबालना, कुटाई करना, कुंटी हुई लुग्दी में सफेदी लाने का अभ्यास, लुग्दी तथा रासायनिक पदार्थों को अलग करने की विधि)।

(3) तैयार लुग्दी की पहचान का अभ्यास।

(4) तैयार लुग्दी से कागज उठाना।

(5) हाथ से कागज उठाने की विधियां।

(तेइस) फोटाग्राफी

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि विगत स्मृतियों को साकार रूप से सुरक्षित रखने के लिये फोटोग्राफी एक सशक्त माध्यम है।

(2) छात्रों को फोटो खींचने, उसका डेवलपमेन्ट करने, प्रिटिंग तथा एनलार्जमेन्ट करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) निगेटिव फिल्मों को तैयार करने की प्रक्रिया की जानकारी।

(2) फोटोग्राफी के लिए आवश्यक उपकरणों, साज-सज्जा सामग्रियों की जानकारी उसका रख-रखाव तथा आवश्यक सावधानियों की जानकारी, सुरक्षा के नियमों को जानना।

(3) साधारण कैमरा, बाक्स कैमरा, डबल कैमरा, टिबल लेन्स कैमरा की जानकारी, फोल्डिंग कैमरा आदि का प्रयोग करना तथा रख-रखाव, सावधानियों की जानकारी।

(4) कैमरा के मुख्य पुर्जे की जानकारी, उनका प्रयोग तथा सावधानियां।

(5) डार्क रूम की जानकारी, फोटोग्राफी में प्रकाश का महत्व।

(6) फोटो खींचने का अभ्यास, फोटोग्राफी हेतु आकर्षक पोज की स्थिति समझाने की जानकरी तथा अभ्यास (आउट डोर तथा इन्डोर फोटोग्राफी का अभ्यास)।

(7) कैमरे में रील भरने तथा फोटो खींचने के बाद जब भर जाये तो उसे बाहर निकालने के अभ्यास तथा सावधानियां।

(8) कैमरा द्वारा लाइट के अनुरूप इक्सपोजर देने तथा टाइपिंग का अभ्यास।

(9) निगेटिव फिल्म तैयार करने का अभ्यास।

(10) विभिन्न रसायनों से डेवलपर तैयार करना तथा फिल्म को डेवलेप करने का अभ्यास।

(चौबीस) रेडियो मरम्मत

उद्देश्य--

(1) छात्रों को रेडियो, ट्रान्जिस्टर, टेपरिकार्डर तथा टू-इन-वन के बारे में बोध करना।

(2) रेडियो तथा ट्रान्जिस्टर को असेम्बली एवं रिपेयरिंग का कौशल विकसित करना।

(3) टेप रिकार्डर तथा टू-इन-वन की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) रेडियो तथा इलेक्ट्रानिक का साधारण ज्ञान प्राप्त करना।

(2) विद्युत की सामान्य जानकारी।

(3) रेडियो तथा ट्रान्जिस्टर के प्रकारों की जानकारी।

(4) रेडियो तथा ट्रान्जिस्टर के विभिन्न पार्ट्स तथा उनके कार्यों की जानकारी।

(5) ट्रान्जिस्टर रिसीवर पार्ट्स की जानकारी।

(6) रेडियो तथा ट्रान्जिस्टर के दोषों को ढूढ़ना तथा उनको ठीक करने का अभ्यास।

(पच्चीस) घड़ी मरम्मत

उद्देश्य--

(1) छात्रों में कम लागत में घड़ियों की मरम्मत तथा रख-रखाव की क्षमता का विकास करना।

(2) मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल प्रकार की कलाई घड़ी, टेबुल घड़ी तथा दीवार घड़ी की मरम्मत सर्विसिंग और संयोजन (असेम्बली) का कौशल विकसित करना।

(3) छोटे-छोटे कल-पुर्जों को लेकर किये जाने वाले कार्यों में बरतने योग्य सावधानियों का अभ्यास करना।

पाठ्यक्रम--

(1) घड़ीसाजों के औजारों की पहचान एवं उनके उपयोग करने की विधियों का अभ्यास तथा सावधानियां।

(2) विभिन्न प्रकार की मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल घड़ियों का अध्ययन।

(3) घड़ी के कल-पुर्जों की बनावट एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन।

(4) घड़ियों की खुलाई, सफाई, आयलिंग एवं बधाई।

(5) पुर्जों की मरम्मत एवं जांच तथा सही ढंग से नये पार्ट्स की फिटिंग करना।

(6) हेयर स्प्रिंग, टाइम सेटिंग का अभ्यास।

(छब्बीस) चाक एवं मोमबत्ती बनाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि कम लागत की पूंजी में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का लघु कुटीर उद्योग प्रारम्भ किया जा सकता है जिसकी खपत आस-पास के परिवेश में हो सकती है।

(2) छात्रों में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

चाक एवं मोमबत्ती बनाने के लिये आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी, सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय।

चाक बनाने हेतु--

(1) चाक बनाने के सांचे (गनमेटल तथा एल्यूमिनियम) की जानकारी, सांचों के कसने के लिये पेच की जानकारी, उनके प्रयोग का अभ्यास।

(2) कच्चे माल (प्लास्टर आफ पेरिस तथा चीनी मिट्टी) की जानकारी तथा प्रयोग विधि की जानकारी एवं अभ्यास।

(3) 10:1 के अनुपात में प्लास्टर आफ पेरिस तथा चीनी मिट्टी मिलाकर आवश्यकतानुसार पानी मिला कर लकड़ी के पतले तख्ते से संमिश्रण को खोदने का अभ्यास करना जिससे वह गाढ़ा लेई सदृश्य तैयार हो जाय।

(4) उपर्युक्त समिश्रण को मोबिल आयल लगे सांचे के छिद्रों में भरना तथा सांचे में 10-15 मिनट तक प्लास्टर आफ पेरिस के सूख जाने पर सांचे को खोलकर चाक को बाहर निकाल कर सुखा लेना।

(5) सूखे हुये चाकों को पैकिंग कर बाजार में विक्रय हेतु तैयार करना।

मोमबत्ती बनाने हेतु--

(1) मोमबत्ती बनाने के लिये एल्यूमिनियम से बने सांचे की जानकारी तथा प्रयोग का अभ्यास।

(2) मोमबत्ती हेतु कच्चे माल-पैराफीन, मोम सूत तथा आयल रंग की जानकारी एवं प्रयोग विधि की जानकारी।

(3) सांचे के पलड़ों को खोलकर रूई की सहायता से अन्दर आयलिंग करना, सांचे में धागा लगाने के स्थान पर धागा लगाना तथा सांचे के पलड़ों को मिलाकर सांचे को बन्द करना।

(4) पैराफीन, मोम को किसी पात्र में आग पर पिघलाकर सांचे के छिद्रों में घोलना तथा सांचे की पूरी तरह से पिघली मोम से भर जाने पर सांचे को ठंडे पानी के टब में डुबाना।

(सत्ताइस) कालीन तथा दरी का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि अवसरों पर बिछाने तथा ड्राइंग रूम को सजाने में कालीन तथा दरी का भारी उपयोग होता है।

(2) छात्रों में कालीन तथा दरी बनाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) कालीन तथा दरी के निर्माण में प्रयोग होने वाले उपकरण तथा कच्चे माल की जानकारी।

(2) सूत छांटना तथा सूत खोलना।

(3) सूत की कटाई।

(4) तागा लगाना।

(5) दरी बुनाई की तकनीकी की जानकारी व बुनाई का अभ्यास।

(अट्ठाइस) फलों तथा सब्जियों का पौध तैयार करना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि अच्छी प्रजाति के पौध तैयार कर उनके सही रोपण द्वारा पौधे शीघ्र बढ़ते हैं तथा उनसे उत्पादन भी अधिक होता है।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार सब्जियों तथा फूलों का चयन कर उसकी पौध तैयार करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) पौधों का चयन स्थानीय आवश्यकता एवं सुविधा को रखते हुए मौसम के अनुसार उगाई जाने वाली सब्जियों, फलों तथा फूलों की सूची तैयार करना।

(2) वर्षा काल में लौकी, गोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्चा, गुल मेंहदी, जीनिया, गेंदा, पपीता इत्यादि की पौध तैयार करना।

(3) शीतकाल में फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी, प्याज, कलेण्डुला, डहेलिया, नैस्ट्रोशियन, गुलदावदी, सूरजमुखी इत्यादि की पौध तैयार करना।

(4) ग्रीष्मकाल में कना, कोचिव, पोटूलाका वरगीनिया इत्यादि की पौध तैयार करना।

(5) अक्टूबर, नवम्बर में गुलाब की पौधे तैयार करना।

(उन्तीस) लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने बच्चों के लिये आकर्षण के केन्द्र तथा घर पर तथा ड्राइंग रूम सजाने के लिये सुन्दर साधन होते हैं।

(2) छात्रों में लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) लकड़ी के खिलौने बनाने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों/औजारों तथा कच्चे माल की जानकारी।

(2) औजारों का प्रयोग करने का अभ्यास एवं सावधानियां।

(3) विभिन्न प्रकार के डिजाइनों के अनुसार वन पीस तथा मेनी पीस में लकड़ी के खिलौने तैयार करने का अभ्यास।

(4) लकड़ी के खिलौने पर फिनिशिंग टच देना तथा पालिश करने का अभ्यास।

(5) मिट्टी के खिलौने बनाने के लिये उपयुक्त मिट्टी की जानकारी, चुनाव उसे तैयार करना।

(6) खिलौने के सांचों की प्रयोग की विधि की जानकारी।

(7) सांचे के खिलौने को निकालने, सुखाने तथा भट्ठी में उपयुक्त आंच में पकाने की कला जानकारी तथा अभ्यास।

(तीस) बेकरी तथा कन्फेक्शनरी का काम

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना है कि सामान्यतः नाश्ते में प्रयोग किये जाने वाले बिस्कुट तथा केक आदि सरलता से घर में बनाये जा सकते हैं।

(2) छात्रों को बिस्कुट, केक, पेस्ट्री तथा पावरोटी बनाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) बेकरी तथा कन्फेक्शनरी के काम में उपयोग में आने वाले आवश्यक उपकरणों/औजारों तथा ओवन की जानकारी।

(2) बिस्कुट, केक, पेस्ट्री तथा पावरोटी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री तथा उनकी सही मात्रा के अनुपात की जानकारी।

(3) पावरोटी, बनाने की विधियां--स्टेट की विधि, (ख) साल्ट डिलाइट विधि, (ग) नो टाइप की विधि, (घ) स्पेजडी विधि का ज्ञान प्राप्त करना।

(4) ब्रेड बनाने की प्रक्रिया--(1) फ्लाई परमेन्ट, (2) मिक्सिंग, (3) नोडिंग, (4) प्रथम फर्मा, (5) इण्टरमीडिएट प्रूफ, (6) मीलिंग एवं पैडिंग, (7) प्रूफिंग, (8) बेकिंग, (9) कलिंग, (10) स्लाई सिंग तथा (11) रैपिंग।

सामाजिक सेवा

(1) सामान्य व्यवहार की बातें, जैसे--सड़कों पर चलने, वाहन चलाने एवं सार्वजनिक स्थानों पर व्यवहार के नियम।

(2) कक्षा सजावट।

(3) नशाबन्दी एवं धूम्रपान आदि व्यसनों के कुप्रभाव से अवगत कराना।

सामान्य निर्देश

(1) विद्यालय का प्रारम्भ सामूहिक प्रार्थना एवं दैनिक प्रतिज्ञा से होना चाहिए।

(2) प्रार्थना स्थल पर सप्ताह में दो बार प्राधानाचार्य, शिक्षकों, विशेष अतिथियों एवं छात्रों द्वारा नैतिक मूल्यों को जगाने वाले दो मिनट के प्रवचन कराये जायें।

(3) विद्यालय में समय-समय पर अभिनव, लेख, कहानी, सूक्ति, कविता पाइ, अन्त्याक्षरी आदि को प्रतियोगिताओं, महापुरुषों के जन्म दिनों तथा वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन किया जाय।

(4) छात्रों को प्रतिदिन निर्धारित व्यायाम एवं योगदान करने के लिये प्रेरित किया जाय।

(5) सामूहिक व्यायाम एवं खेलों का आयोजन किया जाय।

(6) समाज सेवा के कार्य के अन्तर्गत विद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन, विद्यालय की सफाई, मरम्मत एवं सजावट तथा पुस्तकालय सेवा जैसे रचनात्मक कार्य भी कराये जाये।

3--मूल्यांकन--

1--उपर्युक्त पाठ्यक्रम का मूल्यांकन पूर्णतया आन्तरिक होगा।

2--प्रत्येक छात्र को एक डायरी रखनी होगी, जिसमें उसके द्वारा दिये गये कार्य नैतिक सत् प्रयास शारीरिक शिक्षा अन्तर्गत किये गये अभ्यासों, कृत समाजोपयोगी, उत्पादक कार्यों एवं सामाजिक के रूप में किये गये प्रयत्नों तथा कार्यों का मासिक विवरण सम्बन्धित अध्यापक द्वारा अंकित हो तथा प्रत्येक माह के अन्त में यह विवरण मूल्यांकन हेतु कक्षाध्यापक के माध्यम से प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

3--मूल्यांकन के आधार पर इसमें तीन श्रेणियां ए, बी, सी प्रदान की जायेगी। जिन छात्रों ने कार्य न पूरा किया हो तो उन्हें तब तक सामान्य परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित नहीं किया जायेगा, जब तक कि निर्धारित कार्य पूरा न कर लें जो छात्र उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में से किसी भी श्रेणी के योग्य नहीं पाये जायेंगे, उनकी विवरण पुस्तिका (डायरी) में तद्नुसार प्रविष्टि कर दी जायेगी तथा ऐसा छात्र मुख्य परीक्षा में बैठने के लिए अर्ह न होगा।

निर्धारित पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालय के प्रधान सम्बन्धित विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पुस्तक का चयन कर लें।

पूर्व व्यावसायिक का पाठ्यक्रम

(1) ट्रेड--टेक्सटाइल डिजाइन

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमता गुणों का विकास करना।

2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3--छात्रों को 10+2 स्तर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

स्वरोजगार के अवसर--

टेक्सटाइल डिजाइन ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

(1) टेक्साइल इन्डस्ट्रीज में निम्न पदों पर रोजगार प्राप्त हो सकता है--

(क) सहायक रंगाई मास्टर,

(ख) सहायक छपाई मास्टर।

(2) छोटे कारखानों में--

छपाई, रंगाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में।

(ख) स्वरोजगार के रूप में--

(1) घरेलू व्यवसाय के रूप में छपाई कार्य, रंगाई कार्य करके माल को स्वयं बेच सकता है या बड़े उद्योगों में सप्लाई कर सकता है।

(2) ग्राहकों की आवश्यकतानुसार आर्डर लेकर कार्य पूरा करके अपनी आय कर सकता है।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाओं उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओ का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

(क) टेक्सटइल परिचय--रेश, धागा, कपड़े का सामान्य ज्ञान।

(ख) टेक्सटाइल से सम्बन्धित डिजाइन का अध्ययन--बुनाई, रंगाई, छपाई, वाश, पेंटिग का साधारण नमूना तैयार करना।

इकाई 3--

(क) डिजाइन तैयार करने के मूलभूत सिद्धान्त तथा प्रारम्भिक डिजाइन का प्रमुख नमूना तैयार करना।

(ख) डिजाइन में रंगों एवं रंग योजना प्रयोग। विभिन्न प्रकार के डिजाइन अवधारणा का निर्माण करना जिसकी हम छपाई, रंगाई व पेंटिग में प्रयोग कर सकते हैं।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(1) रेशों की पहचान--सूती, ऊनी, रेशमी। परीक्षण विधि--मौलिक, जलाकर।

(2) कपड़े/धागे की रंगाई, छपाई के लिए तैयार करना। उबालना, विरंजन करना--मारकीन और कच्चा सूत।

(3) नमक के रंगों से छपाई करना--रूमाल या दुपट्टा कपड़ा--सूती कपड़ा/धागा।

(4) नप्थोल रंग से रंगाई करना--तीन गहरे रंग का प्रयोग, इन रंगों का प्रयोग पर्दे इत्यादि पर किया जा सकता है।

(5) ठप्पे (कपड़ों के) द्वारा छपाई--मेजपोश, रूमाल, तकिया का गिलाफ। कपड़ा--सूती।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान के मूल सिद्धान्त	जे0 पी0 शैरी	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिवार (तृतीय संस्करण)	प्रो0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक डिपो, लखनऊ।
3	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली।
4	टेक्सटाइल केयर एण्ड डिजाइन	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 एक्सप्लेनर, इन्स्ट्रक्शनल, मैटेरियल फार क्लासेज, दिल्ली IX-X	एस0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली।

(2) ट्रेड--पुस्तकालय विज्ञान

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों में 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करना।

(6) छात्रों को पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड की प्रारम्भिक जानकारी से अवगत कराना।

रोजगार के अवसर--

(1) वेतनभोगी रोजगार के अवसर--

(क) ग्रामीण, कम्युनिटी सेन्टर, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, पंचायत तथा अन्य लघु स्तरीय पुस्तकालयों में रोजगार के अवसर।

(ख) विभिन्न श्रेणी के पुस्तकालयों में पुस्तक प्रदाता, जनेटर, पुस्तक सरंक्षण सहायक तथा शार्टर के रूप में रोजगार के अवसर।

(2) स्वरोजगार के अवसर--

(क) पुस्तकालय का अध्ययन-सामग्रियों की जिल्दबन्दी का व्यवसाय।

(ख) पुस्तकालय उपकरण एवं उपस्कर निर्माण का व्यवसाय।

(ग) पुस्तकालय एवं उसकी अध्ययन सामग्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षण का व्यवसाय।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इनकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगा।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक (लिखित परीक्षा)

1--(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमती एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या। वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें। उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता के गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ। राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग सहायक सरकारी तथा गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का परिचय।

2--पुस्तकालय का परिचय, परिभाषा, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व, पुस्तकालयों के विभिन्न प्रकार (रूप) पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धान्तों की अवधारणा।

3--पुस्तकालय उपकरण उपस्कर एवं साज-सज्जा।

4--पुस्तकालय अध्ययन--सामग्री की अवाप्ति प्रक्रिया, उनके उपयोग हेतु सुनियोजन, फलक व्यवस्था तथा प्रदायक सेवा। प्रतिकाओं का अभिलेख एवं रख-रखाव।

प्रयोगात्मक

(1) लघु प्रयोगः

पुस्तकालयों के निम्नलिखित उपकरणों का प्रारूप तैयार करना--

बुक-प्लेट, बुक-लेबिल, तिथि-पत्रों, पुस्तक-पत्र, पुस्तक-पाकेट, पुस्तकालय-पत्रक, सूची-पत्रक, सूचना निर्देशक-पत्र, तिथि निर्देशक, बुक सपोर्टर।

(2) दीर्घ प्रयोगः

(क) पुस्ताकलय के निम्नलिखित उपस्करों एवं उपकरणों का प्रारूप (डिजाइन तैयार करना)--

परिग्रहण-पंजिका, समाचार-पत्र तथा पत्रिका-पंजिका, निर्गम पंजिका, कैटलाग, कैबिनेट चार्जिंग ट्रे, डिसप्ले, रेक, एटलस, स्टैण्ड, शब्दकोष स्टैण्ड।

पुस्तकों की मरम्मत, जुजबन्दी एवं सादी सिलाई द्वारा जिल्दबन्दी करना।

(ख) वर्गीकरण एवं सूचीकरण प्रायोगिक का मूल्यांकन, सत्रीय कार्य के अन्तर्गत (आगे उल्लिखित क्रम संख्या 4 एवं 5 पर आधारित कार्य करना)।

(1) सत्रीय कार्य--

छात्र कक्षा 9 में निम्नलिखित कार्य करेंगे और उनका अभिलेख तैयार कर सत्रीय कार्य के मूल्यांकन हेतु सुरक्षित रखेंगे :

1--पचास पुस्तकों की परिग्रहण पंजिका में प्रविष्टि।

2--पांच पुस्तकों का उपयोग हेतु सुनियोजन।

3--पत्र-पत्रिका से पांच समाचार-पत्र तथा दस पत्रिकाओं की प्रविष्टि।

4--सौ पुस्तकों का ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति से तीन अंकों तक का वर्गांक बनाना।

5--पचीस पुस्तकों के मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्तर्देशी संलेख को पत्रक स्वरूप सूचीकरण ए0ए0सी0आर0-2 के अनुसार बनाना।

(2) व्यावहारिक अध्ययन--

1--छात्र द्वारा किन्ही दो पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर दस पृष्ठों की आख्या प्रस्तुत करना।

2--किसी जिल्दसाज की दुकान पर भौतिक ग्रन्थ विज्ञान एवं जिल्दसाजी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना एवं किये गये कार्य का विवरण प्रस्तुत करना।

3--ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के तृतीय सारांश में प्रयुक्त पदो ंके हिन्दी समानार्थी शब्दों का ज्ञान।

निर्धारित पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के सम्बन्धित विषय के अध्यापक पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तकों का चयन कर लें।

(3) ट्रेड--पाकशास्त्र (कुकर)

उद्देश्य--

1--भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों का ज्ञान कराना।

2--भिन्न भोज्य-सामग्रियों की प्रकृति तथा रासायनिक संगठन के आधार पर भोजन पकाने की विधियों से अवगत कराना।

3--व्यावसायिक रूप से विक्रय योग्य बनाने की क्षमता उत्पन्न करना।

4--विभिन्न प्रदेशों के विशिष्ट व्यंजनों की जानकारी देना।

5--विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की विधियों के आदान-प्रदान द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करना।

6--खाद्य-सामग्रियों एवं उत्पादों में संदूषण के कारणों से अवगत कराना।

7--व्यावसायिक अभिरुचि को बढ़ाना।

8--समाज में भोजन की आदतों एवं पोषण स्तर में वृद्धि लाना अर्थात् पोषण अल्पता के कारण होने वाले रोगों में कमी लाना।

9--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक ट्रेड का चयन में करने सहायता करना।

10--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी--

1--किसी होटल में नौकरी की जा सकती है।

2--खान-पान उद्योग के अन्य स्वरूपों जैसे- अस्पताल, छात्रावास, फैक्ट्री एवं परिवहन कैटरिंग संस्थान में नौकरी की जा सकती है।

(ख) स्वरोजगार--

1--भोजनालय स्थापित किया जा सकता है।

2--होटल (राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे जहां वाहन खड़ा करने व उसके रख-रखाव, व्यक्तियों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था हो) स्थापित किया जा सकता है।

3--पाकशास्त्र के प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर, उनका संचालन किया जा सकता है।

4--पाकशास्त्र से सम्बन्धित उपकरणों/संयत्रों की विक्रय की एक जानकारी केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावना में उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं रोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

(1) पाक कला की परिभाषा, उत्पत्ति एवं उद्देश्य।

(2) पाकशास्त्र की शब्दावली--

एरोमेट्स	म्लीचिंग	रिशेफ
वैटर	कांगूलेट	शटनिंग
वोटिंग	क्रोटोस	विपिंग
फैरामेल	डो	जूलियन
कुजीन	ग्लूटेन	रेजिंग एजेन्ट्स
गार्निज	आदव	रु0
आग्रटिन	मिन्स	सांटे

इकाई 3--

1--कच्ची खाद्य सामग्रियों का परिचय एवं उनको खरीदते समय ध्यान देने योग्य मानक--नमक, द्रव तेल एवं वसा, रेजिंग एजेन्ट्स, मिठास देने वाले पदार्थ, गाढ़ापन देने वाले पदार्थ, अण्डा, अनाज, दालें, सब्जियां, मांस, मछली।

2--भोजन पकाने की विधियां--उबालना, पोचिंग, ब्रेजिंग, भाप द्वारा पकाना, स्ट्यूइंग, फ्राइंग, रोप्टिस, ग्रिलिंग या बालिंग, बेंकिग या ग्रिडलिंग।

प्रयोगात्मक

(1) भारतीय व्यंजन (खाद्य उत्पाद)--

1--चावल--वेजिटेबिल पुलाव, प्लेन फ्राइड राइस, कोकोनट मली राइस, बिरयानी।

2--रोटी--मिस्सी रोटी, भरवी पराठा, नान, कचौड़ी।

3--दाल--दाल मक्खनी, सूखी मसाला दाल।

4--सब्जी--बेजिटेविल कोफ्ता, वेजिटेबिल कोरमा, भरवा शिमला मिर्च या टमाटर, पनीर पंसादीबा, सूखी सब्जी।

5--मांस--कोरमा, शामी कबाव, रोगनजोश, मटर कीमा, मटर चिकन।

6--रायता--बूंदी, खीरा, टमाटर, आलू।

7--सलाद--सलाद काटना, सजाना।

8--मीठा--गुलाब जामुन, रसगुल्ले, बर्फी, फिरनी।

9--स्नैक्स--समोसा कटलेट्स, वेजिटेबल रोल्स, वेजिटेबल कबाव।

10--पेय पदार्थ--चाय, काफी, कोल्ड काफी, लस्सी।

11--अण्डा--एगकरी, आमलेट, स्क्रैम्बल्ड एग, पोच एग।

(2) पाश्चात्य व्यंजन--

1--सूप--क्रीम आफ टोमैटो सूप, धुली मसूर की दाल का सूप, मिक्सड वेजिटेबल सूप।

2--वेजिटेबल--बैक्ड वेजिटेबल, बैक्ड पोर्ट टी, साटे पोज, क्रीम्ड कैरट्स।

3--मीट एवं मछली--आइरिस स्ट्यू, वैक्ट फिश, फिशफिंगर्स।

4--चायनीज--चाऊमीन, चायनीज फ्राइज्ड राइस।

5--पुडिंग्स--ब्रेड बटर पुडिंग, कैरेमल कस्टर्ड फ्रूट क्रीम।

(3) प्रान्तीय--

उत्तर भारतीय--छोले भटूरे, फिश लाई ढोकला।

दक्षिण भारतीय--इडली, ढोसा, सांभर, नारियल चटनी।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम व पता
1	2	3	4
1	भारतीय एवं पाश्चात्य पाकशास्त्र के सिद्धान्त एवं व्यंजन विधियां	सुश्री अनुपम चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, पो0 बा0 नं0-1106 पिशाच मोचन, वाराणसी।
2	आहार एवं पोषण विज्ञान	श्रीमती ऊषा टंडन	स्वास्तिक प्रकाशन एवं पुस्तक विक्रेता, अस्पताल मार्ग, आगरा।

(4) टेड्र--छाया चित्रण (फोटाग्राफी)

उद्देश्य--

छाया चित्रण मात्र एक ललित कला ही नहीं है, अपितु एक स्वतन्त्र व्यवसाय के रूप में तेजी से उभरा है। व्यक्ति चित्रण के साथ-साथ यह जर्नलिज्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकी क्रियाओं को स्पष्ट करने एवं अध्ययन करने में तथा शिक्षण कार्य के अपेक्षाकृत सुगम बनाने एवं प्रभावकारी बनाने में हो रहा है। छाया चित्रण का अध्ययन न केवल व्यक्तित्व विकास एवं सौन्दर्यबोध को प्रखर करने में सशक्त है अपितु वह उपार्जन क्षमता भी प्रदान करेगा।

छाया चित्रण के प्रारम्भिक अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसके ज्ञान को निम्नलिखित अध्यायों में निरूपित किया गया है--

(1) स्वरोजगार।

(2) छाया-चित्रण परिचय, नया संक्षिप्त इतिहास, व्यावसायिक उपयोगिता एवं आधारभूत सम्बन्धित विषयों (फन्डामेन्टल सब्जेक्ट्स) का आवश्यक ज्ञान।

(3) छाया-चित्रण सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान एवं प्रकाश संवेदित (फोटो सेन्सिटिव, रासायनिक यौगिकों के उपयोग एवं चित्रण कुशलता) सम्बन्धी जानकारी।

(4) बाक्स कमरा एवं उसके उपयोग की विस्तृत जानकारी, इसमें छाया-चित्रण के लिए कैमरे के बिम्ब उद्भाषित (एक्सपोज) करना तथा रसायनों के उपयोग, फिल्म पर बने बिम्ब से संवेदनशील कागज पर प्रतिबिम्ब निरूपण प्रणाली सम्मिलित है।

(5) छाया चित्रण सम्बन्धी सहायक उपकरण, प्रकाश के विभिन्न स्रोत तथा चित्र का सुरुचिपूर्ण ज्यामितिक प्रारूप निर्धारण (कम्पोजीशन) करने की जानकारी।

(6) छाया चित्रण के विभिन्न क्षेत्रों में से दो विशिष्ट क्षेत्रों--(1) व्यक्ति चित्र (पोट्रेट) तथा (2) प्राकृतिक दृश्यावली अंकन (लैण्डस्कैप) का अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी।

कार्य के अवसर--

(1) स्वरोजगार--

1--फ्रीलान्स फोटो जर्नलिस्ट (स्वैच्छिक फोटो पत्रकारिता)।

2--कला भवन स्वामित्व।

(2) वेतनभोगी रोजगार--

1--छाया चित्रकार के पद पर--

--शोध संस्थानों में,

--औद्योगिक संस्थानों में,

--मुद्रणालयों में,

--संग्रहालयों में, कला भवनों आदि में,

--शिक्षा संस्थाओं में,

--समाचार (दैनिक एवं पाक्षिक) पत्र-पत्रिकाओं में आदि।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

(1)[क] उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं संभावनाएं। उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

[ख] लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, रक्त प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं को संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

(2) फोटोग्राफी--परिचय, संक्षिप्त इतिहास उपयोगिता--

1--कैमरों के प्रकार, पिन, होल, घुक्स, फोल्डिंग, रिफ्लैक्स, फील्ड कैमरा, मिनिएचर (लघु) तथा सब मिनिएचर (अति लघु)।

2--कैमरा के विभिन्न अंग--

(क) लेन्स--विभिन्न प्रकार के लेन्स, फोकल बिन्दु, फोकल दूरी, साधारण लेन्सों द्वारा वस्तु के बिम्ब का बनाना। क्षेत्र की गहनता रेखाचित्र द्वारा समझना।

लेन्सों में दोष--वर्णीय (क्रोमेटिक) एंव गोलीय, दोषों का निवारण : नार्मल वाइड एंगिल तथा टेलीफोटो लेन्स।

(ख) अपरचर या द्वाराक--कार्य, विभिन्न प्रकार, रचना, संख्या।

(ग) शट या कपाट--कार्य, विभिन्न प्रकार जैसे, लीफ/ब्लेड शटर फोकल प्लेन आदि उनकी रचना।

(घ) दृश्यदर्शी (Veiw find), सीधा दृश्यदर्शी, दर्पण ग्राउन्ड ग्लास (घिसा हुआ कांच) तथा दर्पण पटा प्रिज्म दृश्यदर्शी।

(ङ) फिल्म प्रकोष्ठ (Film chamber) रचना, फिल्म की हाथ द्वारा (मैनुअल) तथा आटोमेटिक बाइंडिंग।

(3) फोटोग्राफिक फिल्म तथा पेपर, प्रकाशन संवेदनशील पदार्थ, फोटोग्राफिक फिल्म तथा पेपर की संरचना तथा उनके प्रकार। धीमा स्लो (धीमा), मध्यम (मीडियम) तथा तेज (फास्ट) फिल्में। फिल्मों की गति व्यक्त करने के लिए ए0एस0ए0 तथा डिम (Dim) पद्धति। पैक्रोमेटिक तथा आर्थोक्रोमेटिक फिल्में तथा पेपर। पेपर के विभिन्न ग्रेड एवं वेट, विभिन्न प्रकार की फिल्में।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक लघु--

1--कैमरे (बाक्स) की संरचना का अध्ययन कीजिए एवं चित्र खीचिंए (सभी भागों का नाम लिखिए)।

2--कैमरे (बाक्स) का संचालन सीखना।

3--कैमरे के साथ उपयोग होने वाले फ्लेश, एक्सपोजर, मोटर ट्राइपाड स्ट्रेन्ड इत्यादि का अध्ययन।

4--किसी निगेटिव का कान्ट्रेक्ट प्रिन्ट बनाना।

5--किसी निगेटिव का एनलार्जमेन्ट बनाना।

6--किसी प्रिन्ट की टूनिंग तथा ग्लेजिंग तथा पेस्टिंग करना।

7--पीले फिल्टर का प्रयोग कर फोटो लेना।

8--बनाने के बाद प्रिन्ट के defect (त्रुटियों) का अध्ययन तथा साधारण त्रुटियों को दूर करना।

प्रयोगात्मक दीर्घ--

1--कैमरे के शटर स्पीड एवं एपन्चर का उद्भासन (एक्सपेजर) समय पर प्रभाव का अध्ययन, फोटो खींच कर करना।

2--फोटो खींचकर या रेफ्लेक्स कैमरे द्वारा Aperture का फोकस की गहनता, depth तथा Sharpness पर प्रकाश का अध्ययन करना।

3--एनलारजर की रचना एवं संचालन का अध्ययन करना, सही उद्भासन समय निकालना एवं लीवर/अन्डर एक्सपोजर का अध्ययन।

4--निगेटिव के ग्रेड का अध्ययन तथा प्रिन्ट के लिए विभिन्न पेपर ग्रेड के भाव का अध्ययन।

5--उद्भासन समय पर फिल्म की गति के प्रभाव का अध्ययन।

6--चित्र के कम्पोजीशन का अध्ययन करना।

7--बच्चे, महिला एवं वृद्ध के पोर्ट्रेट खींचना।

8--लैण्ड स्केप फोटो खींचना।

9--डार्क रूम के साज सामान तथा ले-आउट का अध्ययन करना।

10--डेवलपमेन्ट टाइप का चित्र पर प्रभाव एवं ओवर/अन्डर डेवलपमेन्ट का अध्ययन।

11--बाक्स कैमरे द्वारा कम से कम एक कलर फोटो लेना तथा अध्ययन करना।

12--किसी विषय पर प्रोजेक्ट Project करना, जैसे पोर्ट्रेट, लैण्ड स्कैप।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम व पता
1	2	3	4
1	डायमण्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	श्रीकृष्ण श्रीवास्तव	डायमण्ड पाकेट बुक्स, दिल्ली वितरक--विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2	फोटोग्राफी सहज पार्ट	अशोक डे	इण्डियन क्टिोरियल, पब्लिशर्स, कलकत्ता। वितरक--विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3	ट्रिक फोटोग्राफी एण्ड कलर प्रासेसिंग	ए0 एच0 हाशमी	युनिवर्सल बुक सेन्टर, लखनऊ।
4	प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	ए0 एच0 हाशमी	तदैव
5	गुड फोटोग्राफी	कोडक	यूनिवर्सल बुकसेलर, लखनऊ।
6	फोटोग्राफी स्पोर्ट्स	कोडक	तदेव
7	मोविमेकर एच0 बी0	कोडक	यूनिवर्सल बुकसेलर, लखनऊ।
8	दी होम वीडियो पिक्चर	कोडक	तदेव
9	फोकल गाइड टू ट्रेडिंग	कोडक	तदेव
10	फोकल गाइड मूवी मेकिंग	कोडक	तदेव
11	दी फोकल गाइड टू साइड टेंड	कोडक	तदेव
12	दी फोकल गाइड टू एक्शन फोटोग्राफी	कोडक	तदेव
13	दी पाकेट गाइड टू फोटोग्राफी	कोडक	तदेव
14	गाइड टू परफेक्ट पिक्चर	कोडक	तदेव
15	वे आफ प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	कोडक	तदेव

(5) ट्रेड-बेकिंग एवं कनफेक्शनरी

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

स्वरोजगार के अवसर--

बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व्यवसाय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं :

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में--

1--बेकरी उद्योग में नौकरी।

2--होटल/मेस में नौकरी।

3--कच्चे पदार्थों के भण्डारण में प्रभारी के रूप में।

(ख) स्वरोजगार--

1--कुटरी उद्योग स्थापित करना।

2--कच्चे माल के क्रय-विक्रय का धन्धा चलाया जा सकता है।

3--बिक्री कार्य में।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(1) उद्यमिता बोध--

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं, उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ। राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगर की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

(1) बेकरी विज्ञान का ज्ञान, महत्व एवं उद्देश्य।

(2) बेकरी उपकरणों का संक्षिप्त ज्ञान, बेकरी ओवन एवं भट्ठी।

(3) बेकरी तकनीकी शब्दावली।

(4) [क] ब्रेड बनाने की विधियों के नाम,

[ख] स्ट्रेट डी विधि से ब्रेड बनाने का विस्तृत तरीका,

[ग] ब्रेड बनाने की विभिन्न प्रक्रियाओं का संक्षिप्त ज्ञान,

[घ] ब्रेड की बीमारियों के नाम व बचाव।

इकाई 3--

बेकरी व कन्फेक्शनरी में प्रयुक्त होने वाले कच्ची सामग्री का संक्षिप्त ज्ञान (मैदा, चीनी, घी, अण्डा, ईष्ता नमक, पानी, दूध, बेकिंग पाउडर, सुगन्ध, रंग, कोको एवं चाकलेट, सोयाबीन, आटा (मक्का आटा))।

प्रयोगात्मक--

लघु प्रयोग--

1--कोकोनट कुकीज

2--कैश्यूनट कुकीज

3--कैश्यूनट बिस्कुट

4--जीरा बिस्कुट

5--बटर स्पंज केक

6--स्वीस रोल

7--डैकोरेटिव पेस्ट्री

8--रायल नाइसिंग, क्रीम आइसिंग

9--गम पेस्ट

10--मिल्क टाफी

दीर्घ प्रयोग--

1--ब्रेड स्टेट डी विधि से

2--फ्रूट बन्स

3--स्वीट बन्स

4--ब्रेड रोल

5--फ्रूट केक

6--वेजीटेबिल पैटीज

7--हाटक्रास बन्स

8--पाइन एपिल पेस्ट्री

9--बर्थडे केक (विव आइसिंग)

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रुपया
1	अप-टू-डेट कन्फेक्शनरी इण्डस्ट्रीज	. .	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	30.00
2	दी सुगम बुक आफ बेकिंग	. .	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	20.00
3	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी सिद्धान्त एवं विधियां	सुश्री अति उत्तमा चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, मी0 21/20, पिशाचमोचन, वाराणसी-221010, पो0 बा0-1106, पिशाचमोचन, वाराणसी	50.00
4	किचन गाइड	. .	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	70.00
5	बेकिंग	बी0 एन0 अग्निहोत्री	कृषि साहित्य प्रकाशक, नरही, लखनऊ	50.00
6	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी	राम किशोर अग्रवाल	भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ 142, विजय नगर, वेस्ट कचहरी रोड, मेरठ	85.00

(6) ट्रेड--मधुमक्खी पालन

(1) मधुमक्खी पालन औद्योगिकरण की जानकारी प्राप्त कर बढ़ती हुई बेरोजगाारी को दूर करना एवं बेरोजगारी दूर करने के लिये अन्य राष्ट्रीय योजनाओं को छात्रों को समझाना।

(2) शुद्ध मधु-मोम उत्पादन की मात्रा की वृद्धि करना तथा बिक्री कर के प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना तथा बच्चों को उद्यमिता प्रदान कर उद्यमी बनाना।

(3) बच्चों, बीमार एवं कमजोर व्यक्तियों के लिए उपयोगी वस्तु (मधु) औषधि एवं पौष्टिक उत्पादन करके आय में वृद्धि करना।

(4) ग्रामीण अंचल के निर्धनों के लिए आय का साधन स्रोत।

(5) कम पूंजी लगाकर मधुमक्खी पालन कर शहद के रूप में फूलों के रस को एकत्रित करना।

(6) मधुमक्खी पालन उद्योग में दक्षता, निपुणता प्राप्त कर जीवकोपार्जन के लिए उत्तम बनाना।

(7) मधुमक्खी पालन उद्योग के लिए मौनगृह, छोटे उपकरणों का ज्ञान प्राप्त करना।

(8) मधुमक्खी पालन द्वारा किसानों एवं बागवानों की फसलों, फलों का उत्पादन 20 प्रतिशत से 30 प्रतिशत तक वृद्धि करने का ज्ञान प्राप्त करना।

(9) मोम-पराग, रावल, जैली, मौन विष, प्रोपेजिस का ज्ञान, उपयोग की जानकारी प्राप्त करना।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी--

1--मधुमक्खी पालक सहायक

2--मौन पालक प्रदर्शक

3--सहायक मौन पालक

4--सहायक काष्ठ कला प्रशिक्षक या शिक्षक

5--सहायक मधु विकास निरीक्षक

6--मधुमक्खी पालक शिक्षक या प्रशिक्षक

7--मधु विकास निरीक्षक

8--शोध सहायक (मधुमक्खी पालन)

(ख) स्वरोजगार--

1--मधु मोम उत्पादक

2--मोमों छत्तादार उत्पादक

3--मौन गृह एवं उपकरण निर्माणकर्ता एवं बिक्रेता

4--पराग, रायल, जेली, मौन, विष उत्पादक

5--मौन वंश प्रजनन करके विक्रय करना

6--शहद, मोम, रायल, जेली से औषधि निर्माण करना

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

इस ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगा।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता शोध--उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, तथा लघु उद्योग में सहायक सहकारी एवं गैर सरकारी एजेसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

मौन पालन की परिभाषा, व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के लिए महत्व तथा भारत वर्ष में एवं इस प्रदेश में मधुमक्खी पालन का इतिहास एवं विकास की सम्भावनाएं।

जन्तु जगत में मौन (मधुमक्खी) का जैविक स्थान। देश में पायी जाने वाली मधुमक्खी की जातियों की पहचान, स्वभाव, सामान्य व्यवहार, तुलनात्मक अध्ययन एवं उपयोगिता।

इकाई 3--

(1) मधुमक्खी की शरीर की वाह्य रचना, सिर, धड़ एवं उदर तथा प्रत्येक खण्ड में पाये जाने वाले अंग जैसे मुखांग, स्पर्शन्द्रिय, (एन्टिना) आंख, पंख, मौन ग्रन्थियां, पेट तथा डंक की पहचान एवं उपयोगिता।

1-मधुमक्खी का विकास, मौन का जीवन चक्र, मौन परिवार का संगठन, कमेरी, नर एवं नारी की पहचान तथा उनके छत्तों की पहचान एवं उनके कार्य।

2-मौन प्रबन्ध (हनी बी मैनेजमेन्ट) की परिभाषा, साधारण एवं ऋतु के अनुसार मौन प्रबन्ध की देख-रेख, प्राकृतिक मधुमक्खी परिवार को मौन गृह में बसाना। बगछूट, घर छूट, लूटपाट, कर्मठ मौन की पहचान, नियंत्रण के उपाय।

प्रयोगात्मक

(क) दीर्घ प्रयोग--

1--विभिन्न मधुमक्खी की जातियों की पहचान कराना और अभ्यास पुस्तिका पर उनका चित्र बनाना।

2--मौन की जीवन-चक्र (अण्डा, लार्वा, प्यूपा एवं वयस्क) की पहचान कराना।

3--मधुमक्खी के वाह्य शरीर का चित्र बनाना और उसके प्रत्येक अंगों की प्रयोगात्मक कार्य कराना।

4--मौन परिवार में प्रत्येक सदस्य (कमेरी, नर और नारी) की पहचान कराना।

5--भारतीय एवं इटैलियन मौन गृह निर्माण के सिद्धान्त (सीमान्तर) आकार को बताना।

6--मधु निष्कासन यन्त्र का चित्र बनवाना तथा शहद निकालने की विधि का प्रयोगात्मक कार्य कराना।

7--मौसमवार फूलों का सर्वे कराना तथा इसकी पर-परागण क्रियाओं में मौनों का योगदान को बताना एवं पुष्प संग्रह कराना।

(ख) लघु प्रयोग--

1--रानी, कमेरी एवं नर के छत्तों की पहचान कराना।

2--तलपट, शिशु खंड, मधु खण्ड, डमी, इनर कवर, ऊपर ढक्कन, फ्रेम की पहचान कराना।

3--मधुमक्खी के शत्रु बर्रे, मोमी पतंगा, छिपकली, चीटें, हानिकारक पक्षियों की पहचान कराना।

4--क्वीन केच, न्यूक्लियस, मौन वाहक पिंजड़ा, हाइव टूल, मुहरक्षक, जाली, दस्ताने, प्यालियां, क्वीन गेट इत्यादि उपकरणों की पहचान कराना।

5--विभिन्न प्रकार के शहद जैसे सरसों, यूक्लिपट्स, शहजन, नीबू प्रजाति, सूरजमुखी, बेर, लीची, नीम एवं मिश्रित फलों की शहद की पहचान कराना।

पुस्तकों की सूची

1--प्रारम्भिक मौन पालन	ले0 योगेश्वर सिंह
2--प्राइमारी लेशन आफ बी कीपिंग	. .
3--बी कीपिंग आफ इण्डिया	डा0 सरदार सिंह
4--सफल मौन पालन	श्री बच्ची सिंह राव
5--रोचक मौन पालन	. .
6--मौन पालन प्रश्नोत्तरी	. .
7--मधु मक्खी की मनोहारी बाजार	डा0 विष्ट (आई0 सी0 आई0 प्रकाशन)
8--रोगों के अचूक दवा शहद	डा0 हीरा लाल

(7) ट्रेड--पौधशाला

उद्देश्य-

(1) छात्रों को उद्यमिता के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी कराना।

(2) पौधशाला व्यवसाय का प्राविधिक जानकारी कराना।

(3) उन्नत किस्म अधिकाधिक पौधे तैयार करना।

(4) कम पूंजी से अधिक उत्पादन करना तथा अधिक लाभ प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होना।

(5) पौधशाला व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करना तथा साथ ही साथ 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त व्यवसाय के चयन में सहायक होना।

(6) भूमि सुधार तथा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्रदान करना।

(7) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना।

(8) आत्म निर्भर करना।

(9) एक कुशल नागरिक के रूप में राष्ट्र निमार्ण में सहायक होना।

(10) विद्यालय में एक सुसज्जित उद्यान का निर्माण।

रोजगार के अवसर--

पौधशाला व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्नलिखित रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी--

1--माली का कार्य करना।

2--पौधशाला प्रभारी का कार्य करना।

3--पौधशाला में दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी का अवसर प्राप्त करना।

(ख) स्वरोजगार--

1--अपनी पौधशाला तैयार करना।

2--बीजोत्पादन तथा बीज व्यवसाय अपनाना।

3--पौधशाला उद्योग सम्बन्धी यंत्रों, उपकरणों, उर्वरकों तथा कीटनाशकों के क्रय-विक्रय की दुकान चलाना।

4--थोक एवं फुटकर शीघ्र आपूर्ति कार्य करना।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषायें एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सहकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

पौधशाला--परिचय, परिभाषा, महत्व, वर्तमान दशा एवं भविष्य। पौधशाला के लिए स्थान का चुनाव, भूमि की तैयारी तथा रेखांकन एवं उनके विभिन्न अंगों तथा मातृ, वृक्ष, क्षेत्र, गमला क्षेत्र, प्रतिरोपण क्षेत्रों तथा प्रवर्धन क्षेत्र का ज्ञान।

1--पौधशाला के दैनिक कार्य उपकरण एवं आवश्यक सामग्री की जानकारी।

2--भूमि, खाद, भू-परिष्करण की सामान्य जानकारी।

इकाई 3--

1--बीज शैय्या--परिचय, लाभ, हानि, बीज शैय्या तैयार करने की विधि, आकार, निर्धारण, मिट्टी की भूमि शोधन, खाद, सिंचाई, जल निकास एवं देखभाल।

2--एक वर्षीय, बहुवर्षीय सब्जियों तथा शोभाकार पौधों की पौध तैयार करने की विधि का अध्ययन।

3--वानिकी की सामान्य जानकारी तथा वानिकी वृक्षों की पौध तैयार करना।

4--पौधों की सिंचाई, जल निकास, निराई-गुड़ाई एवं फसल सुरक्षा की विधियों की जानकारी।

प्रयोगात्मक

(अ) लघु प्रयोग--

1--गमला मापन।

2--गमला भरना।

3--बीजों की पहचान।

4--बीजों की शुद्धता की जांच।

5--उपकरणों की पहचान।

6--पौधों (सब्जी, फलदार, फूल, शोभकार तथा छायादार) एवं वानिकी पौधों की पहचान।

7--खाद एवं उर्वरकों की पहचान।

8--मिट्टी की पहचान।

(ब) दीर्घ प्रयोग--

1--आदर्श नमूना बरसदी का रेखांकन।

2--बीज शैय्या बनाना।

3--ऋतुवार बीज शैय्या बनाना।

4--ऋतुवार गमला मिश्रण तैयार करना।

5--तना, कलम तैयार करना।

6--बूटी लगाना।

7--कलिकायन से पौधे तैयार करना।

8--भेड़ कलम से पौधे तैयार करना।

9--पौध रोपण।

10--गमले एवं क्यारी से पौधे निकालना।

11--पौधबन्दी (पैकिंग करना)

12--पौधशाला भ्रमण।

13--अभिलेख तथा आय-व्यय तैयार करना।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	भारत में फलों की खेती	डा0 एम0 एल0 लावनिया	सिंघल बुक डिपो, बड़ौत, मेरठ।
2	सब्जियां एवं पुष्प उत्पादन	डा0 के0 एन0 दुबे	भारती भण्डार, बड़ौत, मेरठ।
3	पौधशाला प्रौद्योगिकी	डा0 ओमपाल सिंह	अलंकार पुस्तक भवन, बड़ौत, मेरठ।
4	पौधशाला व्यवसाय	श्री कोठारी एवं श्री ए0 बी0 श्रीवास्तव	रंजना प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
5	नर्सरी मैनुअल	डा0 गौरी शंकर	इलाहाबाद।
6	फल विज्ञान	डा0 रामनाथ सिंह	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
7	उद्यान विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायन लाल, इलाहाबाद।

(8) ट्रेड--आटोमोबाइल

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर--

(1) आटोमैकेनिक के रूप में।

(2) सेल्समैन के रूप में।

(3) अपना रिपेयर वर्कशाप एवं गैराज का संचालन।

(4) शोरूम स्थापित करना।

(5) स्पेयर पार्ट के विक्रेता के रूप में।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम **पूर्णांक 50 अंक**

इकाई-1 **07 अंक**

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, उद्यमी के गुण एवं विकास, स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं।

लघु उद्योग की परिभाषा, महत्व तथा विशेषताएं, लघु उद्योग लगाने के पद, सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के नाम एवं कार्य, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2 **07 अंक**

आटोमोबाइल का इतिहास एवं क्रमिक विकास, विभिन्न प्रकार के आटोमोबाइल का वर्गीकरण, भारत में स्थापित विभिन्न आटोमोबाइल उद्योग एवं उनके उत्पाद।

इकाई-3 **12 अंक**

आटोमोबाइल के मुख्य भाग-फ्रेम, सस्पेंशन, धुरी, पहिया, चेचिस, टायर, इंजन, पारेषण प्रणाली, नियंत्रण प्रणाली, बाडी, दरवाजे, सीट, डिक्की अदि की पहचान, कार्य एवं उपयोग।

विभिन्न प्रकार के आटोमोबाइल का परिचय-कार, जीप, ट्रैक्टर, बस, ट्रक, आटोरिक्शा/टैम्पों, स्कूटर, मोटर साइकिल, मोपेड आदि, ट्रेड नाम, मेक, क्षमता एवं निर्माता, विशिष्टियां तथा तकनीकी डाटा।

इकाई-4 **08 अंक**

आटोमोबाइल में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के इंजन-कार्य सिद्धान्त, पेट्रोल, डीजल एवं गैस इंजन, कम्प्रेशन रेशियों का महत्व एवं दक्षता।

इकाई-5 **12 अंक**

आटोमोबाइल की विभिन्न प्रणालियों की जानकारी-ईंधन सप्लाई प्रणाली (कारवूरेटर एवं इन्जक्टर) इग्नीशन प्रणाली, शीतलन प्रणाली, स्टार्टिंग प्रणाली, शक्ति संचालन प्रणाली, स्टीयरिंग प्रणाली, ब्रेक प्रणाली आदि का सामान्य परिचय, कार्य एवं पहचान।

इकाई-6 **04 अंक**

सुरक्षा की सामान्य बातें, मरम्मत कार्य के दौरान सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा।

प्रयोगात्मक **पूर्णांक-50 अंक**

(1) कार/बस/स्कूटर/ट्रक एवं मोपेड का अध्ययन करना।

(2) शोरूम एवं गैराज का भ्रमण कराना एवं उनके चित्र बनाना।

(3) मरम्मत करने वाले औजारों की सूची एवं उनके चित्र बनाना।

(4) इंजन में स्नेहन एवं सफाई का अध्ययन करना।

(5) अर्न्तदहन इंजन के मॉडल का अध्ययन (डीजल/पेट्रोल)।

(6) विभिन्न आटो ब्हीकिल्स के चेचिस का अध्ययन करना तथा उनके रेखा चित्र खींचना।

(7) इंजन को स्टार्ट एवं बन्द करने का अध्ययन करना।

(8) बाडी व्यवस्था का अध्ययन करना।

(9) शाक एब्जार्बर का अध्ययन करना।

(10) बाजार से सामग्री क्रय करने का अभ्यास करना।

संस्तुत पुस्तकें

(1) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	कृष्णानन्द शर्मा
(2) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	सी0 बी0 गुप्ता
(3) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	धनपत राय ऐन्ड शुक्ला
(4) बेसिक आटोमोबाइल	सी0 पी0 बक्स

(9) ट्रेड--धुलाई रंगाई

उद्देश्य-

(1) छात्रों को उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रूचि पैदा करना।

(5) छात्रों का कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

1--रंगाई-धुलाई की दुकानों में सहायक कर्मचारी के पद पर कार्य कर सकता है।

2--रंगाई के कारखाने में रंगाई मास्टर के पद पर कार्य कर सकता है।

3--सरकारी संस्थाओं में वस्त्र सफाई विभाग में कार्य प्राप्त कर सकता है।

(ख) स्वरोजगार--

1--ड्राई क्लीनिंग की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है।

2--डाईनिंग (रंगाई) की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है।

3--चरक की दुकान या उद्योग लगाने में सहायक हो सकता है।

4--कम लागत में इस्तरी करने, माड़ी लगाने की दुकान खोलकर कार्य कर सकता है।

5--रंगाई छपाई का छोटा रोजगार कर सकता है।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता बोध--

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की आख्या एवं उद्यमिता प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई 2--

(1) तन्तुओं का वर्गीकरण तथा उनकी पहचान करना (और जलाकर), सूती, ऊनी, रेशमी, बयान, पालीस्टर।

(2) धागों का वर्गीकरण तथ उनका ज्ञान--साधारण, प्लाई, फैन्सी।

(3) विभिन्न रंगों का विभिन्न कपड़ों के लिये आवश्यकता।

(4) कपड़ों को रंगने से पहले उनको तैयार करना।

[क] उबालना।

[ख] विरंजन करना।

(5) रंगने के बाद कपड़ों की फिनिशिंग--

[क] माड़ी लगाना।

[ख] तनाव देना।

[ग] चरक।

[घ] इस्तरी।

[ङ] तह लगाना।

इकाई 3--

(1) धुलाई का उद्देश्य एवं महत्व।

(2) धुलाई का सिद्धान्त, तकनीक के सुझाव तथा आवश्यक सावधानियां।

(3) धुलाई के उपकरण (प्राचीन या आधुनिक)।

(4) प्रारम्भिक धुलाई एवं पारम्परिक धुलाई।

(5) विभिन्न प्रकार की माड़ी तथा नील देना।

(6) विभिन्न प्रकार के धब्बे छुड़ाना--

चाय, काफी, चाकलेट, अण्डा, रक्त, हल्दी, तेल, कालिख, जंक, पान।

प्रयोगात्मक

(1) विभिन्न वस्तुओं का संग्रह एवं पहचानना (देखकर जलाकर) :

[क] वनस्पति तन्तु।

[ख] पशु से प्राप्त होने वाला तन्तु।

[ग] खनिज तन्तु।

[घ] कृत्रिम तन्तु।

(2) विभिन्न धागों का संग्रह--साधारण प्लाई।

(3) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और शेड कार्ड को संग्रहीत करके फाइल बनाना।

(4) विभिन्न प्रकार के कपड़ों को रंगना (15 इंचX15 इंच) (सूती, रेशमी, ऊनी, कृत्रिम कपड़े, धोना, सुखाना प्रेस व तह लगाना)।

(5) नील लगाना, कलफ लगाना।

(6) दाग छुड़ाना--

(1) चाय

(2) काफी

(3) हल्दी

(4) जंक

(5) रक्त

(6) मशीन का तेल

(7) स्याही

(8) अण्डा

(9) पान

(10) ग्रीस

(7) धागे को रंगना--सूती, ऊनी।

(8) डायरेक्ट रंगों के विभिन्न रंगों के मिश्रण द्वारा डिजाइन बनाना--6 नमूने (15 इंचX15 इंच) टाइ एण्ड डाई प्रिटिंग द्वारा।

(9) नेप्थाल रंगों के द्वारा एक नमूना तैयार करना (15 इंचX15 इंच)।

(10) फेडिंग परीक्षण सूती, ऊनी, रेशमी, रेयान (4 इंचX4 इंच)।

(11) सूखी धुलाई--शाल, स्वेटर, रेशमी, फैन्सी कपड़े।

(12) टेक्सचर के द्वारा रंगाई-- (6 नमूने) (12 इंचX12इंच)।

(13) पुराने कपड़े को पुनः रंगकर ब्लाक प्रिटिंग द्वारा आकर्षक बनाना।

(14) गीली धुलाई--सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम।

(अ) लघु प्रयोग--

(1) डायरेक्ट रंगों द्वारा रंगाई (एक रंग में)।

(2) कपड़ों को पहचानना (छूकर व देखकर)।

(3) साधारण व प्लाई धागों की पहचान।

(4) जलाकर कपड़ों का परीक्षण।

(5) फेडिंग परीक्षण 3/4 घंटा।

(6) तह लगाना।

(7) इस्तरी करना।

(8) माड़ी लगाना।

(9) ब्लाक प्रिटिंग (एक नमूना)।

(10) ट्रेक्सचर तैयार करना (दो नमूना)।

(ब) दीर्घ प्रयोग--

(1) नेप्थाल रंगों द्वारा रंगाई।

(2) सूती कपड़ों को रंगना।

(3) ऊनी कपड़ों को रंगना।

(4) रेशमी कपड़ों को रंगना।

(5) धागों को रंगना सूती, ऊनी।

(6) नील लगाना।

(7) कलफ लगाना।

(8) चरक लगाना।

(9) सूखी धुलाई।

(10) गीली धुलाई--सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम कपड़े।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	प्रकाशक, बिहार बन्धी अकादमी, पटना, विश्वविद्यालय, प्रकाशन।
2	वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कार्य	श्री आनन्द वर्मा	रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर वितरक विश्वविद्यालय, प्रकाशन।
3	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	श्रीमती लोकेश्वरी शर्मा	स्वास्तिक प्रकाशन अस्पताल मार्ग, आगरा-3।
4	वस्त्र धुलाई विज्ञान	श्रीमती लोकेश्वरी शर्मा	यूनिवर्सल सेकर, हजरतगंज, लखनऊ।
5	दी केमिकल टेक्नोलाजी आफ टेक्सटाइल फाइबर्स	श्री आर0आर0 चक्रवती	केक्सटन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली--55।

(10) ट्रेड--परिधान रचना एवं सज्जा

सामान्य उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रूचि पैदा करना।

(5) छात्रों का कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक कार्यों की जानकारी देना।

विशिष्ट उद्देश्य--

(1) परिधान रचना एवं सज्जा ट्रेड के द्वारा बच्चों से सिलाई विषय से सम्बन्धित जागरूकता उत्पन्न करना।

(2) भविष्य में प्रचलित फैशन के अनुसार विभिन्न डिजाइनों के वस्त्रों के निर्माण के कौशल का विकास करना।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

[अ] अपने विषय से सम्बन्धित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण देना।

[ब] किसी रेडीमेड गारमेन्ट फैक्ट्री में वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में कार्य करना।

(ख) स्वरोजगार-

[अ] सिलाई का कार्य घर पर ही करके बचत करना।

[ब] बाजार में दुकानों से आर्डर लेकर वस्त्र तैयार करके आय प्राप्त करना।

[स] सिलाई शिक्षा से संबंधित स्कूल चलाना।

[द] विद्यालयों की यूनीफार्मों को तैयार करने का आर्डर लेना।

[य] सिलाई के उपकरणों की मरम्मत से संबंधित केन्द्र खोलना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं की जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-

(क) उद्यमिता बोध-उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

(क) व्यक्तिगत स्वच्छता एवं स्वास्थ्य-

आंख, पलक, कान, दांत, बालों तथा सम्पूर्ण शरीर की सफाई, घर तथा पास-पड़ोस की सफाई, सफाई का स्वास्थ्य पर प्रभाव।

(ख) प्रदूषण, प्रदूषण के प्रकार, कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय-

वायु प्रदूषण-कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय।

जल प्रदूषण-कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय।

ध्वनि प्रदूषण-कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय।

मृदा प्रदूषण-कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय।

(ग) भोजन के तत्वों का सामान्य ज्ञान-

प्रोटीन, कार्बोज, वसा, विटामिन, खनिज लवण, जल प्राप्ति के साधन तथा इनकी कमी से होने वाली हानियां।

(घ) आयु लिंग कार्य के अनुसार भोजन की आवश्यकता तथा उसकी कमी से हानियां।

इकाई-3-

(क) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के तन्तु तथा उनकी विशेषताएं-

सूती-धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव।

रेशमी-धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव।

ऊनी-धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव।

कृत्रिम तन्तु-धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव।

(ख) सिलाई करने से पूर्व की तैयारियां-

नाप लेना, नाप के अनुसार कपड़ा लेना, कपड़े की श्रिंक करना, कपड़े की रुख के अनुसार रखना, पैटर्न बनाना, कटिंग करना, प्रेस करना।

(ग) परिधान को आकर्षक बनाने में, लेसरिकिन, फ्रिल, बटन, पाइपिंग का महत्व।

प्रयोगात्मक

लघु उद्योग-

1-विभिन्न प्रकार सिलाई के टांके-कच्चा टांका, बखिया, तुरपन, पिको, काज, टांका।

2-कढ़ाई के टांके-लेजी-डेजी, रनिंग, स्टिच, स्टेम स्टिच, चैन स्टिच, क्रास स्टिच, काज स्टिच, शैडोवर्क साटन, स्टिच, पैच वर्क, शेड वर्क।

3-उपरोक्त कढ़ाई के टांकों से छः रूमाल बनाना।

4-रफू करना।

5-पैबेन्द लगाना।

6-क्लोट-काटना, सिलना।

7-विव-काटना, सिलना।

8-चड्डी-काटना, सिलना।

9-झबला-काटना, सिलना।

10-मशीन के पुर्जों को खोलना, सफाई करना तथा मशीन में तेल डालना।

दीर्घ उद्योग-

1-बेबी शमीज

2-पजामा एक मीटर कपड़े का

3-बेबी फ्राक

4-गर्ल्स फ्राक

5-पेटीकोट

6-हैंगिंग बैग

नोट-उपरोक्त वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलना तथा उनकी सज्जा करना तथा रूमाल, पेबन्द, रफ को बनाकर रिकार्ड फाइल में लगाना।

मौखिक प्रश्नोत्तर-लघु तथा दीर्घ प्रयोगों से संबंधित प्रश्नोत्तर।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
1	2	3	4
			रु0
1	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती चरन दासी, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	13.50
2	गृह विज्ञान का सामान्य ज्ञान	श्रीमती स्वराज्य लता सिंह, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	35.00
3	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती अनामिका सक्सेना, भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ	18.00
4	आधुनिक सिलाई एवं कढ़ाई विज्ञान	श्री एम0ए0 खान, पुस्तक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद	15.00
5	अनमोल सिलाई कला परिचय	श्री असगर अली, गर्ग प्रकाशन, इलाहाबाद	18.00
6	रैपिडेक्स टेलरिंग कोर्स	श्रीमती आशा रानी बोहरा	68.00

(11) ट्रेड-खाद्य संरक्षण

उद्देश्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

7-अधिक उपज से उगाने के बाद बचे हुये फल और सब्जियों का संरक्षण करना।

8-खाद्य संरक्षण द्वारा पौष्टिक भोजन की कमी को पूरा करना।

9-बिना मौसम में भी संरक्षित खाद्य पदार्थो को उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

1-खाद्य संरक्षण संबंधी इकाई में रोजगार मिल सकता है।

2-खाद्य संरक्षण में दक्षता अर्जित कर छात्र अपना निजी व्यवसाय चला सकता है।

3-अचार, मुरब्बा, सॉस आदि विभिन्न प्रकार के संरक्षित खाद्य पदार्थ तैयार कर डिब्बा बन्दी कर बाजार में आपूर्ति कर सकता है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-11-

(क) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

1-खाद्य-संरक्षण परिचय।

2-खाद्य-संरक्षण से लाभ।

3-खाद्य पदार्थ-प्रोटीन कार्बोहाइट्रेड्स, बसा, खनिज लवण, विटामिन का सामान्य परिचय एवं महत्व।

4-अम्लक्षार, लवण एवं पी0 एच0 का सामान्य ज्ञान।

5-ताप संवहन, शून्य तापक्रम, दवाब का सामान्य ज्ञान।

6-जल के प्रकार तथा क्लोरीनेशन।

7-छानना, वाष्पीकरण, संघनन, सामान्य परिचय।

इकाई-3-

1-खाद्य-पदार्थ को नष्ट करने वाले तत्व और उससे बचने का उपाय।

2-खमीर, फफूंद बैक्टीरिया की साधारण रचना एवं वृद्धि।

3-सफाई के विभिन्न उपाय-साबुन एवं डिटर्जेन्ट का उपयोग।

4-डिब्बाबन्दी खाद्य पदार्थों में होने वाली खराबी और उसकी पहचान।

5-खाद्य नियन्त्रण सरल परिचय।

6-थर्मामीटर, जलमीटर, रिफरेक्टोमीटर, सेलुनीमीटर, ब्रिक्स, हाइट्रोमीटर का सामान्य परिचय।

प्रयोगात्मक

(क) दीर्घ प्रयोग-

1-जैम बनाना

2-मुरब्बा बनाना

3-आचार बनाना

4-शरबत बनाना

5-प्युरी एवं टमाटर सास बनाना

6-मटर, गाजर, अमचुर सुखाने की विधियां

7-कृत्रिम सिरका

8-फलों के रस एवं गूदे का संरक्षण

9-दलिया, चिप्स, पापड़, बड़ी बनाना एवं संरक्षण

10-पनीर निर्माण

(ख) लघु प्रयोग-

1-रिफरेक्ट्रोमीटर का उपयोग

2-ब्रिक्स हाइड्रोमीटर का उपयोग

3-सूक्ष्मदर्शी यंत्र के विभिन्न भागों का परिचय

4-पी0 एच0 पेपर का महत्व एवं उपयोग

5-पेक्टिन परीक्षण

6-विभिन्न खाद्य पदार्थो की पहचान

7-आयसोसित साधारण प्रयोग

8-खाद्य संरक्षण में उपयोग होने वाले तापमापी का उपयोग, प्रेशर कुकर का ज्ञान।

संस्तुत पुस्तकें-

		रु0
1-फल एवं सब्जी संरक्षण	ले0 डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धाप्पा एवं गिरधारी लाल टण्डन	45.00
2-फल संरक्षण	एस0 एन0 भाटी	30.00
3-फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	बी0 एन0 अग्निहोत्री	15.00
4-फल संरक्षण विज्ञान	बी0 एन0 अग्निहोत्री	25.00
5-फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6-आहार एवं पोषण विज्ञान	विमला शर्मा	50.00

(12) ट्रेड एकाउन्टेन्सी एवं अंकेक्षण

उद्देश्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

6-वेतनभोगी रोजगार, सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, लिपिक, सहायक के रूप में छात्रों को तैयार करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतन भोगी रोजगार तथा सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक आदि के रूप में।

(ख) स्वरोजगार-जैसे छोटे स्तर के व्यापार के हिसाब का रख-रखाव करने के रूप में।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन–

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक–

इकाई–1–

(1) उद्यमिता बोध–उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार–लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई–2–

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकें, चेक, संबंधी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपटल तैयार करना।

इकाई–3–

(1) लागत लेखांकन–परिभाषा, महत्व तथा पद्धतियां।

(2) लागत के मूल तत्व सामग्री, श्रम एवं उपरिव्यय का सामान्य ज्ञान।

(3) लागत विवरण एवं निविदा तैयार करना।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग–

(1) नकद रसीद

(2) डेविट नोट एवं क्रेडिट नोट

(3) चेक, पे–इन–स्लिप

(4) टेलीग्राम, मनीआर्डर फार्म

(5) आर0 आर0 ट्रेजरी चालान फार्म

(6) कैलकुलेटर्स, रेडी रैक्नर्स

(7) डेंटिंग मशीन

(8) नम्बरिंग मशीन

(9) स्टेपलर्स, पंचिंग मशीन

(ब) बड़े प्रयोग–

(1) छात्रों को बाउचर प्रदान किये जायें एवं उन्हें तैयार कराया जाये।

(2) क्रय–पुस्तक तैयार करना।

(3) विक्रय-पुस्तक तैयार करना।

(4) बीजक एवं विक्रय-विवरण बनाना।

(5) खुदरा रोकड़ पुस्तक बनाना।

(6) रोकड़ पुस्तक तैयार करना।

(7) स्टाक रजिस्टर तैयार करना।

(8) पत्र प्राप्ति पुस्तक एवं पत्र प्रेषण पुस्तक तैयार करना।

सन्दर्भित पुस्तकें-

1-हाई स्कूल बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक-श्री विजय पाल सिंह
2-अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक-श्री जगन्नाथ वर्मा
3-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड	लेखक-श्री राम प्रकाश अवस्थी
4-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड	लेखक-श्री राम प्रकाश अवस्थी
5-लागत लेखांकन	लेखक-डा0 लक्ष्मण स्वरूप

(13) ट्रेड आशुलिपिक तथा टंकण

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्र में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतन भोगी रोजगार-वकील अथवा व्यापारी के यहां कार्य करना।

(ख) स्वरोजगार-अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवदेन पत्र एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण को उपलब्ध कराना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-(1) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना,

प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकें, चेक, संबंधी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपटल तैयार करना।

इकाई-3-अंतिम खातों को तैयार करना, साधारण समायोजनाओं सहित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग-

(1) शब्द चिन्ह।

(2) जुट शब्द।

(3) रेखाक्षरों के स्थल।

(4) चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाक्षरों का ज्ञान।

(5) टाइप करने की प्रणालियां।

(6) मशीन में कागज लगाने, ठीक करने व कागज निकालने का ढंग।

(7) हाशिया निश्चित करना।

(8) मशीन पर बैठने की स्थिति।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) श्याम पट्ट पर लिखित लेखों को पढ़ना।

(2) पत्रों का आशुलिपि में लेखन तथा हिन्दी रूपान्तर।

(3) आशुलिपि से दीर्घ लिपि में लिखना तथा टाइप करना।

(4) आशुलिपि नोटों अनुवादित होने के बाद उन पर चिन्ह लगाना।

(5) कुंजी पटल का ज्ञान।

(6) पोस्ट कार्डों पर पतों का टंकण।

(7) टाइप मशीन से प्रतिलिपि लेना।

(8) प्रार्थना-पत्र अथवा पत्रों को टाइप करना।

सन्दर्भ पुस्तकें-

1-अनुपम टाइपिंग मास्टर-श्रीमती उषा गुप्ता।

2-उपकार व्यावहारिक टंकण कला-श्री ओंकार नाथ वर्मा।

3-हिन्दी संकेत लिपि (ऋषि प्रणाली)-श्री ऋषिलाल अग्रवाल।

4-पिटमैन अंग्रजी संकेत लिपि-पिट्समैन।

5-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

6-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

7-अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली-श्री जगन्नाथ वर्मा।

8-आशुलिपि एवं टंकण-श्री गोपाल दत्त विष्ट।

(14) ट्रेड-बैंकिंग

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

(7) व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना।

(8) बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रारम्भिक ज्ञान की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी

1-विद्यालयों में संचायिका का लेखा रखने की जानकारी देना।

2-अपने व्यवसाय को बैंकिंग कार्य प्रणाली की जानकारी प्राप्त करना।

3-सहायक रोकड़िया।

4-गोदाम सहायक।

(ख) स्वरोजगार-

1-लघु व्यावसायिक संस्थानों का हिसाब तैयार करना।

2-अभिकर्त्ता के रूप में कार्य करना।

3-डाकघर के एजेन्ट के रूप में कार्य करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-

(1) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकें, चेक, संबंधी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपटल तैयार करना।

इकाई-3-

व्यावसायिक संगठन, अर्थ एवं प्रारूप, एकांकी व्यवसाय, साझेदारी एवं संयुक्त स्कैच कम्पनी, परिभाषा, लक्षण एवं भेद।

क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग-

1-चेक लिखना, निर्गम करना एवं निर्गमन रजिस्टर में लेखा करना।

2-चेकों का पृष्ठांकन एवं रेखांकन करना, चेकों की वैधता की जांच करना।

3-पे इन स्लिप तथा आहरण पत्र का प्रयोग।

4-चेक लिखने वाली मशीन का प्रयोग।

5-रेडी रेकनर का प्रयोग।

6-कैलकुलेटर का प्रयोग।

7-डेंटिंग मशीन एवं नम्बरिंग मशीन का प्रयोग।

8-पंचिंग मशीन एवं स्टेप्लर का प्रयोग।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

1-बैंक में खाता खोलने के विभिन्न प्रपत्रों को भरना।

2-बैंक लेजर खातों एवं पास बुक में लेखा करना।

3-ब्याज की गणना एवं उसका लेखा करना।

4-बैंक ड्राफ्ट, एम0टी0टी0 एवं पे आर्डर तैयार करना।

5-ऋण संबंधी आवश्यक प्रपत्रों को भरना।

6-साप्ताहिक विवरण, रिटर्न तैयार करना एवं प्रधान कार्यालयों को प्रेषित करना।

7-बीजक एवं विक्रय विवरण तैयार करना।

8-रेजकारी छांटने वाली मशीन का प्रयोग।

सन्दर्भ पुस्तकें-

1-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

2-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

3-हाई स्कूल मुद्रा बैंकिंग एवं अर्थशास्त्र-श्री एम0पी0 गुप्ता।

4-अधिकोषण तत्व-श्री डी0डी0 निगम।

(15) ट्रेड-टंकण

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतन भोगी रोजगार-वकील अथवा व्यापारी के यहां टाइप करना।

(ख) स्वरोजगार-अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवदेन-पत्र एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण को उपलब्ध कराना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-

(1) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकें, चेक, संबंधी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपटल तैयार करना।

इकाई-3-

अंतिम खातों को तैयार करना, साधारण समायोजनाओं सहित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग-

(1) टंकण कल पर बैठने की स्थिति।

(2) टंकण करने की प्रणालियां।

(3) टंकण मशीन में कागज लगाने एवं बाहर निकालने की विधि।

(4) हाशिया निश्चित करना।

(5) ऐसे संकेतों का टंकण, जो कुंजी पटल में नहीं दिये गये हैं।

(6) नया पैराग्राफ बनाना।

(7) स्पेस बार का प्रयोग।

(8) ''सिफ्ट की'' एवं ''लिफ्ट की लॉक'' का प्रयोग।

(9) छोटे पत्रों व लघु अवतरणों का टंकण।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) कुंजी पटल का ज्ञान।

(2) प्रार्थना-पत्र एवं पत्रों का टंकण करना।

(3) पोस्टकार्ड पर पते टाइप करना।

(4) टाइप मशीन से प्रतियां लेना।

(5) प्रूफ रीडिंग में प्रयुक्त होने वाले चिन्ह।

(6) रिबन का बदलना।

(7) कठिन शब्दों का टंकण।

(8) टाइप मशीन की सफाई एवं तेल देना।

(9) बड़े अवतरणों एवं साधारण सारिणीयों का टंकण करना।

सन्दर्भ पुस्तकें

(1) अनुपम टाइपिंग मास्टर — श्रीमती उषा गुप्ता।

(2) उपकार व्यावहारिक टंकण कला — श्री ओंकार नाथ वर्मा।

(3) पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड — श्री राम प्रकाश अवस्थी।

(4) पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक) — श्री राम प्रकाश अवस्थी।

(5) अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली — श्री जगन्नाथ वर्मा।

(16) ट्रेड--फल संरक्षण

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

(7) फल उत्पादन बढ़ाना तथा खाने के बाद बचे हुए फल और सब्जियों का संरक्षण करना।

(8) फलोत्पादक औद्योगीकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना।

(9) बिना मौसम में भी संरक्षित फल पदार्थों को उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

(1) फल संरक्षण संबंधी इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना।

(2) फल संरक्षण उद्योग में स्वरोजगार अथवा निजी व्यवसाय चलाना या डिब्बा बन्दी कर बाजार में आपूर्ति करना।

(3) संरक्षित पदार्थों की दुकान या गोदाम खोल सकता है, जिसमें संरक्षित खाद्य पदार्थों का सही ढंग से रख-रखाव कर उन्हें नष्ट होने से बचाव कर रोजगार चला सकता है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-

(1) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

फल संरक्षण विषय परिचय, परिभाषा, इसकी उपयोगिता एवं भविष्य।

फल संरक्षण में प्रयोग किये जाने वाली तकनीकी अंग्रेजी शब्द और हिन्दी में उनका विवरण विभिन्न फल एवं सब्जियों से निर्मित, संरक्षित पदार्थ फल संरक्षण कार्य में प्रयोग करने हेतु बर्तन मशीनरी एवं उपकरण।

इकाई-3-

फल एवं सब्जियों के खराब होने के कारण फफूंदी, मोल्ड, खमीर यीस्ट, बैक्टीरिया एवं एन्जाइन्स की सूक्ष्म परिचय, प्रजनन, इनके प्रसार के लिये उपयुक्त वातावरण और निष्क्रिय करने का उपाय। फल सब्जियों के संरक्षण के सिद्धान्त, स्थायी एवं अस्थायी संरक्षण।

प्रमुख संरक्षणों-सल्फर डाई आक्साइड (पोटोशियम मेटा बाई सल्फाइट अथवा के0एम0एस0), सोडियम मेटा बाई सल्फाइट और वेन्जोइक एसिड के योगिक (सोडियम बेन्जोएट) का परिचय तथा फल के रसों के संरक्षण में उपयोग विधि एवं इनकी सीमाएं।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग-

(1) विक्स हाइट्रोमीटर से लिनोमीटर, हन्ड से केरीमीटर (रिफरेक्टोमीटर), थर्मामीटर का परिचय एवं उपयोग विधि।

(2) तरल पदार्थों को लिटमस पेपर की सहायता से पी0एच0 ज्ञात करना।

(3) सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) से परिचय, उसके विभिन्न पार्ट्स स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट।

(4) स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट।

(5) सोलिंग के लिए प्रयोग की जाने वाली मशीनें।

(6) कान्टेनर्स (बोतल, जार, अमृतवान, कारव्यास) को धोना और जीवाणु रहित (स्टरलाइज) करना।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) जैम-विभिन्न ऋतुओं में पैदा होने वाले फलों से जैम बनाना।

(2) मुरब्बा बनाना-आंवला, बेल, पेठा, करौंदा, पपीता, गाजर।

(3) अदरक, पेठा, नींबू, प्रजाति के फलों के छिलकों से कैण्डी बनाना।

(4) टमाटर, कैचप, सॉस, सूप बनाना।

(5) फलों से चटनी बनाना।

(6) विभिन्न ऋतुओं में उपलब्ध फल एवं सब्जियों (आम, नींबू, कटहल, अदरक, करौंदा, प्याज, खीरा आदि) से अचार बनाना।

(7) कृत्रिम सिरका बनाना।

(8) कृत्रिम शरबत (खस, गुलाब, केवड़ा आदि) बनाना।

(9) स्क्वेस बनाना।

(10) अमरूद से चीज टाफी बनाना।

संस्तुत पुस्तकें-

			रु0
1-फल एवं सब्जी संरक्षण	. .	डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धाप्पा	45.00
2-फल संरक्षण	. .	एस0 एम0 भाटी	30.00
3-फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	. .	बी0 एन0 अग्निहोत्री	15.00
4-फल संरक्षण विज्ञान	. .	बी0 एन0 अग्निहोत्री	25.00
5-फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	. .	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6-फल तथा तरकारी परिरक्षण प्रौद्योगिकी	. .	एस0 सदाशिव नायर एवं डा0 हरीश चन्द्र शर्मा	100.00
7-फ्रूट एवं वेजीटेबिल	. .	डा0 संजीव कुमार	150.00

(17) ट्रेड--फसल सुरक्षा

उद्देश्य-

(1) फसल सुरक्षा व्यवसाय की सामान्य जानकारी कराना।

(2) फसल सुरक्षा सेवा अपनाकर फसलों को होने वाली हानि से इन्हें बचाना।

(3) फसल सुरक्षा सेवा द्वारा प्रतिवर्ष हजारों टन खाद्यान्न को नष्ट होने से बचाना।

(4) फसल सुरक्षा व्यवसाय में दक्षता प्राप्त कर इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाना।

(5) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा आत्म-निर्भर बनाना।

(6) कुशल नागरिक निर्माण में योगदान देना।

(7) फसल सुरक्षा सेवा सम्बन्धी यन्त्रों एवं उपकरणों आदि का समुचित ज्ञान प्राप्त कर अपने निजी जीवन में उपयोग करना।

(8) फसल सुरक्षा सेवा व्यवस्था का विद्यालय में सफल प्रदर्शन करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार-

(1) सरकारी, सरकारी विभागों में फसल सुरक्षा सहायक की कार्य करने का अवसर प्राप्त करना।

(2) फसल सुरक्षा का उत्पादन तथा वितरण इकाइयों में रोजगार प्राप्त करना।

(ख) स्वरोजगार-

(1) फसल सुरक्षा सम्बन्धी रसायानों तथा यंत्रों-उपकरणों की आपूर्ति करने सम्बन्धी व्यवसाय को अपनाना।

(2) फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों तथा रसायनों की दुकान चलाना।

(3) फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों को किराये पर चलाना।

(4) सहकारी समितियां बनाकर फसल सुरक्षा के क्षेत्र में लघु उद्योग-धन्धा चलाना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1-

(1) उद्यमिता बोध-उद्यमों एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2-

(1) फसल सुरक्षा का सामान्य ज्ञान।

(2) फसल सुरक्षा की विभिन्न विधियों की जानकारी।

(3) पादप रोगों से होने वाली हानियां, उनके लक्षण, कारण एवं प्रकृति का ज्ञान।

(4) फसल सुरक्षा से सम्बन्धित विभिन्न संगठनों के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी।

(5) फसल सुरक्षा की समस्यायें एवं उनके समाधान का ज्ञान।

इकाई-3-

(1) धान्य फसलों में धान, गेंहू, गन्ना, सरसों, अरहर, ज्वार, मक्का, कपास, मूंग, उरद तथा मटर। सब्जियों में आलू, टमाटर, बैगन, भिण्डी, गोभी तथा फलों में आम, अमरूद, पपीता, जामुन, सेब के रोगों एवं कीटों का अध्ययन और उनके रोक-थाम के उपाय की सामान्य जानकारी।

(2) परजीवी पौधों की जानकारी तथा उनसे होने वाली क्षति एवं उनसे बचाव के उपाय का ज्ञान।

(3) वायरस द्वारा उत्पन्न प्रमुख रोगों की सामान्य जानकारी। फसल सुरक्षा के विभिन्न उपाय अपनाने का ज्ञान।

(4) फसल के प्रमुख खर-पतवार, उनका वर्गीकरण उनसे हानियां एवं रोकथाम के उपाय की जानकारी।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग-

(1) कीट संकलन एवं उनके जीवन-चक्र का रेखांकरन करना।

(2) इमलसन मिश्रण बनाना।

(3) पेस्टन तैयार करना तथा उनके प्रयोग विधि का प्रदर्शन।

(4) रसायन का घोल तैयार करना, उनका प्रयोग तथा उनमें अपनायी जाने वाली सावधानियों की क्रियात्मक समझ।

(5) फसलों पर पाउडर का छिड़काव करना।

(6) भण्डार गृह में रसायनों का प्रयोग करना।

(7) उपकरणों को खोलने एवं बाधनें की समझ।

(8) रसायन एवं उपकरण के प्राप्ति केन्द्रों की जानकारी एवं उन स्थानों का पर्यवेक्षण तथा उसका विवरण तैयार करना।

(ख) लघु प्रयोग-

(1) विभिन्न खर-पतवारों की पहचान।

(2) विभिन्न पादप रोगों की पहचान।

(3) विभिन्न पादप कीटों की पहचान।

(4) फसल सुरक्षा उपकरणों की पहचान।

(5) कवकनाशी रसायनों की पहचान।

(6) कीटनाशी रसायनों की पहचान।

(7) खर-पतवारनाशी रसायनों की पहचान।

(8) भण्डारण में प्रयोग होने वाले रसायनों की पहचान।

(9) भण्डारण के कीटों की पहचान।

(10) भण्डारण में हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं की पहचान करना।

संस्तुत पुस्तकें-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक का नाम एवं पता	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	फसल सुरक्षा	डा0 धर्मराज सिंह	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड, कालोनी, इलाहाबाद।	16.00
2	सब्जी की खेती	श्री दर्शानानन्द	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड, कालोनी, इलाहाबाद।	16.00
3	फलों की खेती	डा0 राम कृपाल पाठक	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड, कालोनी, इलाहाबाद।	25.00
4	नया कृषि कीट विज्ञान	श्री बी0ए0 डेविड एवं श्री एम0एच0 डेविड	सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद	12.00
5	पादप रोग नियंत्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	12.00
6	खर पतवार नियंत्रण	प्रो0 ओम प्रकाश	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	
7	फसलों के रोगों की रोकथाम	डा0 संगम लाल	प्रकाशन निदेशालय, गो0 व0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	20.00
8	फसलों के रोग	डा0 मुखोपाध्याय एवं डा0 सिंह	प्रकाशन निदेशालय, गो0 व0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	50.00
9	फसलों के हानिकारक कीट	डा0 बिदा प्रसाद खरे	प्रकाशन निदेशालय, गो0 व0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	22.00
10	खर पतवार नियंत्रण	डा0 विष्णु मोहन मान	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	25.00
11	पादप रक्षा कीट नियंत्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	22.50
12	प्लाण्ट प्रोटेक्शन	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	30.00
13	सचित्र कृषि विज्ञान	श्री श्याम प्रसाद शर्मा	भारत भारती प्रकाशन, मेरठ	20.00
14	कृषि विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायण लाल, इलाहाबाद	20.00

(18) ट्रेड--मुद्रण

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार
(ख) स्वरोजगार

} सरकारी तथा निजी मुद्रण उद्यमों में कुशल कामगार के पद का कार्य कर सकते हैं-उदाहरण के लिए-कम्पोजीटर, मुद्रण मशीन चालक, प्रूफ रीडर, बुक बाइण्डर, छोटी इकाई के रूप में निजी उद्योग भी लगा सकते हैं।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

इकाई-1

सैद्धान्तिक-

(क) उद्यमिता बोध-

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2

संयोजन विधियां (कम्पोजिंग प्रोसेसेज)-

(अ) संयोजन (कम्पोजिंग) का अर्थ, हाथ द्वारा संयोजन, मोनो मशीन द्वारा संयोजन, लाइनों मशीन द्वारा संयोजन, फोटो सेटर द्वारा संयोजन और कम्प्यूटर या डेस्कटाप पब्लिशिंग (डी0 टी0 पी0) मशीन द्वारा संयोजन।

(ब) प्रूफ सम्बन्धित-

प्रूफ का अर्थ, प्रूफ के प्रकार, प्रूफ पढ़ने की विधि, प्रूफ पढ़ने के आई0 एस0 आई0 (भारतीय मानक) चिन्ह।

इकाई-3

(अ) कैमरा तथा ब्लाक बनाना-

कैमरा का अर्थ, विभिन्न प्रकार से कैमरा वर्टिकल (क्षैतिजकार, डार्करूम तथा इलेक्ट्रानिक) निगेटिव तथा पाजीटिव बनाना, ब्लाक का अर्थ एवं प्रयोग, लाइन ब्लाक, हाफटोन ब्लाक, ब्लाक बनाने हेतु आवश्यक सामग्रियां।

(ब) पृष्ठ संयोजन-

पृष्ठ संयोजन (इम्पोजिंग) का अर्थ, एक पृष्ठ, दो पृष्ठ, चार पृष्ठ तथा आठ पृष्ठों तक की योजना।

प्रयोगात्मक

लघु प्रयोगात्मक अभ्यास-

1-अक्षर संयोजन विभाग की साज-सज्जा तथा उपकरणों का परिचय।

2-मुद्रणालय में सुरक्षा (सेफ्टी) उपाय।

3-मुद्रण तथा बाइडिंग विभाग की मशीनों और उपकरणों का परिचय।

4-टाइप केस ले आउट याद करना एवं कम्पोजिंग स्टिक में मांप बांधना।

5-प्रूफ उठाना तथा टाइप मैटर में लगी स्याही की सफाई करना।

6-मुद्रणालय की सभी मशीनों तथा उपकरणों में स्नेहन (लुब्रीकेटिंग) तेल या ग्रीस देना और सफाई करना।

7-मुद्रित तथा अमुद्रित कागज को बराबर करना और गिनती करना।

8-पुरानी पुस्तकों की मरम्मत करना।

दीर्घ प्रयोगात्मक अभ्यास-

1-लेअर हेड तथा विजिटिंग कार्ड आदि छोटे जाब कार्यों की कम्पोजिंग करना तथा प्रूफ उठाकर उसे पढ़ना और संशोधन करना।

2-विभिन्न मशीनों के लिए एक या दो पृष्ठों का फर्मा कसना।

3-मुद्रण मशीन की तैयारी, मुद्रण मशीन पर फर्मा चढ़ाना, फर्मा की तैयारी तथा लगातार मुद्रण कार्य करना।

4-मुद्रण मशीन पर एक या दो रंग की छपाई करने का अभ्यास।

5-स्थानीय किसी एक या अधिक मुद्रणालयों में छात्रों को ले जाकर निरीक्षण कराना और छात्रों द्वारा एक अध्ययन रिपोर्ट तैयार करना जो 390 शब्दों से अधिक न हो।

6-बाइडिंग करने के लिए मुद्रित अथवा अमुद्रित कागजों को मोड़ना, मिसिल उठाना, सिलाई करना।

7-पुस्तकों पर कागज के कवर तथा दफ्ती के कवर लगाने का अभ्यास।

8-सिल्क स्कीन मुद्रण की तैयारी तथा मुद्रण का अभ्यास करना।

पुस्तकों की सूची

हिन्दी पुस्तकें-

1-अक्षर मुद्रण शास्त्र	श्री चन्द्रशेखर मिश्र
2-संयोजन शास्त्र	,, ,,
3-आफसेट मुद्रण शास्त्र	,, ,,
4-मुद्रण परिस्करण, भाग-1	श्री के0 सी0 राजपूत
5-मुद्रण परिस्करण, भाग-2	,, ,,
6-आधुनिक ग्रन्थ शिल्प	श्री चन्द्रशेखर मिश्र
7-मुद्रण स्याहियां तथा कागज	,, ,,
8-मुद्रण प्रौद्योगिकी सामग्री	श्री एम0 एन0 लिड़बिड़े
9-ब्लाक मेकर्स गाइड	श्री एस0 अग्रवाल

(19) ट्रेड--रेडियो एवं टेलीविजन

उद्देश्य-

(1) वर्तमान समय में रेडियो एवं टेलीविजन की बढ़ती हुई मांग तथा इस विषय की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों की मांग को देखते हुए यह आवश्यक है कि हाईस्कूल स्तर से बच्चों में इस विषय में रुचि उत्पन्न करना।

(2) 10+2 में रेडियों एवं टी0 वी0 पहले से चल रहा है। इसके लिये हाई स्कूल स्तर से बच्चों को तैयार करना तथा इण्टरमीडिएट में एडमीशन के समय वरीयता।

(3) छात्र शहर तथा गांव में व्यवसाय का उचित अवसर प्राप्त कर सकते है।

रोजगार के अवसर-

1-रेडियो एवं टी0 वी0 इण्डस्ट्री पी0 सी0 बी0 पर एसेम्बिलिंग का कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

2-विभिन्न टी0 वी0 सर्विस सेन्टर में टी0 वी0 टेक्नीशियन का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

3-किसी बड़ी इकाई के साथ लघु उद्योग स्थापित करना।

4-स्वयं की दुकान प्रारम्भ कर सकना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथ 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1

1-उद्यमिता बोध-उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

2-लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2

तरंग एवं गति तरंग तथा उनके प्रकार, प्रणामी तरंगों का सूत्र, कालान्तर कला, आवृति, तरंग दैर्ध्य तथा उनमें सम्बन्ध।

इकाई-3

विद्युत् क्षेत्र व विभव, कूलम का नियम, विद्युत् चालन व स्वतन्त्र इलेक्ट्रान, ओम के नियम चालकों पर ताप का प्रभाव, ओमी व अरा ओमी परिपथ, फैराडे के नियम, विद्युत चुम्बक। विद्युत चुम्बक चुम्बकत्व का परमाणवी माडल।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु उद्योग-

(1) कलर कोड की सहायता से प्रतिरोधों का मान पढ़ना तथा प्रतिरोधों की वाटेज को जानना।

(2) विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधों को पहचाना, सामानान्तर तथा श्रेणी क्रम में जोड़ना तथा उनको मान ज्ञात करना।

(3) विभिन्न प्रकार के धारित्रों को पहचानना तथा श्रेणी व समानान्तर क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना।

(4) विभिन्न प्रकार के डायोडों तथा ट्रांजिस्टरों को पहचानना।

(5) मल्टीमीटर की सहायता से वोल्टेज, धारा व प्रतिरोध मापना।

(6) मल्टीमीटर की सहायता से डायोड तथा ट्रांजिस्टरों का परीक्षण करना।

(7) इलेक्ट्रानिक्स में प्रयोग होने वाले विभिन्न यन्त्रों की जानकारी।

(8) पी0 सी0 वी0 पर सोल्डर करने की विधि तथा सावधानियां।

दीर्घ प्रयोग-

(1) साधारण प्रकार का बैटरी एंलीमिनेटर निर्माण (असम्बल) करना।

(2) विभिन्न निर्गत बोल्टेजों के लिये बैटरी एलीमिनेटर का निर्माण करना।

(3) स्थिर वोल्टेज के लिये बैटरी एलीमिनेटर का निर्माण करना।

(4) ट्रांजिस्टरों की सहायता से प्रवधक (एम्पलीफायर) का निर्माण करना।

(5) ट्रांजिस्टरों की सहायता से ध्वनि परिपथ (म्युजिकल सर्किट) का निर्माण करना।

(6) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के विभिन्न भागों का वोल्टेज ज्ञात करना।

(7) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामान्य दोषों को ज्ञात करना तथा उनका निवारण करना।

(8) टेलीविजन के विभिन्न भागों के वोल्टेज ज्ञात करना।

संस्तुत पुस्तकें-

1-बेसिक इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग	लेखक-पी0एस0 जाखड़ तथा सत्या जाखड़
2-इलेक्ट्रानिक थ्रू प्रैक्टिकल्स	,, पी0 एस0 जाखड़
3-प्रारम्भिक इलेक्ट्रानिकी	,, कुमार एवं त्यागी
4-इलेक्ट्रानिक्स	,, महेन्द्र भारद्वाज
5-टेलीविजन	,, जोन एण्ड राबर्ट
6-बेसिक शाप प्रैक्टिकल इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग	,, अनवानी हन्श

(20) ट्रेड--बुनाई तकनीक

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

विशिष्ट उद्देश्य-

1-विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइनों को बनाकर हथकरघा उद्योग को उपलब्ध करना।

2-विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइन के द्वारा फिगर डिजाइन बनाना।

3-इस उद्योग में विद्यार्थी की दफ्ती के ऊपर रेशे द्वारा फीगर डिजाइन तैयार करना/सिखाना।

4-बुनाई तकनीक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बुनाई से सम्बन्धित लघु उद्योग स्थापित कर सकता है।

रोजगार के अवसर-

बुनाई के तकनीक ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं-

(क) वेतनभोगी रोजगार-1-खादी ग्रामोद्योग, यू0पी0 हैण्डलूम में रोजगार के अवसर।

2-छोटे कारखानों में बुनाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में।

3-बुनाई अध्यापकों के लिये प्रशिक्षित शिक्षक की उपलब्धि।

(1) स्वरोजगार-(1) छोटे बुनाई उद्योग स्थापित करना।

(2) सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त करके उद्योग चलाना।

(3) न्यूनतम पूंजी में उद्योग का कार्य प्रारम्भ करके जीवनयापन करना।

(4) अपने साथ में पूरे परिवार को साथ लगाकर कार्य करके जीवनयापन करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-

इकाई-1

(क) उद्यमिता बोध-उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं। उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार-लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2

(क) कपास की कृषि, उपयुक्त भूमि एवं प्रकार।

(ख) औटाई के प्रकार, धुनाई, धुनकी के भाग एवं कार्य।

(ग) पूनी बनाना एवं सूत कातना।

(घ) तकली, चर्खी के प्रकार एवं भाग।

(ड) विभिन्न प्रकार के तन्तु एवं रेशा।

(कपास, ऊन, रेशम, खनिज, कृत्रिम तन्तु)

इकाई-3

(क) सूत से कपड़ा बनाने तक की समस्त क्रियाएं।

(ख) लच्छी सुलझाना, बाबिन भरना, सटर में बाबिन लगाना, सॉचे से निकालना, ड्रम मशीन पर चढ़ाना, बाने के बेलन पर लपेटना, होल्ड भरना, कंघी में भरना, बुनाई करना।

(ग) करघे या लूम का परिचय, हत्थे के भाग एवं कार्य।

प्रयोगात्मक

लघु उद्योग-

1-सूत की लच्छियों को सुलझाना।

2-चरखी के ऊपर सूत को चढ़ाकर चरखे की सहायता से तागे की बाबिन भरना।

3-भरी हुई बाबिनों को टटर में सजाना।

4-ताने के तारों की डिजाइन के अनुसार वय में भरना और कंघी में भरना।

5-ताने एवं बाने की बाबिन भरना।

6-लीज राड को ताने में लगाना।

7-शटल में तागे एवं बाबिन लगाना।

8-चरखे को चलाना।

9-तकली से सूत कातना।

10-सूत की लच्छियों को अंटी पर चढ़ाना।

दीर्घ प्रयोग-

1-टटर से तान के तागे निकालना।

2-क्रम से बाबिनों को लगाना।

3-हैक या (बिनिया) से तागे निकालना।

4-ड्रम मशीन पर ताने जुक्ट्री बांधना।

5-बाने के बेलन में ताने के तागे लपेटना।

6-बाने के बेलन को करघे पर फिट करना।

7-डिजाइन के अनुसार ड्राफ्टिंग करना।

8-आई से कंघी में पिराना या तागे निकालना।

9-ताने के तागों को जुट्टी बांधना।

10-करघें पर बुनाई करना।

पुस्तकों की सूची

हिन्दी पुस्तकें-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी	55.00
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	55.00
3	बुनाई पुस्तक	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	नवीन पुस्तक भंडार, दारागंज, इलाहाबाद	8.00
4	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	श्री दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली	75.00
5	भारतीय कशीदाकारी	श्रीमती शिन्दे एवं कु0 पंडित	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	27.00

(21) ट्रेड--रिटेल ट्रेडिंग (खुदरा व्यापार)

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक 50 अंक

इकाई-1 **-10 अंक**

प्रस्तावना-1-खुदरा व्यापार क्या है ?

2-अर्थ एवं परिभाषा

3-गुण एवं विशेषताएं

4-खुदरा व्यापार के आवश्यक तत्व

5-खुदरा व्यापार का महत्व

इकाई-2 **-10 अंक**

1-स्थानीय स्तर पर उत्पादों का प्रबन्धन

I--A-संगठित क्षेत्र

B-असंगठित क्षेत्र

II--A-छोटे पैमाने पर खुदरा व्यापार

B-बड़े पैमाने पर खुदरा व्यापार

2-स्थानीय स्तर पर खुदरा/फुटकर व्यापार के अन्य उपाय।

इकाई-3 **-10 अंक**

1-खुदरा/ फुटकर व्यापारी के कार्य

2-खुदरा या फुटकर व्यापारी की सेवाएं

उत्पादक के प्रति

उपभोक्ता या ग्राहक के प्रति।

समाज के प्रति।

इकाई-4 **-10 अंक**

1-खुदरा व्यापार में व्यापारी की सफलता के उपाय।

A-उपयुक्त स्थिति

B-विक्रय कला

C-अनुभव

D-सजावट

E-अन्य उपाय

2-बुनियादी स्वच्छता और सुरक्षा अभ्यास।

इकाई-5 **-10 अंक**

-विभिन्न स्टोर/दुकान

-श्रृंखलाबद्ध दुकाने

-बिग बाजार

-सुपर बाजार इत्यादि।

प्रयोगात्मक- **-50 अंक**

-विद्यालय स्तर पर खुदरा व्यापार का प्रशिक्षण (क्रय-विक्रय के सन्दर्भ)

-खुदरा व्यापार का व्यावहारिक प्रशिक्षण (संगठित क्षेत्र के इकाई द्वारा)

-खुदरा व्यापार के संदर्भ में स्थानीय स्तर पर सर्वेक्षण

-क्रय-विक्रय

-अन्य व्यावहारिक अनुभव

-खुदरा व्यापार के सम्बन्ध में विद्यालय स्तर पर विचार गोष्ठी आयोजित करना।

-खुदरा व्यापार के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने के सम्बन्ध में ज्ञान।

(22) ट्रेड--सुरक्षा (Security)

उद्देश्य-

(1) राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अस्मिता की रक्षा का भाव उत्पन्न होना।

(2) सुरक्षा के महत्व एवं आवश्यकता को समझना।

(3) छात्रों में उद्यमिता के गुणों का विकास करना।

(4) आकस्मिकता एवं खतरों से निपटने की योग्यता का विकास करना।

(5) प्राथमिक चिकित्सा की आवश्यकता को समझते हुए सम्बन्धित सामान्य जानकारी होना।

(6) सुरक्षित वातावरण बनाये रखने में प्रौद्योगिकी के महत्व को समझना।

(7) सुरक्षा हेतु सभी नागरिकों को कर्तव्य एवं उत्तर दायित्व का बोध कराना।

(8) संवाद दक्षता एवं व्यक्तित्व का विकास करना।

रोजगार के अवसर-

1-पाठ्यक्रम में प्रवीणता प्राप्त करने के पश्चात् सम्बन्धित छात्र एवं छात्रायें भविष्य में देश की सुरक्षा बलों से सम्बन्धित विभिन्न सेवाओं में सैनिक एवं अधिकारियों के रूप में अपनी समझ के आधार पर पर्याप्त योगदान दे सकते है।

2-सुरक्षा से सम्बन्धित विभिन्न संस्थाओं में सुरक्षा कर्मी के रूप में रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक 50

इकाई-1 सुरक्षा के मूलाधार **-12 अंक**

-सुरक्षा की आवधारणा, अर्थ एवं परिभाषाएं

-सुरक्षा का उद्देश्य

-सुरक्षा के विभिन्न तत्व, आन्तरिक एवं वाह्य

-सुरक्षा के प्रकार-व्यापक सुरक्षा, समान सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, अल्पकालिक एवं दीर्घ कालिक सुरक्षा, आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा, सैनिक सुरक्षा, आर्थिक एवं औद्योगिक सुरक्षा इत्यादि।

-सुरक्षा से सम्बन्धित चुनौतियां एवं समाधान

इकाई-2 स्वास्थ्य सुरक्षा **-12 अंक**

-स्वास्थ्य सुरक्षा के घटक-व्यायाम, सक्षमता, समन्वय एवं धैर्य, चिकित्सालय, दवाएं एवं प्रशिक्षित चिकित्सक।

-शारीरिक स्वस्थता का महत्व एवं भूमिका।

-व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं व्यक्तिगत विकास।

-स्वास्थ्य सुरक्षा से सम्बन्धित अधः संरचना एवं विधिक पक्ष।

इकाई-3 आपदा प्रबन्धन एवं सुरक्षा **-13 अंक**

-आपदा प्रबन्धन-निहितार्थ

-प्राकृतिक एवं मानवीय आपदाएं-कारण एवं प्रभाव।

-आपदा एवं आपातकालीन प्रबन्धन।

-आपदा प्रबन्धन के विभिन्न सोपान।

-आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित विभिन्न संस्थाएं।

-नागरिक सुरक्षा संगठन-अग्नि शमन सेवा, बचाव सेवा एवं प्राथमिक चिकित्सा सेवा।

इकाई-4 सुरक्षा एवं प्राथमिक चिकित्सा **-13 अंक**

-प्राथमिक चिकित्सा के आधारभूत सिद्धान्त।

-प्राथमिक चिकित्सा सम्बन्धी उपकरण एवं सुविधाएं।

-प्राथमिक चिकित्सा के सामान्य नियम।

-स्वास्थ्य आपात एवं प्राथमिक चिकित्सा।

-स्वास्थ्य आकस्मिकता का अर्थ एवं कारण ।

-शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य।

-सार्वजनिक स्थल, कारखानों तथा संगठनों में कार्यरत सुरक्षा सेवकों के स्वास्थ्य एवं कार्य क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक।

-बुखार, लू, अस्थमा, पीठ दर्द, घाव, रूधिरस्राव, जलना, सॉप, कुत्ते का काटना, कीट डंक, श्वसन एवं परिसंचरण से सम्बन्धित समस्याएं आदि बीमारियों में प्राथमिक चिकित्सा।

प्रयोगात्मक **पूर्णांक 50**

1-व्यायाम का अभ्यास-विभिन्न प्रकार के शारीरिक ड्रिल एवं योग।

2-नागरिक सुरक्षा-प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन।

3-प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाओं को सूचीबद्ध करना।

4-आकस्मिकता के समय प्रयुक्त होने वाले टेलीफोन नम्बरों को सूचीबद्ध करना।

5-आपदा से प्रभावी रूप से निपटने के लिए एक काल्पनिक आपदा योजना तैयार करना।

6-सिक्योरिटी एलार्म का प्रयोग।

7-फायर स्टेशन का भ्रमण कर अग्निशमन यंत्र की कार्यविधि का अध्ययन।

8-एक औद्योगिक संस्थान/कार्यालय का भ्रमण आयोजित कर आकस्मिकता/खतरों हेतु संस्था द्वारा सुरक्षा के उपायों एवं लगाये गये उपकरणों को सूचीबद्ध करना।

9-ओ0 आर0 एस0 का घोल तैयार करना।

10-थर्मामीटर का प्रयोग।

11-प्राथमिक चिकित्सा उपकरणों को सूचीबद्ध करना।

(23) ट्रेड--मोबाइल रिपेयरिंग

उद्देश्य-

(1) मोबाइल आधुनिक युग में संचार का सशक्त माध्यम तो है ही साथ ही विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक अद्यतन सूचना तथा समाचार प्रसारित करने का सशक्त माध्यम है।

मोबाइल न केवल संचार बल्कि मनोरंजन का भी सशक्त माध्यम है।

मोबाइल की मांग तथा सेवा का विस्तार तीव्रता से हा रहा है।

अतः छात्रों को मोबाइल रिपेयरिंग ट्रेड में प्रशिक्षण देना लाभकारी सिद्ध होगा।

(2) छात्रों में उद्यमिता के गुणों का विकास करना।

(3) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(4) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपर्युक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(5) छात्रों में व्यावसाय के प्रति रुचि जाग्रत करना।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक 50 अंक

इकाई-1 **-10 अंक**

-मोबाइल की सामान्य जानकारी

-मोबाइल फोन की कार्य प्रणाली

-CDMS तथा GSM

-मोबाइल फोन के भाग (Part of mobile)

स्पीकर, कैमरा, बैटरी, बजर, एल0सी0डी0 एन्टिना इत्यादि।

इकाई-2 **-10 अंक**

-मोबाइल में प्रयुक्त होने वाले घटकों का विवरण

-मोबाइल फोन की मरम्मत में प्रयुक्त होने वाले उपकरण, अनुरक्षण एवं रख रखाव।

इकाई-3 **-10 अंक**

-सोल्डरिंग का उपयोग

-विभिन्न प्रकार के मोबाइल फोन को खोलना एवं बन्द करना।

-सिम इंसर्ट करना (सिंगल एवं डबल)

-बैटरी लगाना।

इकाई-4 **-10 अंक**

-मोबाइल में 2जी तथा 3जी सेवा।

-मोबाइल के विभिन्न भागों का निरीक्षण।

-विभिन्न प्रकार के ICs के नाम तथा उनके कार्य।

-मोबाइल फोन का ब्लाक आरेख।

इकाई-5 **-10 अंक**

-परिपथ (सर्किट) के विभिन्न भागों का अध्ययन करना।

-जम्पर के साथ प्रकाश, ध्वनि तथा कम्पन आदि के लिये परिपथ (IC आधार पर)

प्रयोगात्मक कार्य **50 अंक**

-मोबाइल को ऑन/ऑफ करना।

-मोबाइल में उपलब्ध अनुप्रयोग के बारें में जानना।

-मोबाइल सर्विस प्रोवाइडर की जानकारी प्राप्त करना।

-वालपेपर, थीम, कैलेण्डर दिनांक इत्यादि सेट करना।

-की पैड, वाल्यूम (Volume) सेट करना।

-चार्जर, इयर फोन, पावर सप्लाई इत्यादि।

-डिसप्ले सेटिंग।

-मोबाइल फोन में प्रोफाइल सेट करना।

-मेमोरी कार्ड की जानकारी क्षमता व कार्य।

-मोबाइल के विभिन्न मॉडलों की जानकारी।

(24) ट्रेड--पर्यटन एवं आतिथ्य

उद्देश्य-

(1) छात्रों में अतिथि देवो भव की भावना विकसित करना।

(2) हॉस्पिटैलिटी और पर्यटन व्यवसाय को समझना।

(3) पर्यटन और आतिथ्य से सम्बन्धित विषय को समझना।

(4) चर्चा, परिचर्चा के तरीकों को विकसित करना।

(5) आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक 50 अंक

इकाई-1 **12 अंक**

(1) पर्यटन को समझना और परिभाषित करना तथा पर्यटन गाइड।

(2) पर्यटन की विशेषतायें।

(3) पर्यटन उत्पाद और सेवाएं।

(क) ट्रांसपोर्ट सर्विस।

(ख) एकोमोडेशन।

(ग) कैटरिंग।

(घ) स्थलीय पर्यटन।

(ङ) आधुनिक युग में पर्यटन के प्रकार।

इकाई-2 **12 अंक**

(1) यात्रा और संचालन करने वाले कारक।

(क) प्रस्तावना।

(ख) पैकेज यात्रा।

(i) इन बाउन्ड।

(ii) आउट बाउन्ड।

(iii) डोमेस्टिक।

(2) पर्यटन सम्बन्धी सूचनायें और संसाधन।

(क) पासपोर्ट, वीजा बीमा (समान और पर्यटक)

(ख) एयर पोर्ट टैक्स।

(ग) कस्टम।

(घ) करेन्सी।

(ङ) विभिन्न लघु शब्द।

I.A.T.A., W.T.O., C.V.G.R., P.A.T.A., I.U.H.F., I.A.T.M., E.P.B.X., H.R.C.C., S.T.D., P.C.O.

इकाई-3 **10 अंक**

(1) आतिथ्य उद्योग की प्रस्तावना और जानकारी।

(2) होटल की परिभाषा।

(3) होटल उद्योग का विकास और उन्नति।

(4) भारत के महत्वपूर्ण चेन होटल।

(5) विभिन्न फाइव स्टार होटलों में सुविधायें।

(क) फ्रन्ट कार्यालय।

(i) ट्रेवेल एवं टूर पैकेज।

(ii) विदेशी विनिमय।

(iii) बेल ब्वाय।

(iv) आचार विचार का आदान-प्रदान और सूचनायें।

(v) अतिथियों का स्वागत करना।

(ख) खाद्य एवं पेय।

(i) कान्फ्रेन्स कक्ष।

(ii) बैंक्वेट हॉल्स।

(iii) कॉफी शाप।

(iv) रूम सर्विस।

(v) बार।

(ग) हाउस कीपिंग।

(i) पब्लिक एरिया।

(ii) हार्टीकल्चर।

(iii) लेनिन/यूनीफार्मरूम।

(iv) सुबह/शाम की सर्विस।

(v) सेफ्टी और सुरक्षा।

इकाई-4 **10 अंक**

(1) सर्विस स्टाफ की जानकारी।

(2) हाउस कीपिंग विभाग के कर्मचारियों का विवरण।

(3) रूम अटेन्डेन्ट के कार्य और पोशाक।

(4) स्टीवर्ड के कार्य और वेश भूषा।

(5) शेफ (Chef) पोशाक।

(6) महिला और पुरूष की अलग-अलग पोशाक (सभी विभागों में)।

इकाई-5 **6 अंक**

(1) मीजा।

(2) मीपा।

(3) ब्रेकफास्ट स्टेप्स (चरण)

(4) वाणी का आदान-प्रदान।

(5) विभिन्न विभागों के कार्य।

(क) फ्रन्ट ऑफिस।

(ख) हाउस कीपिंग।

(ग) फूड व पेय सेवा।

(घ) खाद्य उत्पाद।

(ङ) First-Aid. (प्राथमिक चिकित्सा)

प्रयोगात्मक कार्य **50 अंक**

निर्देश-निम्न में से कोई पांच प्रयोगात्मक करें। प्रत्येक के लिए दस अंक निर्धारित है।

(1) पांच व्यक्तियों को अतिथि बनाकर उनका स्वागत करना।

(2) पांच व्यक्तियों के लिये पानी सर्विस करना।

(3) पांच व्यक्तियों के लिये टेबल सेट-अप करना।

(4) टेलीफोन से बात करते समय के मैनर।

(5) यात्रा पैकेज बनाना।

(6) सर्विस ट्रे सेट-अप करना।

(7) गेस्ट के लगेज को कक्ष तक पहुंचाना।

(8) गेस्ट का रजिस्ट्रेशन कार्ड भरना।

(9) भोजन करने के पश्चात् गेस्ट की टेबल साफ करना।

(10) गेस्ट के साथ कम्यूनिकेशन करना।

हाईस्कूल परीक्षा कक्षा-10 (वर्ष 2012)

हाईस्कूल परीक्षा (कक्षा-10)

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश ने सत्र 2011-12 से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को हाईस्कूल स्तर पर लागू करने का निर्णय लिया है, जिसके तहत 70 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 30 अंकों का प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन होगा जो वर्तमान सत्र से लागू है। आन्तरिक मूल्यांकन हेतु विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में (प्रथम मासिक परीक्षा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में, द्वितीय मासिक परीक्षा अक्टूबर माह के अन्तिम सप्ताह में एवं तृतीय दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह तक में) तीन मासिक परीक्षण किये जायेंगे।

सभी भाषाओं में 70 अंक की लिखित परीक्षा एक प्रश्न-पत्र के आधार पर होगी तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन तीन मासिक परीक्षाओं के आधार पर विद्यालय स्तर पर किया जायेगा। भाषा सम्बन्धी विषय निम्नवत् है। हिन्दी, प्रारम्भिक हिन्दी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगला, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, नेपाली, अंग्रेजी, संस्कृत, पालि, अरबी तथा फारसी। प्रथम मासिक परीक्षा में वाचन शैली-वाद-विवाद प्रतियोगिता, विचारों की अभिव्यक्ति, भाषण, शब्द ज्ञान एवं उसका प्रयोग, द्वितीय मासिक परीक्षा में व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान तथा तृतीय मासिक परीक्षा में छात्रों से उनके सृजनात्मक लेखन शैली-निबन्ध/कहानी/जीवन परिचय/नाटक, पत्रलेखन एवं अपठित पर आधारित ज्ञान का परीक्षण किया जायेगा। प्रत्येक मासिक परीक्षण 10 अंक का होगा।

प्रयोगात्मक विषयों-गृहविज्ञान, विज्ञान, संगीत गायन, संगीत वादन, कृषि, सिलाई, कम्प्यूटर का आन्तरिक मूल्यांकन निम्नवत् होगा-

प्रयोगात्मक परीक्षा-15 अंक (3 प्रयोग प्रत्येक 05 अंक)।

प्रोजेक्ट कार्य-15 अंक (3 प्रोजेक्ट प्रत्येक 05 अंक)।

प्रत्येक मासिक परीक्षा में एक प्रयोग तथा एक प्रोजेक्ट का मूल्यांकन किया जायेगा।

शेष अन्य विषयों-गणित, सामाजिक विज्ञान, प्रारम्भिक गणित, वाणिज्य, चित्रकला, रंजनकला तथा मानव विज्ञान में आन्तरिक मूल्यांकन की व्यवस्था निम्नवत् है-

प्रोजेक्ट कार्य-15 अंक (तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक 05 अंक)।

मासिक परीक्षा-15 अंक (तीन मासिक परीक्षा प्रत्येक 05 अंक)।

गृहविज्ञान (बालकों के लिए तथा उन बालिकाओं के लिए जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है) का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण पत्रिका में गृहविज्ञान (केवल बालिकाओं के लिए) अनिवार्य विषय के लिए निर्धारित है। नैतिक, खेल एवं शारीरिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन की व्यवस्था पूर्ववत् रहेगी।

कक्षा 9 में सभी मासिक परीक्षाओं, प्रोजेक्ट एवं प्रयोगात्मक के प्राप्तांक वार्षिक परीक्षा के योग में सम्मिलित किये जायेंगे तथा कक्षा 10 के लिए मासिक परीक्षाओं, प्रोजेक्ट एवं प्रयोगात्मक के कुल प्राप्तांक जनवरी माह में परिषद् के क्षेत्रीय कार्यालय को उपलब्ध करा दिये जायें। प्रत्येक मासिक परीक्षण में परीक्षार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर पढ़ाये गये पाठों में से उनके द्वारा किये जाने वाले क्रिया-कलापों एवं कौशल तथा बुद्धि का परीक्षण किया जाय। परीक्षार्थियों द्वारा समयान्तर्गत किये जाने वाले सृजनात्मक कार्य भी इसमें सम्मिलित किये जायें।

विषय-हिन्दी

केवल एक प्रश्नपत्र 70 अंकों का होगा जिसके लिए तीन घंटे का समय निर्धारित है।

	अंक
1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (शुक्ल तथा शुक्लोत्तर युग)	5
(ख) हिन्दी पद्य का विकास का संक्षिप्त परिचय (रीतिकाल तथा आधुनिक काल)	5
2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से-	2+2+2=6
सन्दर्भ-2	
रेखांकित अंश की व्याख्या-2	
तथ्यपरक प्रश्न-2	

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से 1+4+1=6

सन्दर्भ-1

व्याख्या-4

काव्य सौन्दर्य-1

4-संस्कृत गद्यांश अथवा पद्यांश का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 1+3=4

5-निर्धारित पाठों के लेखकों एवं कवियों के जीवन परिचय एवं रचनायें 3+3=6

6-(1) संस्कृत के निर्धारित पाठों से कण्ठस्थ एक श्लोक 2

(जो प्रश्नपत्र में न आया हो)

(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों पर आधारित दो अति लघूत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर 2

7-काव्य सौन्दर्य के तत्व- 2+2+2=6

क-रस-(हास्य एवं करूण रस की परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख-अलंकार-(अर्थालंकार) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

ग-छन्द-सोरठा, रोला (लक्षण, उदाहरण, पहचान)

8-हिन्दी व्याकरण-शब्द रचना के तत्व 3+2+2+2+2=11

(क) उपसर्ग-अ, अन, अधि, अप, अनु, उप, सह, निर, अभि, परि, सु।

(ख) प्रत्यय-आई, त्व, ता, पन, वा, हट, वट।

(ग) समास-द्वन्द्व, द्विगु, कर्मधारय, बहुव्रीहि।

(घ) तत्सम शब्द।

(ङ) पर्यायवाची।

9-संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद- 2+2+2+2=8

क-सन्धि-यण, वृद्धि (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख-शब्द रूप (सभी विभक्तियों एवं वचनों में)

संज्ञा-फल, मति, मधु, नदी। सर्वनाम-तद्, युष्मद्।

ग-धातु रूप (लट्, लोट, लृट, विधिलिंग, लङ् लकारों में)

पठ, हसु, दृश, पच्।

घ-हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

10-निबन्ध रचना-वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं पर आधारित एवं जनसंख्या , स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरण एवं ट्राफिक रूल्स पर आधारित विषय। 6

11-खण्ड काव्य-संक्षिप्त कथावस्तु, घटनायें, चरित्र-चित्रण 3

आन्तरिक मूल्यांकन-प्रत्येक दो माह के अन्तिम सप्ताह में

प्रथम-अगस्त माह में 10 अंक-वाचन (भाषण, वाद-विवाद, विचारों की अभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय-अक्टूबर माह में 10 अंक-व्याकरण सम्बन्धी

तृतीय-दिसम्बर माह में 10 अंक-सृजनात्मक निबन्ध, नाटक, कहानी, कविता, अपठित आदि।

अंक योग-30 अंक

(ब) निर्धारित पाठ्य वस्तु-

गद्य हेतु-

मित्रता	राम चन्द्र शुक्ल
ममता	जयशंकर प्रसाद
क्या लिखूँ	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से	रामधारी सिंह दिनकर
अजन्ता	भगवत शरण उपाध्याय
पानी में चन्दा और चाँद	जय प्रकाश भारती

काव्य हेतु-

सूरदास	पद
तुलसीदास	धनुष भंग, वन पथ पर
रसखान	सवैये, कवित्त
बिहारी लाल	भक्ति नीति
सुमित्रानन्दन पंत	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार
महादेवी वर्मा	हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति
रामनरेश त्रिपाठी	स्वदेश प्रेम
माखन लाल चतुर्वेदी	पुष्प की अभिलाषा, जवानी
सुभद्रा कुमारी चौहान	झांसी की रानी की समाधि पर
त्रिलोचन	बढ़ अकेला
केदार नाथ सिंह	नदी
अशोक बाजपेयी	युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है

संस्कृत हेतु-

वाराणसी, अन्योक्ति विलासः, वीरः, वीरेण पूज्यते, प्रबुद्धो ग्रामीणः, देशभक्तः चन्द्रशेखर, केन किं वर्धते, अन्तरिक्ष यात्रा, भारतीया संस्कृतिः, जीवन सूत्राणि।

खण्ड काव्य- (जिलेवार)

खण्ड काव्य के लिये-

निर्धारित पाठ्य वस्तु-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	अनुदानित जिले
1	मुक्तिदूत	अशोक कुमार अग्रवाल, 43, चाहचन्द रोड, इलाहाबाद	आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी, उन्नाव।
2	ज्योति जवाहर	मोहन प्रकाशन, जवाहर नगर, कानपुर	कानपुर, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा।
3	अग्रपूजा	हिन्दी भवन, 63 टैगोर नगर, इलाहाबाद	इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा।
4	मेवाड़ मुकुट	शंकर प्रकाशन, 8/98 आर्यनगर, कानपुर	बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर, बहराइच।
5	जय सुभाष	रोहिताश्व प्रकाशन, 368 मालती सदन, ऐशबाग, लखनऊ	लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बांदा, झांसी, हरदोई।
6	मातृ भूमि के लिये	आधुनिक प्रकाशन गृह, दारागंज, इलाहाबाद	गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर।
7	कर्ण	बुनियादी साहित्य मन्दिर, पटना-4	अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा।
8	कर्मवीर भरत	हिन्दुस्तान बुक हाउस, अस्पताल रोड, परेड, कानपुर	मेरठ, फर्रूखाबाद, पीलीभीत, रायबरेली।
9	तुमुल	इन्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रा0 लि0, 36, पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद	वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, बदायूँ।

नोट :-उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य जिलों/नये सृजित जिलों में खण्ड काव्य पूर्व वर्षों की भांति यथावत् पढ़ाये जायेंगे।

हाईस्कूल परीक्षा कक्षा-10

प्रारम्भिक हिन्दी

(हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिये)

(दो) प्रारम्भिक हिन्दी विषय का पाठ्यक्रम निम्नवत् निर्धारित किया जाता है-

प्रारम्भिक हिन्दी

(एक प्रश्नपत्र 70 अंकों का तथा समय तीन घंटे का होगा) अंक

1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय- 5

(शुक्ल युग एवं शुक्लोत्तर युग-लेखकों एवं रचनाओं के नाम)

(ख) हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय- 5

(रीतिकाल एवं आधुनिक काल-कवि एवं उनकी कृतियां)

2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+4+2=8

1-सन्दर्भ

2-रेखांकित अंश का अर्थ

3-तथ्यपरक प्रश्न

(पाठ-मित्रता, ममता, भारतीय संस्कृति, अजन्ता)

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से सन्दर्भ सहित अर्थ- 2+6=8

(सूरदास, तुलसीदास, पंत, रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान)

4-संस्कृत हेतु निर्धारित पाठ्यवस्तु से-

1-गद्य अथवा पद्य का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद- 2+4=6

(पाठ-वाराणसी, अन्योक्ति विलासः, प्रबुद्धों ग्रामीणः, भारतीया संस्कृतिः, जीवन सूत्राणि)

2-पाठों पर आधारित संस्कृत में अति लघु उत्तरीय प्रश्न- 2

5-निर्धारित पाठों के लेखकों तथा कवियों के जीवन परिचय एवं रचनाएं संबंधी प्रश्न (लघु उत्तरीय) 3+3=6

6-**काव्य सौंदर्य के तत्व-** 2+2+2=6

क-रस-हास्य एवं करूण (परिभाषा व उदाहरण)

ख-अलंकार-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा (परिभाषा उदाहरण)

ग-छन्द-दोहा, चौपाई-लक्षण उदाहरण

7-हिन्दी व्याकरण- 2+2+2+2+2+2=12

क-समास-कर्मधारय, बहुव्रीहि।

ख-लोकोक्तियां एवं मुहावरे-अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

ग-पर्यायवाची शब्द

घ-विपरीतार्थक शब्द

ङ-तत्सम तद्भव

च-वाक्यांशों के लिए एक शब्द की रचना

8-संस्कृत व्याकरण- 1+2+1=4

क-सन्धि-यण्, वृद्धि सन्धि-

ख-शब्दरूप-संज्ञा, फल, मति, पयस्-

सर्वनाम्-तत्, युष्मद्।

ग-धातु रूप-पठ्, हंस, दृश्, पच्

9-निबन्ध-वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, समाजिक समस्याओं पर आधारित तथा स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण, जनसंख्या तथा यातायात नियम संबंधी निबन्ध- 8

(ब)-निर्धारित पाठ्यवस्तु

गद्य हेतु

पाठ	लेखक
मित्रता	रामचन्द्र शुक्ल
ममता	जयशंकर प्रसाद
भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
अजन्ता	भगवत् शरण उपाध्याय

काव्य हेतु

सूरदास	पद
तुलसीदास	धनुष भंग, वन पथ पर
सुमित्रानन्दन पंत	चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार
रामनरेश त्रिपाठी	स्वदेश प्रेम
सुभद्रा कुमारी चौहान	झॉसी की रानी की समाधि पर

संस्कृत हेतु

पाठ-वाराणसी, अन्योक्ति विलासः, प्रबुद्धों ग्रामीणः, भारतीया संस्कृतिः, जीवन सूत्राणि।

आन्तरिक मूल्यांकन-प्रत्येक दो माह के अन्तिम सप्ताह में (30 अंकों का)

प्रथम-अगस्त माह में 10 अंक-वाचन (भाषण, वाद-विवाद आदि)

द्वितीय-अक्टूबर माह में 10 अंक-व्याकरण सम्बन्धी

तृतीय-दिसम्बर माह में 10 अंक-सृजनात्मक-निबन्ध, नाटक, कहानी आदि।

गुजराती

(कक्षा-10)

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

भाग-(अ) 35 अंक

1-व्याकरण	15 अंक
(क) वचन परिवर्तन	05 अंक
(ख) लिंग परिवर्तन	05 अंक
(ग) वाक्य शुद्धि	05 अंक
2-रचना	15 अंक
(क) निबन्ध लेखन-(भावनात्मक वर्णनात्मक)	10 अंक
अथवा	
दी गयी रूपरेखा के आधार पर कहानी का विकास करना	
(ख) पत्र लेखन (व्यक्तिगत, कार्यालय सम्बन्धी सम्पादक सम्बन्धी)	05 अंक
3-अपठित गद्य खण्ड	05 अंक

भाग-(ब) 35 अंक

1-गद्य-(पाठ्य पुस्तक पर आधारित लघु प्रश्न)	15 अंक
2-पद्य-संदर्भ सहित व्याख्या तथा निर्धारित पुस्तक की कविताओं की समीक्षा	10 अंक
3-सहायक पुस्तक-स्वअध्ययन	10 अंक
(क) कविता	
(ख) गद्य-सामान्य आलोचनात्मक समीक्षा, केन्द्रीय भाव तथा चरित्र-चित्रण।	

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें-

गुजराती वचन माला-दसवीं कक्षा हेतु प्रकाशन 199, गुजरात राज्यशाला पुस्तक माला, पुरानी विधान सभा गृह सेक्टर 17, गांधीनगर, गुजरात द्वारा प्रकाशित।

गद्य-निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे-

1-जुमो मिस्त्री	धूमकेतु
2-लोहेनि सगई	पेठलीकार
3-थिगाटुन	सुरेश जोशी
4-श्रुतियेनी समाअती	सो बक्शी
5-बी लघु कथा	मोहन लाल पटेल
6-पृथ्वी बल्लभ खेन्दबी	के मुन्शी
7-सत्य आने अहिंसा	गांधी जी
8-मध्याहना नु काव्य	कलेलकर
9-भन्कारा	चन्द्रवाकर

पद्य-निम्नांकित कविताएं पढ़नी होंगी-

1-भजरे भजतुन	नर सिन्हा मेहता
2-चम्पा	अकही
3-हवाई सखी	दयाराम
4-मेहामानोन सम्बोधन	कान्ता
5-चेली कचेरी	मेधानी
6-उन्तोचाहूं	मनसुख लाल जवेरी
7-मन	निरंजन भगत

सहायक पुस्तक (स्वाध्याय)

1-गद्य-निम्न पाठ पढ़ने होंगे-

(क) अगागाबी न अनुभव	रमन भई निम्न कन्था
(ख) मोहादेव भाई नीदयारी	महादेव देसाई
(ग) एक-एकरार	इन्दूलाल याज्ञनिक
(घ) फक्ता पन्दार मिनीत	विभूति शाह

पद्य-निम्न कवितायें पढ़नी होंगी-

1-स्मृति भवन पन्ना नायका	
2-मजुष रकोवायो ये	श्याम साधु

हाईस्कूल 2012

कक्षा-10

विषय-उर्दू

उर्दू विषय में 70 अंक का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

उर्दू विषय में 70 अंक का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टो का होगा।

खण्ड-(अ) पूर्णांक-35

1-व्याकरण और उसका प्रयोग- 6 अंक

व्याकरण के केवल उन्हीं तत्वों पर बल दिया जायेगा जो भाषा के प्रयोगात्मक ज्ञान और उसके लेखन एवं संभाषण पर आधारित हों। व्याकरण का अध्ययन एक विषय के रूप में अनिवार्य नहीं है परन्तु छात्रों को कक्षा में पढ़ाते समय भाषा में व्याकरण के महत्व तथा वाक्य प्रयोग पर अधिक बल दिया जाय। साथ ही छात्रों का वाक्य विन्यास तथा दूसरी प्रचलित क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करने का अभ्यास कराना चाहिए।

2-साहित्यिक विधाएं (असनाफ़े अदब)- 7 अंक

(1) नावेल (उपन्यास) (2) अफ़साना (3) नज़्म (4) क़सीदा (5) मरसिया

3-अलंकार (सनअतें)- 5 अंक

हुस्ने तालील, मरातुन नज़ीर, तज़ाद, तलमीह, लफ़्फ़ोंनश्र, तजनीस, तशबीह ओ इस्तेआरा

4-मुहावरात व ज़रबुलमिसाल 5 अंक

5-निबन्ध लेखन 6 अंक

6-अपठित (ग़ैर दरसी नसरी इक़्तेबास का खुलासा) 6 अंक

खण्ड-(ब) पूर्णांक-35

निर्धारित पाठ्य पुस्तक (गद्यांश)

उर्दू की नई किताब कक्षा 10 के लिए प्रकाशन एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।

1-निम्नलिखित गद्य के पाठ अध्ययन के लिए प्रस्तावित है- 10 अंक

(अ) (1) उमराव जान अदा (इक़्तेबास)-मिर्ज़ा हादी रूस्वा

(2) सवेरे जो कल ऑख मेरी खुली-पतरस बुख़ारी

(3) चारपाई (इक़्तेबास)-रशीद अहमद सिद्दीकी

(4) पूरे चॉद की रात-कृष्ण चन्दर

(5) गरमकोट-राजेन्द्र सिंह बेदी

(6) मौलवी अब्दुल हक़-अल्ताफ़ हुसैन हाली

(7) हिन्दुस्तानी तहज़ीब के अनासिर-प्रोफ़ेसर एहतेशाम हुसैन

(8) गद्य में मीर-अम्मन, गालिब, प्रेम चन्द्र, रतननाथ सरशार, अबुल कलाम आज़ाद

(ब) गद्य लेखक का जीवन परिचय (सवानेह हयात), गद्य लेखन की विशेषाताएं, (नम्र निगारी की खूबियां तथा शैली) तर्जे निगारिश का ज्ञान (मालूमात फ़राहम कराना) 4 अंक

2-निर्धारित पाठ्य पुस्तक (पद्यांश)

उर्दू की नई किताब (दसवीं जमाअत के लिए)

प्रकाशक एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली

1-**पद्यांश** **8 अंक**

ग़ज़लियात-हाली, इक़बाल, हसरत मोहानी, असगर-गोण्डवी, फ़ानी बदायूंनी जिगर मुरादाबादी, फ़िराक गोरखपुरी, फ़ैज अहमद फ़ैज

पद्य में मीर, गालिब, मोमिन, आतिश, दाग

नज़्मियात-नज़ीर अकबराबादी, हाली, दुर्गासहाय सुरूर, चकबस्त, इकबाल जोश मलीहाबादी, अख़्तरूल ईमान, अली सरदार जाफ़री। 3 अंक

क़सीदा-मुहम्मद रफ़ी सौदा 2 अंक

मरसिया-मीर अनीस 2 अंक

(2) उर्दू शोअरा (जो पाठ्य पुस्तक में निर्धारित हैं) की सवानेह हयात व उनके कलाम की खूबियों से छात्रों को रूशनास कराया जाय। 3 अंक

(3) उर्दू ज़बान ओ अदब का इरतिक़ा 3 अंक

निर्धारित पुस्तक-उर्दू की नई किताब दसवीं जमाअत के लिए प्रकाशक एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।

सहायक पुस्तक-उर्दू अदब की तारीख़ लेखक अज़ीमुल हक़ जुनैदी

प्रकाशक-एजुकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़।

पंजाबी

कक्षा-10

इसमें 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

भाग (एक) **पूर्णांक 35 अंक**

पद्य पाठ- 20 अंक

1-प्रसंग, अर्थ एवं भावार्थ
2-कविता का सारांश
3-कवि के सम्बन्ध में प्रश्न

गद्य पाठ- 15 अंक

1-उपन्यास-प्रसंग
2-विषय-वस्तु, पात्र भाषा
3-लेखक की जीवनी

भाग (दो)

व्याकरण- 35 अंक

1-मुहावरे	03 अंक
2-वाक वण्ड	02 अंक
3-पर्यायवाची शब्द	02 अंक
4-सामासिक शब्द	03 अंक
5-प्रत्यय-उपसर्ग	03 अंक
6-अनुवाद-हिन्दी से पंजाबी	05 अंक
पंजाबी से हिन्दी	05 अंक
7-निबन्ध-प्रचलित विषयों पर	08 अंक
8-पत्र-लेखन-(व्यापारिक एवं कार्यालयीय)	04 अंक

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें-

1-गद्य-पद्य (भाग-दो)	हरशरण कौर
2-जंगल दे शेर-	जसवंत सिंह कंवल
3-पंजाबी व्याकरण लेख रचना	ज्ञानी लाल सिंह

बंगला

(कक्षा 10 के लिए)

इसमें 70 अंकों की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

भाग "अ" **35 अंक**

1-व्याकरण-

सन्धि-	1 अंक
सन्धि-विच्छेद-	2 अंक
समास-	3 अंक
व्यंजन सन्धि-	2 अंक
वाक्य परिवर्तन-	2 अंक
वाक्य रचना-	3+2=5 अंक
विराम चिन्ह-	3 अंक
वर्तनी-	2 अंक

2-(i) निबन्ध- 10 अंक

(ii) अपठित गद्य या दिये गये विचारों का विस्तार- 5 अंक

भाग "ब" **35 अंक**

गद्य-सामान्य प्रश्न- 5+5=10 अंक

व्याख्या- 3 अंक

टीका- 2 अंक

पाठों का नाम

1-देशेर श्रीवृद्धि

2-देना पावना

3-निर्भयेर राजतु

4-सभ्य साची

5-पाली साहित्य

6-मातृ भाषा

7-पद्मा नदीर माझी

पद्य-

सामान्य प्रश्न- 5 अंक

व्याख्या- 5 अंक

संक्षिप्त टिप्पणी- 3 अंक

पुस्तक-

(1)-अन्न पूर्णा को ईश्वरी पाटनी

(2) ईश्वर चन्द्र विद्या सागर

(3) हे मोर दुर्भागा देश

(4) नव वर्षा

(5) काण्डारी हुँशियार

(6) कागज विक्री

(7) रूपशी बंगला

(8) आगामी

3-छोटी कहानी

राज कहानी

प्रश्न सामान्य हो, भाव तथा चरित्र पर आधारित हो- 7 अंक

कहानी का नाम

(1) शिलादिप्य

(2) गोहा

(3) वाप्पा दिव्य

(4) पदमिनी

(5) हम्वीर

(6) हम्बीरेर राज्य लाभ।

निर्धारित पुस्तकें-

1-पद्य संकलन (पद्य भाग केवल)-1987 संस्करण बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, पश्चिम बंगाल, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित।

विषय मराठी

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड-(क) **35 अंक**

व्याकरण **15 अंक**

(क) वाक्य परिवर्तन

(ख) काल परिवर्तन

(ग) दिख्या वाक्योसील अशुद्धीये शुद्धिकरण

2-रचना- 15 अंक

(क) निबन्ध-चित्रात्मक

(ख) पत्र लेखन (कार्यालय सम्बन्धी-व्यावसायिक विषय)

3-अपठित गद्य खंडाचे ज्ञान- 05 अंक

खण्ड-(ख) **35 अंक**

1-गद्य- **15 अंक**

(पाठ्य पुस्तकवार आधारित संक्षिप्त प्रश्न व गद्यांशांचे सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण)

निर्धारित पुस्तक-

कुमार भारती (1995) कक्षा-10

क्रमांक	पाठाचा क्रमांक	पाठांचे शीर्षक	लेखक
1	2	3	4
1	3	अमाचे अजून ग्रह सुठली नाही	जी0जी0 आगरकर
2	5	अवमानतून सूटका	बी0द0 सावरकर
3	6	उन्नतीचा मूलमन्त्र	बाबा साहेब अम्बेडकर
4	7	स्वरूप पाहा	बिनोबा भावे
5	8	विजय स्तम्भ	वि0स0 खांडेकर
6	10	उपासे	पू0ला0 देशपांडे
7	11	औधॉचा राजा	जी0डी0 माडगुलकर
8	12	स्मशनासीले सोने	अश्णाभाऊ सांठे
9	14	सुन्दर	एस0डी0 पानवलाकर
10	16	बुद्धदशन	भालाचन्द्र नामाडे

2-पद्य- **10 अंक**

(सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण आणि रस ग्रहण)

क्रमांक	पाठाचा क्रमांक	पाठांचे शीर्षक	लेखक
1	2	3	4
1	3	तुकारामची अभंगवाणी	तुकाराम
2	6	फटका	अंनत फंदी
3	7	अखंड	महात्मा फूले
4	8	आम्ही कोण ?	केशव गुप्त
5	9	पवै	बालकवि
6	10	भ्रांत तुम्हां का पढ़े ?	माधवज्युलिअन
7	15	मृत्युल कोण हसे	अरंती प्रभु

3-नाटक- 5 अंक

(पात्र चरित्र, कल्पना, साधारण, टीकात्मक रस ग्रहण, पावर आधारित प्रश्न)

(क) निबन्धात्मक (एक)

(ख) लघु उत्तरी (दीन)

सुन्दर भो होणार------लेखक----पी0एल0 देशपाण्डे

प्रकाशक---कान्टेनेन्टल पब्लिकेशन, पूणे।

4-चरित्र- 5 अंक

शोरले बाजीराव----लेखक---एम0व्ही0 गोखले

प्रकाशक---आयंदे प्रकाशक, पूणे।

निबन्धात्मक प्रश्न (एक)

आसामी

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घंटे होगी।

खण्ड-(अ) **35 अंक**

1-अनुप्रयोगात्मक व्याकरण- **15 अंक**

1-वाक्य रचना की अशुद्धियों का संशोधन, गलतियों का सुधार एवं तुलना गलत क्रियाओं का प्रयोग में सुधार।

2-कहावतों एवं मुहावरों/लोकोक्तियों का प्रयोग।

3-वाक्य रचना में परिवर्तन।

रचना- **20 अंक**

(क) निबन्ध (तथ्यात्मक तथा वर्णनात्मक)

(ख) सार लेखन (अपठित गद्यांश)

संस्तुत पुस्तकें-

1-बहाल व्याकरण-सत्यनाथ बोरा, बरूआ एजेंसी, गुवाहाटी

2-असमियां व्याकरण-हेमचन्द्र बरूआ, हेमकोष, गुवाहाटी

3-असमियां रचना विधि-प्रधानाचार्य गिरिधर शर्मा, प्राप्ति स्थान-आसाम बुक डिपो

4-असमियां भाषा बोधिका-ले0 प्रियदास तालुकदार, प्रकाशक-एल0बी0एस0 प्रकाशन, अम्बारी, गुवाहाटी-78100

खण्ड-(ब) **35 अंक**

पद्य- **15 अंक**

(क) निर्धारित खण्ड की व्याख्या 6 अंक

(ख) निर्धारित पुस्तक से सामान्य प्रश्न 9 अंक

पद्य एवं गद्य के लिए निर्धारित पुस्तकें-

माध्यमिक साहित्य चयन प्रकाशक आसाम स्टेट टेक्स्ट बुक, प्रोडक्शन ऐन्ड पब्लिकेशन लिमिटेड, गुवाहाटी-78002 निम्नलिखित पद्य का अध्ययन करना होगा-

1-गोलप

2-अमंक कोने मोरे

3-गीत

4-सुरार देओल

2-गद्य **15 अंक**

1-पठित खण्ड की व्याख्या 6 अंक

2-संक्षिप्त विवरण (निर्धारित पुस्तक से पौराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक तकनीकी या भावात्मक संदर्भ में)। 5 अंक

3-पठित खण्ड से सामान्य प्रश्न 4 अंक

निम्नलिखित गद्य पाठों का अध्ययन करना होगा-

1-पाक शिविध सलीम अली

2-स्विंग बाल

3-भारतार विचित्रार मजोट आकिया

4-आसामी लोकगीत

5-लूकोदेका फूकानार देश भोविन

3-आत्मकथा- **5 अंक**

निर्धारित पुस्तक-

जीवनी संग्रह-पद्मनाथ मोहन बरूआ द्वारा मूलरूप में संकलित वर्तमान में आसाम बोर्ड बानुनी मैदान गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित।

उड़िया

(कक्षा-10 के लिए)

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का होगा समयावधि तीन घंटे की होगी।

भाग-1 **35 अंक**

(1) व्याकरण- **20 अंक**

(क) शब्दों का निर्माण (संज्ञा विशेषण)

सन्धि (व्यंजन विसर्ग) समास (बहुब्रीहि, कर्मधारय, अव्ययीभाव तदिया)

(ख) कहावतें एवं मुहावरें

(ग) विराम चिन्ह

(घ) वाक्य का परिवर्तन (संयुक्त, मिश्रित, साधारण)

(ङ) साधारण वाक्य का सुधार, शब्दों, वाक्य

(2) रचना-

निबन्ध, (साधारण विषय पर) 10 अंक

अपठित गद्यांश 5 अंक

भाग-2 **35 अंक**

(1) गद्य (विस्तार अध्ययन)

(क) खण्ड (निर्धारित) की व्याख्या 4 अंक

(ख) साधारण प्रश्न 9 अंक

(ग) संक्षिप्त टिप्पणियां 4 अंक

(निर्धारित पुस्तक से पौराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक, तकनीकी या भावात्मक)

निर्धारित पुस्तक-

साहित्य 1992 गद्य विभाग प्रकाशित उड़िया बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, उड़िया

नोट-सभी पाठों का अध्ययन किताब में निर्धारित है।

(2) संक्षिप्त टिप्पणियां और एक अंश का लेख विस्तृत अध्ययन में त्रिधारा प्रकाशित सन् 1992 उड़िया बोर्ड सेकेण्डरी, उड़िया 6 अंक

(3) पद्य 12 अंक

(1) साधारण प्रश्न

(2) व्याख्या

निर्धारित पुस्तक-

साहित्य सन् 1992 में प्रकाशित (पद्य भाग) प्रकाशित उड़िया बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, उड़िया

नोट-सभी निर्धारित पद्य पाठ करना है।

कन्नड़

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-अ **35 अंक**

अ-व्याकरण- **17 अंक**

(1) सन्धि, समास

(2) पैरा फ्रेजिंग (Para Phrasing) सरलीकरण/अपने शब्दों में लिखना।

(3) पर्यायवाची एवं विलोम शब्द।

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग करना ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो न सके तथा भाषायी चातुर्य को बढ़ावा मिल सके।

ब-मुहावरे तथा लोकोक्तियां **13 अंक**

2 रचना-

(अ) निबन्ध रचना-वर्णनात्मक, सामाजिक (पारिवारिक एवं विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में) कथात्मक (निबन्ध 150 से 200 शब्दों में)

(ब) पत्र लेखन (सम्पादक को व्यापारिक पत्र एवं प्रार्थना-पत्र)।

3-अपठित गद्यांश का बोध कराना। **05 अंक**

भाग-ब **35 अंक**

निर्धारित पुस्तकें (गद्य एवं पद्य)-

कन्नड भारतीय-10, प्रकाशक, नव कर्नाटक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, इम बहसी सेन्टर, क्रिट रोड, पोस्ट आफिस 5159, बंगलोर।

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे-

(अ) गद्य (विस्तृत अध्ययन) 14 अंक

(1) साध्याब

(2) ननताख

(3) नीबू वैध्यार मानू पिकितों

(4) मानादानिया नोदी मानीदेय

(5) बसावननवारू कतावियासिदा समाज

(6) किसागोतामी

(7) अदायावान्ति के असमास्यागालू

(8) चिपको चलीवालि

(9) डा0 अम्बेदकर वैयक्तित्व

(10) यशुबिना कोन्य दीना

(11) मन्त्य सूलोगन्थर

(12) टुंग भुजंग कर्थ

(ब) पद्य 14 अंक

(1) अराइके

(2) महात्मा

(3) जुगाडा समाकू

(4) सगाडा श्रीवन्तु

(5) बन्धव्य

(6) विलाणु

(7) अम्बिगा ना निन्न नंबिदे

(8) अक्कनावचनागालू

(9) ननागाडेंपाध्यम

(10) पुराणपुठयमक पुआस्ठा अपिन्दे पौगुटिगे

(11) करननारेन्द्र

(12) कुरू कुलख्य नम्वार केन उमसकर तरेयादिदार

सहायक पुस्तक- 7 अंक

(1) जोत्याली

(2) नग गा (1994) प्रकाशक (एन0बी0टी0)

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे-

(1) साके चिली

(2) ओम भाट हाटो

(3) सुमारी भुवन

(4) तातीकु केन्द्र एक ऋवैसु

(5) प्राथनाये प्रभाव

(6) लिगिनटा एवं वुदाद

(7) हाजी वक्लोल

(8) भुत्वा कुदूर

(9) दौधस्यो पीचु हनुगालू

(10) मूऊ जनाऊ अटाक

(11) उताना

(12) अतिस्य विवेकहा

कक्षा-10

विषय कश्मीरी

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-(अ) **35 अंक**

1-व्याकरण और उनके प्रयोग- **20 अंक**

(1) काल प्रयोग 05 अंक

(2) वाक्य परिवर्तन 05 अंक

(3) मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग 05 अंक

(4) समुच्चय बोधक अव्यय तथा सम्बन्ध सूचक अव्यय का प्रयोग 03 अंक

(5) प्रत्यय और उपसर्ग 02 अंक

2-कम्पोजीशन-

(1) निबन्ध लेखन 10 अंक

(सामान्य रुचि के विषयों पर आधारित लगभग 150 शब्दों में)।

3-पाठ्य पुस्तक से दिये गये अवतरणों पर लघु उत्तरीय प्रश्न 05 अंक

भाग-(ब) **35 अंक**

1-गद्य- **20 अंक**

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे-

(1) माती तुगनी कीन्ह

(2) चार्ली चैपलीन

(3) टेलीफोन से रेडियो

(4) जम्हूरियत

निम्नांकित प्रकार से प्रश्न पूछे जायेंगे-

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या 10 अंक

(ख) पाठ्य पुस्तक के अवतरण का अंग्रेजी/उर्दू/हिन्दी में अनुवाद 05 अंक

(ग) पाठ्य सारांश 05 अंक

2-पद्य- **15 अंक**

पाठ्य पुस्तक से निम्नांकित कवितायें पढ़नी होगी-

(1) रूबाई (मियॉ आरिफ)

(2) जूनी मंजदल

(3) गजल

(4) गशी तुरूक

(5) दूरी प्रजालियों तारूखा

(6) बहार

(7) येथ हम्यास मंज

निम्नांकित विषयों से सम्बन्धित प्रश्न पूँछे जायेंगे-

(अ) सन्दर्भ सहित व्याख्या 10 अंक

(ब) दिये गये पद्यांश का सारलेखन 05 अंक

निर्धारित पुस्तक कशूर निशाब कक्षा-09 तथा 10 के लिए प्रकाशक जम्मू एवं कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ एजूकेशन (1982)

सिन्धी

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक लिखित प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-(अ) **35 अंक**

1-व्याकरण- **3+4+2+2=11 अंक**

(क) सिन्धी शब्दों का निर्माण किस प्रकार होता है ?

(ख) वाक्य (साधारण, उप, मिश्रित, संयुक्त)

(ग) विलोम/पर्यायवाची

2-कहावतें एवं मुहावरे 3+3=06 अंक

3-निबन्ध-निम्नलिखित विषयों में से 250 शब्दों तक एक निबन्ध 10 अंक

(1) सिन्धी भाषा दिवस (10 अप्रैल, 1967)

(2) सिन्धी साहित्यकार

(3) सिन्धी महापुरुष

(4) सिन्धी पर्व

(5) राष्ट्रीय पर्व

4-अनुवाद-सिन्धी से हिन्दी में एवं हिन्दी से सिन्धी में 4+4=08 अंक

भाग-(ब) **35 अंक**

1-गद्य- **13 अंक**

(क) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से दो या तीन प्रश्न 05 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक गद्यांश का प्रसंग, संदर्भ साहित्यिक सौन्दर्य सहित व्याख्या। 1+1+2+4=08 अंक

2-पद्य- **13 अंक**

(क) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक पद्यांश की संदर्भ, काव्यगत सौन्दर्य सहित व्याख्या। 1+2+4=7 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित दो या तीन प्रश्न 06 अंक

3-कहानी- **4+5=09 अंक**

कथा की विशेषता एवं उसके तत्व, तत्व तथा घटनायें, चरित्र-चित्रण, भाषा कहानी, कला, सारांश आदि पर आधारित एक प्रश्न एवं पांच लघु उत्तरीय प्रश्न।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें-

1-व्याकरण, कहावतें, पदबन्ध, मुहावरे, निबन्ध तथा अनुवाद के लिए-

मथ्यो सिन्धी व्याकरण (देवनागरी) ले0 दयाराम बंसणमल मीरचन्दानी, प्रकाशक सिन्धू-ब्रहमू शिक्षा सम्मेलन एवं देवनागरी सिन्धी सभा, मुम्बई।

प्राप्ति स्थान-(1) कमला हाईस्कूल-खार-मुम्बई-400052

(2) हिन्दुस्तान किताबघर-19-21 हमाम स्ट्रीट, मुम्बई

मथ्यो सिन्धी व्याकरण पुस्तक से फहाका 21 से 42 तक इस्तलाह 21 से 45 तक तथा अदबीगुलदस्तों के पाठों के अन्त में अभ्यास के लिए दिये अंशों का अध्ययन भी किया जाना होगा।

(2) सहायक पुस्तक-संदर्भ के लिए-

सिन्धी भाषा (व्याकरण एवं प्रयोग) लेखन, प्रकाशक, विक्रेता-डा0 मुरलीधर जैतली, डी0 127, विवेक विहार, नई दिल्ली-95

(3) गद्य एवं पद्य के लिए-

अदबी गुलदस्तो-लेखक डा0 कन्हैया लाल लेखवाणी।

प्रकाशक एवं विक्रेता-निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान मानस गंगोत्री, विनोवा रोड, मैसूर।

''अदबी गुलदस्तों'' के गद्य भाग में से पाठ संख्या 11 से 20 तक एवं पद्य भाग में पाठ संख्या 6 से 10 तक का अध्ययन करना है।

(4) कहानी के लिए पुस्तक-

विसारिया न विसरीन लेखक-लोकनाथ

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान-विभागाध्यक्ष आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110007

कहानियों में प्रस्तावित पुस्तक में से साहेड़ी, लारी, ड्राइवर, गाय की इज्जत एवं ब तस्वीरूं कहानी को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाय।

तमिल

कक्षा-10 के लिए

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-अ **35 अंक**

1-प्रयुक्त व्याकरण- **15 अंक**

निम्नलिखित के पहचान हेतु प्रारम्भिक ज्ञान-

(A) PEYAR : Panpup Peyar, Thozhin Peyar, Vinayaalanaiyum Peyar, Ashu Peyar, Tninla, paal, Jdam and Vetrumai:

(B) VINAI : Therinilal and Kurippv Vinumutra Peyarecham Eeval, Viyamgal, Mutreehana,

(C) IDAICHOL AND URICHOL : Defintion of Idaichal with special reference to Ehonaaram, Ohaaran and Ummai and definition of urichol with suitable examplea.

(D) PODU : Thehainila and thehaaniali, Vazhu vazhallnilai and maralov.

2-लोकोक्तियॉं- **05 अंक**

परिभाषा एवं प्रयोग-

लोकोक्ति पुस्तक तमिल इलक्कानम (TAMIL, ILAKKANM) के पृष्ठ 152 और 153 पर दिया हुआ है।

(TAMIL, ILAKKANM) : Class IX (1993 revise edition) Reprinted in 1994

3-रचना- 10 अंक

पत्र लेखन (व्यक्तिगत पत्र)

निर्धारित पुस्तक-

(1) व्याकरण के लिए-

तमिल इलक्कानम ''कक्षा-नौ'' के लिए (1990 संस्करण) पुनः मुद्रित 1994,

प्रकाशक-तमिलनाडू टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 (पेज 1-47)।

(2) लोकोक्ति के लिए-

तमिल इलक्कानम ''कक्षा-10'' के लिए संशोधित संस्करण

4-सार लेखन **05 अंक**

भाग-(ब) **35 अंक**

5-पद्य- **15 अंक**

तमिल टेक्स्ट बुक-कक्षा 10 के लिए (1990 संस्करण) प्रकाशक-तमिलनाडू, टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6

Section III-Poems to be studied

2. Kambaramayanam
3. Thirurilayadarpura Pem
4. Seerappuranam

Section V-

Palsuvi Paadalgal

First Five Poem

6-गद्य- **10 अंक**

तमिल टेक्स्ट बुक-कक्षा 10 के लिए गद्य भाग (1994 संस्करण) प्रकाशक-तमिलनाडू टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6, नं0 8 से 14 तक के लिए पाठ पढ़ना है।

7-अविस्तृत अध्ययन- **10 अंक**

Prescribed Book-Sindhanai Selvam (1990) Reprinted in 1994, Published Tamilnadu Text Book Society, Madras-6

Lession to be studied-nos. 1 to 12.

1. Veetiukor Pathaka Saalai-Dr. C. N. Annadurai.
2. Klaaigal-Dr. U. V. Swami Nathan Anyar.
3. Sangakala Atichumurai-N. Andazhaoon.
4. Mozhi Gnayiru Deua Neya Paavane-R. Jlankumara.
5. Ulagam Unndaiya Thu-S. T. Kasirajan.
6. Kaakkum Karangal-Pon. Parama Guru.

7. Vetrikkul or Vazvi- S. Hamid.
8. Kadalukkul or Kulagum-Pera Sriya Irama, Dhatshinam.
9. Kattu Valame Naattu Valam-Pulavarr Thillai The Ayhagunanaar.
10. Varilatru Vaailgal-Pulararka, Shanmugn Sundram.
11. Vuthira Merur Kaattum Vooraa Tchith therthel-Dr. Mo. Iradhuram Singh, Dr. Nu. Govindarajan.

तेलुगू

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घण्टे होगी।

भाग-अ **35 अंक**

1-व्याकरण- **25 अंक**

क-(1) A detailed knowledge of the following- 9 अंक

Telugu Sandhulu-Akra, Jkara, Ukara, Sandulu, Gasad ade vadesa Sandhi, Pump cadese Sandhi Dvirukte Tahara Takara Sandhi.

(2) Prosody : Champakamala, Utpalamala, Mettevhan Shardulan. 4 अंक

(3) Alankaraas-Figures of speech, upama and Atishyoki only. 4 अंक

(4) समास-द्वन्द्व, द्विगु और बहुव्रीहि और रूपाल 4 अंक

ख-मुहावरे और लोकोक्तियां 4 अंक

(किसी एक अत्यधिक प्रचलित एवं जाने-माने का प्रयोग)

2-रचना-

निबन्ध लेखन- **5 अंक**

समाज परिवार और विद्यालय जीवन और तात्कालिक विषय पर लगभग 100 शब्दों का वर्णनात्मक तथा वृत्तात्मक लेख।

3-अपठित गद्य खण्ड का ज्ञान लगभग 100 शब्द **5 अंक**

भाग-(ब) **35 अंक**

1-विस्तृत अध्ययन-

1-गद्य- **12 अंक**

तेलुगू वाचाकम (कक्षा-10) प्रकाशक-आन्ध्रप्रदेश सरकार (नया संस्करण 1988)

1-संदर्भ सहित व्याख्या (2 में से 1) 4 अंक

2-निर्धारित पाठ में से निबन्धात्मक प्रश्न (लगभग 80 शब्द) 4 अंक

3-दो लघुत्तरीय प्रश्न 4 अंक

Lessons to be studied:

1. Tudivinnapamu.
2. Pracheena Vritti Vidhanam.
3. Raju.
4. Rikshavadu.
5. Sonta Puslakam.
6. Srinagara Yatra.

2-पद्य- 12 अंक

तेलुगू वाचाकम (कक्षा-10) प्रकाशक-आन्ध्रप्रदेश सरकार (नया संस्करण 1988)

1-एक पद्य का अर्थ 04 अंक

2-संदर्भ सहित व्याख्या (एक) 04 अंक

3-विषय वस्तु पर प्रश्न (एक) 04 अंक

Poems to be studied:

(1) Bhagiratha Prayatnmu.

(2) Hitokti.

(3) Satyanistha.

(4) Kanyaka.

(5) Sishuvu.

(6) Rudramadevi.

(7) Mahandhroda Yamu.

3-अविस्तृत अध्ययन- **5 अंक**

लघु नाटक

Hindi Ekankikla (Telugu Book) (1980 Edition), Published by National Book Trust (India) A-5, Green Park, New Delhi-110016

Plays to be studied :

1. Padivalu.
2. Kaumudi Mahotoavamu.
3. Tuvvallu.
4. Hindustan ki Velli cheppandi.

4. One Essay type question on the content, Characters and events will be asked. 06 marks

विषय मलयालम

कक्षा-10

केवल प्रश्न-पत्र

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-अ **35 अंक**

1-व्याकरण- **18 अंक**

(1) वाक्य परिवर्तन (पाठ्य पुस्तक पर आधारित)

(2) पर्यायवाची तथा विलोम

(3) अपने शब्दों में व्यक्त करना (च्तंचीतेंपदह)

(4) सन्धि और समास

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषा की चातुर्य को बढ़ावा मिल सके।

2-रचना- **14 अंक**

(क) कहावतें/मुहावरे तथा लोकोक्तियां 03 अंक

(ख) निबन्ध रचना 08 अंक

(ग) पत्र लेखन (प्रार्थना-पत्र, समाचार-पत्र के सम्पादक को व्यावहारिक पत्र लिखना) 03 अंक

3-अपठित गद्यांश- **03 अंक**

भाग-ब **35 अंक**

1-गद्य- **15 अंक**

केरला पाठावली-वाल्यूम संख्या (09) 1987 संस्करण (केवल गद्य भाग)

प्रकाशक-शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम।

निम्नांकित पाठों का अध्ययन करना-

(1) करनानुम करमासमश्यूम

(2) भाविकोरम मीशम

(3) मलायला भाशायले पश्चायता प्रभावम्

(4) वकसुरसरावाग्लास्थवम् दारदुरम्

(5) प्रकृति सौन्दर्यम

(6) कला सौन्दर्यम

2-पद्य- **10 अंक**

केरला पाठावली-वाल्यूम संख्या (09) 1987 संस्करण (केवल पद्य भाग)

प्रकाशक-शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम।

निम्नांकित कवितायें पढ़नी होंगी-

(17) श्री भुविलास्श्रा

(21) इन्टेवेली

(25) मयूर दर्शनम्

(26) करमामानु धरहा

3-अविस्तृत अध्ययन :- **10 अंक**

(1) प्रोफेसरुत लोकम-के0एल0 मोहना वर्मा, पूनद पब्लिकेशन, टी0बी0एस0बिल्डिंग, कालीकट-673001 द्वारा प्राप्त।

निम्न को छोड़कर सभी कहानियाँ पढ़नी होगी--

(1) नकराम

(2) दुगधम्

नैपाली

कक्षा-10 के लिये

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-(अ) 35 अंक

1-प्रायोगिक व्याकरण- **14 अंक**

(क) शब्द उच्चारण और ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन।

(ख) शब्द भेद (उपसर्ग और प्रत्यय)

(ग) मुहावरे और कहावतें।

(घ) वाक्य परिवर्तन।

(ङ) समास

सन्दर्भ पुस्तक-

सरल नैपाली व्याकरण-ले0 राजनारायण प्रधान और जगत,

क्षेत्रीय प्रकाशक-श्याम ब्रदर्स, चौक बाजार, दार्जिलिंग (पं0 बंगाल)

2-अपठित गद्यांश जो वर्णनात्मक विषयों पर आधारित हो। **07 अंक**

जैसे-सामाजिक पर्व, दृश्य और छात्र जीवन की स्मरणीय घटनायें।

3-रचना-

(क) पत्र लेखन **07 अंक**

(1) अपरचित (क्रय-विक्रय, उत्तर, जाँच/प्रश्न)।

(2) नौकरी के लिये आवेदन-पत्र।

(3) सम्पादक के नाम-पत्र।

(4) शिकायतें, क्षमा-प्रार्थना, निवेदन आदि।

(5) निमंत्रण एवं स्मृति-पत्र।

(ख) निबन्ध लेखन- **07 अंक**

पर्व, यात्रा, दृश्य, साहसिक, कार्य और छात्र जीवन की अविस्मरणीय घटनायें।

भाग-(ब) 35 अंक

1-गद्य- **14 अंक**

नैपाली साहित्य, सौरभ-प्रकाशन शिक्षा निदेशालय, पाठ्य पुस्तक अनुभाग, सिक्किम गंगटोक अध्ययन के लिये पाठ-

1- त्यो फेरिफरकला-भवानी भिक्षु।

2- रात भरी हुरी चाल्यों-इन्द्र प्रसाद राय।

3- बहुरी भैंसी-रमेश विकल।

4- सीझा-हृदय चन्द्र सिंह प्रधान।

5- भारतेन्दु रा मोती रंको-डी0आर0 रीमसीमा।

6- रणब्दुल्भ-बाल कृष्ण साम

2-पद्य- **12 अंक**

नैपाली साहित्य, सौरभ-प्रकाशक शिक्षा निदेशालय, पाठ्य पुस्तक अनुभाग,सिक्किम गंगटोक अध्ययन के लिये कवितायें-

1- भानु अस्त्या पक्षी-लेखानाथ पौडियाल।

2- गरीब-लक्ष्मी प्रसाद देव पोटा।

3- केसारी छत्तीस लाग-सिद्ध चरण श्रेष्ठ।

4- सन्तोष-भीम निधि तिवारी।

5- मृत्यु कामना केहि मारा-आगम सिंह गिरि।

6- आकाश को तारा के तारों-हरिभक्त कतवाल।

7- बालक छोरी को हेटा सुमसुम्या औन्दा-द्रुब।

3-थोड़ा अध्ययन के लिये (रैपिड रीडिंग)- **09 अंक**

कथा बिम्ब-प्रकाशक शिक्षा निदेशालय गंगटोक (सिक्किम)

1- ककेया-बालकृष्ण साम।

2- परिबन्द-पुष्कर समसेर।

3- काबी लोवाल-रवीन्द्र नाथ टैगोर।

4- ओडत्तीन पात्र-ओ हेन्द्री।

नोट-निर्धारित पाठ्य पुस्तक के लघु स्तरीय एवं निबन्धात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।

ENGLISH

CLASS–X

इसमें एक प्रश्न पत्र 70 अंकों का तथा समय 03 घण्टे होगा। प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन हेतु 30 अंक निर्धारित जिसका आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

अंग्रेजी विषय की पाठ्य वस्तु निम्नवत् निर्धारित है :-

1. Prose– **16 marks**

1. The Enchanted Pool by–C. Rajgopalachari.
2. A Letter to God. by–G. L. Fuents.
3. The Ganga. by–Pt. J. L. Nehru.
4. Socrates. by–Rhoda Power.
5. Torch Bearers. by–W. M. Ryburn.
6. Our Indian Music (Stories and Anecdote) by–R. Srinivasan.

2. Poetry– **7 marks**

1. The Fountain by–James Russell Lowell
2. The Psalm of Life by–H. W. Longfellow
3. The Perfect Life by–Ben Jonson
4. The Nation Builders by–R. W. Emerson

3. Supplementary Reader– **12 marks**

1. The Inventor Who Kept His Promise
2. The Judgement Seat of Vikramaditya by–Sister Nivedita (Adapted)
3. The Greatest Olympic Prize by–Jesse Owens

Grammar, Translation and Composition

Introduction

I Engligh Grammar– **15 marks**

1. Parts of Sentence.
2. The Sentence Type.
3. The verb. (Transitive Verb and Intransitive Verb)
4. Primary auxiliaries. (Be, Have, Do).

5. Modal auxiliaries.
6. Negative Sentence.
7. Interrogative Sentence.
8. Tense : Form and Use.
9. The Passive Voice.
10. The Parts of Speech.
11. Indirect or Reported Speech.
12. Word Formation.
13. Punctuation and Spelling.

II Translation : (From Hindi to Engligh) **4 marks**

III (A) Composition :

(a) Long Composition. **6 marks**
(b) Controlled Composition.

(B) Letter Writing/Application Writing. **4 marks**

(C) Comprehension (Unseen). **6 marks**

Appendices

1. Words often Confused.
2. Synonyms and Antonyms.
3. Cries of Birds and Animals.
4. Glossary.

विषय-संस्कृत

कक्षा-X

इसमें एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों तथा समय 3 घण्टे का होगा।

इस विषय में 70 अंक की लिखित परीक्षा होगी तथा 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी उल्लेख होगा तथा उसके उत्तर के रूप में तीन या चार उत्तर प्रश्न-पत्र में अंकित होंगे। उनमें से एक शुद्ध उत्तर होगा। उसका उल्लेख पुस्तिका में छात्र को अंकित करना होगा तथा उनका अंक विभाजन निम्नवत् होगा--

1-आशुपाठ	1 अंक
2-प्रत्याहारों का सामान्य परिचय	1 अंक
3-सन्धि	1 अंक
4-शब्दरूप	1 अंक
5-धातुरूप	1 अंक
6-समास	1 अंक
7-कारक	1 अंक
	योग- 7 अंक

खण्ड 'क' (गद्य, पद्य आशुपाठ)-- **35 अंक**

गद्य

1-गद्य खण्ड का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 2+5=7 अंक

2-पाठ सारांश 4 अंक

पद्य

1-पद्यांश की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या 2+5=7 अंक

2-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या 1+2=3 अंक

3-किसी एक श्लोक का संस्कृत में अर्थ 5 अंक

आशुपाठ-

1-पात्र चरित्र-चित्रण (हिन्दी में) 4 अंक

2-लघु उत्तरीय प्रश्न (संस्कृत में) 5 अंक

खण्ड 'ख' (व्याकरण, अनुवाद, रचना) **35 अंक**

व्याकरण-

1-प्रत्याहारों का सामान्य परिचय एवं वर्णों का उच्चारण स्थान 2 अंक

2-सन्धि 3 अंक

1-स्वर सन्धि-इकोयणचि, एचोऽयवायावः, आद्गुणः वृद्धिरेचि, अंकः सवर्णे दीर्घः।

2-हल् सन्धि-स्तोः श्चुनाश्चुः, ष्टुनाष्टुः, झलांजशोऽन्ते, मोऽनुस्वारः अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

3-विसर्ग सन्धि-विसर्जनीयस्य सः, ससजुषोरूः, अतोरोरप्लुतादप्लुते, हशि च।

3-शब्द रूप- 2 अंक

अ-पुल्लिङ्ग-पितृ, भगवत्, गो, करिन्, राजन्।

ब-स्त्रीलिङ्ग-नदी, धेनु, वधू, सरित्।

स-नपुंसकलिङ्ग-वारि, मधु, नामन्, मनस, किम्, यद्, अदस्।

4-धातुरूप--(लट्, लृट्, लोट्, लङ् तथा विधिलिङ् लकारों में)- 2 अंक

अ-परस्मैपद-भू, पा, वस्, स्था, नश्, आप, इष्।

ब-आत्मनेपद-वृध्, जन्।

स-उभयपद-नी, दा, ज्ञा, चुर्।

5-समास--समासों के विग्रह सहित उदाहरण- 2 अंक

अव्ययीभाव, द्विगु, बहुव्रीहि।

6-कारक--विभक्ति--निम्न सूत्रों के आधार पर कारक-विभक्ति ज्ञान एवं प्रयोग 2 अंक

कर्तुरीप्सिततमं कर्मः-कर्मणि द्वितीया, साधकतमं करणम्

कर्तृकरणयोस्तृतीया, कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्-

चतुर्थी सम्प्रदाने, ध्रुवमपायेऽपादानम् अपादाने पंचमी,-

आधाराऽधिकरणम्-सम्तम्यधिकरणे च।

7-प्रत्यय-क्त, क्तवतु, क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, मतुप्, ठक्, त्वा, तल्, टाप्, अनीयर्, इन्। 2 अंक

8-वाच्य परिवर्तन 2 अंक

अनुवाद-

1-हिन्दी अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद 6 अंक

रचना-

1-निबन्ध (कम से कम आठ वाक्य) 8 अंक

2-संस्कृत शब्दों का वाक्यों में प्रयोग 4 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक

निम्नलिखित पाठ्य-पुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्यवस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश का अध्ययन करना होगा)-

1-संस्कृत व्याकरण-1-प्रत्याहारों का सामान्य परिचय एवं उच्चारण स्थान

2-सन्धि-स्वर, व्यंजन, विसर्ग सन्धियों का परिचय एवं अभ्यास

3-समास-अव्ययीभाव, द्विगु, बहुव्रीहि।

4-कारक एवं विभक्ति परिचय।

5-वाच्य-परिवर्तन।

6-अनुवाद-

1-सामान्य नियमों सहित अभ्यास।

2-कारक एवं विभक्ति ज्ञान।

3-अनुवाद अभ्यास।

7-प्रत्यय।

8-शब्दरूप-संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्या वाचक शब्दों के तीनों लिङ्गों में रूप।

9-धातुरूप-परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद में धातुओं के रूप।

10-संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग।

11-संस्कृत वाक्य शुद्धि-

12-संस्कृत में निबन्ध-

1-विद्या

2-सदाचारः

3-परोपकारः

4-सत्संगति

5-अहिंसा परमोधर्मः

6-मातृभूमिः

7-वसुधैव कुटुम्बकम्

8-राष्ट्रीय एकता

9-अनुशासनम्

10-राष्ट्रपिता महात्मागांधी

11-संस्कृत भाषायाः महत्वम्

12-भारतीय कृषकः

13-हिमालयः

14-तीर्थराज प्रयागः

15-वनसम्पत्

16-पर्यावरणम्

17-परिवार कल्याणम्

18-राष्ट्रपक्षी मयूरः

19-यौतुकम्

20-दूरदर्शनम्

21-क्रिकेटक्रीडनम्

संस्कृत गद्य भारती

संस्कृत साहित्य पर एक दृष्टि

1-कविकुलगुरूः कालिदासः

2-उद्भिज्ज-परिषद्

3-नैतिकमूल्यानि

4-भारतीय जनतन्त्रम्

5-विश्वकविः रवीन्द्रः

6-कार्यं का साधयेयम् देहं वा पातयेयम्

7-भारत जनसंख्या-समस्या

8-आदि शंकराचार्यः

9-संस्कृतभाषायाः गौरवम्

10-मदनमोहन मालवीयः

11-जीवनं निहितं वने

12-लोकमान्यः तिलकः

13-गुरुनानकदेवः

14-योजना महत्वम्

15-गजेन्द्रमोक्षः

संस्कृत पद्य पीयूषम्-

1-लक्ष्य-वेध-परीक्षा

2-वर्षावैभवम्

3-वृक्षाणां चेतनत्वम्

4-सूक्ति सुधा

5-क्षान्ति-सौख्यम्

6-नगाधिराजः

7-विद्यार्थीचर्या

8-सिद्धार्थस्यनिर्वेदः

9-गीतामृतम्

10-उपनिषत्-सुधा

11-जीव्याद् भारतवर्षम्

परिशिष्ट

कथा नाटक कौमुदी-

1-महात्मनः संस्मरणानि

2-कारुणिको जीमूतवाहनः

3-धैर्यधनाः हि साधवः

4-यौतुकः पापसञ्चयः

5-भोजस्य शल्यचिकित्सा

6-ज्ञानं पूततरं सदा

पालि

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक लिखित प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

1-गद्य-पालि-जातकावलि पाठ 8 से 14 तक 15

(क) दो अवतरणों में से किसी एक अवतरण का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद 2+8=10

(ख) किन्हीं दो जातकों में से किसी एक जातक की कथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी में 05

2-पद्य-धम्मपद-पण्डित बग्गों दण्ड बग्गों तक (पाठ 6 से 10 तक)- 15

(क) दो गाथाओं में से किसी एक गाथा का हिन्दी अनुवाद 05

(ख) दो बग्गों में से किसी एक बग्गों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में सारांश 05

(ग) धम्मपद का पाठ 6 से 10 के अन्तवर्ती गाथा का लेखन जो प्रश्न-पत्र में न आया हो 05

3-अपठित-गद्य-निर्धारित पाठ (वेदभजातकं, राजोंवादजातकं) 05

मखादेव-जातकं (सन्दर्भित ग्रन्थ पालि जानकावलि)

4-सहायक पुस्तक सिंगलसुत सुचं- 10

(क) दो अवतरणों या गाथाओं में से किसी एक का हिन्दी अनुवाद 05

(ख) सिंगाल सुत्त की विषय वस्तु, निदान कथा, मित्र के गुण 05

अमित्र के लक्षण आदि पर आधारित सामान्य प्रश्न

5-व्याकरण 3+2+5+5=15

(क) शब्द रूप-पुलिंग = मुनि, भिक्खु

स्त्री लिंग = लता, इस्थी, धेनु

नपुंसक लिंग = आयु पोत्थक

(ख) धातु रूप-भविष्यत् काल, लोट लकार

भू, हस, वद, चज, दिस, नम, सर के रूप

(ग) संधि-व्यंजन सन्धि

व्यंजन दीघरस्सा, सरम्हाद्वेवदे, चतुत्थदुतिये स्वेतं ततियपठमा

(घ) समास-कर्मधारय समास, द्वन्द्व समास की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण

6-अनुवाद-हिन्दी के तीन वाक्यों का वर्तमान एवं भविष्यत् कालिक क्रिया में अनुवाद 05

अथवा

निबन्ध-पालि भाषा में छः सरल वाक्यों में किसी एक पर निबन्ध-

कुसीनारा, बोध गया, पालि भाषा, राजा असोकी, बुद्ध धम्मों, इसिपतन

7-पालि साहित्य का इतिहास संक्षिप्त परिचय-- 05

द्वितीय संगीति, तृतीय संगीति, विनयपिटक एवं अभिधम्मंपिटक के ग्रन्थ तथा इनका परिचय-

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें--

(I) पालि जातकावलि-	पं0 बटुक नाथ शर्मा प्रकाशक-मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी।
(II) पद्य-धम्मपद-	सम्पादित-धर्म भिक्षु रक्षित, प्रकाशक-मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी।
(III) सिगल सुत्तं-	अनुवादक-लल्लन मिश्र, सम्पादक-भिक्षुसिननायक, प्रकाशक-अखिल भारतीय युवाबौद्ध परिषद् कुशीनगर।
(III–ए) सिंगाल सुत्त	अनुवादक-डा0 भिक्षु स्वरूपानन्द, सम्यक् प्रकाशन दिल्ली, 2010
(IV) व्याकरण-	
(क) पालि प्रवेशिका-	लेखक-आद्यदत्त ठाकुर एम0ए0-प्रकाशक-पुस्तक माला, लखनऊ।
(ख) पालि व्याकरण-	लेखक-भिक्षुकधर्म रक्षित, प्रकाशक-ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
(ग) मैनुअल आफ पालि-	लेखक-सी0सी0 जोशी, ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।
(घ) पालि व्याकरण एवं पालि साहित्य का इतिहास-	लेखक-राज किशोर सिंह, प्रकाशक-विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
(ङ) पालि महा व्याकरण-	भिक्षु जगदीश कश्यप, एम0ए0, प्रकाशक-महाबोधि सारनाथ, वाराणसी।
(च) पालि साहित्य का इतिहास-	लेखक-डा0 कोमल चन्द जैन, प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

अरबी

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंक का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग एक-35 अंक

1-कवाइद- **10-अंक**

1-फेल, फाइल, मफऊल बनाने का तरीका

2-मरफूआत और मन्सूबात

3-मफाइले खम्सा, इन्नावकाना की अस्वातेही

4-हुरूफे अल्फ

5-जमाइर

6-वाहिद और तस्निया

7-जमा मुकस्सर, जमा सालिम, जमा किल्लत, जमा कसरत

2-तर्जुमा-

(क) अरबी के आसान जुमलों का अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू में तर्जुमा **5-अंक**

(ख) अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू के आसान जुमलों का अरबी में तर्जुमा **5-अंक**

3-दिये गये अल्फाज का अरबी जुमलों में इस्तेमाल **5-अंक**

4-दिये गये उन्वानात पर मजमून/खुतूत नवैसी **10-अंक**

भाग-दो

निसाबी किताब--अलकिरातुर्रशीदह भाग-2 लेखक--अब्दुलफत्ताह व अलीउमर (मतबूआ मिश्र)

पब्लिकेशन-एम0 रशीद एण्ड सन्स, उर्दू बाजार, दिल्ली।

1-नस्र (गद्य) **25-अंक**

इस भाग में दर्ज जैल असबाक निसाब में शामिल हैं--

उन्वानात	**सबक नं0**
1- जजाउस्सिदक	1
2- अल अदबो असासुन्निजाह	4
3- मजीयतुत्तस्वीर	10
4- अन्नमिरो	13
5- अल अस्फन्ज	17
6- अम्मोमेहनते तख्तारि	19
7- अश्शाय	23
8- हीलतुल अन्कबूत	29
9- अलमाओ	30
10- अलगुराबो वलजराहते	31
11- अलअहराम	34
12- जमाअतुलफीरान	35
13- अलखादिमो वस्समकते	45
14- अत्ताइरतो	48
15- अश्शुजाअतो वलजुब्नों	49
16- अलफातातुश्शुजाअते	59

2-नज्म (पद्य) **10 अंक**

दर्ज जैल नज्में निसाब में शामिल हैं--

उन्वानात	**सबक नं0**
17- अन्नहलतो वज्जिम्बार	8
18- वलातस्नइलमारूफ फीगैरेही	18
19- मशीयतुलगुराबे	46
20- जजाउलवाल्दैने	54

फारसी

(कक्षा-10 के लिये)

इस विषय में 70 अंक का लिखित प्रश्न-पत्र होगा तथा 30 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (अ) 35 अंक

(1) व्याकरण : **07 अंक**

(क) लफज मुफरद-अजमाए-कलाम (Parts of Speech)

laKk (Noun) (इस्म)

(ख) सर्वनाम (Pronoun) जमीर

(ग) हर्फजार (Preposition)

(घ) क्रिया (Verb) (फेल)

(ङ) व्युत्पति (i) मुख्य व्युत्पति (ii) गौण व्युत्पति (उपसर्ग)

(Primary Derivatives and Secondary Derivatives)

(2) अनुवाद :--

(क) फारसी के साधारण वाक्यों का अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा उर्दू भाषा में अनुवाद कराने का अभ्यास। **07 अंक**

(ख) अंग्रेजी अथवा हिन्दी या उर्दू के साधारण वाक्यों का आसान फारसी जुबान में अनुवाद कराये जाने का अभ्यास। **07 अंक**

(3) फारसी के शब्दों का आसान फारसी जुबान में वाक्य प्रयोग (फारसी अलफाज) का फारसी जुमलों में इस्तेमाल। **06 अंक**

(4) रचना

(क) फारसी जुबान में मुखतसर इकतीबास लिखने का अभ्यास करना (Precise writing) **04 अंक**

(ख) पत्र लेखन का अभ्यास **04 अंक**

भाग (ब)--35 अंक

1- पाठ्य पुस्तक (गद्य तथा पद्य)

निर्धारित पुस्तक--

"फारसी बदस्तूर" किताब अव्वल (खण्ड-1) **1997**

लेखक--**(Khan Lari)**--मेसर्स इदारए अददियाते दिल्ली जययद--प्रेस बल्ली

मारान, दिल्ली--110006 में से निम्नलिखित गद्य पाठ तथा (Poem) का अध्ययन कराना है। **20 अंक**

पाठ-34 किस्साए बहराम व कनीजक (1)

पाठ-26 किस्साए बहराम व कनीजक (2)

पाठ-27 किस्साए बहराम व कनीजक (3)

पाठ-28 दस्तूर--जबाने फारसी--इस्मेआम व इस्मेखास (कवायद)

पाठ-29 अदीसन (1)

पाठ-30 अदीसन (2)

पाठ-31 दस्तूर जबाने फारसी (जमीर) (कवायद)

पाठ-35 दो (टू) हिकायत अजगुलिस्ताने सादी

पाठ-36 जश्न सादा

पाठ-37 सदा (नज्म)

पाठ-42 दस्तूर जबाने फारसी (फेललजिम वफेल मूतअदी) (कवायद)

पाठ-43 किस्याकुजाकि मूसा

पाठ-46 माजनदरान (नज्म)

पाठ-47 शाबान गोशफन्द

पाठ-53 नगीने अंमुश्तरी

पाठ-55 किताब (नज्म)

2-जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, ट्रैफिक की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे। **15 अंक**

विषय--गृह विज्ञान

कक्षा-10

(केवल बालिकाओं के लिए)

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 3 घण्टे का होगा।

क्रम संख्या	इकाई	अंक
1-	गृह प्रबन्ध	15
2-	स्वास्थ्य रक्षा	15
3-	वस्त्र और सूत विज्ञान	10
4-	भोजन तथा पोषण विज्ञान	15
5-	प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या	15

कुल 70 अंक

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन--30 अंक

योग--100 अंक

1--गृह प्रबन्ध **15 अंक**

(1) शिक्षिका द्वारा प्रति वर्ष बजट का प्रदर्शन।

(2) आय-व्यय और बचत, डाकखाना और बैंक के माध्यम से।

(3) घर की सफाई और सजावट।

(4) गृह गणित--दशमलव, जोड़ना, घटाना, गुणा तथा भाग (रुपया, पैसा, किलोग्राम, ग्राम, मीटर, सेन्टीमीटर के सन्दर्भ में) प्रतिशत, लाभ हानि तथा साधारण ब्याज पर सरल गणनायें।

2--स्वास्थ्य रक्षा **15 अंक**

(1) जल, जल के स्रोत और उपयोग।

(2) घरेलू विधियों से जल शुद्ध करना।

(3) अशुद्ध जल से फैलने वाले रोग।

(4) पर्यावरण और जन-जीवन पर उसका प्रभाव।

(5) कुछ सामान्य रोगों के कारण और उनकी रोकथाम, चेचक, छोटी माता, खसरा, डिप्थीरिया, कुकुरखाँसी, टिटनेस, क्षयरोग, मियादी बुखार, पेचिस, अतिसार, हैजा और विषैला भोजन (फूड-प्वायजनिंग)।

3--वस्त्र और सूत विज्ञान **10 अंक**

(1) सिलाई किट--बेबीफ्राक या कुर्ता, पायजामा या पेटीकोट उपलब्धि के अनुसार (हाथ की सिलाई अथवा मशीन की सिलाई द्वारा)।

(2) कपड़ों की धुलाई तथा रख-रखाव, धोने की विधियाँ और इस्तरी करना।

4--भोजन तथा पोषण विज्ञान **15 अंक**

(1) रसोई घर की व्यवस्था, देख-रेख और सफाई।

(2) भोजन पकाने और परोसने की आधारित विधियाँ, तत्वों की सुरक्षा का ध्यान रखना।

(3) निम्न रोगों के रोगियों का भोजन, रोग की अवधि में और स्वास्थ्य लाभ के समय का भोजन, तीव्र ज्वर और दीर्घ स्थाई ज्वर, अतिसार, पेचिस, गैस्ट्रोटाइटिस, मियादी बुखार, मलेरिया, क्षयरोग, लू लगना।

5--प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या **15 अंक**

(1) मानव अस्थि संस्थान तथा संधियाँ।

(2) हड्डियों की टूट और मोच।

(3) श्वसन तन्त्र का प्रारम्भिक ज्ञान।

(4) प्राकृतिक और कृत्रिम श्वसन क्रिया।

(5) घायल स्थानान्तरण हस्त आसन द्वारा।

(6) रोगी का स्पंज करना, गर्म सेंक--भपारा लेना, बर्फ की टोपी का प्रयोग।

(7) नाड़ी, श्वास गति और ताप का चार्ट बनाना।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक होगा। **15 अंक**

(खण्ड क)

(1) किसी एक स्थान (घर या पाठशाला कक्ष) की सफाई की दैनिक आख्या तैयार करना।

(2) किसी एक लकड़ी के फर्नीचर की सफाई और पालिश करना।

(3) धातु की किसी एक वस्तु की सफाई।

(4) प्रति वर्ष बजट का अभिलेख रखना।

(खण्ड ख)

(1) छात्राओं द्वारा सिलाई का किट तैयार करना।

(2) बेबी फ्राक या कुर्ता पायजामा या पेटीकोट सिलना।

(3) वस्त्रों की धुलाई--सूती, रेशमी, ऊनी तथा कृत्रिम रेशे के वस्त्रों को धोना।

(खण्ड ग)

(1) भोजन पकाने की सही विधियाँ--उबालना, भाप में पकाना, तलना, स्ट्यू करना, धीमी आँच में पकाना, भूँजना।

(2) भोजन का परोसना।

(3) रोगी का भोजन, फटे दूध का पानी, साबूदाना का पानी, खिचड़ी, तरकारियों का सूप और सब्जियों का रस, फलों के रस, पना।

(खण्ड घ)

(1) कृत्रिम श्वास देने की विधियाँ।

(2) हस्त आसन द्वारा स्थानान्तरण।

(3) स्पंज करना, गर्म सेंक (पुल्टिस), भपारा लेना, बर्फ की टोपी और गर्म पानी की थैली का प्रयोग।

(4) ताप का चार्ट बनाना।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यार्थियों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्यों की सूची **पूर्णांक-15**

नोट :--दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से करायें। प्रोजेक्ट कार्यों की फाइल तैयार कराना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रोजेक्ट पाँच अंक का है। शिक्षक पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। प्रोजेक्ट कार्य का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

1- घर का आय--व्यय बजट तैयार करना।

2- निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए बचत पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट लिखिये--

(i) भविष्य निधि योजना

(ii) राष्ट्रीय बचत-पत्र

(iii) किसान विकास-पत्र

3- गृह विज्ञान में गृह गणित के योगदान पर एक रिपोर्ट लिखिये।

4- अपने विद्यालय के जल शुद्धिकरण व्यवस्था पर एक प्रोजेक्ट लिखिये तथा उसमें क्या सुधार किया जा सकता है।

5- अशुद्ध जल से फैलने वाले प्रमुख रोगों के नाम लक्षण व बचाव की सूची।

6- चार्ट के माध्यम से पर्यावरण एवं जन-जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाइए।

7- एक प्रोजेक्ट तैयार करें जिसमें पाठ्य-क्रमानुसार सभी वस्त्रों की नाप एवं पेपर कटिंग लगायें।

8- सिलाई किट तैयार करना।

9- वस्त्रों की देखभाल एवं डिटर्जेन्ट का प्रयोग।

10- एक दिन खाये जाने वाले खाद्य पदार्थों की सूची तैयार करके उसमें विद्यमान पोषक तत्वों को सूचीबद्ध करना।

11- एक चार्ट पेपर पर श्वसन-तंत्र का चित्र बनाइये तथा अंगों के नाम दर्शाइए।

12-मानव अस्थि तंत्र को चार्ट पेपर पर बनाइये एवं प्रमुख अंगों को दर्शाइए।

विज्ञान

कक्षा-X

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय-3 घण्टे का होगा।

		अंक	कालांश
इकाई-1	प्रकाश	10	30
इकाई-2	विद्युत तथा विद्युत धारा का प्रभाव	15	45
इकाई-3	रासायनिक पदार्थ-प्रकृति एवं व्यवहार	10	45
इकाई-4	कार्बनिक रसायन	10	20
इकाई-5	जैव जगत	15	45
इकाई-6	आनुवंशिकी एवं जैव विकास	10	35
	योग . .	70 अंक	220
	प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन--	30 अंक	
	कुल योग . .	100 अंक	

इकाई-1 **प्रकाश** **10 अंक**

- **परावर्तन**

  प्रकाश का परिपाटी, गोलीय दर्पण व सम्बन्धित परिभाषायें, गोलीय दर्पणों द्वारा प्रतिबिम्ब का बनना

  चिन्ह परिपाटी, दर्पण सूत्र-$1/f = 1/u+1/v$ का निगमन

- **अपवर्तन--**

  अपवर्तन के नियम, स्नैल का नियम, अपवर्तनांक, सापेक्ष अपवर्तनांक, पूर्ण आन्तरिक परावर्तन, दैनिक जीवन में प्रयोग, गोलीय लेंसों द्वारा अपवर्तन, लेंसों द्वारा प्रतिबिम्ब का बनना, लेंस सूत्र--1/f=1/v-1/u (निगमन नहीं), आवर्धन क्षमता, प्रिज्म से प्रकाश का अपवर्तन, श्वेत प्रकाश का विक्षेपण, प्रकाश का प्रकीर्णन।

- मानव नेत्र, नेत्र की संमजन क्षमता, नेत्र लेंस की फोकस दूरी और रेटिना पर प्रतिबिम्ब का बनना, दृष्टि-दोष (निकट, दीर्घ व जरादूर-दृष्टिता) एवं निवारण।

- संयुक्त सूक्ष्मदर्शी व खगोलीय दूरदर्शी की संरचना, सिद्धान्त क्रियाविधि व आवर्धन क्षमता (सूत्र का निगमन नहीं)।

इकाई-2 विद्युत तथा विद्युत धारा के प्रभाव 15 अंक

- **विद्युत--**

  विद्युत ऊर्जा के स्रोत, विद्युत धारा, विभव व विभवान्तर, विद्युत परिपथ आरेख, ओम का नियम, प्रतिरोध, प्रतिरोधों का संयोजन (श्रेणी क्रम, समान्तर क्रम) के सूत्र का निगमन।

- **विद्युत धारा का ऊष्मीय प्रभाव--**

  विद्युत धारा का ऊष्मीय प्रभाव, विद्युत धारा प्रतिरोध और समय में सम्बन्ध, चालक में उत्पन्न ऊष्मा की माप, विद्युत सामर्थ्य, विद्युत ऊर्जा के विभिन्न मात्रक, ऊष्मीय प्रभाव पर आधारित उपकरण, घरेलू वायरिंग, फ्यूज, विद्युत के खतरे व सुरक्षा युक्ति।

- **विद्युत धारा का चुम्बकीय प्रभाव--**

  विद्युत धारा का चुम्बकीय प्रभाव, चुम्बकीय क्षेत्र, तीव्रता, चुम्बकीय बल रेखायें, कुण्डली तथा परिनालिका, धारावाही सीधे तार से उत्पन्न चुम्बकीय क्षेत्र, दायें हाथ के अंगूठे का नियम, दक्षिणावर्त पेंच का नियम, वृत्तीय कुण्डली में प्रवाहित विद्युत धारा का चुम्बकीय क्षेत्र, धारावाही परिनालिका द्वारा चुम्बकीय क्षेत्र, चुम्बकीय क्षेत्र में स्थित धारावाही चालक पर बल, गतिमान आवेश पर बल, फ्लेमिंग का बाएं हाथ का नियम, विद्युत मोटर, विद्युत चुम्बकीय प्रेरण का प्रारम्भिक ज्ञान, विद्युत जनित्र डी0सी0 एवं ए0सी0।

इकाई-3 रासायनिक पदार्थ--प्रकृति एवं व्यवहार 10 अंक

- **अम्ल, क्षार व लवण--**

  अम्ल, क्षार की अवधारणा (H_3O^+ OH^- 04^- के आधार पर) सूचक (litmus paper, phenopthaline, methyle orange) pH-स्केल, अम्ल व क्षार के रासायनिक गुण, उदासीनीकरण अभिक्रिया, लवण व लवणों के प्रकार-सामान्य अम्लीय, क्षारीय, द्विक, संकर लवण, कुछ लवणों के निर्माण विधि तथा सामान्य गुणधर्म एवं उपयोग--

  1- धावन सोडा

  2- बेकिंग सोडा

  3- फिटकरी

  4- विरंजक चूर्ण

  5- नौसादर

- **धातु तथा अधातु--**

  सामान्य परिचय, धातु व अधातु के सामान्य रासायनिक गुण, धातुओं की सक्रियता (वैद्युत रासायनिक श्रेणी के आधार पर) धातु कर्म--अयस्क, खनिज कॉपर के अयस्क तथा कॉपर पाइराइट से शुद्ध कॉपर का निष्कर्षण, मिश्रधातु।

  अधातु--SO_2 व NH_3 गैस का निर्माण व इनके रासायनिक गुण धर्म तथा उपयोग।

- **तत्वों का वर्गीकरण--**

  तत्वों के वर्गीकरण की अवधारणा--डोबेराइनर का त्रिक सिद्धान्त, न्यूलैंडस का अष्टक सिद्धान्त, मेण्डलीफ की आवर्त सारणी के सामान्य लक्षण, समूह तथा आवर्त, आवर्ती गुण (परमाणु आकार, संयोजकता तत्वों के आक्साइड की प्रवृत्ति), मेण्डर्लीफ की आवर्त सारणी की उपयोगिता तथा कमियाँ, आधुनिक आवर्त नियम, आधुनिक आवर्त सारणी।

इकाई-4 कार्बनिक रसायन **10 अंक**

- कार्बन की संयोजकता--कार्बन का श्रृंखलीय गुण, कार्बन के यौगिक बनाने की क्षमता, कार्बनिक यौगिक, क्रियात्मक समूह (–OH–CHO–COOH>CO) सजातीय श्रेणी, IUPAC नामकरण।

- **कार्बनिक यौगिक--**

  हाइड्रोकार्बन (एलीफैटिक तथा एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन), एलीफैटिक हाइड्रोकार्बन के प्रकार (संतृप्त व असंतृप्त) CH_4, C_2H_4 के सामान्य गुणधर्म व उपयोग, CH_3COOH तथा C_2H_5OH के निर्माण की प्रयोगशाला विधि (केवल अभिक्रिया) इनके गुण व उपयोग पेट्रोलियम के प्रभाज उनके सामान्य गुण व उपयोग, साबुन, साबुनीकरण, (केवल अभिक्रिया) साबुन की सफाई प्रक्रिया (micell की अवधारणा के आधार पर)

इकाई-5 जैव-जगत **15 अंक**

- **मानव शरीर की संरचना--**

  अध्यावरणी तंत्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, परिसंचरण तन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र, प्रजनन तन्त्र की संरचना (संक्षिप्त विवरण)।

- **जीवन की प्रक्रियायें--**

  पोषण, श्वसन, परिवहन (मनुष्य में आन्तरिक परिवहन) प्रकाश संश्लेषण, वाष्पोत्सर्जन, पौधों में आन्तरिक परिवहन

- **पौधों और जन्तुओं में नियन्त्रण और समन्वयन--**

  पौधों में समन्वयन--पादप हारमोन, आक्सिन, जिबरेलिन, साइटोकाइनिन, एब्सिसिक अम्ल, एथिलीन गैस, जन्तुओं में रासायनिक समन्वयन--अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ एवं हारमोन्स जन्तुओं में तंत्रिका समन्वय--प्रतिवर्ती क्रिया (संक्षिप्त वर्णन) पौधों और जन्तुओं में जनन, परिवार नियोजन की आवश्यकता और विधियाँ।

- **तम्बाकू, अल्कोहल और नशीली दवायें--**

  धूम्र-पान के प्रभाव, कैंसर, अल्कोहल तथा वाहन चालन, नशीली दवाओं के प्रभाव।

इकाई-6 आनुवांशिकी एवं जैव विकास **10 अंक**

- **आनुवांशिकता के सिद्धान्त--**

  मेंडल आनुवांशिकी के जनक, मेंडल का प्रयोग, प्रमुख शब्दावली, मेंडल के नियम (उदाहरण सहित)।

- **मानव आनुवांशिकी--**

  आनुवांशिक पदार्थ, मानव में लिंग निर्धारण, लिंग सहलग्न लक्षण, हीमोफीलिया, वर्णान्धता तथा सिकिल सैल एनीमिया, जैव प्रौद्योगिकी--अर्थ एवं उपयोगिता।

- जीवन की उत्पत्ति एवं मिलर का प्रयोग--

- जैव विकास--लैमार्कवाद, डार्विनवाद एवं उत्परिवर्तनवाद (संक्षेप में)

प्रयोगात्मक

- प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक होगा।

- प्रयोगात्मक कार्य का अंक विभाजन निम्नवत् है :--

1- तीन प्रयोग (प्रत्येक खण्ड से एक) -- 3 X 3 = 09 अंक

2- मौखिक कार्य-- -- 03 अंक

3- सत्रीय कार्य-- 03 अंक

कुल -- 15 अंक

1- परावर्तन के नियमों का सत्यापन करना।

2- अपवर्तन के नियमों का सत्यापन करना।

3- दण्ड-चुम्बक की बल रेखाओं का अध्ययन करना।

4- प्रतिरोधक का धारा वोल्टता रेखाचित्र खींचना।

5- श्रेणी तथा समान्तर क्रमों में प्रतिरोधों के संयोजन का तुल्य प्रतिरोध ज्ञात करना।

6- H पेपर/सार्वत्रिक सूचक (Universal indicator) का प्रयोग करके निम्नलिखित मूलों का H ज्ञात करना--

(i) तनु HCl (ii) तनु NaOH विलयन (iii) तनु-एथेनोइक एसिड विलयन

(iv) नीबू का रस (v) जल (vi) तनु सोडियम बाई कार्बोनेट विलयन

7- अम्ल तथा क्षार के गुणों का अध्ययन, HCl तथा NaOH को निम्न के साथ अभिक्रिया कराके--

(i) लिटमस विलयन (नीला/लाल), (ii) जिंकधातु, (iii) ठोस सोडियम कार्बोनेट

8- Zn, Fe, Cu तथा Al धातुओं का निम्नलिखित लवण विलयनों से अभिक्रिया का निरीक्षण--

(i) $ZnSO_4$ (aq), (ii) $FeSO_4$ (aq), (iii) $CuSO_4$ (aq), (iv) $Al_2(SO_4)_3$ (aq)

9- उपरोक्त से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर Zn, Fe, Cu तथा Al धातुओं को अभिक्रिया की कोटि के अनुसार व्यवस्थित करना।

10- एसीटिक एसिड के निम्नलिखित गुणों का अध्ययन करना--

(i) गंध, (ii) जल में विलेयता, (iii) लिटमस पर प्रभाव, (iv) सोडियम कार्बोनेट से अभिक्रिया।

11- प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में O_2 (आक्सीजन) गैस बाहर निकलती है, का प्रदर्शन करना।

12- रक्त की स्लाइड बनाना एवं अध्ययन करना।

13- श्वसन में ऊष्मा उत्पन्न होती, का प्रदर्शन करना।

14- वाष्पोत्सर्जन का प्रदर्शन करना।

15- स्टोमेटा की स्लाइड बनाना।

टिप्पणी--प्रत्येक विद्यार्थी के पास विज्ञान की एक प्रयोगात्मक नोट बुक होगी जिसमें प्रयोगात्मक कार्य का दैनिक रिकार्ड दर्ज किया जायेगा जिसकी सही ढंग से जाँच होनी चाहिये और इसे प्रयोगात्मक परीक्षा के समय प्रस्तुत किया जाय।

प्रोजेक्ट कार्य की सूची

पूर्णांक-15 अंक

नोट :-- दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। प्रत्येक खण्डों (भौतिक, रसायन व जीव विज्ञान) में से एक-एक प्रोजेक्ट कार्य व प्रोजेक्ट फाइल तैयार कराना अनिवार्य होगा। शिक्षक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। तीनों प्रोजेक्ट का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

1-- H पेपर/सार्वत्रिक सूचक का प्रयोग कर निम्नलिखित प्राकृतिक उत्पादों के H मान एवं अम्लीय व क्षारीय विलयन में रंग परिवर्तन का अध्ययन करना :--

(1) नीबू का रस (2) चुकन्दर का रस (3) पत्ता गोभी का रस

(4) उबले हुए मटर का पानी (5) गुलाब की पंखुड़ियों का रस

2-- **रासायनिक उद्यान (केमिकल गार्डेन) बनाना :--**

(काँच का जार, बालू वाटर-ग्लास विलयन, कॉपर सल्फेट, कोबाल्ट सल्फेट या मैंगनीज सल्फेट के क्रिस्टल)

3-- विभिन्न अम्ल-क्षार उदासीनीकरण अभिक्रियाओं में उत्पन्न ऊष्मा का प्रायोगिक प्रेक्षण कर तुलनात्मक अध्ययन करना (जॉब विधि द्वारा) :--

(बीकर, मापन फ्लास्क, थर्मामीटर, अम्ल और क्षार के मोलर विलयन, प्लास्टिक, कॉपी, कप आदि)।

4-- आधुनिक आवर्त सारणी को चार्ट पेपर पर बनाकर अध्ययन करना।

5-- मैडम क्यूरी व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

(चित्र, जीवन परिचय, शिक्षा-दीक्षा, आविष्कार एवं नोबेल पुरस्कार)

6-- विद्युत घण्टी का मॉडल तैयार करना तथा निहित वैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन करना।

7-- बहुरूपदर्शी (Kaleidoscope) का मॉडल तैयार करना।

8-- प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिकों का व्यक्तित्व एवं भौतिक विज्ञान में उनके योगदान को सूचीबद्ध करके उनका विस्तृत अध्ययन करना।

9-- आवश्यक परिपथ का आरेख देते हुए विद्युत क्विज बोर्ड का मॉडल तैयार करना।

10-- मनोरंजन में विज्ञान की भूमिका का सचित्र अध्ययन।

11-- दर्पण व लेन्स से बने प्रतिविम्ब की प्रकृति, स्थिति तथा साइज में परिवर्तन का परीक्षण कर सारणीबद्ध करना।

12-- एक द्विलिंगी पुष्प जैसे--गुड़हल व सरसों के विभिन्न भागों (वाह्य दल, दल, पुमंग, जायांग) का अध्ययन एवं उसमें होने वाले परागण की जानकारी प्राप्त करना।

13-- मनुष्य की हृदय की संरचना का मॉडल तैयार करना।

14-- सेम तथा मक्का के बीज (भीगे हुये) की सहायता से बीज की संरचना एवं अंकुरण का अध्ययन करना।

15-- जैव प्रौद्योगिकी का चिकित्सा, कृषि एवं उद्योग के क्षेत्र में महत्व--एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट।

16-- विभिन्न प्रकार के पौधों का संग्रह कर हरबेरियम तैयार करना।

17-- बिना मिट्टी के पौधें उगाना--प्रयोग एवं प्रेक्षण के आधार पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करना।

18-- पेट्रोल एवं डीजल से उत्पन्न वायु प्रदूषण का अध्ययन एवं इसके कम करने के लिये C.N.G. (सी0एन0जी0) का प्रयोग।

19-- प्लास्टिक व पॉलीथीन का दैनिक जीवन में महत्व एवं पर्यावरण प्रदूषण में भूमिका।

20-- आपके शहर में बढ़ते हुए शोर का कारण एवं हानिकारक प्रभावों का सचित्र अध्ययन।

अतिरिक्त विषयों के अन्तर्गत

भाषायें

(कक्षा-10 के लिये)

शास्त्रीय भाषा, आधुनिक भारतीय भाषा तथा आधुनिक विदेशी भाषा के पाठ्यक्रम व पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी, जो इस विवरण पत्रिका में अनिवार्य भाषाओं के लिये निर्धारित है।

गृह विज्ञान

(कक्षा-10 के लिये)

(बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये, जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है।)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी, जो इस विवरण पत्रिका में गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये) अनिवार्य विषय के लिये निर्धारित है।

संगीत (गायन)

कक्षा--10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (क) **अंक - 35**

(शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा एवं व्याख्या)

नाद, नादोत्पत्ति, नाद के प्रकार एवं विशेषतायें। शब्द और वर्णों का गायन, स्वरों का स्पष्ट उच्चारण, तीनों सप्तकों का अध्ययन (मध्यमन्द्र एवं तार) आवाज के गुणों का उत्कर्ष और उसकी सुरक्षा के लिये स्वास्थ्य और भोजन सम्बन्धी नियम, भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर स्वर एवं स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, थाटों का वर्गीकरण और थाट से रागों की उत्पत्ति, मुर्की, कण, वर्जित, वक्र, मींड, सम, खाली एवं भरी।

भाग (ख)

(संगीत का इतिहास एवं रागों का अध्ययन) **अंक - 35**

ध्रुवपद, टप्पा, ठुमरी, तराना, बड़ा ख्याल तथा छोटे ख्याल की परिभाषा, पाठ्यक्रम के रागों की विशेषता, स्वर-विस्तार एवं अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त और उसमें भेद। पाठ्यक्रम के बोलों के तालों एवं दुगुन का ज्ञान एवं तालों को लिपिबद्ध करने की योग्यता, स्वर-समूहों के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर राग को पहिचानने एवं उनकी बढ़त की योग्यता, संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर छोटा निबन्ध लिखना, तानसेन एवं विष्णु दिगम्बर की जीवनी।

बिहाग एवं भैरवी रागों का विस्तृत अध्ययन। प्रत्येक में एक-एक गीत छात्रों को तैयार करना है। उपर्युक्त रागों में कम से कम एक ध्रुवपद और ख्याल होना चाहिये। उनमें आलाप-तान लिखने एवं गाने की योग्यता होनी चाहिये।

देश, बागेश्वरी एवं काफी रागों की साधारण जानकारी होनी चाहिये।

प्रत्येक राग में एक गीत (सरगम या लक्षण गीत) होना आवश्यक है।

प्रत्येक राग का आरोह-अवरोह एवं पकड़ गाना विद्यार्थी को अवश्य आना चाहिये तथा उसको लिखने की क्षमता होनी चाहिये।

उपर्युक्त गीतों के साथ दादरा, तीनताल, झपताल, एकताल, चारताल, नामक तालें प्रयुक्त होनी चाहिये।

नोट :--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों पर आधारित प्रयोगात्मक परीक्षा ली जायेगी जो 15 अंकों की होगी तथा 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिए निर्धारित है। जिसका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

संगीत (गायन) प्रोजेक्ट कार्य

नोट :--निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं।

1-महान संगीतज्ञों के चित्र एकत्रित करके स्क्रैप बुक में चिपकाना तथा उनके नाम एवं जन्म-मृत्यु का उल्लेख करना।

2-वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत में प्रयोग किये जाने वाले वाद्य यन्त्रों के चित्रों को एकत्र करके उनके नामों का उल्लेख करते हुए स्क्रैप बुक में लगाना।

3-श्री विष्णु नारायण भातखण्डे की सांगीतिक रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिये।

4-स्वरों के शुद्ध एवं विस्तृत प्रकारों को चार्ट पेपर पर अंकित कीजिये।

5-तबले का चित्र बना कर उसके विभिन्न अंगों के नाम लिखिये।

6-राग की मुख्य जातियों एवं उपजातियों को तालिका के द्वारा स्पष्ट कीजिये।

7-किन्हीं चार प्राचीन संगीत वाद्य-यन्त्रों के नामों का उल्लेख करते हुए उनसे सम्बन्धित शीर्ष संगीतकारों के नाम लिखिये।

8-श्री भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि एवं ताल लिपि पद्धति की तुलना चार्ट बनाकर कीजिये।

9-सितार अथवा तानपुरे का प्रारूप तैयार कर उनके अंगों का नामकरण भी कीजिये। इच्छानुसार वैलवेट पेपर या थर्माकोल का प्रयोग किया जा सकता है।

10-चार भारतीय नृत्य शैलियों के चित्र, नाम तथा उनसे सम्बन्धित शीर्ष कलाकारों के नाम स्क्रैप बुक में अंकित कीजिये।

संगीत (वादन)

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड (क)

शास्त्रीय शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या-- **30**

सप्तक (मन्द्र, मध्य एवं तार) का विस्तृत अध्ययन, मुर्की, कण, विवादी, वर्ण, चक्रमोड़, घसीट, झाला, जोड़, पेशकारा, टुकड़ा, परन, रेला, तिहाई, सम, भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन थाटों का वर्गीकरण और उनसे रागों की उत्पत्ति।

खण्ड (ख) **40**

1-वादन पाठ्यक्रम में रागों की विशेषतायें--स्वर विस्तार और अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त एवं भेद।

2-तालों के टुकड़े, परन आदि लिखने की योग्यता एवं सरल स्वर विस्तार एवं तोड़ों के साथ गत को स्वर लिपिबद्ध करके लिखना।

3-स्वर समूह के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर रागों को पहिचानने और बढ़त करने की योग्यता।

4-संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर छोटा निबन्ध, तानसेन एवं विष्णु दिगम्बर की जीवनी।

तबला एवं पखावज--

1-तीनताल, एकताल और चारताल में से प्रत्येक में एक पेशकारा, 2 कायदा, 2 टुकड़े और दो तिहाई लिखने एवं बजाने की योग्यता। चार ताल में दो टुकड़े एवं एक परन लिखने और बजाने की योग्यता।

2-कहरवा, तीव्रा एवं दीपचन्दी तालों का साधारण ठेका।

अन्य वाद्य

1-राग बिहाग तथा भैरवी में प्रत्येक में एक मसीतखानी गत तथा एक रजाखानी गत आवश्यक है।

2-देश, बागेश्री तथा काफी रागों में कलात्मक विकास के बिना एक गत। इन रागों में आरोह-अवरोह एवं पकड़ लिखने की योग्यता।

3-कहरवा, तीनताल, एकताल और चारताल से भी परिचित होना चाहिए।

4-अपने वाद्य में बजाने वाले वर्ण एवं बोलों को निकालने की विधि।

5-प्रचलित वाद्य और उनकी विशेषताओं का ज्ञान।

नोट :--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों की आन्तरिक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी जिसके लिए 15 अंक निर्धारित किये गये हैं तथा 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिए है। इनका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

प्रोजेक्ट वर्क

PROJECT WORK

नोट :--निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं।

1-हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध संगीतज्ञों के चित्र एकत्रित कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लगाइए तथा संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2-अपने वाद्य की उत्पत्ति व विकास को सचित्र वर्णित कीजिए।

3-स्व वाद्य के वर्णों की निकास विधि को समझाइए।

4-रेडियो एवं टी0वी0 द्वारा प्रसारित होने वाले कुछ संगीत कार्यक्रमों को सुनकर उनकी सूची बनाइए व उनके बारे में संक्षेप में लिखिए।

5-उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के "भारतरत्न" पुरस्कार प्राप्त किसी एक संगीतज्ञ का चार्ट बनाइए।

6-वाद्य के समस्त प्रकारों (तत्, सुषिर, अवनद्ध, घन) के कुछ चित्र एकचित्र कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में चिपकाइए तथा उन्हें बजाने वाले सम्बन्धित कलाकार का नाम भी लिखिए।

7-रागों के समय निर्धारण को एक चार्ट द्वारा प्रदर्शित कीजिए।

8-हिन्दुस्तानी संगीत के 10 थाटों के नाम एवं उनके स्वरों को चार्ट द्वारा प्रदर्शित कीजिए तथा उनसे उत्पन्न कुछ रागों के नाम लिखिए।

9-संगीत शिक्षा प्रदान करने वाली प्रमुख संस्थाओं के नाम लिखकर संक्षिप्त परिचय दीजिए।

10-सितार अथवा तबला की मुख्य परम्परा/घराना विषय को चार्ट में प्रदर्शित कीजिए।

11-किसी संगीत समारोह का आँखों देखा वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

12-किसी प्रसिद्ध संगीतज्ञ के सांगीतिक योगदान को विस्तारतः समझाइए।

कृषि

कक्षा-10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

1-मृदा विज्ञान **7**

मृदा जैव पदार्थ, उसके स्रोत, वितरण, संरक्षण और मिट्टी का प्रभाव, ऊसर, क्षारीय तथा अम्लीय मिट्टी और सुधार, भू-क्षरण, मिट्टी का कटाव, भू-संरक्षण के सामान्य उपाय।

2-सिंचाई व जल निकास **5**

(क) जल के स्रोत--कुँआ, नलकूप, बाँध, नहरें, तालाब, नदियाँ आदि।

(ख) सिंचाई की विधियाँ--अप्लावन, क्यारी, नाली, बेसिन, छिड़काव, बार्डर, ट्रिप सिंचाई आदि।

3-खाद तथा उर्वरक **8**

(क) अजैव खादें (उर्वरक), उनका वर्गीकरण, महत्व, अमोनियम सल्फेट, यूरिया, कैल्शियम, अमोनियम नाइट्रेट, सुपर फास्फेट, पोटैशियम क्लोराइड, डाई अमोनियम फास्फेट (डी0ए0पी0)

(ख) उर्वरकों के प्रयोग की विधियाँ

(ग) उर्वरक मिश्रण--विभिन्न फसलों के लिये उर्वरकों की आवश्यकता, उर्वरक मिश्रण बनाने के लिए परिकलन या जानकारी।

4-भू-परिष्करण **5**

(क) विभिन्न फसलों के लिए भू-परिष्करण की आवश्यकतायें एवं उनका महत्व।

(ख) फसल की सुरक्षा तथा बागवानी के प्रमुख यंत्र--डस्टर, स्प्रेयर, सिक्रेटियर, हैजसियर, बडिंग तथा ग्राफ्टिंग नाइफ, थ्रेसर तथा ओसाई के यन्त्र

5-आपदायें--दैवी आपदायें जैसे बाढ़, सूखा, भू-कम्प, आग, अतिवृष्टि, उपलवृष्टि आदि का मूलभूत ज्ञान। इनका फसल या पर्यावरण पर प्रभाव तथा बचाव के उपाय। **2**

6-निम्न फार्म की फसलों की खेती-- 10

धान, मूँगफली, गेहूँ तथा गन्ना।

7-सब्जियों की खेती-- 10

आलू, खरबूजा, फूलगोभी, टमाटर, लौकी, भिण्डी, प्याज।

8-बागवानी-- 10

बाग के लिए भूमि का चुनाव, गृह उद्यान तथा फलोद्यान, प्रदेश की प्रमुख फसलों, जैसे आम, अमरूद, पपीता तथा नींबू की खेती।

9-पशुपालन-- 8

डेरी उद्योग तथा पशु चिकित्सा विज्ञान

(क) पशुओं की सामान्य देख-रेख तथा प्रबन्ध।

(ख) पशु आहार।

(ग) स्वच्छदोहन विधि, स्वच्छ एवं सुरक्षित दूध।

(घ) दुग्धोत्पादन सम्बन्धी सामान्य जानकारी।

(ङ) सामान्य पशु रोग--बुखार, मुँहपका-खुरपका, रिन्डरपेस्ट, पेचिस, गलाघोटू के लक्षण तथा उपचार की विधियाँ।

10-फल परीक्षण--फल तथा सब्जियों के परीक्षण की विधियाँ, फल व पदार्थों के नष्ट होने के कारण, डिब्बों का जीवाणु नाशन तथा डिब्बा बन्दी, फल तथा सब्जियों का निर्जलीकरण। **5**

<u>प्रयोगात्मक</u> अंक - 15

1-बीज शैय्या तैयार करना। **5**

2-उर्वरक, खरपतवार एवं बीजों की पहचान। **5**

3-मौखिक **3**

4-वार्षिक अभिलेख **2**

प्रोजेक्ट कार्य अंक - 15

नोट :--निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार कराए। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं।

1-बाग लगाने की उपयुक्त विधि का अध्ययन करना।

2-उर्वरकों के प्रयोग करने की उपयुक्त विधि का अध्ययन करना।

3-स्प्रेअर का प्रयोग करने की विधि तथा सावधानियों का अध्ययन करना।

4-जैम बनाने की विधि का अध्ययन करना।

5-जेली बनाने की विधि का अध्ययन करना।

6-दुग्ध-दोहन की उपयुक्त विधि का अध्ययन करना।

7-ड्रिप सिंचाई का अध्ययन करना।

8-सिंचाई के लिये नहरों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

9-उत्तर प्रदेश की मृदाओं में फासफोरस एवं पोटाश पोषक तत्व का प्रयोग करना।

10-पशुओं में होने वाला खुरपका-मुँहपका रोग एवं उसका सुधार का अध्ययन करना।

नोट :--प्रयोगात्मक परीक्षा एवं प्रोजेक्ट कार्य का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा।

विषय - सिलाई

कक्षा - X

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

1-कपड़ों की किस्में--कमीज का रेशमी कपड़ा, कमीज का सूती कपड़ा, कमीज का ऊनी कपड़ा।

2-पोशाक के प्रकार--स्त्री, पुरुष तथा बच्चों की पोशाकों की प्रकार का ज्ञान।

3-कपड़े श्रिंक करने की विधि तथा उसकी उपयोगिता।

4-अच्छे कटर के गुण तथा दोष।

5-मशीन की देखभाल, तेल देने का नियम, पुर्जों की जानकारी।

6-मशीन में आने वाले दोष तथा उन्हें दूर करने के उपाय।

7-पैटर्न कटिंग व उसके लाभ।

8-सिलाई में प्रेसिंग, फोल्डिंग तथा फिनिशिंग का ज्ञान तथा उसके लाभ।

9-रासायनिक वस्त्रों के निर्माण में वातावरण पर होने वाले प्रभाव/स्वास्थ्य से उनका सम्बन्ध और बचाव।

10-सलवार, लेडीज कुर्ता, ब्लाउज, कलीदार कुर्ता--और इन परिधानों की नाप लिखना, रेखा चित्र बनाना तथा पेपर कटिंग करना।

11-कुन्देदार पायजामा (अलीगढ़ पायजामा)।

12-टेनिस कालर शर्ट।

13-फुलपैंट।

14-सिलाई के काम में आने वाले विभिन्न टाँकों का ज्ञान।

सिलाई--प्रयोगात्मक **15 अंक**

(प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।)

पेपर कटिंग--सलवार, लेडीज कुर्ता, ब्लाउज, कलीदार कुर्ता, कुन्देदार पायजामा, टेनिस कालर शर्ट, पैन्ट एवं हॉफ पैंट सम्बन्धित वस्त्रों के नापों की जानकारी एवं ड्राइंग का अभ्यास।

प्रयोगात्मक--ब्लाउज, कुन्देदार पायजामा (अलीगढ़), कलीदार कुर्ता।

सिलाई में प्रयोग होने वाले उपकरण का ज्ञान।

प्रेसिंग सामग्री (इक्यूपमेण्ट्स) की जानकारी एवं उपयोगिता।

प्रयोगात्मक वस्त्रों के सिलाई सम्बन्धी परिधानों को हाथ सिलाइयाँ, काज, बटन एवं पूर्णरूपेण फिनिशिंगो का ज्ञान तथा अभ्यास करना।

प्रोजेक्ट कार्यों की सूची **15 अंक**

नोट :--निम्नलिखित प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्राओं से करायें। प्रोजेक्ट कार्यों की फाइल तैयार करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रोजेक्ट पाँच अंक का होगा।

1-सिलाई एवं सिलाई मशीन।

2-सिलाई एवं पेपर कटिंग।

3-सिलाई एक कला।

4-धागों की टुनिया।

5-परिधान रचना (फाइल तैयार करें जिसमें पाठ्यक्रमानुसार छोटे-छोटे वस्त्र (नमूना) सिल कर लगायें)।

6-सिलाई किट।

7-सिलाई मशीन के विभिन्न पुर्जे, उनमें उत्पन्न होने वाले दोष एवं सुधार।

8-पोशाक के प्रकार।

9-रासायनिक वस्त्र एवं वातावरण।

10-सिलाई एवं कढ़ाई के विभिन्न टाकें।

कम्प्यूटर

कक्षा--10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

1-कम्प्यूटर और संचार **15 अंक**

प्राथमिक संचार मॉडल (सेण्टर, रिसीवर, मीडिया एवं प्रोटोकाल)

संचार के प्रकार

कम्यूनिकेशन मीडिया, (तार, बेतार)

सिंम्पलैक्स और पूर्ण ड्यूप्लेक्स

नेटवर्क--लैन एवं वैन

इन्टरनेट

2-लाइनेक्स आपरेटिंग सिस्टम **10 अंक**

एडवांसड फक्सन्स/फीचर्स

सी0एल0आई0 एवं जी0यू0आई0 (Command Line Interface & Graphic Uses Interface)

फाइल सर्च, टैक्स्ट सर्च

मैसेजिंग ओवर लैन (LAN)

टैक्स्ट प्रोसिसिंग कमाण्डस (कैट, ग्रेप आदि)

वी0आई0 टैक्स्ट एडिटर

लाइनेक्स डेक्सटाप से परिचय

लाइनेक्स में सुरक्षा प्रबन्ध एवं उनका स्वरूप

3-बाइनरी अर्थमेटिक एवं लाजिक गेट्स **10 अंक**

किट्स, निबल्स, बाइट्स, वर्ड लेन्थ, करैक्टर रिप्रेजेन्टेशन्स

आस्की (ASCII) करेक्टर कोड्स

सिम्पल बाइनरी अर्थमेटिक (जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग देना)

कम्प्यूटर लॉजिक, बूलियन आपरेशन्स

लॉजिकल आपरेटर्स (NOT, AND, OR, NOR, NAND एवं उसकी Truth table)

4-सी (C) में एडवान्स्ड प्रोग्रामिंग 10 अंक

सब्सक्रिप्टेड वैरीएबल्स (ARRAYS)

परिचय

सिंगल और डबल सब्सक्रिप्टेड वैरीएबल्स

सर्चिंग और सर्टिंग

5-एरेज एवं स्ट्रिंग 15 अंक

फंक्सन्स एवं सबरूटीन्स

लाइब्रेरी फंक्सन्स

स्ट्रिंग मैन्यूपुलेशन

स्ट्रिंग फंक्सन्स (अंक और स्ट्रिंग को परस्पर बदलने के लिए निर्देश)

कॉनकैटिनेशन (किसी भी शब्द में वांछित अक्षरों को जोड़ना)

6-फाइल आपरेशन्स 10 अंक

सीक्वेन्शियल फाइल्स का प्रयोग करना

रेन्डम फाइल्स का प्रयोग करना

प्रयोगात्मक कार्य

उक्त प्रस्तर 2 एवं 4 के विभिन्न माड्यूल्स में प्रयोगात्मक कार्य कराये जायेंगे। इस कार्य हेतु 15 अंक निर्धारित है। प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

पाठ्य पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य

प्रोजेक्ट कार्य 15 अंक का होगा। दिये गये प्रोजेक्ट की सूची में से तीन प्रोजेक्ट अवश्य तैयार कराये जायें। शिक्षक इसके अतिरिक्त विषय से सम्बन्धित प्रोजेक्ट तैयार करा सकते हैं। प्रोजेक्ट का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

1-कम्यूनिकेशन मीडिया (तार, बेतार)

2-नेटवर्क (लैन एवं वैन) Network

3-इंटरनेट (e-mail-id, web site……etc.)

4-लाइनक्स (सी0एल0आई0) (mure, cat. Is, mkdir, etc.)

5-लाइनक्स आफिस

- स्टार कैल
- स्टार इम्प्रैस
- स्टार राइटर

6-लाइनक्स (जी0यू0आई0) इंटरफेस

7-लाजिक गेट्स

8-सी प्रोग्रामिंग (ऐरे)

9-स्ट्रिंग मैन्युपुलेशन

10-फंक्शन

विषय-गणित

कक्षा-10

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 3 घण्टे का होगा।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र-	70 अंक
प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन-	30 अंक
योग-	**100 अंक**

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु तथा 15 अंक मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र हेतु इकाईवार अंक विभाजन

इकाई-1-बीजगणित-	12 अंक
इकाई-2-वाणिज्यिक गणित कराधान-	06 अंक
इकाई-3-सांख्यिकी-	06 अंक
इकाई-4-त्रिकोणमिति-	14 अंक
इकाई-5-ज्यामिति-	16 अंक
इकाई-6-निर्देशांक ज्यामिति-	08 अंक
इकाई-7-मेन्सुरेशन-	08 अंक
कुल-	**70 अंक**

इकाई-1-बीजगणित 12 अंक

(क) परिमेय व्यंजक का सरलीकरण

(ख) गुणनखण्ड विधि से बहुपदों के लघुत्तम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्त्य

(ग) द्विघात समीकरण

(1) मानक द्विघात समीकरण $ax^2+bx+c=o$ का गुणनखण्ड विधि द्वारा तथा सूत्र द्वारा हल।

(2) द्विघात समीकरण का विवक्तकर एवं उनके मूलों की प्रकृति।

(3) दिये गये मूलों से द्विघात समीकरण बनाना।

(4) द्विघात समीकरणों का अनुप्रयोग तथा इन पर आधारित इबारती प्रश्न।

इकाई-2-वाणिज्यिक गणित कराधान- 06 अंक

(क) प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर

(ख) आयकर तथा बिक्रीकर का ऑकलन (विगत दो वर्षों के नियमावली के अनुसार)

इकाई-3-सांख्यिकी- 06 अंक

(क) समान्तर माध्य- अवर्गीकृत तथा वर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

(ख) माध्यिका- अवर्गीकृत तथा वर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

(ग) बहुलक- केवल अवर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

इकाई-4-त्रिकोणमिति- 14 अंक

(क) $n\ (360^0 \pm \Theta)$ के त्रिकोणमितीय अनुपात (जहां n एक पूर्णांक है)

(ख) त्रिकोणमितीय सर्वसमिकायें

$Sin^2 A+Cos^2A=1$, $Sec^2 A=1+tan^2A$, $Cosec^2A=1+Cot^2A$

(ग) दो कोणों के योग और अन्तर तथा किसी कोण के अपवर्त्य एवं अपवर्तक कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात

(घ) Sine और Cosine के योग और अन्तर को उनके गुणनफल के रूप में व्यक्त करना।

(ङ) ऊँचाई एवं दूरी

त्रिकोणमितीय सारणियों का पढ़ना, त्रिकोणमितीय सारणियों एवं लघुगुणक सारणियों के प्रयोग से ऊँचाई एवं दूरी के साधारण प्रश्न का हल।

इकाई-5-ज्यामिति- 16 अंक

(क) वृत्त सम्बन्धी प्रमेय

(1) यदि किसी वृत्त के दो चाप सर्वांगसम हो तो संगत जीवायें परस्पर बराबर होती हैं। (केवल कथन)

(2) यदि किसी वृत्त की दो जीवायें समान हो तो उसके संगत चाप सर्वांगसम होते हैं। (केवल कथन)

(3) वृत्त के केन्द्र से जीवा पर डाला गया लम्ब जीवा को समद्विभाजित करता है। (उपपत्ति)

(4) वृत्त के केन्द्र एवं जीवा के मध्य बिन्दु को मिलाने वाली रेखा जीवा पर लम्ब होती है। (उपपत्ति)

(5) वृत्त की समान जीवायें केन्द्र से समदूरस्थ होती है। (उपपत्ति)

(6) वृत्त के किसी चाप से केन्द्र पर बना कोण शेष परिधि पर बने कोण का दुगुना होता है। (उपपत्ति)

(7) अर्धवृत्त में स्थित कोण समकोण होता है।

(8) एक ही वृत्तखण्ड के कोण परस्पर बराबर होते हैं। (उपपत्ति)

(9) यदि दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखाखण्ड दो अन्य बिन्दुओं पर जो इस रेखाखण्ड को आविष्ट करने वाली रेखा के एक ही ओर स्थित है, समान कोण अन्तरित करता है तो चारों बिन्दु एक वृत्तीय होते हैं। (उपपत्ति)

(10) चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोण सम्पूरक होते हैं। (उपपत्ति)

(11) यदि चतुर्भुज के सम्मुख कोणों का योग 180^0 होता है तो चतुर्भुज चक्रीय होता है। (उपपत्ति)

(12) वृत्त की स्पर्श रेखा, स्पर्श बिन्दु से होकर जाने वाली त्रिज्या पर लम्ब होती है। (केवल कथन)

(13) किसी वाह्य बिन्दु से वृत्त पर खींची गयी स्पर्श रेखाएं परस्पर बराबर होती हैं। (केवल कथन)

(14) यदि वृत्त की जीवा के एक छोर बिन्दु से खींची गयी रेखा तथा जीवा के बीच का कोण एकान्तर खण्ड में जीवा द्वारा अन्तरित कोण के बराबर हो तो यह वृत्त की स्पर्श रेखा होती है। (केवल कथन)

(ख) **रचना-**

(1) वृत्त के किसी दिये हुए बिन्दु पर स्पर्श रेखा की रचना करना जबकि वृत्त का केन्द्र (1) ज्ञात हो (2) अज्ञात हो।

(2) त्रिभुज के अन्तर्गत तथा परिगत वृत्त खींचना।

(3) किसी वाह्य बिन्दु से वृत्त की स्पर्श रेखा खींचना।

(4) दो वृत्तों की उभयनिष्ठ (अनु एवं तिर्यक) स्पर्श रेखायें खींचना।

इकाई-6-निर्देशांक ज्यामिति- 08 अंक

(क) सरल रेखा के समीकरण

(ख) सरल रेखा के समान्तर तथा लम्बवत् रेखाओं के समीकरण

(ग) दो सरल रेखाओं का प्रतिच्छेद बिन्दु

(घ) दो सरल रेखाओं के बीच का कोण

(ङ) सरल रेखा पर किसी बिन्दु से डाले गये लम्ब की लम्बाई

इकाई-7-मेन्सुरेशन 08 अंक

बेलन, शंकु तथा गोले का वक्रपृष्ठ, सम्पूर्णपृष्ठ तथा आयतन

प्रोजेक्ट कार्य

नोट- निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक छात्र से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट अपने स्तर से भी दे सकते हैं।

- जनसंख्या अध्ययन में सांख्यिकी की उपयोगिता।
- पाइथागोरस प्रमेय का सत्यापन गत्ता या चार्ट पर त्रिभुज एवं वर्ग को बनाकर करना।
- विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की वास्तुकला एवं निर्माण में भूमिका का अध्ययन करना।
- उत्तर मध्यकाल के किसी एक भारतीय गणितज्ञ (रामानुजम, नारायण पण्डित आदि) का व्यक्तित्व एवं गणित में योगदान।
- त्रिकोणमिति अनुपातों के चिन्हों का ज्ञान चार्ट के माध्यम से कराना। कोण के पूरक (Complementary angle), संपूरक कोण (Supplementary angle) आदि कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात कोणों के संगत अनुपात में चित्र के माध्यम से व्यक्त करना।
- 28 x 42 सेमी माप के दो कागज लेकर लम्बाई एवं चौड़ाई की दिशा से मोड़कर दो अलग-अलग बेलन बनाइए। दोनों में से किसका वक्रपृष्ठ एवं आयतन अधिक होगा।
- सरकार द्वारा लगाये जाने वाले विभिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर का अध्ययन करना।
- वृत्त के केन्द्र पर बना कोण शेष परिधि पर बने कोण का दूना होता है का क्रियात्मक निरूपण करना।
- दूरी मापने का यन्त्र (Sextant) बनाना और प्रयोग करना।
- गणित के सिद्धान्तों की चित्रकला में उपयोगिता।
- एक कार/घर खरीदनें के लिए बैंक से लोन लेने के विभिन्न चरणों का ब्योरा प्रस्तुत कीजिए।

विषय-प्रारम्भिक गणित

कक्षा-10

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का तथा समय 3 घण्टे का होगा।

सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र-	70 अंक
प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन-	30 अंक
योग..	**100 अंक**

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु तथा 15 अंक मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है।

<u>सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र हेतु इकाईवार अंक विभाजन</u>

इकाई-1-अंकगणित-	14 अंक
इकाई-2-बीजगणित-	12 अंक
इकाई-3-सांख्यिकी-	12 अंक
इकाई-4-ज्यामिति-	20 अंक
इकाई-5-मेन्सुरेशन-	12 अंक
कुल..	**70 अंक**

इकाई-1-**अंकगणित** 14 अंक

(क) चक्रवृद्धि ब्याज-ब्याज तथा मिश्रधन ज्ञात करना (समय भिन्न में न हों)

(ख) बैंक जमा पूँजी (बचत खाता, आवर्ती खाता, सावधि खाता) तथा चेकों का पूरा ज्ञान तथा किस्तों में भुगतान

(ग) कर बिक्रीकर तथा आयकर की गणना (विगत दो वर्षों की नियमावली के अनुसार)

इकाई-2-**बीजगणित-** 12 अंक

(क) लघुत्तम समापवर्त्य तथा महत्तम समापवर्त्य सर्वनिष्ठ तथा समूह विधि द्वारा दो वर्गों के अन्तर का व्यंजक, त्रिपद व्यंजक।

(ख) युगपत समीकरण-दो अज्ञात राशियों के युगपत समीकरणों का हल

(ग) द्विघात समीकरण का हल एवं इन पर सरल इबारती प्रश्न

इकाई-3-**सांख्यिकी-** 12 अंक

(क) समान्तर माध्य-अवर्गीकृत तथा वर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

(ख) माध्यिका-केवल अवर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

(ग) बहुलक-केवल अवर्गीकृत ऑकड़ों के लिए

इकाई-4-**ज्यामिति-** 20 अंक

(क) वृत्त सम्बन्धी परिभाषायें तथा प्रमेयों के कथन पर आधारित प्रश्न प्रमेय (उपपत्ति सहित)

[1] वृत्त के केन्द्र से जीवा पर डाला गया लम्ब जीवा को समद्विभाजित करता है

[2] वृत्त के केन्द्र एवं जीवा के मध्य बिन्दु को मिलाने वाली रेखा जीवा पर लम्ब होती है।

[3] किसी वृत्त में एक चाप द्वारा केन्द्र पर अन्तरित कोण, उसके द्वारा शेष परिधि के किसी भी बिन्दु पर अन्तरित कोण का दूना होता है।

[4] एक ही वृत्तखण्ड के कोण बराबर होते हैं।

[5] अर्धवृत्त में स्थित कोण समकोण होता हैं।

[6] चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोण सम्पूरक होते हैं।

(ख) **रचना-**

[1] किसी वाह्य बिन्दु से वृत्त की स्पर्श रेखायें खींचना।

[2] त्रिभुज के परिगत तथा अन्तः वृत्त की रचना करना।

इकाई-5-**मेन्सुरेशन-** 12 अंक

(क) लम्ब वृत्तीय बेलन का वक्रपृष्ठ तथा आयतन

(ख) लम्ब वृत्तीय शंकु का वक्रपृष्ठ तथा आयतन

(ग) गोले का वक्रपृष्ठ तथा आयतन

प्रोजेक्ट कार्य

नोट- निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट प्रत्येक छात्र से तैयार कराए। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट अपने स्तर से भी दे सकते हैं।

- जनसंख्या अध्ययन में सांख्यिकी की उपयोगिता।
- सरकार द्वारा लगाये जाने वाले विभिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों का अध्ययन करना।
- पाइथागोरस प्रमेय का सत्यापन क्रियात्मक विधि द्वारा करना।

- बैंक में खोले जाने वाले विभिन्न प्रकार के खातों एवं उनकी ब्याज दरों का अध्ययन करना।
- उत्तर मध्यकाल के किसी एक भारतीय गणितज्ञ (रामानुजम, नारायण पण्डित आदि) का व्यक्तित्व एवं गणित में योगदान।
- एक कैन्टीन चलाने के लिए आवश्यक वस्तुओं का विवरण दीजिए एवं दिनभर के क्रय-विक्रय, लाभ-हानि का ब्योरा प्रस्तुत कीजिए।
- वृत्त के किसी चाप द्वारा केन्द्र पर बना कोण शेष परिधि पर बने कोण का दूना होता है, का क्रियात्मक निरूपण चार्ट पेपर एवं गत्ते द्वारा कीजिए।
- गणित के अध्ययन में कम्प्यूटर का महत्व।
- आम बजट पर विभिन्न समाचार-पत्रों में छपी रिपोर्ट का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सामाजिक विज्ञान

कक्षा- (X)

एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का व समय तीन घण्टे का होगा।

अनुभाग-एक-ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत 20 अंक

इकाई-एक 08 अंक

(क) आधुनिक विश्व में वैचारिक क्रान्ति

(ख) राजनीतिक क्रान्तियाँ

(ग) राष्ट्रवाद का विकास एवं विश्व युद्ध

इकाई-दो 07 अंक

(क) आधुनिक भारत

(ख) भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन

इकाई-तीन 05 अंक

(क) मानचित्र कार्य

अनुभाग-दो-नागरिक जीवन 15 अंक

इकाई-एक 08 अंक

(क) केन्द्र एवं राज्य सरकार

(ख) भारतीय न्याय व्यवस्था

इकाई-दो 07 अंक

(क) भारतीय विदेश नीति

(ख) देश की वाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा (ग) सडक सुरक्षा एवं यातायात ।

अनुभाग-तीन-पर्यावरणीय अध्ययन 20 अंक

इकाई-एक 08 अंक

(क) भारत का भौतिक पर्यावरण

(ख) भौतिक संसाधन एवं उनका दोहन

इकाई-दो 07 अंक

(क) मानवीय संसाधन

(ख) विकसित देश की ओर अग्रसर भारत

इकाई-तीन 05 अंक

मानचित्र कार्य

अनुभाग-चार- आर्थिक विकास 15 अंक

इकाई-एक 09 अंक

(क) अर्थव्यवस्था की समस्यायें

(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान

(ग) भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान

इकाई-दो 06 अंक

(क) आर्थिक विकास की दिशा

(ख) विदेशी व्यापार

प्रोजेक्ट कार्य- 15 अंक

आन्तरिक मासिक परीक्षण- 15 अंक

योग- 100 अंक

नोट-प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।

अनुभाग-एक- ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत 20 अंक

इकाई-एक 08 अंक

(क) **आधुनिक विश्व में वैचारिक क्रान्ति**

(I) पुनर्जागरण

(II) धर्म सुधार आन्दोलन- खोजें एवं आविष्कार

(III) औद्योगिक क्रान्ति एवं उसका प्रभाव

(ख) **राजनीतिक क्रान्तियाँ**

(I) क्रान्तियों का सामान्य परिचय

(II) फ्रांसीसी क्रान्ति- कारण तथा परिणाम

(III) रूसी क्रान्ति- कारण तथा परिणाम

(ग) **राष्ट्रवाद का विकास एवं विश्वयुद्ध**

(I) यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास

(II) प्रथम विश्वयुद्ध- कारण तथा परिणाम

(III) द्वितीय विश्वयुद्ध- कारण तथा परिणाम

इकाई-दो 07 अंक

(क) **आधुनिक भारत**

(I) भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन एवं प्रसार

(II) प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम-कारण एवं परिणाम

(III) नवजागरण तथा राष्ट्रीयता का विकास (उदारवादी, अनुदारवादी)

(ख) **भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन**

(I) गांधी विचारधारा, असहयोग आन्दोलन

(II) सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन

(III) क्रान्तिकारियों का योगदान, कूका आन्दोलन के प्रणेता श्री सतगुरू राम सिंह जी के योगदान

(IV) भारत विभाजन एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति

इकाई-तीन 05 अंक

(1) मानचित्र कार्य

अनुभाग-दो-नागरिक जीवन 15 अंक

इकाई-1 08 अंक

(क) केन्द्र एवं राज्य सरकार

(I) केन्द्र सरकार-

विधायिका (संसद) एवं कार्यपालिका (राष्ट्रपति एवं केन्द्रीय मंत्रि परिषद)

(II) केन्द्रीय मंत्रि परिषद का गठन एवं कार्य

(III) राज्य सरकार

विधायिका (विधान मण्डल) एवं कार्यपालिका (राज्यपाल एवं मंत्रि परिषद)

(ख) भारतीय न्याय व्यवस्था–

(i) सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय।

(ii) जनपदीय न्यायालय एवं लोक अदालत।

(iii) न्यायायिक सक्रियता (जनहितवाद एवं लोकायुक्त)।

इकाई–2 07

(क) भारतीय विदेश नीति–

(i) भारतीय विदेशनीति–गुट निरपेक्षता एवं पंचशील, निःशस्त्रीकरण, रंगभेद नीति का विरोध आदि।

(ii) पड़ोसी देशों से सम्बन्ध तथा दक्षेस।

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं विश्व शान्ति।

(ख) देश की वाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा–

(i) देश की सीमायें एवं सुरक्षा व्यवस्था।

(ii) देश की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था।

अनुभाग–तीन (पर्यावरणीय अध्ययन) 20

इकाई–1 08

(क) भारत का भौतिक पर्यावरण–

(i) भौतिक स्वरूप–स्थिति विस्तार, उच्चावच्च जल प्रवाह।

(ii) जलवायु–प्रभावित करने वाले कारक, भारतीय जलवायु की विशेषतायें एवं प्रभाव।

(iii) आपदायें–प्राकृतिक–बाढ़, सूखा, भूस्खलन, भूकम्प, समुद्रीय तूफान एवं लहरें आदि।

(iv) मानवकृत आपदायें–विस्फोट वैश्विक तपन, ओजोन क्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव, रेडियो धर्मिता कारण एवं प्रबन्धन।

(ख) भौतिक संसाधन एवं उनका दोहन–

(i) भूमि संसाधन–महत्व, विभिन्न उपयोग, मानव जीवन पर प्रभाव मृदा के सन्दर्भ में।

(ii) जल संसाधन–जल के विभिन्न स्रोत एवं उनकी उपयोगिता–

प्रमुख बहुउद्देश्यीय नदी घाटी परियोजना–रिहन्द, दामोदर, भाखड़ा बाँध, हीराकुण्ड, नागार्जुन सागर।

(iii) वन एवं जीव संसाधन–उपयोगिता, सुरक्षा एवं संरक्षण सम्बन्धित राष्ट्रीय नीति तथा विभिन्न कार्यक्रम।

(iv) ऊर्जा संसाधन–कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, परमाणु खनिज जल, वैकल्पिक साधन उपयोग एवं संरक्षण।

(v) खनिज संसाधन–धात्विक, अधात्विक खनिज उपयोग एवं संरक्षण लौह, मैगनीज, अभ्रक, बाक्साइट, तांबा आदि।

(vi) भूजल प्रबन्धन, वर्षा, जल संचयन एवं भूजल रिचार्ज।

इकाई–2 07

(क) मानवीय संसाधन–

(i) जनसंख्या–घनत्व वितरण, लिंग अनुपात, बढ़ती जनसंख्या की समस्यायें (संक्षेप में) जनसंख्या नियंत्रण के उपाय।

(ii) व्यवसाय –पशुपालन, मत्स्य, कृषि, खनन, विनिर्माण उद्योग, सूती वस्त्र, चीनी, कागज, लोहा, इस्पात, सीमेंट, पेट्रोरसायन, इंजीनियरिंग।

सेवायें–परिवहन, दूरसंचार, व्यापार।

(ख) विकसित देशों की ओर अग्रसर भारत–

(i) विकसित एवं विकासशील देश एवं उनकी विशेषतायें।

(ii) विकसित देश के रूप में उभरता भारत–तुलनात्मक अध्ययन–कृषि, उद्योग, परिवहन, दूरसंचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, बौद्धिक सम्पदा–वैश्वीकरण के सन्दर्भ में।

इकाई–3 05

मानचित्र कार्य–

अनुभाग–चार (आर्थिक विकास) 15

इकाई–1 09

(क) अर्थव्यवस्था की समस्यायें–

(i) उत्पादन एवं उपभोक्ता में सम्बन्ध–वस्तुविनिमय, क्रय-विक्रय, विनिमय बाजार।

(ii) उत्पादन का उसके साधनों में वितरण–भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन एवं लगान, मजदूरी, ब्याज एवं लाभ का सामान्य परिचय।

(iii) आर्थिक विकास, राजस्व की आवश्यकता–केन्द्र, राज्य, स्थानीय निकायों के आय के स्रोत प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर व्यय की मदें।

(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान–

(i) अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान–सामान्य परिचय –भूमि सुधार, जमींदारी उन्मूलन, चकबन्दी, हदबन्दी, कृषि, श्रमिक, कृषि में निविष्टियाँ (Input)।

(ii) कृषि उत्पादकता–पिछड़ेपन का कारण, सुधार के उपाय, कृषि विकास के कार्यक्रम, कृषि में विकास की सम्भावनायें, कृषि में आधुनिकता।

(ग) भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योग का योगदान–

भारतीय अर्थव्यवस्था का औद्योगिकीकरण।

(i) कृषि एवं उद्योग की पारस्परिक अनुपूरकता।

(ii) तीव्र एवं संतुलित औद्योगिक ढाँचे की आवश्यकता–वर्तमान औद्योगिक ढाँचा–कुटीर तथा लघु उद्योग, बड़े पैमाने के उद्योग।

(iii) औद्योगिक उत्पादकता एवं कार्य कुशलता, अकुशलता, निम्न उत्पादन का कारण।

(iv) औद्योगिक विकास के लिये उठाये गये कदम, उपलब्धियाँ व विकास की सम्भावनायें।

इकाई–2 06

(क) आर्थिक विकास की दिशा–

(i) आर्थिक नियोजन–अर्थव्यवस्था एवं उद्देश्य भारतीय पंचवर्षीय योजनायें एवं उपलब्धियाँ।

(ii) आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका राज्य का हस्तक्षेप उत्पादन एवं वितरण पर राज्य का नियंत्रण, औद्योगिक लाइसेंसिंग, सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं राशनिंग।

(ख) विदेशी व्यापार–

तात्पर्य, महत्व, विदेशी व्यापार की नीति, आयात–निर्यात की मुख्य मदें, आयात–निर्यात की दिशा।

प्रोजेक्ट–सूची

आवश्यक निर्देश :– **पूर्णांक–15**

- प्रोजेक्ट बनाने में चित्रों, मानचित्रों, रेखाचित्रों, तालिकाओं, आंकड़ों का प्रयोग अवश्य करें।
- कुल तीन प्रोजेक्ट बनाने हैं। प्रोजेक्ट अलग-अलग विषय से सम्बन्धित होना चाहिये। प्रत्येक प्रोजेक्ट के 05 अंक निर्धारित हैं।
- दिये गये प्रोजेक्ट के अतिरिक्त शिक्षक/शिक्षिका स्वयं अपने स्तर से अन्य प्रोजेक्ट भी बनवा सकते हैं–

(1) भारतीय इतिहास में स्त्रियों का योगदान (प्राचीन मध्य व आधुनिक काल में)।

(2) पुनर्जागरण काल के प्रमुख वैज्ञानिकों के नाम व आविष्कारों की सूची।

(3) भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये आन्दोलन व सामाजिक कार्य।

(4) औद्योगिक क्रान्ति के प्रमुख आविष्कार एवं आविष्कारों की सूची तथा किन्हीं दो आविष्कारों का प्रभाव।

(5) भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सुभाषचन्द्र बोस की भूमिका।

(6) केन्द्र और राज्य सरकार के पाँच कैबिनेट मंत्रियों और उनके मंत्रालयों के नाम लिखकर उनकी क्रमबद्ध सूची तैयार करें।

(7) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सभी राष्ट्रपति के नामों एवं कार्यकाल को सूचीबद्ध करते हुये विभिन्न राष्ट्रपतियों के चित्रों को दर्शाइये।

(8) आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था में लगे संगठनों के नाम तथा स्थापना वर्ष एवं मुख्यालय को सूचीबद्ध कीजिये।

(9) जनपदीय न्यायालय व्यवस्था की क्रमिक तालिका।

(10) विश्व शान्ति स्थापित करने में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका।

(11) मॉडल के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार–प्रभाव, वर्तमान में पर्यावरण परिवर्तन के प्रमुख कारण।

(12) आपदायें–प्रमुख भौतिक तथा मानवीय आपदायें, मानवीय आपदाओं के कारण तथा परिणाम। इसके प्रबन्धन में आपकी भूमिका।

(13) आपके विद्यालय में विगत पाँच वर्षों में जनसंख्या की स्थिति परिवर्तन के कारण तथा उनकी विशेषतायें।

(14) अपने राज्य में बहने वाली प्रमुख नदियाँ तथा उनकी सहायक नदियाँ, उनके किनारे बसने वाले प्रमुख नगर तथा उनका औद्योगिक महत्व।

(15) भारत में खाद्यान्न फसलों के बीजों का एकत्रीकरण। प्रोजेक्ट फाइल में भारत के मानचित्र पर उत्पादक क्षेत्रों पर चिपकाकर उनके उत्पादन की भौगोलिक दशाओं तथा क्षेत्रों का विवरण।

(16) भारत में व्याप्त गरीबी के कारण एवं निस्तारण के सुझाव।

(17) अब तक अपने देश में कुल पंचवर्षीय योजनाओं की संख्या कार्यकाल एवं लाभ।

(18) अपने देश के विभिन्न राशन कार्ड एवं उपयोगिता।

(19) भारत में निर्यात एवं आयाता की जाने वाली वस्तुओं की सूची स्थान सहित।

(20) कुटीर तथा लघु उद्योग धन्धों की सूची एवं उनका महत्व।

वाणिज्य

कक्षा–10 के लिये

पाठ्यक्रम

इस विषय में 70 अंकों का केलव एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

इस विषय में 70 अंक की लिखित परीक्षा तथा 30 अंकों का प्रायोगिक व आन्तरिक मूल्यांकन होगा। प्रायोगिक आन्तरिक मूल्यांकन में 15 अंक का प्रोजेक्ट कार्य तथा 15 अंक को मासिक परीक्षा हेतु निर्धारित किया गया है। प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा। लिखित परीक्षा हेतु अंक विभाजन निम्नवत् है :–

(अ) अन्तिम खाते-व्यापार तथा लाभ-हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा सामान्य समायोजन सहित। बुक, पास बुक एवं रोकड़ बही का बैंक समाधान विवरण-पत्र। चेक, बिल, हुण्डी व प्रतिज्ञा-पत्र सम्बन्धित साधारण लेखें। 20

(ब) नस्तीकरण, अनुक्रमणिका संदेश वाहक प्रणालियाँ। व्यापारिक कार्यालय में श्रम व समय बचाने वाले यंत्र जैसे पंच मशीन, समय रिकॉर्ड मशीन, फोटोस्टेट मशीन, टाइप-राइटर, कैलकुलेटर की साधारण प्रयोग सम्बन्धी जानकारी। देशी व्यापार–थोक व फुटकर व्यापार, बीजक व विक्रय विवरण। 20

(स) बैंक–जन्म, परिभाषा, कार्य एवं महत्व। भारतीय रिजर्व बैंक, स्टेट बैंक, व्यापारिक बैंक, सहकारी बैंक, देशी बैंकर का सामान्य अध्ययन। 15

(द) उपयोगिता ह्रास नियम, व्यय व बचत आशय पारस्परिक सम्बन्ध, बचत का सामाजिक महत्व। उत्पत्ति के साधन, आशय, विशेषतायें एवं महत्व। 15

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक–

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान विषय, अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य एवं आंतरिक मूल्यांकन 15+15=30

नोट :–दिये गये प्रोजेक्ट सूची में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। प्रत्येक खण्ड में से एक प्रोजेक्ट कराना अनिवार्य है। शिक्षक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट कार्य अपने स्तर से भी दे सकते हैं। प्रत्येक प्रोजेक्ट 05 अंक का होगा। 15 अंक का आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर मासिक परीक्षण द्वारा होगा :

1–काल्पनिक आंकड़ों के आधार पर व्यापार खाते का नमूना।

2–अन्तिम खाते बनाते समय विभिन्न समायोजनाओं का विवेचन।

3–बैंक समाधान विवरण कब एवं क्यों बनाया जाता है ?

4–रोकड़ बही एवं पासबुक बही में अन्तर के कारण।

5–चेक एवं चेक का रेखांकन।

6–नस्तीकरण की प्रणालियाँ।

7–कार्ड अनुक्रमणिका का वर्णन।

8–चेक एवं चेक का अनादरण।

9–शीघ्र संदेश भेजने का साधन।

10–समय एवं श्रम बचाने वाले यंत्र।

11–फुटकर व्यापार का वर्गीकरण।

12–बैंक का उदय या विकास।

13–रिजर्व बैंक के कार्य।

14–स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के कार्य।

15–उपयोगिता ह्रास नियम की व्याख्या।

16–उत्पत्ति के साधन।

चित्रकला

कक्षा–10

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा। पूर्णांक–70

प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा, जिसमें खण्ड–(क) अनिवार्य है। शेष खण्डों में से एक करना है।

खण्ड–क (अनिवार्य) 45

प्राकृतिक दृश्य चित्रण–जैसे ऊषाकाल, संध्याकाल, ग्रामीण व पहाड़ी दृश्य का चित्रण, जलरंग अथवा पेस्टल रंगों से रंगे।

माप– 20 सेमी0×15 सेमी0 हो।

अथवा

आलेखन–चतुर्भुज अथवा वृत्त में केवल पूर्ण इकाई द्वारा मौलिक आलेखन बनाये और उसमें कम से कम तीन रंगों का प्रयोग करें। मान 15 सेमी0 से कम न हो।

अथवा

प्राविधिक–अन्तः स्पर्शी तथा वाह्यस्पर्शी अन्तर्गत एवं परिगत आकृतियां, रेखाओं तथा वृत्तों को स्पर्श करते हुये स्पर्श रेखायें। क्षेत्रफल सम्बन्धी साधारण निर्मेय, ज्यामितीय आलेखन, साधारण एवं कर्णवत् पैमाने।

खण्ड–ख (स्मृति चित्रण) 25

साधारण जीवन में दैनिक उपयोग की वस्तुयें, घरेलू बर्तन जैसे–सुराही, बाल्टी, लोटा, अमृतवान, केतली, बोतल, गिलास तथा तरकारी, फल आदि। पेंसिल द्वारा रेखांकन होगा।

खण्ड–ग (भारतीय चित्रकला) 25

इस खण्ड में चार प्रश्न होंगे, जिसमें से दो प्रश्न करने होंगे। एक प्रश्न वस्तुनिष्ट होगा जो अनिवार्य होगा :–

1–चित्रकला का प्राचीन उल्लेख।

2–चित्रकला की विशेषतायें।

3–प्रागैतिहासिक काल।

प्रोजेक्ट कार्य

कक्षा–10

नोट :–परियोजना कार्य तीन खण्डों में विभक्त होगा, जिसमें से किन्हीं दो खण्डों से तीन परियोजना कार्य पूर्ण करना अनिवार्य है। प्रत्येक परियोजना कार्य पाँच अंक का है। इसके अतिरिक्त 15 अंक मासिक परीक्षा के लिये निर्धारित है।

परियोजना कार्य सैद्धान्तिक, तकनीकी कौशल तथा माध्यम (जलरंग, पोस्टर रंग, पेंसल, चारकोल, क्रेयान, इंक आदि) के उपयुक्त प्रयोग पर आधारित होगा।

परियोजना कार्य में संयोजन, सौन्दर्य (आकर्षण) अनुपात, लय के सिद्धान्तों का ध्यान रखते हुये पूर्ण किया जाय।

खण्ड–क (प्राकृतिक दृश्य चित्रण)

1–प्राकृतिक दृश्य चित्रण (ऊषाकाल) का 20×15 सेमी0 माप में सृजन करें। जलरंग माध्यम से ऊषाकाल का प्रभाव चित्रित किया जाय। चित्र में परिप्रेक्ष्य स्पष्ट से दिखे।

2–संध्याबेला का दृश्य चित्रण पोस्टर अथवा पेस्टल रंग द्वारा पूर्ण करें जिसकी माप 20×15 सेमी0 हो। चित्र में सन्तुलन एवं परिप्रेक्ष्य स्पष्ट हो।

3–ग्रामीण दृश्य चित्रण को पोस्टर रंग/जलरंग/पेस्टल रंग द्वारा पूर्ण किया जाय जिसमें मानव/पशु आकृतियों के अलावा ग्रामीण झोपडियाँ एवं कुआँ आदि का भी समावेश हो।

4–पहाड़ी दृश्य चित्र का चित्रण 20×15 सेमी0 माप में सृजित करें। रंग/रेखा का सन्तुलन आवश्यक है।

5–पेंसिल अथवा चारकोल के माध्यम से दृश्य चित्रण कीजिये। चित्र में सन्तुलन एवं लय का विशेष महत्व होगा। परिप्रेक्ष्य दर्शाना आवश्यक है।

6–चतुर्भुज में केवल एक पूर्ण इकाई द्वारा मौलिक आलेखन बनायें और उसमें कम से कम तीन रंगों का प्रयोग करें। माप 15 सेमी0 से कम न हो।

7–वृत्त में केवल एक पूर्ण इकाई द्वारा मौलिक आलेखन बनायें और उसमें कम से कम तीन मौलिक रंगों का प्रयोग करें। माप 15 सेमी0 से कम न हो।

8–किसी मार्ग के भव्य प्रवेश द्वार की परिकल्पना करें। उसके ज्यामितीय महत्व को सिद्ध करने वाली दो समानान्तर वृत्ताकार मीनारों की रचना करें जिसका ऊपरी भाग त्रिभुजाकार बीम से बँधा हो।

9–किसी नहर अथवा मार्ग की परिकल्पना करें, उसकी मापनी बनायें और निरूपक भिन्न ज्ञात करें। (अंकीय आंकड़े स्वयं निर्धारित करेंगे) नहर अथवा सड़क का लघु दृश्य भी दर्शाने का प्रयास करें।

खण्ड–ख (स्मृति चित्रण)

10–साधारण जीवन में दैनिक उपयोग की वस्तुयें घरेलू बर्तन जैसे सुराही, बाल्टी, लोटा, अमृतबान, केतली, बोतल, गिलास आदि को स्मृति के आधार पर पेंसिल अथवा चारकोल से रेखांकन किया जाय।

11–विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियों को स्मृति के आधार पर रेखांकन करें। पेंसिल अथवा चारकोल से किया जाय।

12–विभिन्न प्रकार के बर्तनों एवं सब्जियों तथा फलों को पेस्टल एवं वाटर कलर से चित्रित करें।

खण्ड–ग (भारतीय चित्रकला)

13–भारतीय चित्रकला के विभिन्न काल खण्डों का विभाजन करते हुये प्रत्येक काल खण्ड पर मौलिक लेख लिखें।

14–चित्रकला की विशेषताओं का उल्लेख करें जिससे यह सिद्ध हो सके कि कला ही जीवन है।

15–प्रागैतिहासिक काल की विभिन्न शिलाश्रयों का उल्लेख करते हुये उनके रंग एवं चित्रण विधान पर प्रकाश डालें।

रंजन कला

कक्षा–10

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा। प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा जिसमें से किन्हीं दो खण्ड के प्रश्न हल करने होंगे। खण्ड–क अनिवार्य होगा।

खण्ड–क (चित्र संयोजन) 42 अंक

अनिवार्य

परम्परागत अथवा स्वतंत्र शैली में दिये गये विषयों में से किसी एक विषय पर संयोजन कर चित्र बनाना :–

(क) सामाजिक जीवन।

(ख) देशभक्ति पर आधारित चित्र जल रंग अथवा पेस्टल रंग से चित्रित किया जाये। माप 20 सेमी0×15 सेमी0 के आयत से कम न हो।

खण्ड–ख (मानव अंग चित्रण) 28 अंक

मानव शरीर के अंगों का चित्रण (सामने रखे प्लास्टर ऑफ पेरिस, मिट्टी के मॉडल, आँख, कान, होठ, हाथ, पैर, नाक केवल पेंसिल द्वारा चित्रण करना)।

खण्ड–ग 28 अंक

इस खण्ड में कुल तीन प्रश्न होंगे, जिसमें से दो प्रश्न करना होगा। एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न करना होगा :–

1–चित्रकला के छः अंग।

2–अनुपात।

3–संतुलन।

4–प्रभावित।

5–सामंजस्य।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक कोई भी पुस्तक निर्धारित नहीं है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य के लिये तथा 15 अंक मासिक परीक्षा के लिये निर्धारित है जिसका मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर किया जायेगा।

प्रोजेक्ट कार्य की सूची

नोट :–निम्नलिखित में से कोई तीन प्रोजेक्ट छात्रों से तैयार करायें। अध्यापक विषय से सम्बन्धित अन्य प्रोजेक्ट भी दे सकते हैं। प्रत्येक प्रोजेक्ट 5 अंक का है।

निम्नलिखित कथनों के रंगीन पोस्टर बनाकर घर एवं विद्यालय में लगायें :–

1–बायें चलो।

2–जीवों पर दया करो।

3–सभी धर्म समान हैं।

4–जय जवान, जय किसान।

5–सब पढ़े, सब बढ़े।

6–किसी चित्रकार का चित्रकला में योगदान।

कक्षा–10

मानव विज्ञान

इस विषय में 70 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

(इथनोग्रेफी एवं सामाजिक सांस्कृतिक मानव विज्ञान)

पूर्णांक : 70 अंक

कालांश : 220

इकाई–1

(क) मानव विज्ञान की परिभाषा तथा प्रमुख शाखायें। 5 अंक

(ख) सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान की परिभाषा तथा शाखायें। 5 अंक

इकाई–2

पृथ्वी पर हिमयुग

(क) इथनोग्रेफी एवं इथनालोजी : परिभाषा एवं विषय क्षेत्र। 10 अंक

(ख) भारत की जनजातियों का भौगोलिक आर्थिक एवं भाषाई वर्गीकरण। 10 अंक

(ग) जनजाति की परिभाषा, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ी जनजाति (प्रिमिटिव)। 10 अंक

इकाई–3

खासा तथा खासी जनजाति का सामाजिक–आर्थिक परिवेश। 10 अंक

इकाई–4

(क) जनजातीय समस्या का स्वरूप एवं समस्या निराकरण के उपाय। 10 अंक

(ख) जनजातियों में एड्स तथा आपदा प्रबन्धन। 10 अंक

पाठ्य पुस्तकें–

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालय के प्रधान/विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

प्रोजेक्ट कार्य

इस विषय में 30 अंक का प्रायोगिक एवं आन्तरिक मूल्यांकन होगा जिसमें 15 अंक मासिक परीक्षा एवं 15 अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु निर्धारित है। विषय अध्यापक दिये गये प्रोजेक्ट में से तीन प्रोजेक्ट अवश्य तैयार करायें। विषय अध्यापक छात्र हित में अपने स्तर पर कोई अन्य प्रोजेक्ट भी करा सकते हैं–

1–भारत की जनजातियों का भौगोलिक वर्गीकरण।

2–जनजातियों का भाषाई वर्गीकरण।

3–खासा जनजाति का सामाजिक परिवेश।

4–जनजातियों में आपदा प्रबन्धन।

5–खासी जाति का आर्थिक परिवेश।

6–अनुसूचित जनजाति का वर्गीकरण।

7–पिछड़ी जनजाति का वर्गीकरण।

(क) नैतिक तथा खेल एवं शारीरिक शिक्षा

(कक्षा-10)

उद्देश्य-

1-बालकों का सर्वांगीण विकास एवं नैतिक गुणों का उन्नयन करना।

2-बालाकों के वैयक्तिक, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में नैतिक भावना का विकास करना।

3-बालकों में स्वस्थ्य नेतृत्व उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, समय-पालन, सदाचार, शिष्टाचार, विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्म सम्मान, आत्मसंयम, समाजसेवा, सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।

4-सुदृढ़ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि करना।

5-बालकों के श्रम के प्रति आदर एवं आत्मनिर्भर बनने हेतु उत्पादक कार्यों के प्रति अभिरुचि का सम्बर्द्धन करना।

6-समाज सेवा की भावना का सृजन करना।

7-स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूकता तथा क्रीड़ा-शालीनता की भावना का विकास करना।

8-बालकों का मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक एवं संवेदात्मक विकास करना।

खेल एवं शारीरिक शिक्षा

इस विषय में 50 अंकों की लिखित परीक्षा एक प्रश्न-पत्र। इसी के साथ ही 50 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। प्रयोगात्मक तथा लिखित परीक्षा विद्यालय स्तर पर होगी लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को 'ए' 'बी' 'सी' श्रेणी प्रदान की जायेगी जिसका अंकन छात्र के अंक प्रमाण-पत्र में किया जायेगा।

नैतिक शिक्षा

सैद्धान्तिक विवेचन कार्य– 2 अंक

1–निम्नलिखित महापुरूषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग–

स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मागांधी, सुभाष चन्द्र बोस, पंडित जवाहर लाल नेहरू, पंडित श्री राम शर्मा, आचार्य जी।

2–श्रद्धा, आज्ञापालन, त्याग, सत्य, प्रेम, सहयोग, निःस्वार्थ सेवा, श्रमदान, अहिंसा, मातृशक्ति का सम्मान और देश प्रेम पर आधारित लघु कथायें।

3–मानव अधिकार - जीवन, संरक्षण, सहभागिता, विकास का अधिकार, भारतीय संविधान में बाल अधिकार संरक्षण।

4- स्कूल में बच्चों के अधिकार - शिक्षण संस्थानों में बाल अधिकार उल्लंघन,शारीरिक दण्ड, परीक्षा का बोझ, आदर्श अध्यापक।

5- शिकायत प्रणाली, अधिकार संरक्षण आयोग।

पुस्तक मानव अधिकार अध्ययन प्रकाशक माइंडशेयर

इकाई–1 6 अंक

शारीरिक शिक्षा–

आधुनिक संकल्पना, आधुनिक समाज में शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व, शारीरिक शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा में सम्बन्ध, राष्ट्रीय एकता में खेलों की भूमिका, सामान्य ज्ञान शिक्षा एवं परीक्षण/सामूहिक वार्ता।

इकाई–2 6 अंक

वृद्धि एवं विकास–

शारीरिक क्रिया-कलाप में आयु एवं लिंग का अन्तर, बालक एवं बालिकाओं के शारीरिक संरचनाओं में अन्तर, शारीरिक वृद्धि एवं विकास में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का प्रभाव (Body types)।

इकाई–3 6 अंक

चोट–

अर्थ, बचाव एवं व्यवस्था–मोच, Strain, Contusion, Abrasion and Laceration ।

इकाई–4 6 अंक

मांस पेशी तंत्र–

परिचय, प्रकार, संरचना, कार्य, शरीर के अंगानुकूल वर्गीकरण, विभिन्न प्रकार के मांस पेशियों के लिये व्यायाम।

इकाई–5 6 अंक

शिविर आयोजन–

शिविर का अर्थ, उद्देश्य, महत्व, प्रकार, शिविर लगाने की सामग्री, शिविर संगठन।

इकाई–6

शारीरिक थकान एवं मानसिक तनाव–

(अ) थकान का अर्थ, प्रकार, लक्षण एवं कारण बचाव एवं निराकरण, Detraining का प्रभाव–शारीरिक Fitness पर।

(ब) मानसिक तनाव के कारण, निराकरण एवं उपचार। 3 अंक

इकाई–7 6 अंक

योगासन–

अर्थ एवं महत्व, प्राणायाम, योगासन से लाभ, योगासन से बीमारियों का उपचार।

इकाई–8 6 अंक

यातायात के नियम–

नियम, संकेत, सावधानियां एवं दुर्घटना से बचाव।

नोट :–उक्त विषय के कक्षा–9 का पाठ्यक्रम यथावत् रहेगा।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम (कक्षा 10 के लिये) पूर्णांक–50

1–अभ्यास सारिणयों– 6 अंक

(क) सामूहिक पी0टी0।

(ख) योगाभ्यास।

(1) मयूर आसन।

(2) शीर्ष आसन।

(3) कपाल भारती।

2–कवायद और मार्च– 6 अंक

(1) रूट मार्च।

(2) कवायद और मार्च में गहन अभ्यास।

(3) समारोह परेड नेतृत्व का प्रशिक्षण।

3–लेजिम– 4 अंक

चौमुखी मोरचाल।

4–जिमनास्टिक/लोकनृत्य– 6 अंक

(क) जिमनास्टिक एवं मलखंब (<u>लड़कों के लिये</u>)

(1) मछली।

(2) एक हाथी।

(3) कमानी उड़ी।

(4) दो हत्थी घोड़ा।

(5) सुई डोरा।

(6) कान मिट्टी।

(7) बेल।

(8) पिरामिड।

मलखंब के लियो शिखर पर खड़े हों।

(1) घोड़ा (पैरलल बर्स)।

(2) रेस्टिंग ऑन बोथ बार्स क्लिफ ऑफ फॉरवर्ड।

(3) बेन्ट आर्म डबल मार्च फॉरवर्ड (बाजू झुकाकर आगे की ओर तेजी से बढ़ना)।

(4) आगे और पीछे की ओर झूलना और आगे की ओर प्रत्येक एक बार झूलने पर बाजुओं को झुकाना।

(5) झूलते हुये बाजू को झुकाना, पीठ ऊपर की ओर उठाना।

(6) डिप्स।

(7) पिरामिड–विभिन्न रचनायें।

(ख) लोकनृत्य (<u>लड़कियों के लिये</u>)

एक लोकनृत्य उसी क्षेत्र का तथा एक किसी अन्य क्षेत्र का।

(<u>लड़कों के लिये</u>)

हाई स्कूल स्तर अर्थात् VIII से XI की ऐसे लोकनृत्यों की सिफारिशें की जाती हैं जिसमें पर्याप्त शारीरिक श्रम पड़ता है।

5–बड़े खेल/छोटे खेल और रिले– 6 अंक

(क) बड़े खेल–

बड़े खेल की आधारभूत तकनीकें। खेलों में भाग लेना।

(ख) छोटे खेल–

(1) थ्री कोर्टडॉज बॉल।

(2) स्काउट।

(3) पोस्ट बॉल।

(4) बाउन्स हैण्ड बॉल।

(5) पुट इन टू द सर्किल।

(6) स्टीलिंग स्टिक।

(7) लास्ट कपल आउट।

(8) सेन्टर बेस।

(9) सोल्जर्स तथा ब्रिगेड।

(10) सर्किल चेन।

(ग) रिले–

कोई नहीं।

6–धावन तथा मैदान की प्रतियोगितायें परीक्षण और पदयात्रा– 6 अंक

(क) धवन पथ और मैदान की प्रतियोगितायें–

(1) 100 मी0 की दौड़।

(2) 800 मी0 की दौड़।

(3) लम्बी छलांग।

(4) ऊँची छलांग।

(5) शॉट पुट।

(6) 4×100 मी0 रिले (तकनीक)।

(7) डिस्कस थ्रो, जैवलिन थ्रो (तकनीक)।

(1) रिले।

(2) जैवलिन थ्रो।

(3) डिस्कस थ्रो।

(ख) परीक्षण–राष्ट्रीय शारीरिक दक्षता–

(1) मानक निष्पति परीक्षण।

(2) शक्ति/सहनशक्ति परीक्षण।

(ग) पदयात्रा–

क्रॉस कन्ट्री।

<u>लड़को के लिये पदयात्रा</u>–

(1) 6.44 से 7.25 किलोमीटर (4 से 4½ मील)।

(2) 4.83 में 6.44 किलोमीटर क्रॉस कन्ट्री (3 से 4 मील)।

<u>लड़कियों के लिये पद यात्रा</u>–

(1) 1.61 से 4.03 किलोमीटर (1 से 2½ मील) <u>लड़कों के लिये क्रॉस कन्ट्री</u>।

(2) 0.81 में .42 किलोमीटर (½ से 1½ मील) <u>लड़कियों के लिये क्रॉस कन्ट्री</u>।

7–मुकाबले के लिये– 6 अंक

(क) साधारण मुकाबले–

(1) पंजा झुकाना (फिंगर बैंड)।

(2) खींच कर खड़ा करना (पुट टू स्टैण्ड)।

(3) छड़ी धकेल (पुश अवे)।

(4) छड़ी खींच (पुल इन)।

(5) रिक्शा खींच (रिक्शा पुल)।

(6) रिक्शा ठेल (रिक्शा पुश)।

(7) जमीन से उठाना (लिफ्ट ऑफ)।

(ख) सामूहिक मुकाबले–

(1) छड़ी और कैदी (रेड्स ऐण्ड बल्यूज़)।

(2) जहरीली मुंगरी (प्वाइज़न क्लब)।

(ग) कुश्ती–

(1) पटका कम।

(2) पटका कम के लिये तोड़।

(3) दो दस्ती।

(4) लाना।

(5) उखेड़।

(घ) जुडो–

(1) एक हाथ की पकड़ छुड़ाना।

(2) दोनों कलाइयों की पकड़ छुड़ाना।

(3) एक ही जगह में कलाई पर दो दोहरी पकड़ छुड़ाना।

(4) साम गले की पकड़ छुड़ाना।

(5) सामने के बालों की पकड़ छुड़ाना।

(6) सिर पर प्रहार के बचाव।

(7) पीछे से कमीज की पकड़ छुड़ाना।

(8) पीछे से की गयी कमर की पकड़ छुड़ाना।

(9) सामने से की गयी कमर की पकड़ छुड़ाना।

(ङ) कटार चलाना–

जाम्बिया।

<u>लड़कियों लिये</u>–

(1) पैर के प्रहार से बचाव।

(2) कमर पर प्रहार से बचाव।

(3) चार बार।

8–राष्ट्रीय आदर्श और अच्छी नागरिकता, व्यावहारिक परियोजना और सामूहिक गान– 4 अंक

(क) राष्ट्रीय आदर्श और अच्छी नागरिकता–

(1) अच्छी आदत।

(2) हमारे संविधान के मूल आधार।

(3) पंचवर्षीय योजनायें और हाल में हुए विकास कार्य।

(4) भारतीय संस्कृति।

(ख) व्यावहारिक परियोजनायें–कोई नहीं–

(1) प्राथमिक उपचार।

(2) समाज सेवा।

(3) भीड़ का नियन्त्रण।

(4) खेल-कूद का आयोजन।

(ग) सामूहिक गान–

राष्ट्रीय गीत–एकगीत क्षेत्रीय भाषा में एक किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा और एक राष्ट्र भाषा में।

9–(1) वृद्धों, विकलांगों, रोगियों, असहायों एवं निर्धनों की सेवा सुश्रुषा करना– 6 अंक

(2) साक्षरता अभियान, पर्यावरण संरक्षण आदि में योगदान करना।

विचार/सुझाव–

जिम्नास्टिक, खेल से सम्बन्धित खेल विशेषज्ञ से Practical की सलाह ली जाये। इसी प्रकार छोटे खेल (सहायक मनोरंजन खेल) का शारीरिक शिक्षा, मार्चपास्ट हेतु N.C.C. विभाग, Sports Medicine हेतु डॉक्टर, डांस हेतु डांस टीचर आदि विशेषज्ञों की सेवायें ली जाये।

''हम और हमारा स्वास्थ्य'' प्रकाशक ''होप इनीशियेटिव''।

(ख) समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य–

स्थानीय सुविधानुसार निम्नलिखित में से कोई कार्य कराया जाय–

(1) विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना।

(2) विद्यालय में घास का लान तैयार करना।

(3) गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाना।

(4) विद्यालय की बाउण्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना।

(5) वृक्षारोपण।

(6) कताई-बुनाई।

(7) काष्ठ शिल्प।

(8) ग्रन्थ शिल्प।

(9) चर्म शिल्प।

(10) धातु शिल्प।

(11) धुलाई, रफू, बखिया।

(12) रंगाई और छपाई।

(13) सिलाई।

(14) मूर्ति कला।

(15) मत्स्य पालन।

(16) मधुमक्खी पालन।

(17) मुर्गी पालन।

(18) साग-सब्जी का उत्पादन।

(19) फल संरक्षण।

(20) रेशम तथा टसर का काम।

(21) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण।

(22) हाथ से कागज बनाना।

(23) फोटोग्राफी।

(24) रेडियो मरम्मत।

(25) घड़ी मरम्मत।

(26) चाक तथा मोमबत्ती बनाना।

(27) कालीन एवं दरी का निर्माण।

(28) फूलों, फलों तथा सब्जियों के पौधे तैयार करना।

(29) लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौने का निर्माण।

(30) बेकरी और कन्फेक्शनरी का काम।

(31) उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य।

उपर्युक्त कार्यों के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम

एक–विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना

उद्देश्य–

(1) छात्रों में बोध कराना कि ऋतु फूल-पत्तियों को लगाने तथा सब्जियों को बोने से जहां एक ओर आस-पास की वायु शुद्ध होती है, प्रदूषण दूर होता है, वहीं दूसरी ओर ताजी सब्जियां खाने को मिलती है, जिससे शरीर के स्वास्थ्य के लिये आवश्यक विटामिन तथा खनिज लवणों की आपूर्ति होती है।

(2) छात्रों का ऋतु के अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उन्हें लगाने तथा उनकी खेती करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) शीतकाल में सोया, मेथी, पालक, फूलगोभी, गांठ-गोभी, पात गोभी, लहसुन, प्याज, कलेन्डुला, डेहलिया, स्टोशियन, गुलदाउदी, सूरजमुखी आदि के पौध लगाना।

(2) ग्रीष्मकाल में कैना कोचिया, पोर्टलाका, बनीनिया आदि के पौध लगाना।

(3) अक्तूबर-नवम्बर (शरद ऋतु) में गुलाब के पौध लगाना।

(4) पौधों की सुरक्षा के उपाय करना, बाड़े लगाना।

(5) समय-समय पर सिंचाई करना आदि।

दो–विद्यालय में घास का लान तैयार करना

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि मैदान में घास लगाने से विद्यालय की सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ भूमि का कटाव नहीं होता, भूमि में फिसलन नहीं होती, लान की हरी-हरी घास नेत्रों की रोशनी के लिये लाभदायक होती है तथा घास के बढ़ने पर उनसे पशुओं के लिये चारा भी उपलब्ध हो सकता है।

(2) छात्रों में विद्यालय तथा घर के आस-पास की रिक्त भूमि पर घासों का लान तैयार करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) तैयार मिट्टी के दूब या इसी प्रकार की लान के लिये उपयुक्त अन्य घास के पौधे रोपना तथा पानी देना।

(2) समय-समय पर सिंचाई करना तथा उर्वरक (यूरिया आदि) डालना।

(3) घास बड़ी होने पर उसकी समुचित कटाई करते रहना जिससे लान की मखमली सुन्दरता बनी रहे।

(4) घास की कीटों से नष्ट होना तथा पशुओं से बचाने के लिये सुरक्षा के उपाय करना।

तीन–गमलों में दीर्घजीवी, शोभायुक्त पौधे लगाना

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि घर के आस-पास भूमि की कमी या अभाव होने पर भी गमलों में दीर्घ-जीवी, शोभायुक्त पौधे लगाये जा सकते हैं, जिनसे पर्यावरणीय प्रदूषण कम किया जा सकता है।

(2) छात्रों में सुरुचि एवं सौन्दर्य भावना जागृत करने के लिये गमलों में दीर्घजीवी, शोभायुक्त पौधे लगाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) गमलों में अनावश्यक रूप से उगने वाले खर-पतवार की सफाई तथा समय-समय पर खुरपी की सहायता से हल्की गुड़ाई।

(2) गमलों को आवश्यकतानुसार धूप तथा छाया में रखने की जानकारी।

(3) गमलों को जानवरों से बचाने के उपाय।

(4) आवश्यकतानुसार पौधे के ऊपर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव।

चार–विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि विद्यालय की शोभा इसकी बाउन्ड्री पर हेज तथा लतायें लगाने से बढ़ती है, साथ ही इससे पर्यावरणीय प्रदूषण कम होता है तथा मिट्टी का क्षरण रुकता है।

(2) छात्रों में विद्यालय (साथ ही घर) की बाउन्ड्री पर हेज अथवा लतायें लगाने का शौक तथा कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) लताओं को लगाने हेतु किस उपयुक्त तथा मनपसन्द लता का चुनाव कर उसे वर्षा ऋतु में लगाना।

(2) पशुओं से सुरक्षा के उपाय करना।

(3) समय-समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करना।

(4) हेज तथा लताओं को समय-समय पर करीने से कटिंग करना।

(5) आवश्यकतानुसार खाद एवं उर्वरक डालना।

पाँच–वृषारोपण

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि वृक्ष मानव जाति के अस्तित्व के लिये आवश्यक है, इनसे पर्यावरण प्रदूषित होने से बचता है, भूमि का कटाव रुकता है, समय पर उपयुक्त वर्षा होती है, भोज्य पदार्थ, औषधियां, इमारती तथा ईंधन की लड़कियां प्राप्त होती हैं। वृक्ष वास्तविक अर्थ में मानव के सच्चे मित्र एवं रक्षक हैं।

(2) छात्रों में वृक्षारोपण का शौक तथा कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) जिन वृक्षों के बीज बोये जाते हैं, उन वृक्षों के बीज तैयार कर गड्ढों में वर्षा ऋतु में बोना।

(2) वृक्षों की सुरक्षा हेतु आवश्यक उपाय करना, जाली अथवा बाड़ लगाना।

(3) समय-समय पर खर-पतवार निकालना, गुड़ाई-निराई करना तथा सिंचाई करना।

(4) आवश्यकतानुसार शाखाओं, प्रशाखाओं की कटिंग करना।

छः–कताई-बुनाई

उद्देश्य–

(1) छात्रों की सूत, खजूर की पत्ती, नाइलोन का धागा तथा सुतली से बुनाई करने को बोध कराना।

(2) आसनी बुनना, चटाई बुनना तथा टाट-पट्टी बुनने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) गांठे लगाने का अभ्यास।

(2) नटे व इकहरे ताने की पहचान।

(3) ताने की बॉबिन भरना, ताना करना, केथी तथा वयभरी ताना लूम पर चढ़ाना, ताना बीम चढ़ाना आदि।

(4) खादी बुनावट का अभ्यास।

(5) सूती सादी चादर, धारीदार तथा चारखानेदार चादरों के बुनने का अभ्यास।

(6) आसन बुनने का अभ्यास आदि।

सात–काष्ठ-शिल्प

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि भव्य इमारतों तथा फर्नीचरों के निर्माण तथा सजावट की वस्तुयें तैयार करने में काष्ठ-शिल्प का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

(2) इस कला द्वारा छात्रों के साथ नेत्र एवं मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित होता है।

पाठ्यक्रम

(1) जोड़ की शुद्धता एवं लकड़ी की प्लेनिंग करना।

(2) कील तथा पेंच का सही ढंग से प्रयोग करना।

(3) छात्रों को छोटी टेबुल, स्टूल, बेंच तथा लकड़ी की कुर्सियों के निर्माण का अभ्यास।

आठ–ग्रन्थ-शिल्प

उद्देश्य–

(1) छात्रों को पुस्तकों एवं अभ्यास पुस्तिकाओं को दीर्धकाल तक सुरक्षित रखने का बोध कराना।

(2) छात्रों में पुस्तकों को सिलने तथा उनकी जिल्दसाजी का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) लई, अधरी तथा सुसज्जा के अन्य वस्तुओं की जानकारी तथा उन्हें तैयार करने का अभ्यास।

(2) विभिन्न साइजों एवं आकृतियों के लिफाफे, राइटिंग पैड, फाइलें, अलबम, चित्रों के फ्रेम व केस आदि तैयार करने का अभ्यास।

(3) हिन्दी व अंग्रेजी अक्षरों को कलात्मक ढंग से लिखने का अभ्यास करना।

नौ–चर्म-शिल्प

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि दैनिक जीवन में चर्म से बनी वस्तुयें कितनी उपयोगी हैं।

(2) छात्रों में चर्म से विभिन्न प्रकार की दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) स्कूल बैग, होल्डाल आदि के किनारों पर चमड़े की पट्टी लगाने का अभ्यास।

(2) विभिन्न प्रकार के पर्स, चश्मा केश, कंघा केश, चाभी केश आदि बनाने का अभ्यास।

दस–धातु-शिल्प

उद्देश्य–

(1) छात्रों की धातु-अधातु में अन्तर तथा धातुओं के महत्व को बोध कराना।

(2) छात्रों का धातुओं से बनी दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं के मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) रिबट के द्वारा जोड़ने, रांगे से जोड़ने तथा सोम जोड़ का अभ्यास।

(2) लोहे तथा टीन की चादरों द्वारा सही माप के डिब्बे तथा छोटे बक्से तैयार करने का अभ्यास।

(3) टिन की चादर से सरल प्रकार के छोटे खिलौने तैयार करने का अभ्यास।

ग्यारह–धुलाई, रफू तथा बखिया

उद्देश्य–

छात्रों को बोध कराना कि धुलाई, रफू तथा बखिया द्वारा प्रत्येक परिवार में प्रयोग होने वाले वस्त्रों को अधिक समय तक पूर्व चमक-दमक के साथ चलाया जा सकता है तथा इस प्रकार आर्थिक बचत की जा सकती है।

पाठ्यक्रम

(1) ऊनी, सूती, रेशमी कपड़ों की मरम्मत का अभ्यास।

(2) रफू करने की विधि तथा रफू करते समय सही टांके लगाने का अभ्यास।

(3) माड़ी लगाना, हर प्रकार के कपड़ों पर सही ढंग के ताप का ध्यान रखते हुये लोहा करना तथा फिनिशिंग का अभ्यास।

बारह–रंगाई तथा छपाई

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि हर प्रकार के वस्त्रों को किस प्रकार रंगाई तथा छपाई कर उन्हें नयनाभिराम तथा आकर्षक बनाया जा सकता है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की रंगाई-छपाई के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) सूत का बेसिक रंग से रंगाई का अभ्यास।

(2) ऊन और रेशम की अम्लीय रंगों से रंगाई का अभ्यास।

(3) सूती मेजपोश, रूमाल तथा तकिया का गिलाफ, रेपिड फास्ट रंगों से छापा छापने का अभ्यास।

(4) स्टेन्सिल ब्रश से छपाई करने का अभ्यास।

तेरह–सिलाई

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि सिलाई कला के अभ्यास से पर्याप्त धन की बचत की जा सकती है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की सिलाई के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) सिलाई की मशीन के विभिन्न कल-पुर्जों तथा उनके कार्य की जानकारी।

(2) नाप लेने के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रणाली का ज्ञान तथा अभ्यास।

(3) विभिन्न प्रकार की पोशाकों के लिये पेपर कटिंग का अभ्यास।

(4) बच्चे, स्त्री तथा पुरुषों के सामान्य प्रयोग की पोशाकों की सही कटिंग करना तथा उनकी सिलाई का अभ्यास लड़कियों का कुर्त्ता, सलवार, ब्लाउज़, पेटीकोट, अन्डरवीयर, कुन्देदार पैजामा, सादा फुलपैण्ट, कुर्ता, कमीज बंगला कुर्ता, फ्रॉक, नेकर आदि)।

चौदह–मूर्ति कला

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि मूर्ति कला का जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है, यह विगत स्मृतियों को जीवित रखने का एक मुखर साधन है।

(2) छात्रों में मूर्ति कला के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) अनेक प्रकार की डिज़ाइन बनाने का अभ्यास।

(2) भट्ठी में बर्तन तथा मूर्तियां पकाने का अभ्यास।

(3) मूर्ति-कला में रंगों की जानकारी तथा उसका सही प्रयोग और कलानुसार सजावट का अभ्यास।

(4) दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले बर्तन-गिलास, कटोरी, प्याले, दीपक, तस्तरी राखवानी, धूपवानी, फूलदान, गमला, फूलों की आकृतियाँ, फल, सब्जियों के मॉडल आदि बनाने सुखाने, पकाने तथा रंगने का अभ्यास।

पन्द्रह–मत्स्य पालन

उद्देश्य–

(1) छात्रों को बोध कराना कि मत्स्य पालन से पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, मत्स्योत्पादन एक लाभकारी उद्योग है।

(2) छात्रों को मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करना तथा सही विधि से मत्स्य पालन करना सिखाना।

पाठ्यक्रम

(1) मत्स्य के जीवन वृत्तान्त की जानकारी तथा टैंक में मत्स्य पालन का अभ्यास।

(2) भारत में पायी जाने वाली मत्स्य की साधारण किस्मों की जानकारी तथा उनके पालने की विधि की जानकारी एवं अभ्यास।

(3) तालाब में मत्स्य की खेती का अभ्यास।

सोलह-मधुमक्खी पालन

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि मधु एकत्र करने के लिये मधुमक्खियों को पाला जा सकता है।

(2) छात्रों को बोध कराना है कि मधु अनेक दवाइयों में प्रयुक्त होती है तथा अत्यन्त स्वास्थ्यवर्धक भोज्य पदार्थ है।

(3) छात्रों में मधुमक्खियों को मौन गृह में रखना तथा उनके रख-रखाव और शहद निकालने का कौशल विकसित करना है।

पाठ्यक्रम

(1) फलों के मौसम के अनुसार मौनवंशों की इकाई बदलते रहने की जानकारी।

(2) अधिक ठंड से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना।

(3) अधिक गर्मी से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना।

(4) चीटियों से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना।

(5) मधुमक्खियों को रोगों तथा शत्रुओं से बचाने के उपाय करना।

(6) मधुमक्खियों के लिये उचित भोजन पानी की जानकारी।

(7) मौनगृहों से शहद एकत्र करने की विधि की जानकारी।

सत्रह-मुर्गी पालन

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि प्रोटीन भोजन का एक मुख्य अवयव है। प्रोटीन का सरलता से उपलब्ध होने वाला प्रमुख साधन अण्डा है जिसे मुर्गी पालन से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में मुर्गी के आवास व्यवस्था, रख-रखाव, रोग तथा उनके उपचार मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) चूजे इन्क्यूप्रेटर से निकालने के 48 घन्टे बाद फार्म से ले आकर उसे विधिवत् पालना, कीड़े मारने की दवाइयां देना, टीके लगवाना, उचित दाना-पानी तथा प्रकाश की व्यवस्था करना।

(2) बेकार और बीमार मुर्गियों की पहचान करना तथा उन्हें छांटकर अलग करना।

(3) दिन में 4 बार एक निश्चित समय पर अण्डे एकत्र करना।

(4) बाड़े की सफाई, बिछावन की सफाई, पानी के बर्तनों एवं फीडर्स की नियमित सफाई करना।

(5) मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव की जानकारी प्राप्त करना।

अट्ठारह-शाक-सब्जी का उत्पादन

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि आहार में शाक-सब्जी का कितना महत्वपूर्ण स्थान है तथा वे सब प्रकार के विटामिन, खनिज एवं लवणों की आपूर्ति कर हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं तथा रोगों से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते हैं।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार शाक-सब्जी को पैदा करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) शाक-सब्जी में लगने वाले कीड़ों, रोगों की जानकारी तथा उनसे सुरक्षा के उपाय।

(2) कीटनाशक दवाओं के प्रयोग में बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी तथा अभ्यास।

(3) खेत से शाक-सब्जी निकालने की सही विधि की जानकारी।

(4) शाक-सब्जी के सड़ने के कारणों तथा उसे बचाने के उपायों की जानकारी व उनका रख-रखाव।

(5) शाक-सब्जी के संरक्षण की जानकारी, बोतल बन्दी तथा डिब्बा बन्दी की जानकारी, उनसे लाभ-हानि।

उन्नीस-फल संरक्षण

उद्देश्य-

(1) फलों के नष्ट होने की प्रक्रिया का छात्रों को बोध कराना।

(2) विभिन्न प्रकार के फलों के संरक्षण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) टमाटर की सॉस बनाने का अभ्यास।

(2) कोहड़े का केचअप बनाने का अभ्यास।

(3) नींबू या मालटा का स्क्वैश बनाने का अभ्यास।

(4) उपर्युक्त तैयार सामग्रियों के डिब्बा बन्दी की जानकारी।

(5) सावधानियां तथा सुरक्षा के नियमों की जानकारी।

बीस-रेशम तथा टसर का काम

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि रेशम के कीड़ों का पालन कर रेशम का धागा प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में शहतूत के पौधों का उत्पादन करना, शहतूत के पौधों पर रेशम के कीटों का पालन करना, प्यूपा (कोया) एकत्र कर उनसे रेशम का धागा प्राप्त करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) शहतूत के पेड़ तथा पत्तियों को शत्रु कीटों से बचाना, शहतूत की रक्षा करना।

(2) शहतूत के पौधों को समय-समय से खाद एवं पानी देना।

(3) शहतूत की पत्ती तोड़ने की विधियों की जानकारी, उनका तुलनात्मक अध्ययन तथा अभ्यास।

(4) रेशम कीट की बीमारियों की पहचान तथा उनसे रेशम कीड़ों के बचाव के उपाय करना।

इक्कीस-सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि सुतली तथा टाट-पट्टी कुटीर उद्योग है जिससे ग्रामीण अर्थ व्यवस्था सुधारने में सहायता मिल सकती है तथा कम पूंजी में इसे प्रारम्भ किया जा सकता है एवं इसके लिये कच्चा माल सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में सुतली तथा टाट-पट्टी के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) टाट-पट्टी बुनने की मशीन की जानकारी प्राप्त करना तथा उस पर कार्य करने का अभ्यास करना।

(2) अच्छे किस्म की रस्सी का निर्माण का अभ्यास करना।

(3) सादी तथा रंगीन टाट-पट्टी के निर्माण का अभ्यास करना तथा अच्छी फिनिशिंग का अभ्यास करना।

बाइस)-हाथ से कागज बनाना

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि आधुनिक युग में ज्ञान के विकास तथा उसे सुरक्षित रखने में कागज का महान योगदान है।

(2) छात्रों में हाथ से कागज बनाने के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) कागज को सुखाने तथा पालिश करने की विधि की जानकारी तथा उसका अभ्यास।

(2) ग्लेजिंग करना।

(3) स्याही सोख कागज तैयार करना।

(4) बेकार लुग्दी का प्रयोग करना।

तेईस-फोटोग्राफी

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि विगत स्मृतियों को साकार रूप से सुरक्षित रखने के लिये फोटोग्राफी एक सशक्त माध्यम है।

(2) छात्रों को फोटो खींचने, उनका डेवलपमेन्ट करने, प्रिंटिंग तथा इन्लार्जमेन्ट करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) निगेटिव की टचिंग तथा कलर करना।

(2) प्रिंटिंग बाक्स द्वारा कान्टेक्ट प्रिन्ट करना।

(3) इनलाइजर से इन्लार्जमेन्ट बनाना।

(4) इन्लार्जमेन्ट तैयार होने के बाद फोटो को कलर करना और फिनिशिंग करना।

(5) किसी फोटो से इन्लार्जर द्वारा निगेटिव तैयार करना।

(6) रंगीन फोटोग्राफी की जानकारी तथा अभ्यास।

सावधानियां-

(1) प्रिंटिंग डेवलपिंग का कार्य डार्करूम में ही करें।

(2) लाल प्रकाश में ही प्रिंटिंग, डेवलपिंग करें, कार्य समाप्त होने के बाद ही।

चौबीस-रेडियो मरम्मत

उद्देश्य-

(1) छात्रों को रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेप रिकार्डर तथा टू-इन-वन के बारे में बोध कराना।

(2) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर की असेम्बलिंग एवं रिपेयरिंग का कौशल विकसित करना।

(3) टेप रिकार्डर तथा टू-इन-वन की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) टेप रिकार्डर के दोषों को ढूढ़ने एवं उन्हें सुधारने का अभ्यास।

(2) टू-इन-वन के दोषों को ढूढ़ने तथा उन्हें सुधारने का अभ्यास।

(3) रेडियों तथा ट्रांजिस्टर की असेम्बलिंग का अभ्यास।

(4) बैटरी एलीमिनेटर की जानकारी।

(5) अपेक्षित सावधानियों तथा सुरक्षा के नियमों की जानकारी (विशेषतः विद्युत् आघात से बचने के लिये सही उपायों तथा सुरक्षा नियमों की जानकारी)।

पच्चीस-घड़ी मरम्मत

उद्देश्य-

(1) छात्रों में कम लागत में घड़ियों की मरम्मत तथा रख-रखाव की क्षमता का विकास करना।

(2) मैकेनिकल तथा एलेक्ट्रिकल प्रकार की कलाई घड़ी, टेबुल घड़ी तथा दीवार घड़ी की मरम्मत, सर्विसिंग और संयोजन (असेम्बली) का कौशल विकसित करना।

(3) छोटे-छोटे कल-पुर्जों को लेकर किये जाने वाले कार्यों में बरतने योग्य सावधानियों का अभ्यास करना।

पाठ्यक्रम

(1) विभिन्न प्रकार की घड़ियों को खोलना, सफाई करना, टूटे पुर्जों की मरम्मत करना अथवा उसके स्थान पर उपयुक्त ढंग से नये पुर्जे लगाना तथा टाइप सेटिंग करना, ओवरहॉलिंग करना।

(2) घड़ियों के क्रय-विक्रय में अपेक्षित सावधानियों की जानकारी।

(3) सावधानियां एवं सुरक्षा के नियम।

(4) घड़ी मरम्मत की कार्यशाला के प्रबन्ध सम्बन्धी जानकारी।

छब्बीस-चाक एवं मोमबत्ती बनाना

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि कम लागत की पूंजी में चाक एवं मोमबत्ती का लघु कुटीर उद्योग प्रारम्भ किया जा सकता है जिसकी खपत आस-पास के परिवेश में हो सकती है।

(2) छात्रों में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) जब सांचे के अन्दर मोम जम जाये तो सांचे को पानी के बाहर निकालना तथा ऊपर एवं नीचे का धागा चाकू से काट कर सांचे को खोलना एवं मोमबत्ती बाहर निकालना।

(2) तैयार मोमबत्ती की पैकिंग कर विक्रय हेतु तैयार करना।

(3) पैराफीन मोम को कम आंच पर पिघलाना चाहिये। अतः इसका सावधानीपूर्वक अभ्यास करना।

सत्ताइस-कालीन तथा दरी का निर्माण

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि विभिन्न अवसरों पर बिछाने तथा ड्राइंग रूम को सजाने में कालीन तथा दरी का भारी उपयोग होता है।

(2) छात्रों में कालीन तथा दरी बुनने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) दरी बुनाई, गणित व विभिन्न प्रकार की डिजाइनों की जानकारी व तद्नुसार बुनाई का अभ्यास।

(2) कालीन बुनाई की तकनीक की जानकारी व बुनाई का अभ्यास।

(3) कालीन की धुलाई, कालीन के सीधे और धागों की छंटाई तथा सतह को चिकना बनाने का अभ्यास।

(4) दरी तथा कालीन बुनने में सावधानियों की जानकारी।

अट्ठाइस-फूलों, फलों तथा सब्जियों की पौध तैयार करना

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि अच्छी प्रजाति के पौधे तैयार कर उनके सही रोपण द्वारा पौधे शीघ्र बढ़ते हैं तथा उनसे उत्पादन भी अधिक होता है।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार सब्जियों तथा फूलों का चयन कर उनकी पौध तैयार करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) स्थानीय मांग के अनुसार फूलों, फलों तथा सब्जियों की पौध तैयार करना।

(2) पौध लगाने के लिये भूमि की तैयारी करना, भूमि की चारों ओर फेसिंग (बाड़) लगाने का कार्य करना तथा सिंचाई की व्यवस्था करना।

(3) पौध तैयार करने के लिये उपर्युक्त खाद तथा उर्वरकों का ज्ञान एवं सही चुनाव का अभ्यास।

(4) पौध तैयार करने के लिये अच्छे बीजों के चुनाव की जानकारी।

उन्तीस-लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौनों का निर्माण

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना कि लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने बच्चों के लिये आकर्षण के केन्द्र तथा ड्राइंग रूम सजाने के लिये सुन्दर साधन होते हैं।

(2) छात्रों में लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने के निर्माण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) खिलौनों को चिकना बनाने तथा विभिन्न रंगों के प्रयोग की जानकारी तथा अभ्यास।

(2) ठोस गोलों और पट्टे की विधि से अनेक फल जैसे नारंगी, अनार, सेब, अमरूद, नाशपाती, तरकारियां, टमाटर, मूली, बैगन व अन्य पशु-पक्षियों के लिये जैसे हिरन, खरगोश, गाय, बैल, हंस, मोर, तोता, बतख आदि तैयार करने का अभ्यास।

(3) साधारण फल, पत्तियों सहित जैसे कमल, सूरजमुखी, डेलिया, आदि बनाना।

(4) मिट्टी के खिलौने के रख-रखाव में अपेक्षित सावधानियां तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी।

तीस-बेकरी तथा कन्फेक्शनरी का कार्य

उद्देश्य-

(1) छात्रों को बोध कराना है कि सामान्यतः नाश्ते में प्रयोग किये जाने वाले बिस्कुट तथा केक आदि सरलता से घर में बनाये जा सकते हैं।

(2) छात्रों में बिस्कुट, केक, पेस्ट्री तथा पावरोटी बनाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम

(1) केक बनाने की विभिन्न विधियों का अभ्यास।

(2) पेस्ट्री बनाने के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास।

(3) विभिन्न प्रकार के मीठे, नमकीन तथा मीठे नमकीन बिस्कुट तैयार करने की विधियों का अभ्यास।

(4) पावरोटी, केक, पेस्ट्री तथा बिस्कुट को खराब होने से बचाने की विधियां, सावधानियां बरतने तथा सुरक्षा नियमों के पालन का अभ्यास।

सामाजिक सेवा

(1) सामुदायिक विकास के कार्य, विद्यालय, भवन एवं परिसर की स्वच्छता एवं सफाई।

(2) श्रमदान का महत्व एवं अभ्यास (महीने में एक दिन विद्यालय के हित में श्रमदान करना)।

(3) देशाटन (Outing)।

सामान्य निर्देश

1-विद्यालय का प्रारम्भ सामूहिक प्रार्थना एवं दैनिक प्रतिज्ञा से होना चाहिये।

2-प्रार्थना-स्थल पर सप्ताह में दो बार प्रधानाचार्या, शिक्षकों, विशेष अतिथियों एवं छात्रों द्वारा नैतिक मूल्यों को जगाने वाले दो मिनट के प्रवचन कराये जायें।

3-विद्यालय में समय-समय पर अभिनय, लेख, कहानी, सूक्ति, कविता पाठ, अंत्याक्षरी आदि की प्रतियोगिताओं, महापुरुषों के जन्म-दिनों तथा वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन किया जाये।

4-छात्रों को प्रतिदिन निर्धारित व्यायाम एवं योगदान कराने के लिये प्रेरित किया जाय।

5-सामूहिक व्यायाम एवं खेलों का आयोजन किया जाय।

6-समाज सेवा के कार्य के अन्तर्गत विद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन, विद्यालय की सफाई, मरम्मत एवं सजावट तथा पुस्तकालय सेवा जैसे रचनात्मक कार्य भी कराये जायें।

मूल्यांकन-

1-उपर्युक्त पाठ्यक्रम का मूल्यांकन पूर्णतया आन्तरिक होगा।

2-प्रत्येक छात्र को एक डायरी रखनी होगी जिसमें उनके द्वारा किये कार्य, नैतिक सत्प्रयासों, शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत किये गये अभ्यासों, कृत समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों एवं सामाजिक सेवा के रूप में किये गये प्रयत्नों तथा कार्यों का मासिक विवरण सम्बन्धित अध्यापक द्वारा अंकित होगा तथा प्रत्येक माह के अन्त में यह विवरण मूल्यांकन हेतु कक्षाध्यापक के माध्यम से प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

3-मूल्यांकन के आधार पर इसमें तीन श्रेणियां ए, बी, सी प्रदान की जायेगी। जिन छात्रों ने कार्य न पूरा किया हो तो उन्हें तब तक सामान्य परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित नहीं किया जायेगा। जब तक कि निर्धारित कार्य पूरा न कर लें। जो छात्र उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में से किसी भी श्रेणी के योग्य नहीं पायें जायेंगे उनकी विवरण पुस्तिका (डायरी) में तद्नुसार प्रविष्टि कर दी जायेगी तथा ऐसा छात्र मुख्य परीक्षा में बैठने के लिये अर्ह न होगा।

पाठ्य पुस्तक-

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के प्रधान सम्बन्धित विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पठन सामग्री का चयन कर लें।

पूर्व व्यावसायिक ट्रेड के पाठ्यक्रम

(1) ट्रेड-टेक्सटाइल डिजाइन

उद्देश्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य, संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

टेक्सटाइल डिजाइन ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं-

(क) वेतन भोगी रोजगार-

(1) टेक्सटाइल इण्डस्ट्रीज में निम्न पदों पर रोजगार प्राप्त हो सकता है-

[क] सहायक रंगाई मास्टर।

[ख] सहायक छपाई मास्टर।

(2) छोटे कारखानों में-छपाई, रंगाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में।

(ख) स्वरोजगार के रूप में-

(1) घरेलू व्यवसाय के रूप में छपाई कार्य, रंगाई कार्य करके माल को स्वयं बेच सकता है या वह उद्योगों में सप्लाई कर सकता है।

(2) ग्राहकों की आवश्यकतानुसार आर्डर लेकर कार्य पूरा करके अपनी आय प्राप्त कर सकता है।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1-

(क) रंगाई व छपाई करने से पहले धागे व कपड़ों की योग्य बनाने हेतु शुद्धिकरण करना।

(ख) ब्वायलिंग (उबालना), विरंजन (ब्लीचिंग) सूती धागे या कपड़ों पर डायरेक्ट रंग, नेप्थाल रंग का प्रयोग करना।

(ग) ऊनी, रेशमी कपड़ों पर एसिड रंगों का प्रयोग।

इकाई-2-

(क) सूती कपड़ों पर डायरेक्ट रंग से छपाई-ठप्पा या स्क्रीन द्वारा।

(ख) सूती कपड़ों पर पिगमेन्ट रंग से छपाई-ठप्पा या स्क्रीन द्वारा।

(ग) ब्रुश पेटिंग तथा टाई एण्ड डाई।

इकाई-3-

(क) प्रिंटिंग, ड्राइंग के पश्चात् कपड़े की फिनिशिंग।

(ख) कपड़े पर निम्न दाग, धब्बों को छुड़ाने की विधि-

[1] ग्रीस।

[2] तेल।

[3] आइस्क्रीम/चाकलेट।

[4] चाय और काफी।

[5] शू-पॉलिश।

[6] स्याही।

[7] जंग।

[8] हल्दी।

[9] अंडा।

[10] खून।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) टाई एण्ड डाई विधि का प्रयोग-घरेलू आवश्यक वस्त्रों पर। उदाहरण-कुशन कवर तथा दुपट्टा।

(2) ब्रुश या हैण्ड पेटिंग-मेज पोश, टेबिल मैट।

(3) धब्बे छुड़ाना-ग्रीस, तेल, आइसक्रीम/चाकलेट, चाय/काफी। शू-पालिश, स्याही, जंग, हल्दी, अंडा, खून।

(4) तैयार किये गये कपड़ों का फिनिशिंग करना।

(5) स्प्रे प्रिंटिंग द्वारा 30 x 30 सेमी0 का 4 नमूना बनाना।

(6) स्टेन्सिल स्क्रीन विधि द्वारा टेबल मैट बनाना।

(क) लघु प्रयोग-

1-रेशी की परीक्षा।

2-कलफ लगाना।

3-आयरन करना।

4-धब्बे छुड़ाना।

5-छपाई के लिये रंग का पेस्ट तैयार करना।

6-रंग का संयोजन द्वारा रंगाई करना।

उदाहरण स्वरूप-लाल, पीला द्वारा नारंगी तैयार करना।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

1-उबालना।

2-निरंजना।

3-नेप्थाल की रंगाई।

4-स्क्रीन से छपाई।

5-स्टेन्सिल से कटाई।

6-ठप्पे की छपाई।

7-टाई एण्ड डाई।

8-स्प्रे प्रिंटिंग।

9-ब्रुश प्रिंटिंग।

10-डाइरेक्ट रंगाई।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	वस्त्र विज्ञान के मूल सिद्धान्त	जे0 पी0 शैरी	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान (तृतीय संस्करण)	प्रो0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक डिपो, लखनऊ।
3	हाऊस होल्ड टेक्सटाइल	दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली।
4	टेक्सटाइल केयर एण्ड डिजाइन	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, एक्सप्लेनर, इन्स्ट्रक्शनल मेटेरियल फार क्लासेज, IX-X दिल्ली	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली।

(2) ट्रेड-पुस्तकालय विज्ञान

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों के आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करना।

(6) छात्रों को पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड की प्रारम्भिक जानकारी से अवगत कराना।

रोजगार के अवसर-

(1) वेतन भोगी रोजगार के अवसर-

[क] ग्रामीण, कम्युनिटी सेन्टर, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, पंचायत तथा अन्य लघुस्तरीय पुस्तकालयों में रोजगार के अवसर।

[ख] विभिन्न श्रेणी के पुस्तकालयों में पुस्तक-प्रदाता जनरेटर पुस्तक संरक्षण सहायता तथा सार्टर के रूप में रोजगार के अवसर।

(2) स्वरोजगार के अवसर-

[क] पुस्तकालय की अध्ययन सामग्रियों की जिल्दसाजी का व्यवसाय।

[ख] पुस्तकालय उपकरण एवं उपस्कर का निर्माण का व्यवसाय।

[ग] पुस्तकालय एवं उसकी अध्ययन सामग्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षण का व्यवसाय।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

1-संग्रह, सत्यापन, आवश्यकता एवं विधियां-

(क) पुस्तकालय वर्गीकरण की परिभाषा, उद्देश्य, महत्व, पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों का संक्षिप्त ज्ञान, ग्रन्थ वर्गीकरण, क्रमिक संख्या (वर्गांक + ग्रंथांक) ड्यूई, दशमलव, वर्गीकरण पद्धति का प्रारम्भिक ज्ञान।

(ख) सूची की परिभाषा, उद्देश्य, महत्व, भौतिक स्वरूप, आन्तरिक स्वरूप, सूची संलेख-मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्तः निर्देशीय संलेख की ए0 ए0 सी0 आर0-2 के अनुसार संरचना।

2-(क) भौतिक ग्रन्थ विज्ञान (फिजिकल विविलोयोग्राफी) पुस्तक निर्माण प्रक्रिया-कागज के प्रकार, नाप, भार, नाम, उपयोग, व्यापारिक केन्द्र (मुद्रण सामग्री)।

(ख) जिल्दबन्दी-जिल्दबन्दी के प्रकार, जिल्दबन्दी में उपयोगी सामग्री, पृष्ठ मोड़ना, सिलाई के प्रकार (जिल्दबन्दी, टेप डोरा तथा सादी सिलाई), आवरण चढ़ाना तथा सज्जा।

3-पुस्तकालय एवं पुस्तकों की सुरक्षा एवं संरक्षा-कीटाणुनाशक दवाओं का ज्ञान एवं उनका प्रयोग, अन्य सुरक्षात्मक विधियों का ज्ञान एवं संरक्षण के विविध कार्यक्रम।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) लघु प्रयोग-

पुस्तकालयों के निम्नलिखित उपकरणों का प्रारूप तैयार करना : बुक प्लेट, बुक-लेबल, तिथि-पत्रों, पुस्तक-पत्रक, पुस्तक-पॉकेट, पुस्तकालय7पत्रक, सूची-पलक, सूची-निर्देश-पत्रक, तिथि निर्देश, बुक सपोर्टर।

(2) दीर्घ प्रयोग-

(क) पुस्तकालय के निम्नलिखित उपस्करों एवं उपकरणों का प्रारूप, (डिजाइन तैयार करना)-

परिग्रहण-पंजिका, समाचार-पत्र तथा पंजिका-बमिका, निगम-पंजिका, कैटलॉग, कैबिनेट, चार्जिंग ट्रे, डिस्प्ले रैक, एटलस स्टैण्ड, शब्दकोष स्टैण्ड।

पुस्तकों की मरम्मत, जिल्दबन्दी एवं सादी सिलाई द्वारा जिल्दबन्दी करना।

(ख) वर्गीकरण एवं सूचीकरण प्रयोगिक का मूल्यांकन, सत्रीय कार्य के अन्तर्गत (आगे उल्लिखित) क्रम संख्या 4 एवं 5 पर आधारित करना।

(1) सत्रीय कार्य-

छात्र कक्षा 10 में निम्नलिखित कार्य करेंगे और उनका अभिलेख तैयार कर सत्रीय कार्य के मूल्यांकन हेतु सुरक्षित रखेंगे-

1-पचास पुस्तकों की परिग्रहण पंजिका में प्रविष्टि।

2-पांच पुस्तकों का उपयोग हेतु सुनियोजन।

3-पत्र-पत्रिका पंजिका में पांच समाचार-पत्र तथा बस पत्रिकाओं की प्रविष्टि।

4-सौ पुस्तकों का ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति से तीन अंकों तक वर्गांक बनाना।

5-पच्चीस पुस्तकों के मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्तर्देशीय संलेख की पत्रक सूचीकरण ए0 ए0 सी0 आर0-2 के अनुसार बनाना।

(2) व्यावहारिक अध्ययन-

1-छात्र द्वारा किन्हीं दो पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर दस पृष्ठों की आख्या प्रस्तुत करना।

2-किसी जिल्दसाज की दुकान पर भौतिक ग्रन्थ विज्ञान एवं जिल्दबन्दी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना व किये गये कार्य का विवरण प्रस्तुत करना।

3-ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के तृतीय सारांश में प्रयुक्त पदों के हिन्दी समानार्थी शब्दों का ज्ञान।

निर्धारित पुस्तकें-

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यालयों के सम्बन्धित विषय के अध्यापक पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तकों का चयन कर लें।

(3) ट्रेड-पाकशास्त्र (कुकरी)

उद्देश्य-

1-भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों का ज्ञान कराना।

2-भिन्न भोज्य-सामग्रियों को प्रकृति तथा रासायनिक संगठन के आधार पर भोजन पकाने की विधियों से अवगत कराना।

3-व्यावसायिक रूप से विक्रय योग्य भोजन बनाने की क्षमता उत्पन्न करना।

4-भिन्न प्रदेशों से विशिष्ट व्यंजनों की जानकारी।

5-विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की विधियों आदान-प्रदान द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करना।

6-खाद्य-सामग्रियों एवं उत्पादों में संदूषण के कारणों से अवगत कराना।

7-व्यावसायिक अभिरुचि को बढ़ाना।

8-समाज में भोजन की आदतों एवं पोषण स्तर में वृद्धि लाना अर्थात् पोषण अल्पता के कारण होने वाले रोगों में कमी लाना।

9-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

10-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी-

1-किसी होटल में नौकरी की जा सकती है।

2-खान-पान उद्योग के अन्य स्वरूपों जैसे अस्पताल, छात्रावास, फैक्ट्री एवं परिवहन कैटरिंग संस्थान में नौकरी की जा सकती है।

(ख) स्वरोजगार-

1-भोजनालय स्थापित किया जा सकता है।

2-होटल (राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे जहां वाहन खड़ा करने व उसके रख-रखाव, व्यक्तियों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था हो) स्थापित किया जा सकता है।

3-पाक शास्त्र के प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर उनका संचालन किया जा सकता है।

4-पाक शास्त्र से सम्बन्धित उपकरणों, संयंत्रों की विक्रय का एक जानकारी केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंक की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं की जायेगी।

इकाई 1-विभिन्न खाद्य उत्पादों का संक्षिप्त ज्ञान-

1-बेसिक मांस, 2-स्टाक, 3-सूप, 4-गर्निश, 5-खाद्य उत्पादों की संरचना, 6-सलाद एवं सलाद ड्रेसिंग, 7-सैण्डविच, 8-क्षुधावर्धक पदार्थ।

2-रसोई के विभिन्न उपकरण, देख-रेख एवं प्रयोग में सावधानियां।

इकाई 2-मेनू प्लानिंग-

(1) प्रतिदिन हेतु तथा विभिन्न अवसरों जैसे विवाह समारोह।

(2) विभिन्न आय वर्ग एवं अवस्थाओं के लिये जैसे शिशु, विद्यार्थी, वयस्क, वृद्ध, गर्भावस्था, रोगी।

(3) बचे हुये खाद्य उत्पादों को नया रूप देकर पुनः प्रयोग करना।

(4) खाद्य सामग्रियों के माप का ज्ञान, जैसे शुष्क खाद्य सामग्रियों, द्रव खाद्य सामग्रियों के लिये।

(5) विभिन्न पेय-चाय, काफी, कोको, दूध का पौष्टिक मूल्य एवं महत्व।

इकाई 3-

1-पोषण-भोजन की आवश्यकता एवं महत्व, भोजन के विभिन्न पोषक तत्वों का संक्षिप्त परिचय, उनके प्राप्ति स्रोत, कार्य, कमी से उत्पन्न होने वाले रोग।

2-विभिन्न बीमारियों में भोजन-जैसे मधुमेह (डाइबिटीज), हृदय सम्बन्धी रोग (हार्ट डिजीज), अतिसार (डायरिया), रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) एवं पाचन सम्बन्धी अन्य विकार।

3-हाइड्रोजन का अभिप्राय एवं किचन में महत्व-

(i) व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन का रख-रखाव, पकाने के दौरान एवं पश्चात् (भण्डारण)।

(ii) भोजन के खराब होने के कारणों एवं उनके नियन्त्रण का संक्षिप्त ज्ञान।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) भारतीय व्यंजन (खाद्य उत्पाद)-

1-चावल-वेजिटेबल पुलाव, प्लेन फ्राइड राइस, कोकोनट मली राइस, बिरयानी।

2-रोटी-मिस्सी रोटी, भरवा पराठा, नान, कचौड़ी।

3-दाल-दाल मक्खनी, सूखी, मसाला दाल।

4-सब्जी-बेजिटेबल कोफ्ता, वेजिटेबल कोरमा, भरवा शिमला मिर्च व टमाटर, पनीर पसंदा, सूखी सब्जी।

5-मांस-कोरमा, शामी कबाब, रोगनजोश, मटर कीमा, बटर चिकन।

6-रायता-बूंदी, खीरा, टमाटर, आलू।

7-सलाद-सलाद काटना व सजाना।

8-मीठा-गुलाब जामुन, रसगुल्ले, बर्फी, फीरनी।

9-स्नैक्स-समोसा, कटलेट्स, वेजिटेबल रोट्स, बेजिटेबल कबाब।

10-पेय पदार्थ-चाय, काफी, कोल्ड काफी, लस्सी।

11-अन्डा-एग करी, आमलेट, स्क्रैम्बल्ड एग, पोच एग।

(2) पाश्चात्य व्यंजन-

1-सूप-क्रीम आफ टोमैटो सूप, धुली मसूर की दाल का सूप, मिक्सड वेजिटेबल सूप।

2-वेजिटेबल-बैक्ड वेजिटेबल, बैक्ड पोटैटो, सांटे पीज, क्रीम्ड कैरट्स।

3-मीट एवं मछली-आइरिश स्ट्यू, बैक्ड फिश फिगर्स।

4-चायनीज-चाऊमीन, चायनीज फ्रायड राइस।

5-पुडिंग्स-ब्रेड बटर पुडिंग, करेमल कस्टर्ड फ्रूट क्रीम।

(3) प्रान्तीय-

उत्तर भारतीय-छोले भटूरे, फिश फ्राई, ढोकला।

दक्षिण भारतीय-इडली, डोसा, साम्भर, नारियल चटनी।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
1	भारतीय एवं पाश्चात्य पाक शास्त्र के सिद्धान्त एवं व्यंजन विधियां	सुश्री अनुपम चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, पो0 बा0 नं0 106, पिशाच मोचन, वाराणसी।
2	आहार एवं पोषण विज्ञान	श्रीमती ऊषा टण्डन	स्वास्तिक प्रकाशन एवं पुस्तक बिक्रेता, अस्पताल मार्ग, आगरा।

(4) ट्रेड-छाया चित्रण (फोटोग्राफी)

उद्देश्य-

छाया-चित्रण मात्र एक ललित कला ही नहीं है, अपितु एक स्वतन्त्र व्यवसाय के रूप में तेजी से उभरा है। व्यक्ति चित्रण के साथ-साथ यह जर्नलिज्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकी क्रियाओं को स्पष्ट करने एवं अध्ययन करने में नया शिक्षण कार्य के अपेक्षाकृत सुगम बनाने एवं प्रभावकारी बनाने में हो रहा है। छाया-चित्रण का अध्ययन न केवल व्यक्तिगत विकास एवं सौन्दर्यबोध को प्रखर करने में सशक्त है, अपितु उपार्जन क्षमता भी प्रदान करेगा।

छाया-चित्रण के प्रारम्भिक अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये इसके ज्ञान को निम्नलिखित अध्यायों में निरूपित किया गया है-

(1) स्वरोजगार।

(2) छाया-चित्रण का परिचय, नया संक्षिप्त इतिहास, व्यावसायिक उपयोगिता एवं आधारभूत सम्बन्धित विषयों (फन्डामेन्टल सबजेक्ट्स) का आवश्यक ज्ञान।

(3) छाया-चित्रण सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान एवं प्रकाश संवेदित (फोटो सेन्सिटिव), रासायनिक, योगिकों के उपयोग एवं चित्रण कुशलता सम्बन्धी जानकारी।

(4) बाक्स कैमरा एवं उनके उपयोग की विस्तृत जानकारी, इसमें छाया-चित्रण के लिये कैमरे में बिम्ब उद्भाषित (एक्सपोज) करना तथा रसायनों के उपयोग से फिल्म पर बने बिम्ब से संवेदनशील कागज पर प्रतिबिम्ब निरूपण प्रणाली सम्मिलित है।

(5) छाया-चित्रण सम्बन्धी सहायक उपकरण, प्रकाश के विभिन्न स्रोत तथा चित्र का सुरुचिपूर्ण ज्यामितिक प्रारूप निर्धारण (कम्पोजीशन) करने की जानकारी।

(6) छाया-चित्रण के विभिन्न क्षेत्रों में से वे विशिष्ट क्षेत्रों (1) व्यक्ति चित्र (पोर्ट्रेट) तथा प्राकृतिक दृश्यावली अंकन (लैण्डस्केप) की अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी।

कार्य के अवसर-

(1) स्वरोजगार-

1-फ्रीलान्स फोटो जर्नलिज्म (स्वैच्छिक फोटो पत्रकारिता)

2-कला भवन स्वामित्व

(2) वेतन भोगी रोजगार-

1-छाया चित्रकार के पद पर-

-शोध संस्थानों में,

-औद्योगिक संस्थानों में,

-मुद्रणालयों में,

-संग्रहालयों में, कला भवनों आदि में,

-शिक्षा संस्थानों में,

-समाचार (दैनिक एवं पाक्षिक) पत्र-पत्रिकाओं आदि में।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

1-फोटोग्राफिक रसायन-फिल्म प्रोसेसिंग, डेवलपर स्टाफ बाथ, फिक्सर या हाइपेड तथा हार्डनर, उनके गुण एवं कार्य/प्रोसेसिंग की विभिन्न विधियां। डेवलपर का कार्य एवं उसमें प्रयुक्त विभिन्न रसायन। सार्वभौम एवं फाइनग्रेन डेवलपर। अंडर और ओवर डेवलपमेन्ट।

2-प्रकाश के विभिन्न स्रोत-सूर्य का प्रकाश, सूर्य की विभिन्न स्थितियों में प्रकाश तीव्रता : कृत्रिम प्रकाश विभिन्न प्रकार के फोटो फ्लड स्पाट लाइट तथा इलेक्ट्रानिक फ्लैश। फोटोग्राफिक फिल्टर एवं उनके उपयोग। विभिन्न प्रकाश दशाओं में विभिन्न शटर स्पीड तथा अपरचर में सही उद्भासन का अनुमान। एक्सपोजर मीटर रचना एवं कार्य।

3-डार्क रूम-तलपट चित्र (ले आउट) प्रयुक्त उपकरण और उनके प्रयोग। इनलार्जर-संरचना तथा उपयोग की विधियां, निगेटिव से फोटो कागज पर बड़ा प्रूफ प्रिन्ट बनाना। इनलार्जिन्ग की विभिन्न तकनीकें, बर्निंग डार्जिंग, साफ्ट फोकस आदि। कार्टेस बनाना : पोट्रेट-अर्थ पोट्रेट खींचने की विभिन्न विधियां, एक, दो तथा अधिक लैम्पों के प्रकाश का उपयोग, बाउन्स लाइट का प्रयोग, टेबुल टाप फोटोग्राफी करना। कम्पोजीशन। रिडक्शन तथा इन्टेन्सिफिकेशन, अर्थ प्रयुक्त रसायन एवं विधियां।

कान्ट्रैक्ट प्रिंटिंग। उपयुक्त कागज का चुनाव। निगेटिव में दोष रिटचिंग।

प्रयोगात्मक-क्रियाकलाप

प्रयोगात्मक लघु-

1-कैमरे (बाक्स) की संरचना का अध्ययन कीजिये एवं चित्र खींचिये (सभी भागों का नाम लिखिये)।

2-कैमरे (बाक्स) का संचालन सीखना।

3-कैमरे के साथ उपयोग होने वाले फ्लैश, एक्सपोजर, मोटर ट्राइपाड स्टैन्ड इत्यादि का अध्ययन।

4-किसी निगेटिव का कन्टेक्ट प्रिंट बनाना।

5-किसी निगेटिव का एन्लार्जमेन्ट बनाना।

6-किसी प्रिंट की ट्रिपिंग तथा ग्लेजिंग तथा पेंटिंग करना।

7-पीले फिल्टर का प्रयोग कर फोटो लेना।

8-बनने के बाद प्रिंट के त्रुटियों (Defect) का अध्ययन तथा साधारण त्रुटियों को दूर करना।

प्रयोगात्मक दीर्घ-

1-कैमरे के शटर स्पीड एवं एपरचर का उद्भासन (एक्सपोजर) समय पर प्रभाव का अध्ययन फोटो खींचकर करना।

2-फोटो खींचकर या रेफ्लेक्ट कैमरे द्वारा (Poster) का फोकस की गहनता Depth तथा Sharpness पर प्रकाश का अध्ययन।

3-एनलार्जर की रचना एवं संचालन का अध्ययन करना, सही उद्भासन समय निकालना एवं ओवर/अन्डर एक्सपोजर का अध्ययन करना।

4-निगेटिव के ग्रेड का अध्ययन तथा प्रिन्ट के लिये विभिन्न पेपर ग्रेड के प्रभाव का अध्ययन।

5-उद्भासन समय पर फिल्म की गति के प्रभाव का अध्ययन।

6-चित्र के कम्पोजीशन का अध्ययन करना।

7-बच्चे, महिला एवं वृद्ध के पोर्ट्रेट खींचना।

8-लैण्डस्कैप फोटो खींचना।

9-डार्क रूम के साज-सामान तथा ले आउट (Lay-out) का अध्ययन करना।

10-डेवलपमेन्ट टाइप का चित्र पर प्रभाव एवं ओवर/अन्डर डेवलपमेन्ट का अध्ययन।

11-बाक्स कैमरे द्वारा कम से कम एक कलर फोटो लेना तथा अध्ययन करना।

12-किसी विषय पर प्रोजेक्ट (Project) करना, जैसे-पोर्ट्रेट, लैण्डस्केप।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
1	डायमन्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	श्रीकृष्ण श्रीवास्तव	डायमण्ड पॉकेट बुक्स, दिल्ली। वितरक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2	फोटोग्राफी सहज पाठ	अशोक डे	इण्डियन विक्टोरियल पब्लिशर्स, कलकत्ता। वितरक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3	ट्रिक फोटोग्राफी एण्ड कलर प्रोसेसिंग	ए0 एच0 हाशमी	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ
4	प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	ए0 एच0 हाशमी	तदेव
5	गुड फोटोग्राफी	कोडक	तदेव
6	फोटोग्राफी स्पोर्ट्स	,,	तदेव
7	मोवी मेकर एच0 बी0	,,	तदेव
8	दी होम वीडियो पिक्चर	,,	तदेव
9	फोकल गाइड टू वेडिंग	,,	तदेव
10	फोकल गाइड मोवी मेकिंग	,,	तदेव
11	दी फोकल गाइड टू साइड	,,	तदेव
12	दी फोकल गाइड टू एक्शन फोटोग्राफी	,,	तदेव
13	दी पॉकेट गाइड टू फोटोग्राफी चिल्ड्रेन	,,	तदेव
14	गाइड टू परफेक्ट पिक्चर	,,	तदेव
15	वे आफ प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	,,	तदेव

(5) ट्रेड-बेकिंग एवं कन्फेक्शनरी

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व्यवसाय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं-

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में-

1-बेकरी उद्योग में नौकरी।

2-होटल/मेस में नौकरी।

3-कच्चे पदार्थों के भण्डारण में प्रभारी के रूप में।

(ख) स्वरोजगार-

1-कुटीर उद्योग में नौकरी।

2-कच्चे माल क्रय-बिक्रय का धन्धा चलाया जा सकता है।

3-बिक्री कार्य में।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई 1-

(क) केक बनाने की विधियों के नाम,

(ख) बटर स्पंज, स्पंज केक (चिकनाई रहित) बनाने की विधि का विस्तृत ज्ञान,

(ग) अच्छे केक के गुण,

(घ) बाजार का ज्ञान एवं लाभ-हानि की गणना का ज्ञान।

इकाई 2-

(क) बिस्कुट व कुकीज की सामग्री,

(ख) बिस्कुट व कुकीज में अन्तर,

(ग) बिस्कुट व कुकीज के प्रकार-ड्राप कुकीज, रोल्ड बिस्कुट,

(घ) बिस्कुट व कुकीज का भण्डारण।

इकाई 3-

विभिन्न प्रकार की पेस्ट्रियों के नाम-

(क) शार्टक्रस्ट पेस्ट्री, पफ पेस्ट्री का विस्तृत ज्ञान,

(ख) इन विधियों से बनने वाले पदार्थ का नाम-जैम टार्ट्स, एपिल पाई।

वेजीटेबिल पैटीज़, क्रीम रोल, खारा बिस्कुट, चीनी से बनने वाले कन्फेक्शनरी पदार्थ-सुगर बाल्स व टाफ बनाने की विस्तृत विधि-

(क) पोषक तत्वों का नाम-प्रोटीन, कार्बोज, वसा, विटामिन खनिज लवण, जल।

(ख) पोषक तत्वों के प्राप्ति के स्रोत, कमी से होने वाले रोग।

(ग) बेकरी उद्योग की स्वच्छता।

(घ) व्यक्तिगत स्वच्छता।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग-

1-कोकोनट कुकीज

2-कैश्यूनट कुकीज

3-कैश्यूनट बिस्कुट

4-जीरा बिस्कुट

5-वाटर स्पंज केक

6-स्वीस रोल

7-डेकोरेटिव पेस्ट्री

8-रायल आइसिंग, क्रीम आइसिंग

9-गम-पेस्ट

10-मिल्क टाफी

दीर्घ प्रयोग-

1-ब्रेड, स्ट्रेंट, डी विधि से

2-फ्रूट बन्स

3-स्वीट बन्स

4-ब्रेड रोल

5-फ्रूट केक

6-बेजीटेबिल पैटीज

7-हाटक्रास वन्स

8-पाइन एपिल पेस्ट्री

9-बर्थ डे केक (विथ आइसिंग)

संस्तुत पुस्तकें-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
				रु0
1	अप-टू-डेट कन्फेक्शनरी इण्डस्ट्रीज		यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	30.00
2	दि सुगम बुक आफ बेकिंग	. .	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	20.00
3	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी सिद्धान्त एवं विधियां	सुश्री अतिउत्तमा चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, सी0 21/30, पिशाचमोचन, वाराणसी-221010, पो0 बा0 1106, पिशाचमोचन, वाराणसी	50.00
4	किचन गाइड	. .	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	70.00
5	बेकिंग	बी0 एस0 अग्निहोत्री	कृषि साहित्य प्रकाशन, नरही, लखनऊ	50.00
6	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी	राम किशोर अग्रवाल	भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ, 142, विजय नगर, वेस्टर्न कचेहरी रोड, मेरठ	85.00

(6) ट्रेड-मधुमक्खी पालन

उद्देश्य-

(1) मधुमक्खी पालन औद्योगीकरण की जानकारी प्राप्तकर बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना एवं बेरोजगारी दूर करने के लिये अन्य राष्ट्रीय योजनाओं को छात्रों को समझाना।

(2) शुद्ध मधु, मोम उत्पादन की मात्रा की वृद्धि करना तथा बिक्री करके प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना तथा बच्चों को उद्यमिता प्रदान कर उद्यमी बनाना।

(3) बच्चों, बीमार एवं कमजोर व्यक्तियों के लिये उपयोगी वस्तु (मधु), औषधि एवं पौष्टिक उत्पादन करके आय में वृद्धि करना।

(4) ग्रामीण अंचलों के निर्धनों के लिये आय का साधन स्रोत।

(5) कम पूंजी लगाकर मधुमक्खी पालन कर शहद के रूप में फूलों के रस को एकत्रित करना।

(6) मधुमक्खी पालन उद्योग में दक्षता, निपुणता प्राप्त कर जीविकोपार्जन के लिए उत्तम बनाना।

(7) मधुमक्खी पालन उद्योग के लिए मौन गृह, छोटे उपकरणों का ज्ञान प्राप्त करना।

(8) मधुमक्खी पालन द्वारा किसानों एवं बागवानी की फसलों, फलों का उत्पादन 20% से 30% तक वृद्धि करने का ज्ञान प्राप्त कराना।

(9) मोम-पराग, रायल जेली, मौन विष प्रोपेजिन का ज्ञान, उपयोग की जानकारी प्राप्त करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी-

1-मधुमक्खी पालक सहायक

2-मौन पालक प्रदर्शक

3-सहायक मौन पालक

4-सहायक काष्ठ कला प्रशिक्षक या शिक्षक

5-सहायक मधु विकास निरीक्षक

6-मधुमक्खी पालक शिक्षक या प्रशिक्षक

7-मधु विकास निरीक्षक

8-शोध सहायक (मधुमक्खी पालन)

(ख) स्वरोजगार-

1-मधु मोम उत्पादक

2-मोमी छत्तादार उत्पादक

3-मौन गृह एवं उपकरण निर्माणकर्त्ता एवं विक्रेता

4-पराग, रायल, जेली, मोम विष उत्पादक

5-मौन वंश प्रजनन करके विक्रय करना

6-शहद, मोम, रायल जेली से औषधि निर्माण करना

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई 1-

आधुनिक मधुमक्खी पालन की अनिवार्यतायें, मौसम के अनुसार कृषि औद्योगिक, प्राकृतिक (जंगली) एवं सामान्य मौनचरी (फलों) का अध्ययन, मधुमक्खियों का पर-परागण में योगदान-मधुमक्खी परिवार (मौनवंश) की पैकिंग तथा विशेष फूलों का लाभ लेने एवं इनका माइग्रेशन।

इकाई 2-

मौन की बीमारियों जैसे अष्टपदी (एकरीन) नौसीमा, पेचिस, अमेरिकन, यूरोपियन फाउल वड, सक वड इत्यादि की पहचान, सुरक्षा के उपाय एवं उपचार।

मौनों के शत्रुओं जैसे मोमी पतिंगा, बर्रे, चीटें, पक्षी (बी-इंटरकिंमक्रा), ड्रैगर-प्लाई की पहचान, सुरक्षा के उपाय एवं रोकथाम।

इकाई 3-

मधुमक्खी पालन के उपकरण-विभिन्न प्रकार के मौन-गृह, मोमी, छत्तादार, मुंहरक्षक जाली, दस्ताना, रानी अवरोधक जाली, धुर्वाकार न्यूक्लियस, मौन वाहक पिंजड़ा, क्वीन केज, ड्रोन टेप इत्यादि की उपयोगिता।

मधु की किस्में, इसमें पाये जाने वाले तत्व, उपयोगिता, अधिक शहद उत्पादन के सिद्धान्त, मोम, पराग, रायल-जेली एवं मौन विष (बी-वेनम) की उपयोगिता, मधु मोम का परिष्करण (प्रोसेसिंग), मधु का आई0एस0आई0 मार्क (एगमार्क) के द्वारा प्रमाणित कर शहद की पैकिंग एवं विपणन करना।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(क) लघु प्रयोग-

1-विभिन्न मधुमक्खियों की जातियों की पहचान कराना और अभ्यास पुस्तिका पर उनका चित्र बनाना।

2-मौन के जीवन-चक्र (अण्डा, लार्वा, प्यूपा एवं वयस्क) की पहचान कराना।

3-मधुमक्खी का वाह्य शरीर का चित्र बनाना और उसके प्रत्येक अंगों की प्रयोगात्मक कार्य कराना।

4-मौन परिवार में प्रत्येक सदस्य (कमेरी, नर और रानी) की पहचान कराना।

5-भारतीय एवं इटलियन मौन गृह निर्माण के सिद्धान्त (मीनान्तर) आकार को बताना।

6-मधु निष्कासन यन्त्र का चित्र बनवाना तथा शहद निकालने की विधि का प्रयोगात्मक कार्य कराना।

7-मौसमवार फूलों का सर्वे कराना तथा इसकी पर-परागण क्रियाओं में मौनों के योगदान को बताना एवं पुष्प संग्रह कराना।

(ख) लघु प्रयोग-

1-रानी, कमेरी एवं नर के छत्तों की पहचान कराना।

2-तलपट, शिशु खण्ड, मधु खण्ड, डमों, इनर कवर, ऊपर ढक्कन, फ्रेम की पहचान कराना।

3-मधुमक्खी की शत्रु बर्रे, मोमी पतिंगा, छिपकली, चीटें, हानिकारक पक्षियों की पहचान कराना।

4-क्वीन केज, न्यूक्लियस, मौन वाहक पिंजड़ा, हाइवटुल, मुंहरक्षक जाली, दस्ताने, प्यालिय, क्वीन गेट इत्यादि उपकरणों की पहचान कराना।

5-विभिन्न प्रकार के शहद जैसे सरसों युक्लिप्टस, शहजन, नींबू प्रजाति, सूरजमुखी, बेर, लीची, नीम एवं मिश्रित फलों की शहद का पहचान कराना।

पुस्तकों की सूची

1-प्रारम्भिक मौन पालन	ले0 योगेश्वर सिंह
2-प्राइमरी लेशन आफ बी कीपिंग	. .
3-बी कीपिंग आफ इण्डिया	डा0 सरदार सिंह
4-सफल मौन पालन	श्री बच्ची सिंह राव
5-रोचक मौन पालन	,,
6-मौन पालन प्रश्नोत्तरी	,,
7-मधुमक्खी की मनोहारी संसार	डा0 विष्ट (आई0सी0आई0 प्रकाशन)
8-रोगों की अचूक दवा शहद	डा0 हीरा लाल

(7) ट्रेड-पौधशाला

उद्देश्य-

(1) छात्रों के उद्यमिता के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी कराना।

(2) पौधशाला व्यवसाय की प्राविधिक जानकारी कराना।

(3) उन्नत किस्म के अधिकाधिक पौधे तैयार करना।

(4) कम पूंजी से अधिक उत्पादन करना तथा अधिक लाभ प्रदान करने की दिशा में अग्रसर होना।

(5) पौधशाला व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करना तथा साथ ही साथ 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त व्यवसाय के चयन में सहायक होना।

(6) भूमि सुधार एवं पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्रदान करना।

(7) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना।

(8) आत्म-निर्भर बनाना।

(9) एक कुशल नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में सहायक होना।

(10) विद्यालय में एक सुसज्जित उद्यान का निर्माण।

रोजगार के अवसर-

पौधशाला व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्नांकित रोजगार के अवसर मिल सकते हैं-

(क) वेतनभोगी-

1-माली का कार्य करना।

2-पौधशाला प्रभारी का कार्य करना।

3-पौधशाला में दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी का अवसर प्राप्त करना।

(ख) स्वरोजगार-

1-अपनी पौधशाला तैयार करना।

2-बीजोत्पादन तथा बीज व्यवसाय अपनाना।

3-पौधशाला उद्योग सम्बन्धी यंत्रों, उपकरणों, उर्वरकों तथा कीटनाशकों के क्रय-विक्रय की दुकान चलाना।

4-थोक एवं फुटकर पौध आपूर्ति का कार्य करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई 1-

- पौध प्रवर्द्धन-परिभाषा, महत्व एवं वर्गीकरण।
- लैंगिक प्रवर्द्धन-परिभाषा, लाभ-हानि, बीज प्राप्ति एवं चुनाव, बीज परीक्षण, अंकुरण, क्षमता, बीजोपचार एवं बीज की बोआई।
- अलैंगिक (वानस्पतिक प्रजनन)-परिभाषा, लाभ-हानि। अलैंगिक विभिन्न विधियां-कलम, गूटी, कलिकायन, भेंट कलम, अलगाव (सेपरेशन), टुकड़ीकरण (डिवीजन) का ज्ञान।
- वृद्धि नियामक (ग्रोवरेगुलेटर)-महत्व एवं प्रयोग विधि की जानकारी।

इकाई 2-

- पौध विपणन-परिभाषा तथा पौध विपणन की विधियों का अध्ययन।
- पौध निकालने में सावधानियां।
- पौधबन्दी (पैकिंग) तथा परिवहन में अपनाई जाने वाली सावधानियों का ज्ञान।
- पौधशाला की लोकप्रियता बढ़ाने के सम्बन्ध में जानकारी।

इकाई 3-

- पौधशाला के पंजीकरण के प्रसंग में जानकारी।
- ऋण प्रदान करने वाले संस्थाओं का ज्ञान।
- पौधाशाला की योजना बनाना।
- ऋतुवार लगाये जाने वाले पौधों की सूची तैयार करना।
- पौधशाला में उगाये जाने वाले पौधों के सम्बन्ध में मिट्टी, खाद, प्रजातियां, बीजदर, पौध तैयार होने का समय, पौधारोपण, पौध सुरक्षा के सन्दर्भ में जानकारी।
- पौधशाला सम्बन्धी विभिन्न अभिलेखों की जानकारी।
- पौधशाला का आय-व्यय तैयार करना।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(अ) लघु प्रयोग-

1-गमला मापन।

2-गमला भरना।

3-बीजों की पहचान।

4-बीजों की शुद्धता की जांच।

5-उपकरणों की पहचान।

6-पौधों (सब्जी, फलदार, फूल शोभाकार तथा छायादार) एवं वानिकी पौधों की पहचान।

7-खाद एवं उर्वरक की पहचान।

8-मिट्टी की पहचान।

(ब) दीर्घ प्रयोग-

1-आदर्श नमूना बरसदी का रेखांकन।

2-बीज शैय्या बनाना।

3-ऋतुवार बीज शैय्या बनाना।

4-ऋतुवार गमला मिश्रण तैयार करना।

5- तना कलम तैयार करना।

6- गूटी लगाना।

7- क्रलिकायन से पौधे तैयार करना।

8-भेंट कलम से पौधे तैयार करना।

9-पौध रोपण।

10-गमले एवं क्यारी से पौधे निकालना।

11-पौधवन्दी (पैकिंग) करना।

12-पौधशाला भ्रमण।

13-अभिलेख तथा आय-व्यय तैयार करना।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	भारत में फलों की खेती	ड0 एम0 एल0 लावानिया	सिंघल बुक डिपो, बड़ौत, मेरठ।
2	सब्जियों एवं पुष्प उत्पादन	डा0 के0 एन0 दुबे	भारती भण्डार, बड़ौत, मेरठ।
3	पौधशाला औद्योगिकी	डा0 ओमपाल सिंह	अलंकार पुस्तक भवन, बड़ौत, मेरठ।
4	पौधशाला व्यवसाय	श्री कोठारी एवं श्री ए0 बी0 श्रीवास्तव	रंजना प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
5	नर्सरी मैनुअल	डा0 गौरी शंकर	इलाहाबाद।
6	फल विज्ञान	डा0 रामनाथ सिंह	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली।
7	उद्यान विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायण लाल, इलाहाबाद।

(8) ट्रेड-आटो मोबाइल

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपर्युक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों को कार्य-संस्कृति के प्रति आदर भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(1) आटो मैकेनिक के रूप में।

(2) सेल्समैन के रूप में।

(3) अपना रिपेयर वर्कशाप एवं गैराज का संचालन।

(4) शोरूम स्थापित करना।

(5) स्पेयर पार्ट के विक्रेता के रूप में।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर परीक्षा होगी। इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक-50 अंक

इकाई 1- **10 अंक**

ऑटोमोबाइल की स्नेहन प्रणाली, गवर्निंग सिस्टम, विद्युतीय प्रणाली, बैटरी, तारस्थापन, बत्ती सिस्टम, ए0सी0 एवं हीटिंग सिस्टम।

इकाई 2- **06 अंक**

इंजन आयल के गुण, नाम, इंजन आयल बदलना।

इकाई 3- **08 अंक**

अनुरक्षण एवं बाधा खोज-अनुरक्षण के महत्व एवं प्रकार, सर्विसिंग एवं ओवर हॉलिंग, विभिन्न अवयवों में दोष ढूढ़ना, उनके कारण एवं बचाव, मरम्मत के औजार एवं उपकरणों के नाम, बनावट एवं कार्य।

इकाई 4- **08 अंक**

कार्यशाला के मूल कार्य जैसे कटिंग, फाइलिंग, ड्रिलिंग, बेल्डिंग, ग्राइंडिंग का संक्षिप्त परिचय। मापन एवं परीक्षण विधियां।

इकाई 5- **08 अंक**

गैराज, शोरूम एवं स्पेयर विक्रय केन्द्र की स्थापना एवं संचालन से सम्बन्धित जानकारी, वित्तीय सहायता प्राप्त करने की विधियां।

इकाई 6- **06 अंक**

-सड़क सुरक्षा नियम का महत्व व नियम।

-सुरक्षित ड्राइविंग का महत्व व नियम।

-ट्रैफिक के नियम व यातायात चिन्ह, ट्रैफिक अधिनियम के प्रमुख प्राविधान।

-वाहनों का रजिस्ट्रेशन, ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने की विधि व आवश्यकता।

इकाई 7- **04 अंक**

-ऑटोमोबाइल व हमारा पर्यावरण-वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने की आवश्यकता एवं महत्व।

-प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र का महत्व।

प्रयोगात्मक- **50 अंक**

(1) कारवोरेटर का अध्ययन करना।

(2) स्कूटर/मोपेड में दोष ढूढना एवं मरम्मत करना।

(3) बैट्री चार्जिंग कराने का अध्ययन तथा पानी चेक करना।

(4) लाइट का फोकस एडजस्ट करना एवं बल्ब लगाना।

(5) ब्रेक एडजस्ट करने का अध्ययन करना।

(6) मोपेड आदि गाड़ी का ड्राइविंग करना।

(7) ट्रैफिक नियमों का अध्ययन करना।

(8) पंचर जोड़ बनाना, हवा भरना तथा हवा के दबाव को मापना।

(9) स्कूटर व कार की धुलाई, सर्विसिंग करना।

(10) कार के स्टेरिंग प्रणाली का अध्ययन करना।

संस्तुत पुस्तकें-

(1) ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग	. .	कृष्ण नन्द शर्मा
(2) ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग	. .	सी0 बी0 गुप्ता
(3) ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग	. .	धनपत राय एण्ड शुक्ला
(4) बेसिक ऑटोमोबाइल	. .	सी0 पी0 बक्स

(9) ट्रेड-धुलाई-रंगाई

उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार-

1-रंगाई-धुलाई की दुकानों में सहायक कर्मचारी के पद पर कार्य कर सकता है।

2-रंगाई के कारखाने में रंगाई मास्टर के पद पर कार्य कर सकता है।

3-सरकारी संस्थाओं में वस्त्र सफाई विभाग में कार्य प्राप्त कर सकता है।

(ख) स्वरोजगार-

1-ड्राई क्लीनिंग की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है।

2-ड्राइंग (रंगाई) की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है।

3-चरक की दुकान या उद्योग लगाने में सहायक हो सकता है।

4-कम लागत में इस्तरी करने, माड़ी लगाने की दुकान खोलकर कार्य कर सकता है।

5-रंगाई-छपाई का छोटा सा रोजगार कर सकता है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई 1-

(1) कपड़ों में रंगों तथा रंग योजना का महत्व तथा तालमेल का अध्ययन करना।

(2) रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं रासायनिक प्रभाव।

(3) पक्के एवं कच्चे रंगों का अध्ययन।

(4) सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ों की रंगाई का अध्ययन।

(5) संश्लेषित कपड़ों के रंग और रंगने की तकनीक।

इकाई 2-

(1) विभिन्न प्रकार के रंगों का अध्ययन करना-

[1] प्राकृतिक रंग

[2] एसिड रंग

[3] वेट रंग

[4] नेप्थाल रंग

[5] माडेन्ट रंग

[6] खनिज रंग

[7] रिऐविच्च रंग (प्रोशियन)

[8] प्रारम्भिक रंग और डायरेक्ट रंग

(2) रंगाई-धुलाई में शैड कार्ड बनाना।

इकाई 3-

(1) विभिन्न प्रकार के कपड़ों की गीली धुलाई की तकनीक-

[1] सूती

[2] ऊनी

[3] रेशमी

[4] कृत्रिम

(2) सूखी धुलाई-उपकरण, तकनीक और वस्त्रों को तैयार करना (विभिन्न प्रकार के कपड़ों के लिये)।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) विभिन्न वस्तुओं का संग्रह एवं पहचानना (देखकर व जलाकर) :

(क) वनस्पति वस्तु।

(ख) पशु से प्राप्त होने वाले तन्तु।

(ग) खनिज तन्तु।

(घ) कृत्रिम तन्तु।

(2) विभिन्न धागों का संग्रह-साधारण प्लाई।

(3) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और शेड कार्ड को संग्रहीत करके फाइल बनाना।

(4) विभिन्न प्रकार के कपड़ों को रंगना (15´×25″) (सूती, रेशमी, ऊनी, कृत्रिम कपड़े धोना, सुखाना, प्रेस व तह लगाना)।

(5) नील लगाना, कलफ लगाना।

(6) दाग छुड़ाना-

[1] चाय

[2] काफी

[3] हल्दी

[4] जंक

[5] रक्त

[6] मशीन का तेल

[7] स्याही

[8] अण्डा

[9] पान

[10] ग्रीस

(7) धागे को रंगना-सूती, ऊनी।

(8) डायरेक्ट रंगों के विभिन्न रंगों के मिश्रण द्वारा डिजाइन बनाना-6 नमूने (15″×15″) (टाई ऐण्ड डाई प्रिंटिंग द्वारा)।

(9) नेप्थाल रंगों के द्वारा एक नमूना तैयार करना (15″×15″)।

(10) फेडिंग परीक्षण (सूती, ऊनी, रेशमी, रेयान) (4″×4″)।

(11) सूखी धुलाई-शाल, स्वेटर, रेशमी, फैन्सी कपड़े।

(12) टेक्सचर के द्वारा रंगाई (6 नमूने) (12″×12″)।

(13) पुराने कपड़े को पुनः रंगकर ब्लाक प्रिंटिंग द्वारा आकर्षित बनाना।

(14) गीली धुलाई-सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम।

(क) लघु प्रयोग-

(1) डायरेक्ट रंगों द्वारा रंगाई (एक रंग में)।

(2) कपड़ों की पहचान (छूकर व देखकर)।

(3) साधारण व प्लाई धागों की पहचान।

(4) जलाकर कपड़ों का परीक्षण।

(5) फेडिंग परीक्षण 3/4 घण्टा।

(6) तह लगाना।

(7) इस्तरी करना।

(8) माड़ी लगाना।

(9) ब्लाक प्रिंटिंग (एक नमूना)।

(10) टेक्सचर तैयार करना (दो नमूना)।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) नेप्थाल रंगों द्वारा रंगाई।

(2) सूती कपड़ों को रंगना।

(3) ऊनी कपड़ों को रंगना।

(4) रेशमी कपड़ों को रंगना।

(5) धागों को रंगना-सूती, ऊनी।

(6) नील लगाना।

(7) कलफ लगाना।

(8) चरक लगाना।

(9) सूखी धुलाई।

(10) गीली धुलाई-सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम कपड़े।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	नाम	लेखक	प्रकाशक
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	प्रकाशक, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2	वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कार्य	श्री आनन्द वर्मा	रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, वितरक-विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	श्रीमती लोकेश्वरी शर्मा	स्वास्तिक प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा-3।
4	वस्त्र धुलाई विज्ञान	. .	युनिवर्सल सेलर, हजरतगंज, लखनऊ।
5	दी केमिकल टेक्नालॉजी आफ टेक्सटाइल फाइबर्स	श्री आर0 आर0 चक्रवर्ती	कैक्सटन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55।

(10) ट्रेड-परिधान रचना एवं सज्जा

सामान्य उद्देश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

विशिष्ट उद्देश्य-

(1) परिधान रचना एवं सज्जा ट्रेड के द्वारा बच्चों में सिलाई विषय से सम्बन्धित जागरूकता उत्पन्न करना।

(2) भविष्य में प्रचलित फैशन के अनुसार विभिन्न डिजाइनों के वस्त्रों के निर्माण के कौशल का विकास करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार-

[1] अपने विषय से सम्बन्धित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण देना।

[2] किसी रेडीमेड गारमेन्ट फैक्ट्री में वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में कार्य करना।

(ख) स्वरोजगार-

[1] सिलाई का कार्य घर पर ही करके बचत करना।

[2] बाजार में दुकानों से आर्डर लेकर वस्त्र तैयार करके आय प्राप्त करना।

[3] सिलाई शिक्षा से सम्बन्धित स्कूल चलाना।

[4] विद्यालयों से यूनीफार्म को तैयार करने का आर्डर लेना।

[5] सिलाई के उपकरणों की मरम्मत से सम्बन्धित केन्द्र खोलना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई एक-

(क) नाप लेते समय ध्यान देने वाली योग्य बातें, नाप लेने के तरीके-

[अ] चेस्ट सिस्टम।

[ब] डायरेक्ट सिस्टम।

सामान्य व्यक्तियों की नापें, असामान्य व्यक्तियों की नापें (तोंदिल व्यक्ति, झुका कंधा, ऊँचा कंधा, कूबड़दार ब्यक्ति)

(ख) सिलाई की मशीन की सामान्य जानकारी-

[अ] मशीन के पुर्जों का ज्ञान।

[ब] मशीन के पुर्जे खोलकर उनकी सफाई का ज्ञान।

[स] मशीन की साधारण खराबियों को दूर करने की योग्यता।

(ग) सिलाई के विभिन्न टांके-कच्चा, बखिया, तुरपन, पीको, काज, इण्टरलॉक।

इकाई दो-

(क) वस्त्रों का चुनाव-आयु, मौसम, कद, विशेष अवसरों पर पहनने वाले वस्त्रों का चुनाव।

(ख) वस्त्रों की विशेषता के अनुसार विभिन्न प्रकार की पोशाकों के लिये उनका चयन करना।

(ग) कपड़ा काटने के पूर्व ड्राफ्टिंग पेपर कटिंग तथा पैटर्न तैयार करने से लाभ, विभिन्न प्रकार के वस्त्रों (जैसे शाटन, मखमल, नायलॉन, ऊनी) को काटने, सिलते समय सावधानियाँ।

इकाई तीन-

(1) सिलाई कार्य में उपयोग में आने वाली वस्तुओं की जानकारी-

(अ) कैंची, इंची टेप, गुनिया, मिल्टन चाक, मार्किंग व्हील, अंगुस्ताना, कटिंग मेज, प्रेस, विभिन्न प्रकार की सुईयां, धागे, फ्रेम।

(ब) सिलाई क्रिया में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का ज्ञान-अर्ज, अस्तर, ड्रामिंग, औरेब, चाक, गिदरी, हाला, पैजिंग, तावीज, दमफ्राक, जिग-जैग, फ्रिल, डांट डक्स पाइपिंग।

(स) कढ़ाई के टांकों का ज्ञान-लेजी, डेजी, रनिंग स्टिच, स्टेम स्टिच, चेन स्टिच, क्रास स्टिच, साटन स्टिच, शैडो वर्क पैच वर्क, कॉज स्टिच, शैड वर्क।

(द) सिलाई कार्य में रचना फिटिंग, प्रेसिंग, फिनिशिंग तथा फोल्डिंग का महत्व।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग-

1-विभिन्न प्रकार के सिलाई टांका-कच्चा टांका, बखिया, तुरपन, पीको, काज, टांका।

2-कढ़ाई के टांके-लेजी, डेजी, रनिंग स्टिच, स्टेम स्टिच, चेन स्टिच, क्रास स्टिच, कॉज स्टिच, शैडो वर्क, साटन स्टिच, पैड वर्क, शैड वर्क।

3-उपरोक्त कढ़ाई के टांकों से छः रूमाल बनाना।

4-रफू करना।

5-पैबन्द लगाना।

6-कलोट-काटना, सिलना।

7-विब-काटना, सिलना।

8-चड्ढी-काटना, सिलना।

9-झबला-काटना, सिलना।

10-मशीन के पुर्जों को खोलना, सफाई करना तथा मशीन में तेल डालना।

दीर्घ प्रयोग-

1-बेबी शमीज

2-पैजामा (एक मीटर कपड़े का)।

3-बेबी फ्राक।

4-गर्ल्स फ्राक।

5-पेटीकोट।

6-हैंगिंग बैग।

नोट :-उपरोक्त वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलना तथा उनकी सज्जा करना तथा रूमाल, पेवन्द, रफू की बनाकर रिकार्ड फाइल में रखना।

मौखिक प्रश्नोत्तर-लघु तथा दीर्घ प्रयोगों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	नाम	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
			रु0
1	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती चरन दासी, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	13.50
2	गृह विज्ञान का सामान्य ज्ञान	श्रीमती स्वराज्य लता सिंह, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	35.00
3	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती अनामिका सक्सेना, भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ	18.00
4	आधुनिक सिलाई एवं कढ़ाई विज्ञान	श्री एम0 ए0 खान, पुस्तक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद	15.00
5	अनमोल सिलाई कला परिचय	श्री असगर अली, गर्ग प्रकाशन, इलाहाबाद	18.00
6	रेपिडक्स टेलरिंग कोर्स	श्रीमती आशारानी बोहरा	68.00

(11) ट्रेड-खाद्य संरक्षण

उद्देश्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

7-अधिक उपज से उगाने के बाद बचे हुये फल और सब्जियों का संरक्षण करना।

8-खाद्य संरक्षण द्वारा पौष्टिक भोजन की कमी को पूरा करना।

9-बेमौसम में भी सुरक्षित सभी सब्जियों और फलों को उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

1-खाद्य संरक्षण सम्बन्धी इकाई में रोजगार मिल सकता है।

2-खाद्य संरक्षण में दक्षता अर्जित कर छात्र अपना निजी व्यवसाय चला सकता है।

3-अचार, मुरब्बा, मांस आदि विभिन्न प्रकार के संरक्षित खाद्य पदार्थ तैयार कर डिब्बा बन्दी कर बाजार में आपूर्ति कर सकता है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों को सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायगी।

इकाई-1

(1) स्थायी तथा अस्थायी संरक्षण की विधियां।

(2) जेम, जेली, मार्मलेड बनाने की विधि।

(3) पेक्टिन परीक्षण।

(4) फलों के रस, टमाटर रस, स्क्वैश, शर्बत आदि का संरक्षण।

(5) मुरब्बा एवं कैण्डी।

(6) अचार तथा सिरका का सामान्य ज्ञान।

(7) टमाटर से विभिन्न पदार्थ।

(8) खाद्य पदार्थों के आवागमन में प्रयोग होने वाली पैकेजिंग सम्बन्धी जानकारी।

इकाई-2

(1) फल एवं तरकारियों की डिब्बा बन्दी का सामान्य ज्ञान।

(2) खाद्य रंग, कृत्रिम एवं प्राकृतिक रंग का सामान्य परिचय।

(3) शीत, शीतोष्ण एवं उष्ण जलवायु में उगाये जाने वाले फल एवं तरकारियों का सामान्य परिचय।

(4) विभिन्न खाद्य पदार्थों, फल, तरकारियों, मांस, मछली, छोला, पुलाव के संरक्षण का साधारण परिचय।

(5) खाद्य संरक्षण में बचे अवशेष निरर्थक भागों का उपयोग।

(6) सुरक्षित खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता का महत्व।

(7) संरक्षण हेतु विभिन्न प्रकार की पैकेजिंग वस्तुओं का उपयोग।

(8) मसाला उद्योग का सूक्ष्म परिचय।

इकाई-3

(1) दालें, अनाज, तिलहन वाली फसलों का सामान्य ज्ञान एवं संरक्षण।

(2) मांस, मछली, मुर्गी, अण्डा आदि पदार्थों के विषय, परिचय एवं संरक्षण का प्रारम्भिक ज्ञान।

(3) बड़ी, पापड़, चिप्स बनाने एवं संरक्षण के उपाय।

(4) केक, पेस्ट्री, बिस्कुट, नान-खटाई बनाने की साधारण विधियां।

(5) तैयार खाद्य पदार्थों का अल्पकालिक संरक्षण।

(6) आटा, मैदा, सूजी, दलिया की पहचान तथा उत्पादों के लिए उपयुक्त गुणवत्ता।

(7) सोयाबीन से निर्मित पदार्थों का सूक्ष्म परिचय।

(8) दूध से निर्मित पदार्थ-खोया, पनीर का सामान्य परिचय।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग-

1-जैम बनाना

2-मुरब्बा बनाना

3-अचार बनाना

4-शर्बत बनाना

5-प्युरी एवं टमाटर सॉस बनाना

6-मटर, गाजर, अमचुर सुखाने की विधियां

7-कृत्रिम सिरका

8-फलों के रस एवं गूदे का संरक्षण

9-दलिया, चिप्स, पापड़, बरी बनाना एवं संरक्षण

10-पनीर निर्माण

(ख) लघु प्रयोग-

1-हिफरेक्ट्रोमीटर का उपयोग

2-निकल्स हाइड्रोमीटर का उपयोग

3-सूक्ष्मदर्शी यंत्र के विभिन्न भागों का परिचय

4-पी0 एच0 पेपर का महत्व एवं उपयोग

5-पेक्टिन परीक्षण

6-विभिन्न खाद्य पदार्थों की पहचान

7-असमेसिस साधारण प्रयोग

8-खाद्य संरक्षण में उपयोग होने वाले तापमापी का उपयोग, प्रेशर कुकर का ज्ञान।

संस्तुत पुस्तकें-		**रु0**
(1) फल एवं सब्जी संरक्षण	ले0 डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धाप्पा एवं गिरधारी लाल टंडन	45.00
(2) फल संरक्षण	एस0 एम0 भाटी	30.00
(3) फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	बी0 एम0 अग्निहोत्री	15.00
(4) फल संरक्षण विज्ञान	बी0 एम0 अग्निहोत्री	25.00
(5) फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
(6) आहार एवं पोषण विज्ञान	विमला वर्मा	50.00

(12) ट्रेड-एकाउन्टेंसी अंकेक्षण

उददे्श्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को स्वरोजगार करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करना।

(3) 10+2 स्तर पर ट्रेड चयन करने हेतु छात्रों की सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

(6) वेतनभोगी रोजगार सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक के रूप में छात्रों को तैयार करना।

रोजगार के आधार-

(क) वेतनभोगी रोजगार तथा सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक आदि के रूप में।

(ख) स्वरोजगार-जैसे छोटे स्तर के व्यापार के हिसाब का रख-रखाव करने के रूप में पाठ्यक्रम का स्वरूप।

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

(1) लागत लेखांकन-परिभाषा, महत्व तथा पद्धतियां।

(2) लागत के मूल तत्व-सामग्री, श्रम एवं उपरिव्यय का सामान्य ज्ञान।

(3) लागत विवरण एवं निविदा तैयार करना।

इकाई-2

अन्तिम खाते तैयार करना, साधारण समायोजनाओं सहित व्यापार लाभ-हानि तथा चिट्ठा बनाना, संयुक्त स्कन्द कम्पनी परिभाषा, लक्षण एवं भेद।

इकाई-3

(ए) अंकेक्षण-परिभाषा, महत्व, उद्देश्य।

(बी) अंकेक्षण गुण एवं योग्यतायें।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(अ) लघु प्रयोग-

(1) नकद रसीद।

(2) डेविट नोट एवं क्रेडिट नोट।

(3) चेक, पे-इन-स्लिप।

(4) टेलीग्राम मनी आर्डर फार्म।

(5) आर0 आर0 ट्रेजरी चालान फार्म।

(6) कैलकुलेटर्स, रेडीरेकनर्स।

(7) डेटिंग मशीन।

(8) नम्बरिंग मशीन।

(9) स्टेपलर्स, पंचिंग मशीन।

(ब) बड़े प्रयोग-

(1) छात्रों को वाउचर प्रदान किये जायें एवं उन्हें तैयार कराया जाय।

(2) क्रय-पुस्तक तैयार करना।

(3) विक्रय पुस्तक तैयार करना।

(4) बीजक एवं विक्रय विवरण बनाना।

(5) खुदरा रोकड़ पुस्तक बनाना।

(6) रोकड़ पुस्तक तैयार करना।

(7) स्टाक रजिस्टर तैयार करना।

(8) पत्र प्राप्ति पुस्तक एवं पत्र प्रेषण पुस्तक तैयार करना।

संदर्भित पुस्तकें-

1-हाई स्कूल बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक-श्री विजय पाल सिंह
2-अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक-श्री जगन्नाथ वर्मा
3-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड	लेखक-श्री राम प्रकाश अवस्थी
4-लागत लेखांकन	लेखक-डा0 लक्ष्मण स्वरूप

(13) ट्रेड-आशुलिपिक तथा टंकण

उददेश्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार-वकील अथवा व्यापारी के यहां कार्य करना।

(ख) स्वरोजगार-अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवेदन एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण कर उपलब्ध कराना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

व्यावसायिक संगठन अर्थ एवं प्रारूप एकांकी व्यापार, साझेदारी एवं संयुक्त स्कन्ध (परिभाषा, लक्षण एवं भेद)।

इकाई-2

आशुलिपि वर्णमाला का प्रारम्भिक ज्ञान, चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाओं का ज्ञान, स्वर एवं संकेत स्वरों का ज्ञान, व्यंजनों का मिलाना तथा आशुलिपि में अवतरणों एवं पत्रों का श्रुतलेख और उनका हिन्दी रूपान्तर।

इकाई-3

आधुनिक युग में टंकण का व्यावसायिक महत्व मशीन एवं उनमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल-पुर्जों एवं उनके प्रयोग तथा अवतरणों, पत्रों एवं साधारण बालिकाओं को करना।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग-

(1) शब्द चिन्ह।

(2) जुट शब्द।

(3) रेखाक्षरों के स्थान।

(4) चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाक्षरों का ज्ञान।

(5) टाइप करने की प्रणालियां।

(6) मशीन में कागज लगाने, ठीक करने व कागज निकालने का ढंग।

(7) हाशिया निश्चित करना।

(8) मशीन पर बैठने की स्थिति।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) श्याम पट्ट पर लिखित लेखों का पढ़ना।

(2) पत्रों का आशुलिपि में लेखन तथा हिन्दी रूपान्तर।

(3) आशुलिपि से दीर्घ लिपि में लिखना तथा टाइप करना।

(4) आशुलिपि नोटों के अनुवादित होने के बाद उन पर चिन्ह लगाना।

(5) कुंजी पटल का ज्ञान।

(6) पोस्ट कार्डों पर पतों का टंकण।

(7) टाइप मशीन की प्रतिलिपि लेना।

(8) प्रार्थना-पत्र अथवा पत्रों को टाइप करना।

संदर्भित पुस्तकें-

1-अनुपम टाइपिंग मास्टर-श्रीमती ऊषा गुप्ता।

2-उपकार व्यावहारिक टंकण कला-श्री ओंकार नाथ वर्मा।

3-हिन्दी संकेत लिपि (ऋषि प्रणाली)-श्री ऋषिलाल अग्रवाल।

4-पिटमैन अंग्रेजी संकेत लिपि-पिटमैन।

5-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

6-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

7-अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली-श्री जगन्नाथ वर्मा।

8-आशुलिपि एवं टंकण-श्री गोपाल दत्त विष्ट।

(14) ट्रेड-बैंकिंग

उददे्श्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

(7) व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना।

(8) बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रारम्भिक ज्ञान की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी-

1-विद्यालयों में संचयिका के लेखा रखने को जानकारी देना।

2-अपने व्यवसाय को बैंकिंग कार्य प्रणाली की जानकारी देना।

3-सहायक रोकड़िया।

4-गोंद सहायक।

(ख) स्वरोजगार-

1-लघु व्यावसायिक संस्थाओं का हिसाब तैयार करना।

2-अभिकर्ता के रूप में कार्य कराना।

3-डाक घर के एजेन्ट के रूप में कार्य करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

व्यावसायिक संगठन अर्थ एवं प्रारूप एकांकी व्यापार, साझेदारी एवं संयुक्त स्कन्ध कम्पनी, परिभाषा, लक्षण एवं भेद।

इकाई-2

अन्तिम खातेदार तैयार करना, साधारण समायोजनाएं सहित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना।

इकाई-3

विभिन्न प्रकार के बैंक-देशी बैंक, साहूकार, महाजन एवं चिट फण्ड, व्यावसायिक बैंक, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

लघु प्रयोग-

(1) चेक लिखना, निर्गम करना एवं निगर्मन, रजिस्टर में लेखा करना।

(2) चेकों का पृष्ठांकन एवं रेखांकन करना, चेकों की वैधता की जांच करना।

(3) पे-इन-स्लिप तथा आहरण-पत्र का प्रयोग।

(4) चेक लिखने वाली मशीन का प्रयोग।

(5) रेडी रेकनर का प्रयोग।

(6) कैलकुलेटर का प्रयोग।

(7) वेइंग मशीन एवं नम्बरिंग मशीन का प्रयोग।

(8) पंचिंग मशीन एवं स्टेपलर का प्रयोग।

दीर्घ प्रयोग-

(1) बैंक में खाता खोलने के विभिन्न प्रपत्रों को भरना।

(2) बैंक लेजर, खातों एवं पास बुक में लेखा करना।

(3) ब्याज की गणना एवं उनका लेखा करना।

(4) बैंक ड्राफ्ट, एम0टी0टी0 पे-आर्डर तैयार करना।

(5) ऋण सम्बन्धी आवश्यक प्रपत्रों को भरना।

(6) साप्ताहिक विवरण रिटर्न तैयार करना एवं प्रधान कार्यालय को प्रेषित करना।

(7) बीजक एवं विक्रय विवरण तैयार करना।

(8) रेजगारी छांटने वाली मशीन का प्रयोग।

संदर्भ पुस्तकें-

1-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

2-पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)-श्री राम प्रकाश अवस्थी।

3-हाई स्कूल मुद्रा बैंकिंग एवं अर्थशास्त्र-श्री एम0 पी0 गुप्ता।

4-अधिकोषण तत्व-श्री डी0 डी0 निगम।

(15) ट्रेड-टंकण

उददे्श्य-

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

(3) छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(1) वेतनभोगी रोजगार-वकील अथवा व्यापारी के यहां टाइप करना।

(2) स्वरोजगार-अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवेदन एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण कर उपलब्ध कराना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

व्यावसायिक संगठन-अर्थ उद्देश्य, महत्व एवं प्रारूप। एकांकी व्यापारी, साझेदारी एवं कम्पनी, परिभाषा, लक्षण एवं भेद।

इकाई-2

अंग्रेजी टंकण-आधुनिक युग में अंग्रेजी टंकण का महत्व, टंकण मशीन तथा उसमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल-पुर्जों तथा उनका प्रयोग, पैराग्राफ, पत्रों तथा टेबुल का टंकण।

इकाई-3

आधुनिक युग में हिन्दी टंकण का व्यावसायिक महत्व, टंकण मशीन एवं उसमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल-पुर्जों तथा उनका प्रयोग, अवतरणों, पत्रों तथा साधारण सारणी का टंकण।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग-

(1) टंकण कल पर बैठने की स्थिति।

(2) टंकण करने की प्रणालियां।

(3) टंकण मशीन में कागज लगाने एवं बाहर निकालने की विधि।

(4) हाशिया निश्चित करना।

(5) ऐसे संकेतों का टंकण जो कुंजी पटल में नहीं दिये गये हैं।

(6) नया पैराग्राफ बनाना।

(7) स्पेस बार का प्रयोग।

(8) शिफ्ट की एवं शिफ्ट की लॉक का प्रयोग।

(9) छोटे पत्रों एवं लघु अवतरणों का टंकण।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

(1) कुंजी पटल का ज्ञान।

(2) प्रार्थना-पत्र एवं पत्रों का टंकण करना।

(3) पोस्ट कार्ड पर पते टाइप करना।

(4) टाइप मशीन से प्रतियां लेना।

(5) प्रूफ रीडिंग में प्रयुक्त होने वाले चिन्ह।

(6) रिबन का बदलना।

(7) कठिन शब्दों का टंकण।

(8) टाइप मशीन की सफाई एवं तेल देना।

(9) बड़े अवतरणों एवं साधारण सारणियों का टंकण करना।

संदर्भ पुस्तकें-

1-अनुपम टाइपिंग मास्टर	श्रीमती ऊषा गुप्ता
2-उपकार व्यावहारिक टंकण कला	श्री ओंकार नाथ वर्मा
3-पूर्ण व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड	श्री राम प्रकाश अवस्थी
4-पूर्ण व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)	श्री राम प्रकाश अवस्थी
5-अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता तथा व्यापार प्रणाली	श्री जगन्नाथ वर्मा

(16) ट्रेड-फल संरक्षण

उददे्श्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधानुसार उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

7-फल उत्पादन बढ़ाना तथा खाने के बाद बचे हुए फल और सब्जियों का संरक्षण करना।

8-फलोत्पादक औद्योगिकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना।

9-बिना मौसम में संरक्षित फल पदार्थों का उपलब्ध कराना।

रोजगार के अवसर-

1-फल संरक्षण सम्बन्धी इकाईयों में रोजगार मिलने की सम्भावना।

2-फल संरक्षण उद्योग में स्वरोजगार या अपना निजी व्यवसाय चलाना या डिब्बाबन्दी कर बाजार में आपूर्ति करना।

3-संरक्षित पदार्थों की दुकान या गोदाम खोल सकता है जिसमें संरक्षित खाद्य पदार्थों का सही ढंग रख-रखाव कर उन्हें नष्ट होने से बचाव कर रोजगार चला सकता है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

(1) प्रमुख फल एवं सब्जियों को धूप में सूखाना और डीहाईड्रेशन यन्त्र से सुखाना।

(2) शक्कर द्वारा संरक्षण-जैम, जेली, मुरब्बा, केन्डी और कृत्रिम शरबत (गुलाब, केवड़ा, खस और आम का पना) आलू के शीत भण्डारण का परिचयात्मक विवरण।

इकाई-2

(1) टमाटर से निर्मित पदार्थ-रस (जूस), केचप, सॉस और चटनी।

(2) किण्वीकरण (फार्मेन्टेशन), सिरका और अचार बनाना (नमक की संरक्षण का उपयोग, विदेशी विधि तथा साल्ट क्योरिंग का परिचय)।

(3) अचार, पदार्थ, पेय एवं मुरब्बा उद्योग की सम्भावनायें।

इकाई-3

फल संरक्षण, प्रशिक्षण, सूचना तथा वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थायें, फल संरक्षण इकाई स्थापित करने की प्रक्रिया एवं स्वरूप, आवश्यक कार्यवाही। अपने जनपद में अधिक मात्रा में उपजाये जाने वाले फल एवं सब्जियों की जानकारी तथा उनकी उपलब्धता तथा इनसे संरक्षित किये जाने वाले पदार्थों के बनाने की जानकारी।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग-

1-ब्रिक्स हाईड्रोमीटर से लिनोमीटर, हैंड से कैरोमीटर (रिफ्रैक्टोमीटर), थर्मामीटर का परिचय एवं उपयोग विधि।

2-तरल पदार्थों का लिटमस पेपर की सहायता से पी-एच0 ज्ञात करना।

3-सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) से परिचय, उनके विभिन्न पार्ट्स, स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट।

4-स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट।

5-सोंलिंग के लिए प्रयोग की जाने वाली मशीन।

6-कन्टेनर्स (बोतल, जार, अमृतवान, कारव्यास) को धोना और जीवाणुरहित (स्टरलाइज) करना।

(ख) दीर्घ प्रयोग-

1-जैम-विभिन्न ऋतुओं में पैदा होने वाले फलों से जेम बनाना।

2-मुरब्बा बनाना-आंवला, बेल, पेठा, करौंदा, पपीता, गाजर।

3-अदरक, पेठा नीबू, प्रजाति के फलों के छिलका से कैण्डी बनाना।

4-टमाटर, केचप, सॉस, सूप बनाना।

5-फलों से चटनी बनाना।

6-विभिन्न ऋतुओं में उपलब्ध फल एवं सब्जियों (आम, नीबू, कटहल, अदरक, करौंदा, प्याज, खीरा आदि) से अचार बनाना।

7-कृत्रिम सिरका बनाना।

8-कृत्रिम शरबत (खस, गुलाब, केवड़ा आदि) बनाना।

9-स्कवेश बनाना।

10-अमरूद से चीज, टाफी बनाना।

संस्तुत पुस्तकें-

		रु0
1-फल एवं सब्जी संरक्षण	ले0 डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धाप्पा	45.00
2-फल संरक्षण	श्री एस0 एन0 भाटी	30.00
3-फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	बी0 एन0 अग्निहोत्री	15.00
4-फल संरक्षण विज्ञान	बी0 एन0 अग्निहोत्री	25.00
5-फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6-फल तथा सरकारी परिरक्षण प्रौद्योगिकी	श्री एस0 सदाशिव नायर एवं डा0 हरिश्चन्द्र शर्मा	100.00
7-फ्रूट एवं वेजीटेबिल	डा0 संजीव कुमार	150.00

(17) ट्रेड-फसल सुरक्षा

उददे्श्य-

1-फसल सुरक्षा को सामान्य जानकारी करना।

2-फसल सुरक्षा सेवा अपनाकर फसलों की होने वाली हानि से इन्हें बचाना।

3-फसल सुरक्षा सेवा द्वारा प्रतिवर्ष हजारों टन खाद्यान्न को नष्ट करने से बचाना।

4-फसल सुरक्षा व्यवसाय में दक्षता प्राप्त कर इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाना।

5-श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा आत्मनिर्भर बनाना।

6-कुशल नागरिक निर्माण में योगदान देना।

7-फसल सुरक्षा सेवा सम्बन्धी यन्त्रों एवं उपकरणों आदि का समुचित ज्ञान प्राप्त कर अपने निजी जीवन में उपयोग करना।

8-फसल सुरक्षा सेवा व्यवस्था का विद्यालय में सफल प्रदर्शन करना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार-

1-सरकारी, सहकारी विभागों में फसल सुरक्षा सहायक का कार्य करने का अवसर प्राप्त करना।

2-फसल सुरक्षा को उत्पादन तथा वितरण इकाइयों में रोजगार प्राप्त करना।

(ख) स्वरोजगार-

1-फसल सुरक्षा सम्बन्धी रसायनों तथा यंत्रों-उपकरणों की आपूर्ति करने सम्बन्धी व्यवसाय को अपनाना।

2-फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों तथा रसायनों की दुकान चलाना।

3-फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों को किराये पर चलाना।

4-सहकारी समितियां बनाकर फसल सुरक्षा के क्षेत्र में लघु उद्योग-धन्धे चलाना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

1-फसल सुरक्षा के उपकरणों-स्प्रेयर और डस्टर की सामान्य जानकारी, इनके रख-रखाव का ज्ञान।

2-कवकनाशी, कीटनाशी, बीज पोषक, बीज उपचारक तथा खर-पतवारनाशी रसायनों की सामान्य जानकारी।

इकाई-2

1-दीमक, चिड़िया, चूहों, घोंघा, बन्दर, लोमड़ी, खरगोश एवं अन्य जंगली जानवरों के कारण फसलों की क्षति का सामान्य ज्ञान तथा उनके रोकथाम की जानकारी।

2-टिड्डी द्वारा फसलों पर होने वाली क्षति का सामान्य ज्ञान एवं रोकने के उपाय का सामान्य ज्ञान।

इकाई-3

1-अनाज भण्डारण में कीटों तथा जन्तुओं द्वारा होने वाली क्षति का ज्ञान।

2-भण्डारण के कीटों के वर्गीकरण की जानकारी।

3-निम्नांकित कीटों का जीवन-चक्र एवं उनके नियंत्रण के उपाय का ज्ञान-

(1) राइस बीविल।

(2) धान का भाव।

(3) दालों की बीविल।

(4) अनाज का घुन।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग-

1-कीट संकलन एवं उनके जीवन-चक्र का रेखांकन करना।

2-इम्लसन मिश्रण बनाना।

3-पेस्टन तैयार करना तथा उनके प्रयोग विधि का प्रदर्शन।

4-रसायन का घोल तैयार करना, उनका प्रयोग तथा उनमें अपनायी जाने वाली सावधानियों की क्रियात्मक समझ।

5-फसलों पर पाउडर का छिड़काव करना।

6-भण्डार गृह में रसायनों का प्रयोग करना।

7-उपकरणों को खोलने एवं बांधने की समझ।

8-रसायन एवं उपकरण के प्राप्ति केन्द्रों की जानकारी एवं उन स्थानों का पर्यवेक्षण तथा उनका विवरण तैयार करना।

(ख) लघु प्रयोग-

1-विभिन्न खर-पतवारों की पहचान।

2-विभिन्न पादप रोगों की पहचान।

3-विभिन्न पादप कीटों की पहचान।

4-फसल सुरक्षा उपकरणों की पहचान।

5-कवकनाशी रसायनों की पहचान।

6-कीटनाशी रसायनों की पहचान।

7-खर-पतवारनाशी रसायनों की पहचान।

8-भण्डारण में प्रयोग होने वाले रसायनों की पहचान।

9-भण्डारण के कीटों की पहचान।

10-भण्डारण में हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं की पहचान करना।

संस्तृत पुस्तकें-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक का नाम एवं पता	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	फसल सुरक्षा	डा0 धर्मराज सिंह	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	16.00
2	सब्जी की खेती	दर्शना नन्द	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	16.00
3	फलों की खेती	डा0 राम कृपाल पाठक	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	25.00
4	नया कृषि कीट विज्ञान	बी0 ए0 डेविड एवं एम0 एच0 डेविड	सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद	12.00
5	पादप रोग नियन्त्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	22.00
6	खर-पतवार नियन्त्रण	प्रो0 ओम प्रकाश	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	
7	फसलों के रोगों की रोकथाम	डा0 संगम लाल	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	20.00
8	फसलों के रोग	डा0 मुखोपाध्याय एवं डा0 सिंह	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	50.00
9	फसलों के हानिकारक कीट	डा0 बिन्दा प्रसाद खरे	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	22.00
10	खर-पतवार नियन्त्रण	डा0 विष्णु मोहन मान	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	25.00
11	पादप रक्षा कीट नियन्त्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	22.50
12	प्लाण्ट प्रोटेक्शन	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	30.00
13	सचित्र कृषि विज्ञान	श्री श्याम प्रसाद शर्मा	भारत भारती प्रकाशन, मेरठ	20.00
14	कृषि विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायन लाल, इलाहाबाद	20.00

(18) ट्रेड-मुद्रण

उददे्श्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर-

(क) वेतनभोगी रोजगार

(ख) स्वरोजगार

} सरकारी तथा निजी मुद्रण उद्यमों में कुशल कामगार के पद का कार्य कर सकते हैं-उदाहरण के लिए कम्पोजीटर, मुद्रण मशीन चालक, प्रूफ रीडर, बुक बाइण्डर, छोटी इकाई के रूप में निजी उद्योग भी लगा सकते हैं।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-एक

(अ) मुद्रणालय की विभिन्न सामग्रियां-

कागज बनाने की विभिन्न सामग्रियां, कागज बनाने की विधियां, विभिन्न प्रकार के कागज तथा मापें, मुद्रण स्याहियां, बोर्ड (दफ्ती), बाइण्डिंग कपड़ा, बाइण्डिंग चमड़ा, रेक्सीन, चिपकाने वाले (एडेसिव) पदार्थ, फर्मा कसने की सामग्रियां।

(ब) विभिन्न मुद्रण सतह-

टाइप कम्पोजिंग सतह, ब्लाक (चित्रों) की सतह, लाइनों तथा मोनो, आफसेट प्लेट, ग्रेव्योर मुद्रण प्लेट (सिलेण्डर), स्क्रीन मुद्रण की सतह, रबर मुद्रण प्लेट।

इकाई-दो

(अ) मुद्रण विधियां-

मुद्रण का अर्थ, मुद्रण का अविष्कार, विभिन्न मुद्रण विधियां (लेटर प्रेस), समतल मुद्रण (प्लेनोग्राफी), अवतल मुद्रण (ग्रेव्योर प्रिटिंग), सिल्क स्क्रीन मुद्रण, फ्लेक्सोग्राफी मुद्रण।

(ब) विभिन्न मुद्रण कार्य-

मुद्रण पूर्व तैयारी (प्रिमेकरेडी), मुद्रण तैयारी (मेकरेडी), छोटे-छोटे (जाबिंग), मुद्रण कार्य पुस्तकीय मुद्रण, कई रंगों में मुद्रण, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं की मुद्रण विधियां।

इकाई-तीन

(अ) जिल्दबन्दी (बुक बाइडिंग)-

जिल्दबन्दी का अर्थ, विभिन्न प्रकार की जिल्दबन्दी, विभिन्न प्रक्रियायें, कागजों को बराबर करना और गिनती करना।

(ब) अन्य सम्बन्धित कार्य-

दफ्ती (बोर्ड) से डिब्बा बनाना, लिफाफा बनाना, छिद्रण (परफोरेशन) कार्य, संख्याकरण (नम्बरिंग) कार्य, आइलेट लगाना, कटिंग तथा क्रीजिंग, रेखण (रूलिंग) कार्य।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोगात्मक अभ्यास-

1-अक्षर संयोजन विभाग की साज-सज्जा तथा उपकरणों का परिचय।

2-मुद्रणालय में सुरक्षा (सेफ्टी) उपाय।

3-मुद्रण तथा बाईंडिंग विभाग की मशीनों और उपकरणों का परिचय।

4-टाइप केस लेआउट याद करना एवं कम्पोजिंग स्टिक में माप बांधना।

5-प्रूफ उठाना तथा टाइप मैटर में लगी स्याही की सफाई करना।

6-मुद्रणालय की सभी मशीनों तथा उपकरणों में स्नेहन (लुब्रीकेटिंग) तेल या ग्रीस देना और सफाई करना।

7-मुद्रित तथा अमुद्रित कागजों को बराबर करके और गिनती करना।

8-पुरानी पुस्तकों की मरम्मत करना।

(ख) दीर्घ प्रयोगगात्मक अभ्यास-

1-लेटर हेड तथा विजिटिंग कार्ड आदि छोटे जॉब कार्यों को कम्पोजिंग करना तथा प्रूफ उठाकर उसे पढ़ना और संशोधन करना।

2-विभिन्न मशीनों के लिए एक या दो पृष्ठ का फर्मा कसना।

3-मुद्रण मशीन की तैयारी, मुद्रण मशीन पर फर्मा चढ़ाना, फर्मा की तैयारी तथा लगातार मुद्रण कार्य करना।

4-मुद्रण मशीन पर एक या दो रंग की छपाई करने का अभ्यास।

5-स्थानीय किसी एक या अधिक मुद्रणालयों में छात्रों को ले जाकर निरीक्षण कराना और छात्रों द्वारा एक अध्ययन रिपोर्ट तैयार करना जो 300 शब्दों से अधिक न हो।

6-बाइण्डिंग करने के लिए मुद्रित अथवा अमुद्रित कागजों को मोड़ना, मिसिल उठाना, सिलाई करना।

7-पुस्तकों पर कागज के कवर तथा दफ्ती के कवर लगाने का अभ्यास।

8-सिल्क स्क्रीन मुद्रण की तैयारी तथा मुद्रण का अभ्यास करना।

पुस्तकें-

हिन्दी पुस्तकें-

1-अक्षर मुद्रण शास्त्र	चन्द्र शेखर मिश्र
2-संयोजन शास्त्र	चन्द्र शेखर मिश्र
3-आफसेट मुद्रण शास्त्र	चन्द्र शेखर मिश्र
4-मुद्रण परिकरण भाग-1	के0 सी0 राजपूत
5-मुद्रण परिकरण भाग-2	के0 सी0 राजपूत
6-आधुनिक ग्रन्थ शिल्प	चन्द्र शेखर मिश्र
7-मुद्रण स्याहियां तथा कागज	चन्द्र शेखर मिश्र
8-मुद्रण प्रौद्योगिकी सामग्री	एम0 एन0 खिड़बेड़
9-ब्लाक मेकर्स गाइड	एस0 अग्रवाल

(19) ट्रेड-रेडियो एवं टेलीविजन

उददे्श्य-

1-वर्तमान समय में रेडियो एवं टेलीविजन की बढ़ती हुई मांग तथा इस विषय की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों की मांग को देखते हुए यह आवश्यक है कि हाई स्कूल स्तर से बच्चों में इस विषय में रुचि उत्पन्न करना।

2-10+2 में रेडियो तथा टी0वी0 पहले से चल रहा है, इसके लिए हाई स्कूल स्तर से बच्चों को तैयार करना तथा इण्टरमीडिएट में एडमिशन के समय वरीयता।

3-छात्र बाहर तथा गांव में व्यवसाय का उचित अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

रोजगार के अवसर-

1-रेडियो तथा टी0वी0 इन्डस्ट्री में पी0 सी0 बी0 पर एसेम्बलिंग का कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

2-विभिन्न टी0वी0 सर्विस सेन्टर में ऐज टी0वी0 टेक्नीशियन का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

3-किसी बड़ी इकाई के साथ लघु उद्योग स्थापित करना।

4-स्वयं की दूकान प्रारम्भ कर सकना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

(क) परमाणु संरचना, इलेक्ट्रानिक सिद्धान्त, विद्युत के प्रकार, प्रतिरोध, धारित्र, इन्डक्टर तथा प्रतिरोध की कलर कोडिंग।

(ख) इलेक्ट्रान उत्सर्जन, अर्द्ध चालक, अर्द्धचालक डायोड, ट्रान्जिस्टर के विषय में जानकारी, उसके चिन्ह तथा प्रकार।

इकाई-2

ट्रांजिस्टर अभिग्राही (रिसीवर) के विषय में सामान्य जानकारी, ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामायदो तथा उनका विवरण।

इकाई-3

कैथोड किरण, ट्यूब टी0वी0 अभिग्राही का बेसिक सिद्धान्त तथा उपयोग आने वाले विभिन्न नियंत्रकों (कन्ट्रोल्स) के विषय में सामान्य जानकारी एवं टी0वी0 के सुधारने के लिए प्रयोग में आने वाले विभिन्न यन्त्रों के विषय में जानकारी।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

लघु प्रयोग-

1-कलर कोड की सहायता से प्रतिरोधों का मान पढ़ना तथा प्रतिरोधों की वाटेज को जानना।

2-विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधों को पहचानना, समान्तर तथा श्रेणी क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना।

3-विभिन्न प्रकार के धारित्रों को पहचानना तथा श्रेणी व समान्तर क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना।

4-विभिन्न प्रकार के डायडों तथा ट्रांजिस्टरों को पहचानना।

5-मल्टीमीटर की सहायता से वोल्टेज, धारा व प्रतिरोध मापना।

6-मल्टीमीटर की सहायता से डायोड तथा ट्रांजिस्टरों का परीक्षण करना।

7-इलेक्ट्रानिक्स में प्रयोग होने वाले विभिन्न यन्त्रों की जानकारी।

8-पी0 सी0 वी0 (पी0 सी0 वी0) पर सोल्डर करने की विधि तथा सावधानियां।

दीर्घ प्रयोग-

1-साधारण प्रकार की बैटरी एलीमिनेटर निर्माण (असेम्बल) करना।

2-विभिन्न निर्गत वोल्टेजों के लिए बैटरी एलिमिनेटर का निर्माण करना।

3-स्थिर वोल्टेज के लिए बैटरी एलिमिनेटर का निर्माण करना।

4-ट्रांजिस्टरों की सहायता से प्रवधक (एम्प्लीफायर) का निर्माण करना।

5-ट्रांजिस्टरों की सहायता से ध्वनि परिपथ (म्युजिकल सर्किट) का निर्माण करना।

6-ट्रांजिस्टर अभिग्राही के विभिन्न भागों की वोल्टेज ज्ञात करना।

7-ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामान्य दोषों को ज्ञात करना तथा उनका निवारण करना।

8-टेलीविजन के विभिन्न भागों की वोल्टेज ज्ञात करना।

संस्तुत पुस्तकें-

1-बेसिक इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग	पी0ए0 जाखड़ तथा तबसा रथ जाखड़
2-इलेक्ट्रानिक थ्रू प्रैक्टिकल	पी0 एस0 जाखड़
3-प्रारम्भिक इलेक्ट्रानिकी	कुमार एवं त्यागी
4-इलेक्ट्रानिक्स	महेन्द्र भारद्वाज
5-टेलीविजन	जीन एण्ड राबर्ट
6-बेसिक प्रैक्टिकल इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग	अनवानी हन्ग

(20) ट्रेड-बुनाई तकनीक

उददे्श्य-

1-छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों की 10+2 स्तर पर सुविधिापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5-छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6-छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी।

विशिष्ट उद्देश्य-

1-विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइनों को बनाकर हथकरघा उद्योग को उपलब्ध कराना।

2-विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइन के द्वारा फीगर डिजाइन बनाना।

3-इस उद्योग में विद्यार्थी को दफ्ती के ऊपर रेशे द्वारा फीगर डिजाइन तैयार करना सिखाना।

4-बुनाई तकनीकी की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बुनाई से सम्बन्धित लघु उद्योग स्थापित कर सकता है।

स्वरोजगार के अवसर-

बुनाई तकनीक ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं-

(क) वेतनभोगी रोजगार-

1-खादी ग्रामोद्योग में यू0 पी0 हैण्डलूम में रोजगार के अवसर।

2-छोटे कारखानों में बुनाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में।

3-बुनाई अध्यापकों के लिए प्रशिक्षित शिक्षण की उपलब्धि।

(ख) स्वरोजगार-

1-छोटे बुनाई उद्योग स्थापित करना।

2-सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त करके उद्योग चलाना।

3-न्यूनतम पूंजी में उद्योग का कार्य प्रारम्भ करके जीवन-यापन करना।

4-अपने साथ में पूरे परिवार को कार्य लगाकर कार्य करके जीवन-यापन करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन-

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1

(क) वर्गांकित कागज (ग्राफ पेपर) पर निम्न डिजाइन ड्राफ्ट प्लेन प्लान सहित बनाना।

(ख) सादी या प्लेन बुनावट बार्परिब, वेयररिब, मैटरिब।

(ग) सादा बुनावट सजाने की विधियां, लम्बाई में धारी चौड़ाई में धारी, छोटी-छोटी त्रुटियां, चारखाने दार, लम्बाई-चौड़ाई के साथ धारीदार डिजाइन बनाना। ट्योल, साधारण ट्वील, प्वाइंटेड ट्वील, ड्रायमेन्ट।

इकाई-2

(क) सूत का अंक निकालना, वेट सूत का अंक निकालना।

(ख) कंघी का अंक निकालना, हील्ड का अंक निकालना।

(ग) रीब या कंघी का अंक निकालना।

इकाई-3

(क) रंगों का अध्ययन, प्रकार, अष्ट्रवाल वृत्त रंग।

(ख) रंगों की संग।

(ग) डिजाइन एवं आलेखन कला के प्रकार।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

लघु प्रयोग-

1-सूत की लच्छियों को सुलझाना।

2-चरखी के ऊपर सूत को चढ़ाकर चरखे की सहायता से तागे की बाबिन भरना।

3-भरी हुई बाबिनों को टट्रर में सजाना।

4-ताने की तारों को डिजाइन के अनुसार लय में भरना और कंघी में भरना।

5-ताने एवं बाने की बाबिन भरना।

6-लीज राड को ताने में लगाना।

7-शटल में तागे एवं बाबिन लगाना।

8-चरखे को चलाना।

9-तकली से सूत कातना।

10-सूत की लच्छियों को अंटी पर चढ़ाना।

दीर्घ प्रयोग-

1-टट्रर से ताने के तागे निकालना।

2-क्रम से बाबिनों को लगाना।

3-हैंक या विनियों से तागे निकालना।

4-ड्रम मशीन पर ताने जुट्टी बांधना।

5-ताने के बेलन में ताने के धागे लपेटना।

6-ताने के बेलन को करघे पर फिट करना।

7-डिजाइन के अनुसार ड्राफ्टिंग करना।

8-आई के कंघी में पिराना या धागे निकालना।

9-ताने के धागों की जुट्टी बांधना।

10-करघे पर बुनाई करना।

पुस्तकों की सूची-

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	विश्वविद्यालय प्रकाशक चौक, वाराणसी	55.00
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुकसेलर, लखनऊ	55.00
3	बुनाई पुस्तक	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	नवीन पुस्तक भण्डार, दारागंज, इलाहाबाद	8.00
4	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	श्री दुर्गा दत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली	75.00
5	भारतीय कशीदाकारी	श्रीमती शिन्दे एवं कु0 पण्डित	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	27.00

(21) ट्रेड-रिटेल ट्रेडिंग (खुदरा-व्यापार)

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम **पूर्णांक-50 अंक**

इकाई-1 **10 अंक**

खुदरा विक्री की प्रस्तावना-

1-खुदरा बिक्रय का अर्थ एवं परिभाषा।

2-खुदरा बिक्री के तत्वों का वर्णन।

3-खुदरा तत्वों की विशेषतायें।

4-खुदरा बिक्री के तत्वों की आवश्यकता।

5-खुदरा बिक्री के विभिन्न कार्य।

6-खुदरा विक्रेताओं के विभिन्न प्रकार।

इकाई-2 **10 अंक**

खुदरा बाजार में विपणन की भूमिका-

1-विपणन प्रस्तावना।

2-विपणन के सिद्धान्त।

3-खुदरा व्यापार एवं विपणन में सामंजस्य।

4-विपणन के लक्षण एवं महत्व।

5-विपणन की उत्पत्ति एवं परिभाषायें।

6-उत्पाद एवं सेवा विपणन में विभेद।

इकाई-3 **10 अंक**

1-उत्पाद प्रबन्धन का महत्व।

2-उत्पाद प्रबन्धन के पूर्वोपाय।

3-उत्पादन प्रबन्धन की विभिन्न विधियां।

4-उत्पाद प्रबन्धन के विभिन्न उपकरण।

5-भारत में बड़े पैमाने पर खुदरा व्यापार की व्यवस्था।

6-बड़े पैमाने पर खुदरा व्यापार को संचालित करने के लिए भारत सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं का विवरण। (FDI)

इकाई-4 **10 अंक**

खुदरा व्यापार में उत्पाद वर्गीकरण-

1-प्रस्तावना

2-उत्पादों के प्रकार एवं लक्षण

3-खुदरा व्यापार में विभिन्न विभाग

4-उत्पाद रख-रखाव

5-उत्पादों में ब्राण्डिंग का महत्व

इकाई-5 **10 अंक**

खुदरा बिक्री में रोजगार का भविष्य-

1-खुदरा बिक्री में विभिन्न रोजगारों की संभावना

2-खुदरा बिक्री में रोजगार के लिए आवश्यक दक्षता

3-खुदरा बिक्री में प्रबन्धकीय कार्य में कैरियर

4-FDI के द्वारा प्रस्तावित रोजगार का भारतीय अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव (FDI का आलोचनात्मक विवरण)

प्रयोगात्मक **पूर्णांक-50 अंक**

-उत्पादों की सुरक्षा की प्रशिक्षण तकनीक

-उपभोक्ताओं के पहचान करने और समझने के लिए प्रश्नावली का गणन

-किसी रिटेल मॉल का भ्रमण

-किसी उत्पाद के सप्लाई चेन का मॉडल बनाना

-किसी ग्राहक/उपभोक्ता से संतुष्टि मापन का अभ्यास

-प्रयोगात्मक अभ्यास-20 अंक

-मौखिक परीक्षा-10 अंक

-प्रोजेक्ट रिपोर्ट-20 अंक

(22) ट्रेड-सुरक्षा

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम **पूर्णांक-50 अंक**

इकाई-1 सुरक्षा सैन्य बल **13 अंक**

-भारतीय थल सेना, वायु सेना एवं नौ सेना का संगठन एवं कार्य।

-भारतीय अर्द्ध सैनिक बल संगठन एवं कार्य।

-भारत की अद्यतन रक्षा तैयारियां।

इकाई-2 कार्यस्थल से सम्बन्धित खतरे एवं सुरक्षा **13 अंक**

-कार्यस्थल में संभावित सामान्य खतरे एवं कारण।

-स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से सम्बन्धित खतरे।

-कार्यस्थल से सम्बन्धित तकनीकी खतरे।

-प्राकृतिक आपदा, जल वायुवीय परिस्थितियों, सामाजिक एवं कानूनी कार्यवाही से सम्बन्धित खतरे।

-उत्पादन, प्रौद्योगिकी, वित्तीय बाजार, उपभोक्ता से सम्बन्धित खतरे।

-आणविक, जैविक एवं रासायनिक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सुरक्षा।

-व्यावसायिक स्वास्थ्य की प्रावस्थायें एवं सुरक्षात्मक रणनीति।

इकाई-3 निरीक्षण, अनुश्रवण एवं सुरक्षा **12 अंक**

-निरीक्षण, सूचना, व्याख्या एवं स्मरण के विभिन्न सोपान।

-निरीक्षण में संवेदों की प्रभावकता को प्रभावी बनाने वाले कारक।

-सुरक्षित वातावरण बनाये रखने में प्रौद्योगिकी का महत्व।

-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं सुरक्षा।

-विभिन्न प्रकार के अपराध एवं उनसे सम्बन्धित सुरक्षा संप्रेषण।

इकाई-4 कार्यस्थल पर संवाद संप्रेषण **12 अंक**

-संवाद चक्र के विभिन्न तत्व-संवाद का अर्थ, तत्व, प्रेषक, संदेश, माध्यम, प्राप्तकर्ता एवं पुनर्निवेशन।

-पुनर्निवेशन (feed back) अर्थ, विशेषतायें एवं महत्व, वर्णनात्मक एवं विशिष्ट पुनर्निवेशन।

-संप्रेषण में अवरोध सम्बन्धी कारक दूर करने के उपाय।

-प्रभावी संप्रेषण से सम्बन्धित विभिन्न तत्व।

-संप्रेषण के सिद्धान्त।

-संचार उपकरण एवं संचार साधन।

प्रयोगात्मक **50 अंक**

1-परिचयात्मक प्रपत्रों का परीक्षण-Identity card, Passport, स्मार्ट कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस।

2-कार्यस्थल पर मशीनों/रसायनों/उपकरणों आदि से होने वाले खतरों को सूचीबद्ध करना एवं संस्था द्वारा अपनाये जाने वाले सुरक्षा उपायों का अध्ययन।

3-एक shopping mall/industry का भ्रमण कर खतरों को चिन्हित करना।

4-प्रवेश द्वार की सुरक्षा का अध्ययन।

5-CCTV का अध्ययन।

6-Finger print, Scanner, Iris scanner, Face scanner का सुरक्षा में प्रयोग।

7-पुलिस स्टेशन में दर्ज प्राथमिकी एवं इसके प्रारूप का अध्ययन।

8-फोरेसिंक लैब का भ्रमण आयोजित कर साक्ष्यों की प्रमाणिकता की कार्यविधि का अध्ययन।

9-औद्योगिक संस्थान/रेलवे स्टेशन/बस स्टेशन/हवाई अड्डे का भ्रमण कर सुरक्षा गार्ड के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन।

10-सेना/पुलिस के अधिकारियों को प्रदत्त चिन्ह (Insignia) का मिलान उनके पद/रैंक से करना।

11-संवाद चक्र का रेखांकन।

12-कार्यस्थल पर Communication के लिए विभिन्न प्रकार के वाक्यों का निर्माण जिनमें-

-विशिष्ट संदेश पर बल दिया हो।

-वांछित समस्त जानकारी का समावेश हो।

-संदेश के प्राप्तकर्ता के प्रति सम्मान परिलक्षित हो।

13-भारत एवं सम्बन्धित राज्यों तथा जिलों से सम्बन्धित मानचित्रों का अध्ययन एवं निर्माण।

(23) ट्रेड-मोबाइल रिपेयरिंग

उददेश्य-मोबाइल आधुनिक युग में संचार का सशक्त माध्यम तो है ही साथ ही विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक अद्यतन सूचना तथा समाचार प्रसारित करने का सशक्त माध्यम भी है।

मोबाइल की मांग तथा सेवा का विस्तार तीव्रता से हो रहा है।

अतः छात्रों को मोबाइल रिपेयरिंग ट्रेड में प्रशिक्षण देना लाभकारी सिद्ध होगा।

1-छात्रों में उद्यमिता के गुणों का विकास करना।

2-छात्रों को आगे चलकर रोजगार/स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

3-छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधिापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना साथ ही उसमें मोटीवेशन लाना।

4-छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम **पूर्णांक-50 अंक**

इकाई-1 **10 अंक**

-मोबाइल के संदर्भ में कम्प्यूटर का प्रारम्भिक ज्ञान।

-कम्प्यूटर के ऑन/ऑफ की प्रक्रिया।

-मोबाइल के संदर्भ में इलेक्ट्रॉनिक्स का प्रारम्भिक ज्ञान।

- इलेक्ट्रॉनिक्स अवयवों के प्रतीक, परिभाषा, परीक्षण व कार्य।

-डिजिटल मल्टीमीटर।

इकाई-2 **10 अंक**

-मोबाइल प्रौद्योगिकी, मोबाइल का परिचय।

-विभिन्न प्रकार के कम्पनियों के मोबाइल।

-मोबाइल के विभिन्न भाग व उनका परीक्षण।

-मदर बोर्ड की प्रारम्भिक पहचान।

-मोबाइल के प्रत्येक भाग जैसे-सिम, प्रकाश, रिंगर, कम्पन, ऑडियो, चार्जिंग की पैड व पावर सेक्शन का परिचय आरेख।

इकाई-3 **10 अंक**

-(ICs) आइसी (SMD & BGA) विभिन्न आइसी के कार्य।

-SMD(ICs) आइसी की सोल्डरिंग व डी सोल्डरिंग।

-जम्फर तकनीक और उसका समाधान।

इकाई-4 **10 अंक**

-समस्या का निवारण (TROUBLE SHOOTING AND SOLUTION)

-एल0सी0डी0 पर आईकॉन की स्थिति।

-सॉफ्टवेयर डाउनलोड विधि।

इकाई-5 **10 अंक**

-Uplink & Downlink frequency (आवृत्ति)।

-जी0पी0आर0एस0 (GPRS)

-जी0पी0एस0 (GPS)

-वाई-फॉय (WI-FI)

-ब्लूटूथ (BLUTOOTH)

-इन्फ्रा रेड (INFRARED)

-डायग्राम-मल्टीमीडिया हेड सेट

-एप्लीकेशन को डाउनलोड करना (गेम, टोन, वाल पेपर, इमेजेस एम0पी0-3 मूवी)

-डेटा का हस्तान्तरण मोबाइल से PC में करना।

प्रयोगात्मक **पूर्णांक-50 अंक**

(1) हार्डवेयर (Hard Ware)

(a) मोबाइल के विभिन्न मॉडल की जानकारी व कार्य प्रणाली।

(b) CDMA तथा GSM तकनीकी की जानकारी।

(c) 2 जी तथा 3 जी तकनीक की जानकारी।

(d) बैटरी की सम्पूर्ण जानकारी-क्षमता, टेस्टिंग।

(e) माइक टेस्टिंग।

(f) फाइंड डेड सेट समस्या।

(g) नेटवर्किंग।

(h) SMD का उपयोग।

(i) सर्किट डायग्राम की जांच करना।

(j) वजर टेस्टिंग, कम्पन, मदरबोर्ड टेस्टिंग, सर्चिंग (नेटवर्क)।

(2) सॉफ्टवेयर (Soft ware)

-कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी प्राप्त करना।

-मोबाइल में प्रयुक्त किये जाने वाले साफ्टवेयर की जानकारी।

-लॉकिंग व अनलॉकिंग की जानकारी।

-IMEI नम्बर की जानकारी।

-रिंगटोन, सिंगटोन, वालपेपर, ऑडियो, वीडियो, Mp 3 Song SBJ लोड करना।

(24) ट्रेड-पर्यटन एवं आतिथ्य

पाठ्यक्रम

नोट-कुल 100 अंक का प्रश्न-पत्र होगा जिसमें 50 अंक का लिखित तथा 50 अंक का प्रयोगात्मक कार्य होगा।

उददेश्य-

(1)-छात्रों में अतिथि देवो भव की भावना विकसित करना।

(2) हॉस्पिटैलिटी और पर्यटन व्यवसाय को समझना।

(3) पर्यटन और आतिथ्य से सम्बन्धित विषय को समझना।

(4) बातचीत के तरीकों को विकसित करना।

(5) आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना।

रोजगार के अवसर-

छात्रों को आत्मनिर्भर बनाकर उनके मनोबल को बढ़ाना, जिससे छात्र स्वयं इस प्रकार के कार्य अथवा उद्योग को अपनाकर जीवन-निर्वाह कर सकें।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम **पूर्णांक 50 अंक**

इकाई-1 **05 अंक**

(1) पर्यटन और हॉस्पिटैलिटी की परिभाषा।

(2) पर्यटक की परिभाषा तथा पर्यटन गाइड।

(3) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

(4) हॉस्पिटैलिटी की उत्पत्ति का कारण।

(5) आतिथ्य एवं पर्यटन का अर्थ, क्षेत्र, आवश्यकता, महत्व एवं अवधारणा।

इकाई-2 **05 अंक**

(1) भारत में पर्यटन का महत्व।

(2) उद्देश्य।

(3) कारण।

(4) पर्यटन के प्रकार जैसे-प्राकृतिक, वाइल्ड, साहसिक, धार्मिक, फूड, डोमेस्टिक, ग्रामीण, शहरी इत्यादि।

(5) इनबाउन्ड टूरिज्म और आउटबाउन्ड टूरिज्म।

इकाई-3 फ्रन्ट आफिस संचालन **10 अंक**

(1) फ्रन्ट ऑफिस की परिभाषा तथा महत्व।

(2) फ्रन्ट ऑफिस के कार्य तथा अनुभाग।

(3) फ्रन्ट ऑफिस के स्टाक के गुण तथा व्यक्तिगत भाव।

(4) फ्रन्ट ऑफिस के स्टाफ, उनके कार्य तथा उत्तरदायित्व।

(5) विभिन्न प्रकार के प्लान-A.P., C.P., E.P., M.A.P.।

(6) चेक-इन तथा चेक-आउट, प्रोसीजर (प्रक्रिया) चेक आउट टाइम।

(7) आगमन और प्रस्थान विधि।

(8) बेल डेस्क के कार्य और महत्व।

(9) Reception के कार्य और महत्व।

(10) विभिन्न प्रकार के रजिस्टर-

(क) Log Book

(ख) आगमन और प्रस्थान रजिस्टर।

(ग) डाक्टर आनकाल रजिस्टर।

(घ) Guest Folio।

(ङ) C-Form रजिस्टर।

इकाई-4 House keeping **15 अंक**

(1) हाउसकीपिंग की परिभाषा और महत्व।

(2) हाउसकीपिंग के कार्य और अनुभाग।

(3) हाउसकीपिंग स्टाफ के कार्य, उनके उत्तरदायित्व तथा संगठन चार्ट।

(4) हाउसकीपिंग स्टाफ के गुण तथा भाव।

(5) ले-आउट।

(6) लॉस्ट एवं फाउण्ड प्रक्रिया।

(7) लेनिन तथा यूनीफार्म रूम तथा इसका ले आउट।

(8) DND, CLEAN MY ROOM तथा दूसरे प्रकार के डोर नॉब कार्ड के विषय में जानना।

(9) ब्लाक रूम तथा अतिथि रूम को बनाना।

(10) डर्टी लेनिन प्रोसीजर (प्रक्रिया) DND तथा रूम को हैण्डल करना।

इकाई-5 **15 अंक**

(1) F & B Service की परिभाषा और उद्देश्य।

(2) विभिन्न प्रकार के अनुभाग।

(3) कस्टमर हैंडलिंग।

(4) स्टाफ संरचना एवं संगठन।

(5) Restaurant, Coffee Shop, Discotheque, Night Club, मल्टी स्पेशियल्टी रेस्टोरेन्ट, कैफेटेरिया इत्यादि।

(6) Room Service अनुभाग के कार्य।

(7) Kitchen Stewarding के कार्य।

(8) किचेन के प्रमुख अनुभागों को जानना जैसे-Continental, इण्डियन, चाइनिज, बेकरी इत्यादि।

(9) विभिन्न प्रकार के शेफ (Chef) तथा उनके कार्य।

(10) किचेन का ले आउट बनाना।

(11) वेटर के कार्य तथा गुण।

(12) हाईजीन और सैनीटेशन का महत्व।

प्रयोगात्मक कार्य **पूर्णांक 50 अंक**

निर्देश-निम्न में से कोई पांच प्रयोगात्मक कार्य करें। प्रत्येक के लिए दस अंक निर्धारित हैं।

(1) गेस्ट से बात करते समय बात करने का ढंग, उस समय प्रयोग किया जाने वाला कम्यूनिकेशन और गेस्ट के स्वागत करने का तरीका।

(2) शैक्षणिक भ्रमण की सहायता से होटल और ट्रेवेल एजेंसी को जानना।

(3) मैन्यू की योजना बनाना-

(क) एक मैन्यू बनाना जो 300 लोगों के लिए हो (साप्ताहिक दर्शायें)।

(ख) छात्रावास का मैन्यू बनायें (200 छात्रों के लिए)

(ग) कवर सेटअप करना (विभिन्न प्रकार के मैन्यू के लिए)।

(घ) बूफे सेटअप करना।

(ङ) ऑडर, टेकिंग।

(च) सर्विस करना।

(छ) बिल पेमेन्ट करना।

(ज) के0ओ0टी0/बी0ओ0टी0 काटना।

(झ) बिलिंग प्रोसिजर्स।

(4) बेड मेकिंग-

(क) मार्निंग सर्विस।

(ख) शाम की सर्विस।

(ग) अकस्मात रूम व्यवस्था।

(घ) सफाई चक्र।

(ङ) रख-रखाव और गृह की व्यवस्था।

(च) कमरे तथा रेस्टोरेन्ट के लिए प्रयोग किये जाने वाले लेनिन की व्यवस्था।

(5) मेड्सकार्ट में रखे जाने वाले वस्तुओं को रखना तथा उसका प्रयोग करना।

(6) विभिन्न प्रकार के प्रोफार्मा को बनाना-

(क) C-Form

(ख) Log Book

(ग) आने वाले तथा जाने वालों के रजिस्टर

(घ) आर्गनाइजेशन

(ङ) वीटनरी टैक सिस्टम को बनाना

(च) अतिथि का स्वागत करना

(छ) टूर पैकेज बनाना

(7) Room रिपोर्ट बनाना।

(8) Lost & Found रजिस्टर बनाना।

(9) टेलीफोन से बात करने का तरीका (क्या करना और क्या न करना)।

(10) रिजर्वेशन करने का तरीका (हाथ से और कम्प्यूटर) द्वारा।

(11) कम्प्यूटर द्वारा कार्य और अनुप्रयोग विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर पैकेज का प्रयोग।

(12) गेस्ट की शिकायतों को हैंडिल करना तथा उनको निपटाना।

(13) आचार-व्यवहार और ड्रेस कोडिंग।

(14) अकस्मात दिक्कतों को निपटाना।

(15) हाइजीन और सेनीटेशन।

(16) विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थों को बनाना तथा उसकी सर्विस करना।

(17) लगेज हैंडलिंग प्रोसिजर।

(18) गेस्ट का टिकट बुक कराना।

(19) विभिन्न प्रकार के Plan द्वारा रूम बुक कराना।

(20) रजिस्ट्रेशन कराना।

(21) प्रोजेक्ट बनाना।

पी0एस0यू0पी0—151 मा0शि0प0—19-03-2015—10,000 (डी0टी0पी0 / आफसेट)।

मुद्रक :

निदेशक, मुद्रण एवं लेखन-सामग्री, उ0 प्र0, इलाहाबाद

2015